nikhil pandey

शिवमूर्ति हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग

इस पञ्चाङ्ग में प्रतिदिन के तिथि नक्षत्र योग का मान और द्वादश लग्नों का समाप्ति काल घं. मि. में तथा विवाह-उपनयन-चौल-वधूप्रवेश-द्विरागमन-गृहप्रवेश-जलाशयारामकूपदेवालयारम्भ एवं प्रतिष्ठादि के शुद्धातिशुद्ध मुहूर्त लिखे जाते हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग को पास रखने से मनुष्य ज्योतिषी हो जाता है।

विवाह में प्रयुक्त पञ्चशलाका चक्र

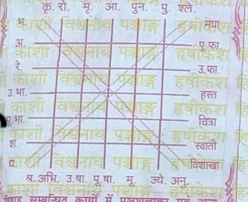

विवाह सम्बन्धित कार्यों में पञ्चशलाका एवं अन्य कार्यों में सप्तशलाका चक्र द्वारा वेध देखना चाहिए।

बाण पञ्चक

सूर्य के गतांशों द्वारा बाण निर्णय
८।१७।२६ गतांश से रोगबाण
२।११।२०।२९ गतांश से सशल्य अग्निबाण
४।१३।२२ गतांश से नृपबाण
६।१५।२४ गतांश से चौरबाण तथा
१।१०।१९।२८ गतांश से मृत्युबाण होता है।
इन पञ्चबाणों को क्रमशः व्रतबन्ध, गृहच्छादन, राजसेवा, यात्रा एवं विवाह में त्याग देना चाहिए।

रामायण द्वारा शकुनावलोकन

नवराशिषु व्रीहीनां ध्यात्वा
कार्यन्तु विन्यसेत्।। चतुः
पूंगीफलानीह पूर्वेणकाण्डमुच्यते।
द्वितीयेन हि सर्गस्तु तृतीयेन फलेन हि।।
दशकोऽस्यविजानीयाच्चतुर्थेन
फलेन च।। श्लोकोज्ञेयः पूर्वराशेः
सर्वेषां गणनेरिता।। सर्वत्रान्त्येन
श्लोकेन विपरीतं फलं स्मृतम्।।
शुभ कथाप्रसङ्ग से शुभफल एवं अशुभ कथाप्रसङ्ग से अशुभफल जानना चाहिए।

श्रीकाशीविश्वनाथ पञ्चाङ्ग
शिवमूर्ति हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग

।।श्रीमङ्गलमूर्तये गणाधिपतयेनमः।।

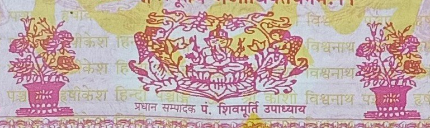

प्रधान सम्पादक पं. शिवमूर्ति उपाध्याय

सप्तशती द्वारा शकुन ज्ञान

सम्पूज्य विधिवद्देवीं कुमारीरूपधारिणीम्। कृत्वाष्टदलमुर्वीस्थं तत्र तत्पुस्तकं न्यसेत्।।१।। पूजितायाः करे दद्यात् कन्यकायास्तु मुद्रिकाम्।। शलाकां हेममय्याञ्च गजदन्तस्य वा शुभाम्।।२।। द्वादशांगुलमात्रन्तु विन्यसेतपुस्तकान्तरे। सम्पश्ये त्प्रथमां पंक्तिं यत्स्वरूपं कथानकम्।।३।। आदिशेत्तत्स्वरूपं हि फलं शास्त्रविशारदः।।४।।

ग्रहों की अरिष्ट हरण क्षमता

राहु का दोष बुध, इन दोनों का शनि, इन तीनों का मंगल, इन चारों का शुक्र, इन पांचों का गुरु, इन छवों का चन्द्रमा तथा सबके दोषों का सूर्य नाश कर देता है। सूर्य यदि उत्तरायण में हो तो विशेष दोषनाशक होता है। **स्थान विशेष में ग्रहों की विफलता**-सूर्य के साथ चन्द्रमा, लग्न से चौथे भाव में बुध, पाँचवें भाव में बृहस्पति, दूसरे में मंगल, छठें में शुक्र और सातवें में शनि हो तो विफल होते हैं।

विवाहेतर कार्यों हेतु सप्तशलाका चक्र

समस्त कार्यों में सप्तशलाका चक्र द्वारा परन्तु विवाह में पञ्चशलाका चक्र द्वारा नक्षत्र वेध देखना चाहिए।

इस वर्ष राजा सूर्य ।। मन्त्री सूर्य ।। सस्येश बुध ।। दुर्गेश सूर्य ।। धनेश बुध।। रसेश शुक्र ।। धान्येश मंगल ।। नीरसेश बुध ।। फलेश शनि ।। मेघेश सूर्य ।। रोहिणी निवास समुद्र में ।। वर्षविश्वा १२ समताकारक।। गतकलि ५१२६।।

स्वस्ति श्रीमन्महाराजाधिराजद्विजराज काशिराज श्री १०८ महाराज डॉ० श्रीविभूतिनारायणसिंहशर्मदेव 'एम.ए.' वीरपुङ्गव पदवी प्राप्त के आज्ञानुसार।।

उत्पात फल ज्ञान के लिए चतुर्विध मण्डल

अग्नि मण्डल	वरुण मण्डल	वायु मण्डल	चन्द्र मण्डल
कृत्तिका	मूल	पुनर्वसु	अभिजित
भरणी	ऽश्लेषा	उत्तराफाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा
पुष्य	शतभिष	अश्विनी	अनुराधा
मघा	आर्द्रा	हस्त	श्रवण
पूर्वाभाद्र	रेवती	चित्रा	धनिष्ठा
विशाखा	उत्तराभाद्रपद	स्वाती	ज्येष्ठा
पूर्वाफाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	मृगशिरा	रोहिणी
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

उपरोक्त जिस मण्डल के नक्षत्रों में भूकम्प, उत्पात आदि होते हैं, उस मण्डल जनित प्रभावों के द्वारा द्रव्य, जन्तु एवं देशों को पीड़ा देते हैं। इसमें भी वायु एवं अग्निमण्डल विशेष अनिष्टकारक होते हैं।

इस पञ्चाङ्ग में - देशान्तर १।९, अक्षांश २५।१८, पलभा ५।४५, तिथि, नक्षत्र, योग आदि मकरन्दीय, दैनिक स्पष्टग्रह ग्रहलाघवीय तथा अयनांश केतकरीय है।

विंध्य से उत्तरवासियों के लिए विंशोत्तरीमत से आय-व्यय चक्र।।

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशि	योग
१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११	आय	आययोग १२३
११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२	व्यय	व्यययोग ७५

।। जन्मलग्न से जगल्लग्न फल ।।

१	देहसुख	७	स्त्रीसुख
२	धनलाभ	८	रोगभय
३	कुटुम्बवृद्धि	९	धर्मलाभ
४	मित्रप्राप्ति	१०	सुतार्थाप्ति
५	पुत्रप्राप्ति	११	लाभसुख
६	शत्रुजय	१२	व्यय, दुःख

जगल्लग्न ११।२५।३४।४

हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग

दोनों आय-व्यय चक्रों द्वारा विशेष विचार

आय-व्यय का योगकर एक घटा दें और आठ से भाग दें, एकादि शेष रहने पर निम्न फल होता है - १ लाभ, २ सुख, ३ क्लेश, ४ रोग, ५ लोकोपवाद, ६ सम्मान, ७ विजय, ८ हानि अथवा दोनों चक्रों के आयों का योग लाभ तथा व्ययों का योग व्यय होता है। लाभ योग अधिक होने पर शुभ होता है।

वैशाखकृष्ण ति. २ मंगल को (१५-४-२०२५) ३१/१८ (सा. ६/१३) इष्ट पर "सिद्धार्थ" संवत्सर का प्रवेश ॥

श्रीकाशिराजराजेन्द्र का अभिनव 'माटो' नामक चिह्न।।

श्री १०८ विश्वनाथकृपयाऽत्र तदीयमूर्त्ति श्री काशीराजकरकल्पतरुप्रपन्नम्।
सिद्ध्यै सदाखिलसनातनधर्मकालज्ञप्तेः सतां विजयतां तिथिपत्रमेतत्।।

श्री संवत् २०८२ शक १९४७ कालयुक्त नामाब्द

ईसवीय सन् २०२५-२०२६। फसली १४३२-३३। बङ्गसंवत् १४३१-३२। हिजरी १४४६-४७

अन्नपूर्णाविश्वनाथौ जननीजनकाविव। सर्वस्वं मम् तावेव विश्वस्मिन्मङ्गलप्रदौ।
नेत्रेभनख-विक्रमाब्दतिथिपत्र प्रात्यहिकग्रहस्पष्टलग्नोदयसहितम्।।

श्रीकाशीस्थ प्रधान राजकीय संस्कृत पाठशाला के प्रधानाध्यापक

श्रीपण्डित हृषीकेश उपाध्याय - ज्योतिषाचार्य द्वारा प्रवर्तित

आचार्य पण्डित श्रीनागेश उपाध्याय 'ज्योतिषी', विद्यार्णवेन्दु 'एम.ए.' द्वारा प्रवर्द्धित।

परमावश्यक सूचना : पञ्चाङ्गापेक्षित निर्णय के लिये उ.प्र., बिहार, दिल्ली, मुम्बई, बंगाल, आसाम सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष में **पं० शिवमूर्ति उपाध्याय** द्वारा सम्पादित **हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग** ही प्रधान माना जाता है। ग्रहण, उदयास्त, व्रत, विवाहादि मङ्गल कार्यों का निर्णय इसके द्वारा ही सर्वत्र किया जाता है। सम्प्रति प्रचलित सभी पञ्चाङ्ग **'हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग'** का ही अनुसरण व नकल करने लगे हैं।

विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन - बी. २/९५, सी. भदैनी, वाराणसी

विंध्य से दक्षिणवासियों के लिए अष्टोत्तरी मत से आय-व्यय चक्र।।

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशि	योग
२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५	आय	आययोग ९९
१४	५	२	८	११	२	५	१४	५	१४	१४	५	व्यय	व्यययोग ९३

आर्द्राप्रवेशाङ्ग ६।६।३७।४

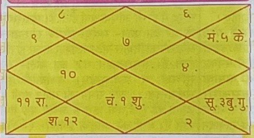

आर्द्रा आदि नक्षत्रों में वर्षा प्रमाण

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा
३	२	२	२	२
पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
१।।	१।।	१	१।।	१

आषाढ़ ३ श्रावण ४ भाद्रपद ४ आश्विन ३ कार्तिक में १, मार्गशीर्ष एवं पौष में भी साधारण।

हस्ताक्षर - [signature]

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल द्वारा वृष्टि विचार

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल में सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों यदि सूर्य के नक्षत्र में हो तो वायुचलन, चन्द्रनक्षत्र में हो तो अनावृष्टि एवं एक सूर्य तथा दूसरा चन्द्र के नक्षत्र में स्थित हो तो सुवृष्टि होती है। अन्य प्रकार - जिस समय बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु एक नाड़ी के नक्षत्रों में स्थित होते हैं, उस समय अवश्य ही वृष्टि होती है।

वर्षाज्ञानार्थ सप्तनाड़ी चक्र

शनि	रवि	भौम	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उ.	पू.	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उ.	पू.	श.	ध.	नक्षत्र
चंडा	वात	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृत	संज्ञा

श्री संवत् २०८२ वर्ष की समयशुद्धि

गुरु - ज्येष्ठशुक्ल १५ बुध (११-६-२०२५) गुरु का अस्त पश्चिम में। आषाढ़शुक्ल १२ सोम (७-७-२०२५) गुरु का उदय पूर्व में।

शुक्र - पौषकृष्ण ७ गुरु (११-१२-२०२५) शुक्र का अस्त पूर्व में। माघशुक्ल १५ रवि (१-२-२०२६) शुक्र का उदय पश्चिम में।

शनि - [illegible]

राहु - [illegible]

विवाह - वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन [illegible]

शिवमूर्ति हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग

मूल्य ६५.०० (पैसठ रूपये मात्र)

प्रकाशक- विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन, भदैनी, वाराणसी।

मुख्यपृष्ठ पर 3D होलोग्राम देखकर पञ्चाङ्ग खरीदें

श्रीगणेशाय नमः। श्रीविश्वनाथः शरणम्। श्रीभगवते रामचन्द्राय नमः।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्॥१॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सरफलं वक्ष्ये जगतां हितकाम्यया॥२॥ अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः॥३॥ तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण ये पञ्चाङ्ग के पांच अंग होते हैं, इनके फल श्रवण मात्र से मनुष्य गङ्गास्नान का फल प्राप्त करता है। नूतन संवत्सर के आगमन काल में प्रतिगृहों में ध्वजारोपण कर ब्राह्मणों के साथ पूजनादि मंगलकार्यों का आयोजन करनाचाहिए तथा देवता, गुरु, स्त्री एवं बालकों को वस्त्रालंकार आदि से पूजन कर, पूजित दैवज्ञ द्वारा पञ्चाङ्गफल श्रवण करना चाहिए। तिथिफल श्रवण से राज्य अचल, मन्त्रीफल श्रवण से कौशल, धान्येश से स्थिर लक्ष्मी, मेघेश से सरसवाणी, रसेश से धर्मवृद्धि तथा दीर्घायु एवं सस्येश के फल श्रवण से विमल बुद्धि एवं शुभफल की प्राप्ति होती है। वर्ष के प्रथम दिन निम्ब के कोमल पत्रों को पुष्प के साथ चूर्ण बनावें तथा उस चूर्ण में मरीचि, नमक, हिंग, जीरा, एवं अजवाइन मिश्रित कर रोगशान्त्यर्थ भक्षण करें। पुराण पुरुष ब्रह्मा जी को ब्रह्मायान से परमायु १०० वर्ष की है। ब्रह्माजी देवताओं का दिनमान- १००० महायुग का एक ब्रह्मादिन, तथा ब्रह्मादिनमान से १०० वर्ष की ब्रह्मा की पूर्णायु होती है। १००० ब्रह्मादिन की १ विष्णुघटी तथा १२०००० विष्णुदिन का रुद्र की आधी कला तथा १०००००००० रुद्र दिन का १ ब्रह्मक्षर होता है।

प्रसङ्गानुसार चतुर्युग व्यवस्था- कार्तिक शुक्ल नवमी, प्रथम प्रहर, श्रवण नक्षत्र एवं वृद्धि योग में कृतयुग की उत्पत्ति हुई। सन्ध्या-सन्ध्यांश के सहित कृतयुग का मान १७२८००० सौर वर्ष है। इस युग में भगवान के मत्स्य, कूर्म, वराह एवं नरसिंह अवतार हुए। पाप-० तथा पुण्य- २० था। इस युग में हिरण्यकश्यप, प्रहलाद, बलि, बाणासुर, आदि धर्मिष्ठ एवं राजा थे। वैशाख शुक्ल तृतीया, सोमवार, रोहिणी नक्षत्र द्वितीय प्रहर एवं शोभन योग में त्रेता युग का आरम्भ हुआ। सन्ध्या एवं संध्यांश के सहित इसका मान १२९६००० सौरवर्ष है। इस युग में वामन, परशुराम एवं राम ये तीन अवतार हुए, पाप-५, तथा पुण्य- १५ था। इस युग में विश्वामित्र, भगीरथ, दिलीप, मकरध्वज, दशरथ, राम, लव, कुश इत्यादि राजा हुए। माघ कृष्ण अमावस्या, शुक्रवार, तृतीय प्रहर, धनिष्ठा नक्षत्र एवं वरीयान योग में द्वापर युगारम्भ हुआ। सन्ध्या-सन्ध्यांश के सहित इसका मान ८६४००० सौर वर्ष है। इस युग में पाप- १० तथा पुण्य भी १० था। भगवान कृष्ण एवं बुद्ध ये दो अवतार तथा अङ्गपाण्डु, युधिष्ठिर, परीक्षित आदि धर्मनिष्ठ राजा हुए। भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी, रविवार, रात्रि, कृत्तिका नक्षत्र एवं व्यतिपात योग में कलियुग का आरम्भ हुआ। सन्ध्या-सन्ध्यांश के सहित इसका मान ४३२००० सौर वर्ष है। इस युग में पाप-१५ तथा पुण्य- ५ रहेगा। इस युग में वर्णव्यवस्था नहीं रहेगी तथा भूमि बीजहीन हो जाएगी।

कलियुग का स्वरूप- पिशाच वदन, क्रूर, कलहप्रिय, कलियुग वाम हस्त से लिङ्ग एवं दायें से जिह्वा पकड़कर नृत्य करता है। **कलियुग में गङ्गा की स्थिति-** कलियुग के अन्त में पृथ्वी से गङ्गा लुप्त हो जायेगी तथा विष्णु भी पृथ्वी छोड़कर चले जायेंगे। **भगीरथ के प्रति गङ्गा का वचन-** जब तक गुरु, आकाश, देवता एवं तुलसी की पृथ्वी पर पूजा होगी, समुद्र में बड़वानल रहेगा तब तक मैं तुम्हारे चले हुए मार्गों में पृथ्वी पर रहूँगी। उपर कथित स्थितियाँ कलियुगान्त में उत्पन्न होंगी। समग्र कलियुग में नहीं।

कलियुग का महात्म्य- धर्म से विरत तप होगा सत्य भी चला जाएगा, पृथ्वी अल्प फलादि उत्पन्न करेगी, मनुष्य कपटी हृदय तथा मूर्ख होंगे। राजा प्रजा के रक्षक नहीं अपितु अर्थ लोलुप होंगे। पुत्र पिता से वैर करेगा तथा दुर्जन सज्जनों को कष्ट देंगे॥

चौरासीलाख योनियों की व्यवस्था- नव लाख जल में, २० लाख पृथ्वी पर निवास करने वाली, ११ लाख कीड़े, दस लाख पक्षियों, ३० लाख पशु तथा ४ लाख मानव योनिया हैं। कलियुग में मनुष्य तथा हाथियों की आयु १२० वर्ष ५ दिन, महल तालाब, कुओं, नगर, वृक्ष, काक, सिंहों की आयु १०००। घर तथा ग्रामों की ५०००। पिङ्गलों की १५०। कछुआ एवं मगरमच्छ की १५०, व्याघ्रों की ६४, सूकर की १०, गायों की २५, मृग की २४, घोड़ो की ३२, भालू बन्दर एवं मण्डूको की ३० गर्दभ तथा ऊँटों की २५, पक्षियों की २०, बिल्ली तथा कुङ्कुटों की १२, कुकुट की ८, मूषक को ४, चिटियों की १ वर्ष मक्खियों की ३१ दिन परमायु है।

कलियुग में छः शक तथा स्थापकों के सौरवर्षमान- कलियुगारम्भ के पूर्व इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिर का ३०४४। उसके बाद उज्जयिनी में विक्रमादित्य का १३५। नर्मदा के दक्षिण में शालिवाहन का १८००० भविष्य में विजयाभिनन्दन का १००००। नागार्जुन का ४०००००, उसके बाद ८२१ वर्ष कलियुग के शेष रहने पर सम्भल क्षेत्र के गौड़ ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा, पृथ्वी पर क्षार सिन्धु के उत्तर में जम्बूद्वीप, दक्षिण में शाक, शाल्मल, कुश, क्रौंच, गोमेद, पुष्कर द्वीप स्थित है। इस जम्बूद्वीप में पृथ्वी भारतवर्ष, हरिवर्ष, भद्राश्व, केतुमाल, रम्यक, हिरण्मयवर्ष, कुरुवर्ष किंपुरुष इलावृत वर्ष से आवृत है। समग्र पृथ्वी लवण, क्षीर, दधि, घृत, इक्षुरस, मद्य, एवं स्वादुजल रूप सप्त समुद्रों से घिरी हुई है। इस भूमि के अन्तः पट में अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, एवं पाताल ये सात विभाग हैं। सम्प्रति ब्रह्मा की आधी आयु समाप्त हो गयी है, उत्तरार्द्ध में प्रथमवर्ष प्रथम दिन एवं सूर्योदय से १३ घटी २२ पल व्यतीत हो चुके हैं। इसी क्रम में वर्तमान सहस्त्रवर्षात्मक कल्प के स्वयंभू, स्वारोचित, उत्तम, तामस, रैवत एवं चाक्षुष ये छः मनु तथा वर्तमान वैवस्वत मनु के २७ महायुग तथा अठाइसवें महायुग के कृत- त्रेता तथा द्वापर नामक तीन पाद व्यतीत होकर वर्तमान कलियुग चल रहा है।

कल्पारम्भ से १९५५८८५१२६ वर्ष कलियुगादि से ५१२६ महाराजाधिराज विक्रमादित्य के शासनारूढ़काल से २०८२ तथा शकारम्भ से १९४७ वर्ष व्यतीत हो गये। इस वर्ष के आरम्भ से 'कालयुक्त' नामक संवत्सर रहेगा। **वैशाखकृष्ण २ मंगलवार** को ३१।१८ इष्ट पर (सायं ६।१३ बजे,१५ अप्रैल सन् २०२५ ई.) **'सिद्धार्थ'** नामक संवत्सर प्रारम्भ होगा। किन्तु संकल्पादि में वर्षपर्यन्त 'कालयुक्त' संवत्सर का ही विनियोग करना चाहिए।

'कालयुक्त' संवत्सर का फल- प्रजानां जायते रोगः कालयुक्ते विशेषतः। राजयुद्धं भवेद्घोरं प्रजानाशो वरानने॥ कालयुक्त संवत्सर में जनता को रोग, राजाओं में भयंकर युद्ध तथा प्रजा का नाश होता है। इसके बाद **'सिद्धार्थ'** नामक संवत्सर का फल- तोयपूर्णो भवेन्मेघो बहुसस्या वसुन्धरा। सुखिनः पार्थिवाः सर्वे सिद्धार्थे मृगसुन्दरी॥ सिद्धार्थ संवत्सर में मेघ जल से पूर्ण, पृथ्वी सस्ययुक्त होती है। अन्न का उत्पादन अधिक तथा राजा लोग सुखी रहते हैं। **राजासूर्यफल-** सूर्ये नृपे स्वल्पजलाढ्य मेघाः स्वल्पं धान्यमल्पफलाढ्यवृक्षाः। स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीडा चौराग्निबाधा निधनं नृपाणाम्॥ यदि राजा सूर्य हों तो अल्पवर्षा, अन्न तथा फल का उत्पादन कम, गायें अल्प दूध देने वाली, जनता को पीड़ा, चोर तथा अग्नि से भय तथा राजाओं का मरण होता है। **मन्त्रीसूर्यफल-** नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनार्घमहीतले। रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदे हि समागते॥ यदि मन्त्री सूर्य हों तो जनता को राजा, रोग तथा चोरों से भय, पृथ्वी पर प्रचुर अन्न का उत्पादन, रसपदार्थ सस्ते होते हैं। **सस्येशबुधफल-** जलधारा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्। द्विजगणः स्तुतिपाठकरः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने॥ यदि सस्येश बुध हों तो मेघ अधिक वर्षा करने वाला, जनता सुख-समृद्धि से युक्त, उपद्रव रहित, द्विजलोग शान्तिपूर्वक पूजा-पाठ करने में तत्पर रहते हैं। **दुर्गेशसूर्यफल-** नयविशेषकरस्तरणिस्तदा गतभया नराजपुरोगमाः। समधिकेन तदा नृपतोभ्यतः पथिषु संजनतां न भयं क्वचित्॥ यदि सूर्य दुर्गेश हों तो शासक लोग अधिक नीति सम्पन्न व्यवहार करने वाले, राजा-प्रजा निर्भय, शासन की सुव्यवस्था से पथिकों को कोई भय उत्पन्न नहीं होता है। **धनेशबुधफल-** द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविधवस्तुसहर्घनृपतौ तदा। द्विजवरा जपयज्ञसुसंयुताः कृषिविशेष विशेषितमानसाः॥ यदि धनेश बुध हों तो लोग विविध वस्तु संग्रह करें, विप्रवर्ग जप-यज्ञ में तल्लीन हों लोग कृषि पर विशेष ध्यान देते हैं। **रसेशशुक्रफल-** भृगुसुते रसनायकतां गते जनपदा जलतोषितमानसाः। सुखसुभिक्षप्रमोदवती धरा धरणिपा नरपालनतत्पराः॥ यदि रसेश शुक्र हों तो अच्छी वर्षा से जनता प्रसन्न, सुख-समृद्धि सम्पन्न तथा शासक लोग जनता के पालन में तत्पर रहते हैं। **धान्येशमंगलफल-** गोधूमसर्षपा मुद्गतिलमाषप्रवालकाः। महर्घं जायते घोरं भौमे धान्याधिपे सति॥ यदि मंगल धान्येश हों तो गेहूँ, सरसों, मूँग, तिल, उड़द तथा मूँग के भाव में महँगी होती है। **नीरसेशबुधफल-** चित्रवस्त्रादिकं चैव शंखचन्दन-पूर्वकम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि॥ यदि नीरसेश बुध हों तो चित्रवस्त्र, शंख तथा चन्दन का मूल्य महँगा होता है। **फलेशशनिफल-** यदि शनिः फलपः कलहो भवेज्जनितपुष्पणतसस्तरवस्सदा। द्विजवरा नरतस्करजं तदा जनपदा जनराशिसमाकुला॥ यदि शनि फलेश हों तो फल-पुष्प तथा वृक्षों के लिए आपसी विवाद, मनुष्यों तथा चोरों से द्विजाति को कष्ट, जनपदों में जनसमूह व्याकुल रहेगा। **मेघेशसूर्यफल-** रवौ मेघाधिपे जाते स्वल्पतोयप्रदा घनाः। स्वल्पं धान्यं भवेल्लोके भयं च भूतले सदा॥ यदि सूर्य मेघेश हों तो मेघ द्वारा अल्प वर्षा, स्वल्प अन्न का उत्पादन तथा संसार में भय व्याप्त रहता है। **नवमेघों के मध्य नील नामक मेघ का फल-** नीलः क्षिप्रं तु वर्षति॥ नील नामक मेघ में शीघ्र वर्षा होती है। **द्वादश मेघों के मध्य वासुकी नामक मेघ का फल-** वासुकी सस्यकर्ता च बहुवृष्टिकरः शुभः॥ वासुकी मेघ कृषि को देने वाला तथा अधिक वृष्टि कारक होता है। **रोहिणी निवास समुद्र में का फल-** समुद्रे तु महावृष्टिः॥ यदि रोहिणी निवास समुद्र में हो तो अधिक वर्षा होती है। **संवत्सरनिवास मालाकार के घर का फल-** सर्वसस्तुसमर्घ स्यान्मालाकारगृहेऽब्दपे। संवत्सर का निवास यदि मालाकार के घर हो तो सभी वस्तुएँ सस्ती होती हैं। **समयवाहन गज का फल-** गजवाहते वत्सरस्य सुभिक्षं च प्रजासुखम्। वर्षाकाले सुवृष्टिश्च सुखिनः सर्वजन्तवः॥ यदि समय का वाहन हाथी हो तो सुभिक्ष तथा जनता को सुख, वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा तथा सभी जीव सुखी रहते हैं। **वर्षा का आढ़क प्रमाण-** १००॥ जिसमें पर्वत पर ५०, समुद्र में २५, भूमि पर २५। **आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश,** आषाढ़कृष्ण १२ रविवार (२२.६.२०२५) २२।२८ इष्ट (दि.२।१२) पर भरणीनक्षत्र, सुकर्मयोग, तैतिलकरण में हो रहा है। **तिथिद्वादशीफल-** द्वादश्यां शुभदः प्रोक्तः॥ द्वादशी में आर्द्रा का प्रवेश हो तो शुभदायक होता है। **रविवारफल-** रौद्रेऽर्के भानुवारे स्यादवृष्टिः पशुनाशनम्॥ यदि रविवार को सूर्य का आर्द्रा में प्रवेश हो तो पशुओं का नाश होता है। **भरणीनक्षत्रफल-** भरण्यां शुभ प्रोक्तम्॥ भरणी में आर्द्रा का प्रवेश हो तो अशुभ होता है। **सुकर्मायोगफल-** सुकर्मनामयोगके वदीशभं रविर्व्रजेत्। तदा समस्त भूसुराः सुकर्मकर्तुमुद्यताः॥ सुकर्मा में आर्द्रा का प्रवेश हो तो सम्पूर्ण ब्राह्मण लोक अच्छे कामों के करने में उद्यत होते हैं। **वेलाफल-** मध्याह्नकाले कृषिनाशनाय धान्यं महर्घं च तृणस्य नाशः॥ दुपहरी में आर्द्रा का प्रवेश होने से खेती का नाश, धान्य महँगा तथा घास का नाश होता है।

।। संवत्सर शकाङ्काभ्यां सुभिक्षादि विचार।।

प्रभवादि से द्विगुणमित्यादि के अनुसार शेष (३) फल समता। त्रिघ्न संवत्सर इत्यादि सौमनस्य तुरंग के अनुसार शेष (०) फल दुर्भिक्ष। द्विघ्नसंवत्सर इत्यादि के अनुसार शेष (३) फल मध्यम। शक से शेष (१) फल मध्यम। सभी संक्रान्ति एवं मुहूर्तों का योग (३३०) तथा चन्द्रदर्शन (३६०)। अतः इस वर्ष समताकारक रहेगा। अष्टोत्तरीआययोग(९९) व्यययोग (९३)। अतः विन्ध्य से दक्षिण में रहने वाले लोग अर्थ एवं सुखी रहेंगे। विंशोत्तरी आययोग (१२३) व्यययोग (७५)। अतः विन्ध्योत्तरजन अर्थ एवं सुखी रहेंगे। इस वर्ष सोमवती (०) भौमवती अमावस्या (३) शुभवारयुक्त अमावस्या (५) वर्षविंशा (१२)। इस वर्ष समताकारक योग है। वर्षारम्भ में पाँच सेर के बराबर तथा इसके बाद सामान्य ह्रास-वृद्धि होगी।

।। अथ विंशोपक ।।

वर्षा	११	आलस्य	१३	पापप्रवृत्ति	७	चौरशम	१७	अतिवृष्टि	१५
धान्य	११	उद्यम	११	पुण्यत्व	७	अग्निभय	११	अनावृष्टि	३
तृण	५	शान्ति	१३	व्याधि	५	अग्निनाश	१३	स्वचक्र	५
शीत	१३	क्रोध	११	भैषज्य	५	विषभय	७	परचक्र	११
उष्ण	१७	दम्भ	३	उग्रता	११	विषनाश	११	नायकत्व	१७
वायु	१३	भेद	१	आचार	११	सेवकत्व	९	रत्न	११
वृद्धि	१५	मैत्री	१३	अनाचार	१९	स्वामित्व	११	वस्त्र	९
विनाश	१५	रसनिष्पत्ति	७	मरण	९	निजधन	७	घृत	९
विग्रह	११	फलनिष्पत्ति	११	जन्म	१५	परधन	७	तैल	५
क्षुधा	९	उत्साह	९	देशोपद्रव	५	शलभा	९	दुकूल	५
तृष्णा	७	उग्रप्रवृत्ति	१५	देशस्वा.	१५	शूल	१३	ऊर्णवस्त्र	१७
निद्रा	१३	सौम्यप्रवृत्ति	१७	चौरभय	१३	मूषक	११	सौक्ष्मव.	१३

वर्षलग्न ४।२४।२४।११

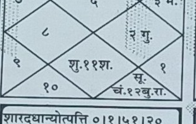

नवरोजप्रवेशाङ्ग ४।२५।५८।१३

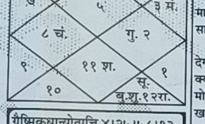

शारदधान्योत्पत्ति ०।१।५१।२०

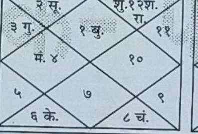

ग्रैष्मिकधान्योत्पत्ति ४।२५।५८।१३

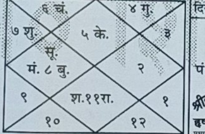

।। श्री संवत् २०८२ शक १९४७ वर्ष का ग्रहण विवरण ।।

श्री संवत् २०८२ में विश्व में चार ग्रहण लग रहे हैं। जिनमें दो चन्द्रग्रहण तथा दो सूर्यग्रहण होगा। किन्तु भारतवर्ष में दो चन्द्रग्रहण ही दिखाई देगा। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

१. चन्द्रग्रहण- भाद्रपदशुक्ल १५ रविवार (७ सितम्बर २०२५) को लगने वाला खग्रासचन्द्रग्रहण भारत में दृश्य होगा। यह ग्रहण अंटार्कटिका, पश्चिमी प्रशान्त महासागर, ऑस्ट्रेलिया, एशिया, हिन्द महासागर, यूरोप, पूर्वी अटलांटिक महासागर में दिखाई देगा।

चन्द्रास्त के समय ग्रहण का प्रारम्भ रूस के कुछ भाग और प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। चन्द्रोदय के समय ग्रहण का अन्त आइसलैंड के कुछ भाग, अफ्रीका के पश्चिमी भाग और अटलांटिक महासागर में दिखाई देगा।

यह खग्रास चन्द्रग्रहण भारत के सभी हिस्सों में दिखाई देगा। यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत में शुरु से अन्त तक देखा जा सकेगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि में ९ बजकर ५७ मिनट पर, मध्य रात्रि ११ बजकर ४१ मिनट पर तथा मोक्ष रात्रि में १ बजकर २७ मिनट पर होगा। ग्रहण का स्पर्श, मध्य, मोक्ष पूरे भारत में दिखाई देगा। ग्रासमान १.३६८

२. सूर्यग्रहण- आश्विनकृष्ण ३० रविवार (२१ सितम्बर २०२५) को लगने वाला खण्ड सूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। यह ग्रहण न्यूजीलैंड, पूर्वी मेलानेशिया, दक्षिणी पोलिनेशिया तथा पश्चिमी अन्टार्कटिका वाले क्षेत्र में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि में ११ बजे तथा मोक्ष रात्रि में ३ बजकर २४ मिनट पर होगा। ग्रासमान- ०.८५५

३. सूर्यग्रहण- फाल्गुनकृष्ण ३० मंगलवार (१७ फरवरी २०२६) को लगने वाला कंकणाकृति सूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। यह ग्रहण दक्षिण अर्जेन्टिना, चिली, दक्षिण अफ्रीका और अन्टार्कटिका में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में ३ बजकर २७ मिनट पर तथा मोक्ष रात्रि में ७ बजकर ५८ मिनट पर होगा। ग्रासमान- ०.९६२

४. चन्द्रग्रहण- फाल्गुनशुक्ल १५ मंगलवार (३ मार्च २०२६) को लगने वाला खग्रासचन्द्रग्रहण भारत में ग्रस्तोदित खण्डचन्द्रग्रहण के रुप में दृश्य होगा। यह ग्रहण पूर्वी एशिया, ऑस्ट्रेलिया, प्रशान्त महासागर और अमेरिका में दिखाई देगा।

चन्द्रास्त के समय ग्रहण का प्रारम्भ अर्जेन्टिना, पराग्वे के कुछ भाग, बोलीविया, ब्राजील, ग्रीनलैंड और उत्तरी अटलांटिक महासागर में दिखाई देगा।

चन्द्रोदय के समय ग्रहण का अन्त रूस, कजाकिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, श्रीलंका, मालदीव और हिन्द महासागर में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में ३ बजकर २० मिनट पर, मध्य सायं ५ बजकर ४ मिनट पर तथा मोक्ष सायं ६ बजकर ४७ मिनट पर होगा।

चन्द्रोदय के समय भारत के सभी स्थानों में इस ग्रहण का मोक्ष दिखाई देगा। इस ग्रहण का प्रारंम्भ भारत के किसी स्थान में दिखाई नहीं देगा, क्योंकि चन्द्रोदय होने से पूर्व ग्रहण प्रारम्भ हो जाएगा। खग्रास चन्द्रग्रहण का मोक्ष भारत के सुदूर पूर्वी भागों में दिखाई देगा। देश के बाकी हिस्सों में खण्डचन्द्रग्रहण का मोक्ष ही दिखाई देगा। ग्रासमान- १.१५५

(☞ भारत के प्रमुख स्थानों पर चन्द्रोदय का विवरण अन्तिम कॉलम में दिया गया है।)

।। श्री संवत् २०८२ शक १९४७ ।।

भाद्रपदशुक्ल १५ रविवार (दिनांक ७ सितम्बर २०२५ ई०)
काशी में खग्रास चन्द्रग्रहण

काशी में		घं. मि. (I.S.T)
स्पर्श	रात्रि	९।५७
मध्य	रात्रि	११।४१
मोक्ष	रात्रि	१।२७

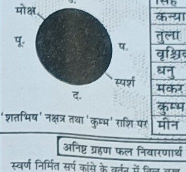

'शतभिष' नक्षत्र तथा 'कुम्भ' राशि पर

ग्रहणफल	
मेष	लाभ
वृष	सुख
मिथुन	माननाश
कर्क	मृत्युतुल्य कष्ट
सिंह	स्त्रीपीड़ा
कन्या	सौख्य
तुला	चिन्ता
वृश्चिक	व्यथा
धनु	श्री
मकर	क्षति
कुम्भ	घात
मीन	हानि

अनिष्ट ग्रहण फल निवारणार्थ दान

स्वर्ण निर्मित सर्प कांसे के वर्तन में तिल वस्त्र, एवं दक्षिणा के साथ श्रोत्रिय ब्राह्मण को दान करना चाहिए अथवा अपनी शक्ति अनुसार सोने या चाँदी का ग्रह बिम्ब बनाकर ग्रहण जनित दुष्ट फल निवारण हेतु दान करना चाहिए। मन्त्र- तमोमयमहाभीम सोम सूर्य विमर्दन हेमनाग प्रदानेन मम शान्तिप्रदो भव। विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत दानेनानेन नागस्य रक्षमां वेधनाद्भयात॥ विशेषतः ग्रहण जनित दुष्ट फल निवारण के लिए गौ, भूमि तथा स्वर्ण का दान दैवज्ञ के लिए करना चाहिए। जिस राशि के लिए अरिष्ट हो उनहें ग्रहण नहीं देखना चाहिए। सूर्य ग्रहण में गंगा, पुण्यप्रयाग, पुष्कर अथवा कुरुक्षेत्र में स्नान करना महापुण्यदायी होता है। ग्रहण के समय भोजन में विशेष- रविवार के दिन सूर्यसंक्रान्ति एवं चन्द्र-सूर्य ग्रहण में रविवार के दिन पारण एवं उपवास पुत्रवान गृहस्थ को नहीं करना चाहिए।

ग्रहण सूतक- धर्मशास्त्रों के अनुसार चन्द्रग्रहण में ग्रहण से पूर्व ९ घंटे और सूर्यग्रहण में १२ घंटे पहले ग्रहण का सूतक होता है। इसमें बालक, वृद्ध और रोगी को छोड़कर अन्य लोगों के लिए भोजन निषिद्ध है।

"सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामास्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना।।"

श्रद्धालु धार्मिक जनता को धर्म शास्त्रीय वचन के अनुसार भोजन निवृत्ति के साथ-साथ धार्मिक कृत्य श्राद्ध दान आदि भी करना चाहिए। ग्रहण में जपा गया मंत्र सिद्धिप्रद होता है। यह अनुभूत है।

।। श्री संवत् २०८२ शक १९४७ ।।

फाल्गुनशुक्ल १५ मंगलवार (दिनांक ३ मार्च २०२६ ई०)
काशी में ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

काशी में		घं. मि. (I.S.T)
चन्द्रोदय	सायं	५।५९
मोक्ष	सायं	६।४७

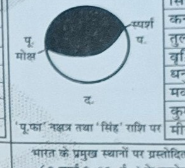

'पू.फा' नक्षत्र तथा 'सिंह' राशि पर

ग्रहणफल	
मेष	चिन्ता
वृष	व्यथा
मिथुन	श्री
कर्क	क्षति
सिंह	घात
कन्या	हानि
तुला	लाभ
वृश्चिक	सुख
धनु	माननाश
मकर	मृत्युतुल्य कष्ट
कुम्भ	स्त्री पीड़ा
मीन	सौख्य

भारत के प्रमुख स्थानों पर ग्रस्तोदित खण्ड चन्द्रग्रहण (३ मार्च २०२६ ई०) के चन्द्रोदय का विवरण।

भारत के प्रमुख स्थान	चन्द्रोदय घं.मि.(I.S.T)	भारत के प्रमुख स्थान	चन्द्रोदय घं.मि.(I.S.T)
अगरतला*	सा.५।२७	कोलकाता	सा.५।३९
अहमदाबाद	सा.६।४४	लखनऊ	सा.६।७
इलाहाबाद	सा.६।५	मुम्बई	सा.६।४५
अमृतसर	सा.६।३०	मुजफ्फरपुर	सा.५।५०
बैंगलोर	सा.६।२८	नागपुर	सा.६।१८
भोपाल	सा.६।२४	नासिक	सा.६।४१
चण्डीगढ़	सा.६।१९	पटना	सा.५।५१
चेन्नई	सा.६।१७	पुणे	सा.६।४१
कटक	सा.५।५०	सिलचर*	सा.५।२०
देहरादून	सा.६।१७	पुरी	सा.५।५१
दिल्ली	सा.६।२२	रायपुर	सा.६।७
डिब्रूगढ़*	सा.५।९	राँची	सा.५।५१
गया	सा.५।५२	कोहिमा*	सा.५।१३
गुवाहाटी*	सा.५।२४	शिमला	सा.६।२१
हरिद्वार	सा.६।१७	उदयपुर	सा.६।३९
जालंधर	सा.६।२५	सिबसागर*	सा.५।११
भागलपुर	सा.५।४४	उज्जैन	सा.६।३१
भुवनेश्वर	सा.५।५१	वडोदरा	सा.६।४२
दार्जिलिंग	सा.५।३७	आइजॉल*	सा.५।२०
हजारीबाग	सा.५।५१	इटानगर*	सा.५।१५
हैदराबाद	सा.६।२२	जयपुर	सा.६।२९
जम्मू	सा.६।२९	पोर्टब्लेयर*	सा.५।२७
सिलीगुड़ी	सा.५।३७	शिलांग*	सा.५।२३
इम्फाल*	सा.५।१५	तमिलांग*	सा.५।१५

(•) चिह्नित स्थानों पर खग्रास चन्द्रग्रहण का मोक्ष भी दृश्य होगा।

☞ ग्रहण गणित तथा उदयास्त खगोल विज्ञान केन्द्र कोलकाता के सौजन्य से प्राप्त।

आवश्यकसूचना

मुखपृष्ठ पर 3D होलोग्राम (स्टीकर) देखकर ही पञ्चाङ्ग खरीदें जिस पर पं.शिवमूर्तिउपाध्याय का नाम अंकित है। पं.शिवमूर्ति उपाध्याय द्वारा सम्पादित हृषीकेश पञ्चाङ्ग की लोकप्रियता को देखते हुए कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा इसकी नकल करके जनमानस को धोखा देने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। अतः आदरणीय पाठक व विद्वतजनों से अनुरोध है कि पञ्चाङ्ग क्रय करनें से पूर्व मुख पृष्ठ पर 3D होलोग्राम (स्टीकर) पर अंकित पं० शिवमूर्ति उपाध्याय का नाम व व्यापारिक चिन्ह 'ॐ' देखकर ही पञ्चाङ्ग खरीदें और धोखाधड़ी से बचें।

श्रीकाशी विश्वनाथ पञ्चाङ्ग ॐ
हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग
प्रधान सम्पादक- पं०शिवमूर्ति उपाध्याय

संवत्सरफल

इस वर्ष के प्रारम्भ में '**कालयुक्त**' नामक संवत्सर रहेगा। वैशाखकृष्ण २ मंगलवार (१५अप्रैल २०२५) को ३१।१८ इष्ट (सा.६।१३) पर '**सिद्धार्थ**' नामक संवत्सर का प्रवेश होगा,किन्तु वर्षपर्यन्त संकल्पादि में '**कालयुक्त**' संवत्सर का ही विनियोग करना चाहिए। इस वर्ष राजा '**सूर्य**' तथा मन्त्री भी सूर्य ही हैं। अतः राज सत्ता के पदाधिकारियों में परस्पर संबंध अनुकूल रहेगा। **जगल्लग्न के** अनुसार लग्न में नीचस्थ बुध के साथ राहु के संयोग से पूर्वोत्तर भागो में प्राकृतिक विपत्तियां पैदा होकर जन समुदाय में वृद्धि कारक है। रुस,जापान,चीन,फिलीपींस द्वीपसमूह,पूर्वीभारत एवं ऑस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में तूफान,भूकम्प,पर्वत शृंखलाओं के विघटन से जनधन की हानि होगी। विश्व व्यापार में परिवर्तन बनकर सुधार होगा। भारत का पश्चिमी देशों से व्यापार बढ़ेगा।आयात-निर्यात का केन्द्र बनकर भारत की ख्याति विश्व में बढ़ेगी। महँगाई की समस्यायें उभरी रहेंगी। धनेश मंगल नीच राशि में है तथा इस पर राहु की दृष्टि है अतः कुछ राष्ट्रों की आन्तरिक स्थिति खराब होगी जिसके फलस्वरुप जनधन की भारी हानि हो सकती है। तृतीयेश शुक्र व्यय भाव में शनि के साथ हैं। अतः भारत को अपने पड़ोसी देशों से सावधान रहना पड़ेगा। भारतीय सीमाओं पर पड़ोसी देशों के अतिक्रमण की घटनायें घटित हो सकती हैं। **वर्षलग्न** के विचार से लग्नेश अष्टमभाव में राहु के साथ है इसलिए विश्व में श्रमिक तथा कृषक वर्ग के आन्दोलन की सम्भावना रहेगी। विश्व में रक्तपात जनित नरसंहार का परिणाम बढ़ेगा। नववर्ष प्रवेश सिंह लग्न में हो रहा है अष्टमस्थ सूर्य, चन्द्र, बुध, राहु एवं सप्तमस्थ शुक्र शनि के योग से उग्रवाद व आतंकवादी ताकतें विश्व के हर भूभाग पर फैलेंगी। वाहन तथा यान दुर्घटना विश्व में बढ़ेगी। पश्चिमी देशों तथा भारत के पड़ोसी देशों में युद्ध के बादल मडरायेंगे। सप्तमेश सप्तमभाव में है इसके प्रभाव से विश्व में महिलाओं पर अत्याचार की घटनायें बढ़ेंगी। **आर्द्रा प्रवेश** के अनुसार इसका लग्न तुला है सूर्य के पीछे शुक्र है ग्रह स्थिति के अनुसार भारत के पश्चिमी एवं पूर्वी भागों के अधिकांश क्षेत्रों में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। भीषण गर्मी तथा गर्म हवायें चलेंगी। जलीय ग्रह शुक्र मेषराशि में होने से मानसून प्रभावित रहेगा। वर्षाकाल में दिल्ली सहित उसके पड़ोसी राज्यों में व्यापक वर्षा के संकेत हैं। कहीं बाढ़,भूस्खलन आदि प्रकोप से कृषि जनधन की हानि होने के योग हैं। **शारदीयधान्य** के विचार से सूर्य के पीछे बुध शुक्र होने से सूर्य पर शनि की दृष्टि होने से शारदीयसस्य की उत्पत्ति कम होगी। कुछ भागों में प्राकृतिक प्रकोपों तथा रोगों से कृषि की कुछ हानि होगी। किन्तु धान्य की कुल निष्पत्ति पर्याप्त मात्रा में होगी। **ग्रैष्मिकधान्य** के विचार से इसका लग्न सिंह है। सूर्य के साथ मंगल बुध गुरु उच्चराशि में होने से ग्रीष्मकालिक अनाज की उत्पत्ति पर्याप्त होगी। वृश्चिकराशि के सूर्य से द्वादश शुक्र एवं सूर्य मंगल केन्द्र में होने से अत्यधिक धान्योत्पत्ति होगी। चना, मसूर, गेहूँ की फसल उत्तम होगी। कुछ क्षेत्रों में पाला से नुकसान हो सकता है।

मेषादि १२ राशियों का वार्षिक फल

मेष-मेषराशि वालों के लिए यह वर्ष संघर्षपूर्ण रहेगा। **शनि की साढ़ेसाती** के कारण स्वास्थ्य सम्बधित परेशानी बनी रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा। घरेलु समस्याओं को लेकर परेशानियाँ बढ़ेगी। आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वाहन चलाने में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से सुधार आयेगा। शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए। दाम्पत्य जीवन में मतभेद की स्थिति बनी रहेगी। सरकारी कर्मचारियों को व्यस्तता रहेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। सन्तान से मनमुटाव रहेगा। निरर्थक दौड़-धूप रहेगी। सगे सम्बन्धियों से सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग को मेहनत से सफलता मिलेगी।धीमी गति से भाग्य का उदय होगा। हनुमान चालीसा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। २,३,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

वृष-वृषराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष परेशानी हो सकती है। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति विशेष सचेत रहना चाहिए। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। जमा पूँजी के धन में वृद्धि होगी। वाहन खरीदने की योजना बनेगी। सम्पत्ति के सम्बन्ध में पारिवारिक विवाद सम्भव है। व्यापार से सामान्य लाभ होगा। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। दाम्पत्य जीवन में कटुता आयेगी। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। वर्ष के उत्तरार्ध में सन्तान के लिए अच्छी खबर आयेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। घर में माँगलिक कृत्य होंगे। २,४,७ मास कष्टदायक रहेंगे।

मिथुन-मिथुनराशि वालों के लिये यह वर्ष उन्नतिकारक होगा। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन का आवागमन बना रहेगा। अनावश्यक खर्च अधिक होंगे। भूमि-मकान-वाहन इत्यादि के क्रय-विक्रय का योग बनेगा। सन्तान से सुख मिलेगा। सन्तान की उन्नति होगी। शत्रु वर्ग से सावधानी रखनी चाहिए। दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। व्यवसाय में लाभ होगा। नौकरी में पदोन्नति का योग है। विद्यार्थी वर्ग को मेहनत से अच्छी सफलता मिलेगी। किसी नये कार्य का श्रीगणेश होगा। माता-पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगी। १,५.९ मास कष्टदायक रहेंगे।

कर्क-कर्कराशि वालों के लिए यह वर्ष शुभदायक रहेगा। वर्ष में कई उन्नतिकारक योग बनेंगे। स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में प्रयासों से सफलता मिलेगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। नवींन सम्पत्ति खरीदने का योग सफल होगा। व्यापार में लाभ होगा। नौकरी वालों की पदोन्नति का योग है। सन्तान से सुख प्राप्त होगा। माता के लिए यह वर्ष कष्टदायक रहेगा। किसी नये कार्य का श्रीगणेश होगा।परिवार में माँगलिक कृत्य होंगे। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। माता-पिता को तीर्थ यात्रा का अवसर प्राप्त होगा। २,८,१०मास कष्टदायक रहेंगे।

सिंह-सिंहराशि वालों के लिये यह वर्ष कष्टदायक रहेगा। मई २०२५ से **शनि की ढैया** प्रारम्भ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कई परेशानियाँ रहेंगी। सम्पत्ति सम्बधित विवाद हो सकता है। जल्दबाजी में निर्णय लेने से हानि हो सकती है। वाहन चलानें में सावधानी बरतनी चाहिए। मित्रों का सहयोग बना रहेगा। मानसिक कष्ट से निरर्थक दौड़-धूप हो सकती है। आयात-निर्यात के क्षेत्र में संलग्न व्यक्तियों को नुकसान हो सकता है। सरकारी क्षेत्र में कार्यरत लोगों को संघर्ष करना पड़ेगा। कोर्ट-कचहरी के क्षेत्र में कार्य विस्तार हो सकता है। सन्तान से सुख प्राप्त होगा। आय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को मेहनत से अधिक सफलता मिलेगी। शेयर बाजार में नुकसान सम्भव है। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। २,४,८ मास कष्टदायक रहेंगे।

कन्या- कन्याराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्यों में संघर्ष बढ़ सकता है। उदर-अस्थि रोगों से सावधान रहना चाहिए। आर्थिक मामलों में अच्छी सफलता मिलेगी। धन-बचत पर ध्यान देना चाहिए। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। सम्पत्ति खरीदनें का योग बनेगा। व्यवसाय में परिश्रम करनें से भी सफलता नहीं मिलेगी। सहयोगी तथा मित्रों से मनमुटाव होगा। माता-पिता का स्वास्थ्य सुखमय रहेगा। सन्तान की उन्नति होगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। राजनीतिक व्यक्तियों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। १,९,१२ मास कष्टदायक रहेंगे।

तुला-तुलाराशि वालों के लिए यह वर्ष मिश्रित फल देने वाला रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। व्यापार में मंदी का रुख रहेगा। सरकारी कर्मचारियों को व्यस्तता बढ़ेगी। इष्ट मित्रों के सहयोग से कार्यक्षेत्र की परेशानियाँ कम होंगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। वाहन-मकान इत्यादि सम्पत्ति को क्रय करने की योजना बनेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन में मतभेद उत्पन्न होगा।आपसी विवाद को कम करना चाहिए। जल-अग्नि से सावधान रहना चाहिए। सर्राफा व्यापारियों को मंदी का सामना करना पड़ेगा। विद्यार्थीगण को सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा वालों का स्थानान्तरण सम्भव है। ४,६,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

वृश्चिक-वृश्चिकराशि वालों के लिए यह वर्ष अधिकांश रुप से सकारात्मक रहेगा। रुके हुए कार्य बनने की सम्भावना है। शत्रु पक्ष से प्रतिस्पर्धा हो सकती है। इष्ट मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। सम्पत्ति की खरीद-बिक्री का समय अच्छा है। आर्थिक स्थिति में सुधार सम्भव है। व्यवसाय तथा कृषि के क्षेत्र में लाभ होगा। घर में माँगलिक कृत्य सम्भव है। नौकरी में पदोन्नति तथा व्यापार में सामान्य लाभ होगा। घरेलु समस्याओं का हल निकलेगा। सन्तान को पीड़ा होगी। किसी विशिष्ट व्यक्ति का निधन सम्भव है। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। विद्यार्थीयों को मेहनत करने से सफलता प्राप्त होगी। ८,१०,१२ मास कष्टदायक रहेंगे।

धनु-धनुराशि वालों के लिए के लिए मई से **शनि की ढैया** का प्रारम्भ होगा। वर्ष में शनि के आगे पीछे होने से अच्छा तथा खराब फल दोनो होगा। कार्य में व्यवधान उत्पन्न होगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव रहेगा। सम्पत्ति क्रय-विक्रय के कार्यों में सावधानी बरतनी चाहिए। कोई निर्णय लेने से पहले जल्दबाजी करना नुकसानदायक हो सकता है। अनावश्यक खर्च बढ़ने की सम्भावना है। मानसिक तनाव रहेगा। व्यापार क्षेत्र में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। क्रोध पर नियन्त्रण रखना चाहिए। वाहन चलाने में सावधानी बरतनी चाहिए। किसी दूरगामी यात्रा का अवसर मिलेगा। सन्तान सुख की प्राप्ति होगी। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। दाम्पत्य जीवन में सामनजस्य की कमी रहेगी। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। ५,७,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

मकर- मकरराशि वालों के लिए यह वर्ष उतार-चढ़ाव वाला रहेगा। **शनि की साढ़ेसाती** का प्रभाव आगे पीछे होते हुए जनवरी २०२६ तक रहेगा। स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। मानसिक तनाव से पीड़ा होगी। आर्थिक लेन-देन में सावधानी बरतनी चाहिए। धन की हानि सम्भव है। कार्य क्षेत्र में विघ्न बाधायें आयेंगी। व्यवसाय क्षेत्र में कार्यरत लोगों को सफलता मिलेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। सन्तान सम्बन्धी परेशानी का हल निकलेगा। किसी दूरस्थ यात्रा की योजना बनेगी। वाहन चलाने में सावधानी बरतनी चाहिए। मुकदमे के कार्यों में परेशानी बढ़ेगी। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। ३,४,८ मास कष्टदायक रहेंगे।

कुम्भ-कुम्भराशि वालों के लिए यह वर्ष **शनि की साढ़ेसाती** के प्रभाव वाला रहेगा। शनि की स्वयं राशि होने से ज्यादा प्रभावी नहीं होगा। यह वर्ष विशेष फलदायक ही रहेगा। अधिक संघर्ष एवं परिश्रम करना पड़ेगा। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्ता बढ़ सकती है। मानसिक तनाव से बचना चाहिए। व्यर्थ का विवाद हो सकता है। जमा पूँजी का सही जगह निवेश करना चाहिए। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। आजीविका क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को मंदी का सामना करना पड़ेगा। नौकरी में पदोन्नति का योग है। विद्यार्थीयों को सफलता मिलेगी। सन्तान को लाभ होगा। व्यापार में बढ़ोत्तरी होगी। किसी नये कार्य का श्रीगणेश होगा। २,३,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

मीन-मीनराशि वालों के लिए इस वर्ष **शनि की साढ़ेसाती** का प्रभाव उग्र रहेगा। कार्य बनते हुए बिगड़ जायेंगे। मानसिक तनाव बढ़ेगा। कोर्ट-कचहरी के कार्यों में देर हो सकती है। नये विरोधियों से विवाद हो सकता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी बढ़ेगी। अस्थि एवं उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। आर्थिक क्षेत्र में किये गये प्रयासो में कम सफलता मिलेगी। लेन-देन के मामलों में सावधानी बरतनी चाहिए। क्रय-विक्रय या निर्माण का योग बनेगा। आजीविका क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को मेहनत करने पर सफलता मिलेगी। नौकरी पेशा वालों का स्थानान्तरण का योग बनेगा। दाम्पत्य जीवन में परस्पर तालमेल बना रहेगा। सन्तान पक्ष से निराशा प्राप्त होगी। विद्यार्थीयों को सफलता मिलेगी। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। १,७,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

चैत्रादि मासफल

चैत्रशुक्ल से वैशाखकृष्ण तक-चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। साग-तरकारी के मूल्यों में तेजी का रुख रहेगा। सर्राफा बाजार में भी तेजी कर रुख रहेगा। किसी बिमारी और शत्रु राष्ट्र से देश को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। मंगल पर नीचस्थ राहु की पंचम दृष्टि है विश्व के कुछ राष्ट्रों से परेशानी का वातावरण किसी विशेष परिस्थिति में युद्ध का कारण बनेगा। तूफान व चक्रवात से भयंकर हानि सम्भव है। चीनी-गुड़ तथा सूती वस्त्रों में तेजी का रुख रहेगा। कहीं-कहीं आँधी के साथ-साथ सामान्य वर्षा भी होगी। यत्र-तत्र उपलवृष्टि के कारण कृषि की हानि होगी। कागज के व्यवसाय में उत्तरोत्तर तेजी आयेगी। शेयर बाजार में भी तेजी का रुख रहेगा। **चैत्रशुक्ल** ४,११,१५ तथा **वैशाखकृष्ण** ३,९,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

वैशाखशुक्ल से ज्येष्ठकृष्ण तक-चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। साग-तरकारी के मूल्यों में आकस्मिक तेजी आ सकती है। फल तथा मेवे के मूल्यों में घटवढ़ी बनी रहेगी। गोरस के मूल्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। यत्र-तत्र पेयजल की समस्यायें उपस्थित होंगी। मार्ग दुर्घटनाओं में बढ़ोत्तरी होगी। शेयर बाजारों में अस्थिरता होकर गिरावट आयेगी। सर्राफा बाजार में मंदी का रुख रहेगा। सूर्य पर शनि की दृष्टि से पश्चिमी राष्ट्रों में अशान्ति आयेगी। **वैशाखशुक्ल** २,४,८,१० तथा **ज्येष्ठकृष्ण** २,३,९ तथा ३० उपद्रवकारी रहेंगे।

ज्येष्ठशुक्ल से आषाढ़कृष्ण तक-चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। इस मास में पाँच बुधवार है। मंगल-राहु का समसप्तक योग से कुछ राष्ट्रों में उपद्रव का वातावरण बनेगा। वाहन दुर्घटना तथा भौमान्तरिक्ष उत्पातों की अधिकता बढ़ेगी। गृह उपकरण के सामान महँगे होंगे। देश की नई-नई नीतियों से आम जनता को लाभ मिलेगा। गेहूँ,चना, जौ, चावल आदि में तेजी का रुख रहेगा। फल-तरकारी में घटबढ़ी रहेगी। रेशमी वस्त्रों में भी तेजी आयेगी। वाहन दुर्घटना,आँधी-तूफान की अधिकता तथा गर्मी के कारण जन सामान्य को कष्ट होगा। **ज्येष्ठशुक्ल** ३,७,८,१५ तथा **आषाढ़कृष्ण** २,८,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

आषाढ़शुक्ल से श्रावणकृष्ण तक-चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्यों में सस्ती का रुख रहेगा। फलों और तरकारी के मूल्यों में महँगी बनी रहेगी। रस पदार्थ महँगे होंगे। यत्र-तत्र वर्षा होगी। विषैले जीवों की उत्पत्ति बढ़ेगी। अग्निकाण्ड की घटनायें घटित होंगी। गोरस का उत्पादन बढ़ेगा,किन्तु इसके मूल्य में तेजी बनी रहेगी। सर्राफा बाजार में सस्ती का रुख रहेगा। इस मास में पाँच गुरुवार होने से पश्चिमी राष्ट्रों में युद्धोन्माद एवं शासकों में तनाव बढ़ेगा। राष्ट्रिय सीमाओं का उल्लंघन हो सकता है। मंगल-शनि के षडाष्टकयोग से भीषण दुर्घना तथा जन-धन की हानि होगी। **आषाढ़शुक्ल** ३,५,१०,११,१५ तथा **श्रावणकृष्ण** ३,७,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

श्रावणशुक्ल से भाद्रपदकृष्ण तक-चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। इमारती सामानों के मूल्यों में तेजी आयेगी। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। रेशमी वस्त्रों में तेजी का रुख रहेगा। कागज के मूल्यों में मंदी आयेगी। फल तथा तरकारी के मूल्यों में महँगी का रुख रहेगा। खाद्य तेलों में भी महँगी का रुख रहेगा। चावल-चीनी आदि के मूल्य सामान्य रहेंगे। शनिवारीय अमावस्या से उत्तरार्ध में सोना-चाँदी और लोहा के समानों में तेजी का रुख रहेगा। दक्षिण-पूर्वी प्रान्तों में हवा के साथ अतिवर्षा होगी। **श्रावणशुक्ल** ३,७,९,१५तथा **भाद्रपदकृष्ण** १,३,९ तथा ३० उपद्रवकारी रहेंगे।

भाद्रपदशुक्ल से आश्विनकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। दलहन तथा तेलहन के भाव में तेजी का रुख रहेगा। फल तथा तरकारी के भाव में घटबढ़ी बनी रहेगी। खाद्य तेलों में महँगी का रुख रहेगा। वर्षा की अधिकता से यत्र-तत्र कृषि की हानि होगी।पूर्वोत्तर में बाढ़ की अधिकता से जनधन की हानि होगी। इमारती सामान महँगे होंगे। सीमेन्ट के मूल्य में थोड़ी सस्ती दीख पड़ेगी। शेयर के भाव ऊँचे होंगे। वर्षा जनित- *(शेष पृष्ठ ४० पर)*

आवश्यक सूचना

पाठकों को सूचित किया जाता है कि पञ्चाङ्ग संवत् २००१ से २०८० तक की पुराने पञ्चाङ्गो की प्रतियाँ दस-दस वर्ष की एक जिल्द में प्रकाशित हो चुकी हैं। कृपया संपर्क करें-

विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन-
बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी।
मो.: ०७३९०९९३३९७

नोट- *पाठकों को किसी एक वर्ष की प्रति अलग से दे पाना सम्भव नहीं है।*

श्रद्धेयविद्वज्जन,

पं शिवमूर्ति उपाध्याय द्वारा सम्पादित 'हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग' देश का सर्वमान्य पञ्चाङ्ग है। इसकी लोकप्रियता से हतोत्साहित होकर कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा इसकी नकल करके जनमानस को धोखा दिये जाने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। इनमें कुछ **भ्रष्ट व्यापारि** मात्र भी सम्मिलित हैं।

प्रिय पाठक बन्धु इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि 'पं हृषीकेशोपाध्याय द्वारा प्रवर्तित एवं पं श्याममूर्ति उपाध्याय द्वारा सम्पादित' हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग कई वर्षो से अपने पुराने स्थान विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन, बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हो रहा है। जिसका सम्पादन पं शिवमूर्ति उपाध्याय द्वारा किया जा रहा है। असली **हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग** लेते समय श्रीकाशीविश्वनाथ का 'ॐ' चिह्न तथा प्रधान सम्पादक पं शिवमूर्ति उपाध्याय का नाम देखकर ही पञ्चाङ्ग खरीदें।

श्रीकाशी विश्वनाथ पञ्चाङ्ग ®
ॐ
हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग
प्रधान सम्पादक- पं० शिवमूर्ति उपाध्याय

कृपया असली **हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग** लेते समय मुख पृष्ठ पर श्री गणेश जी के चित्र के नीचे प्रधान सम्पादक पं शिवमूर्ति उपाध्याय का नाम देखकर ही असली पञ्चाङ्ग खरीदें और धोखाधड़ी से बचें।

श्रीकाशीविश्वनाथ पञ्चाङ्ग (हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग) — प्रधानसम्पादक, पं शिवमूर्ति उपाध्याय

पञ्चाङ्गस्थ विषय से सम्बन्धित समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क कर सकते हैं। पत्र व्यवहार का पता **विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन** बी. २।९५ सी., भदैनी, वाराणसी (उ०प्र०)। मो०- ०७३९०९९३३९७

चैत्रादि मासों की मन्वादि तिथियाँ

चैत्र शुक्ल	ज्येष्ठ शुक्ल	आषाढ़ शुक्ल	भाद्र शुक्ल	आश्विन शुक्ल	कार्त्तिक शुक्ल	पौष शुक्ल	माघ शुक्ल	फाल्गुन शुक्ल	श्रावण कृष्ण
३।१५	१५	१०।१५	३	९	१२।१५	११	७	१५	८।३०

युगादि तिथियाँ

कार्त्तिकशुक्ल ९	वैशाखशुक्ल ३	माघकृष्ण ३०	भाद्र कृष्ण १३
सतयुगादि	त्रेतायुगादि	द्वापरयुगादि	कलियुगादि

☞ मन्वादि एवं युगादि तिथियों में विद्याध्ययन का निषेध है।

सामान्य सुभिक्षादि ज्ञान

प्रभवादि वर्तमान संवत्सर को द्विगुणित कर तीन घटा दें तथा सात का भाग दें, एकादि शेष रहने पर निम्न फल होता है- १ दुर्भिक्ष, २ सुभिक्ष, ३ सम, ४ दुर्भिक्ष, ५ सुभिक्ष, ६ सम, ० पीड़ा।

कल्पादि- चैत्रशुक्ल१, वैशाखशुक्ल ३, कार्तिकशुक्ल ७, मार्गशीर्षशुक्ल ९, माघशुक्ल १३, चैत्रकृष्ण ३।

भगवान के दस अवतारों का काल- मत्स्य- चैत्रशुक्ल ३ (अपराह्न में), **राम-** चैत्रशुक्ल ९ (मध्याह्न में), **परशुराम-** वैशाखशुक्ल ३ (प्रदोष में), **नृसिंह-** वैशाखशुक्ल १४ (सायं), **कूर्म-** वैशाखशुक्ल १५ (मध्याह्न में), **कल्कि-** श्रावणशुक्ल ६ (सायं), **कृष्ण-** भाद्रपद-कृष्ण ८ (निशीथ में), **वामन-** भाद्रपदशुक्ल १२ (मध्याह्न में), **बौद्ध-** आश्विनशुक्ल १० (सायं), **वाराह-** भाद्रपदशुक्ल ३ (अपराह्न में)।

वर्ष के शुभाशुभ का ज्ञान

प्रश्नकर्ता के नामाक्षर के साथ तिथि, वार, नक्षत्र एवं संवत्सर की संख्या जोड़कर तीन से भाग दें। एक शेष से क्लेश, दो से समता एवं तीन से सुख होता है।

,चरणी विचार

गृहस्वामी के हाथ से चरणी की ल., चौ. जो हो उसका योग कर आठ से भाग दें एकादि शेष से क्रमशः निम्न फल होता है- पशुहानि, पशुरोग, पशुलाभ, पशुक्षय, पशुनाश, पशुवृद्धि, पशुभेद तथा बहुपशु।

जन्मकुण्डली से प्रतिवर्ष प्रतिभाव विचार

जन्माङ्ग के लग्नादि द्वादशभावों को बारह वर्षों के रूप में जानना चाहिए। पुनः दुसरी आवृति में १३ से २४, तीसरी में २५ से ३६ आदि के क्रम से दस आवृति में मनुष्य की सम्पूर्ण आयु अर्थात् १२० वर्ष की कल्पना कर लेनी चाहिए।

फल- वर्ष संज्ञक भावों से त्रिकोण (१,५,९) में यदि शुभग्रह स्थित हों तो उस वर्ष में समस्त दैहिक सुखों की प्राप्ति होती है। लग्न की ही भाँति उस वर्ष के लग्न से धनादि द्वादशभाव भी कल्पित होते हैं। अतः धनादि जिस भाव से त्रिकोण में शुभग्रह स्थित होते है उस वर्ष, उस भाव जनित शुभफल की प्राप्ति होती है। यदि पापग्रह उन त्रिकोणों में बलवान होकर स्थित हों तो भाव के नाशक तथा निर्बल हों तो सुखकारक होते हैं। शुभग्रहों से शुभता तथा पापग्रहों से अशुभता प्राप्त होती है। पाप एवं शुभ दोनों प्रकार के ग्रहों की स्थिति से मिश्रफल प्राप्त होता है। परन्तु इसका विचार ग्रहों का बलाबल देखकर ही करना चाहिए।

जन्मलग्न का निश्चय एवं उसके द्वारा प्रसव कालिक कुछ पदार्थों का ज्ञान

माता के वस्त्र एवं भोजन का ज्ञान

लग्न के नवमांशेश के अनुसार माता के वस्त्र तथा चतुर्थेश से प्रसव पूर्व किये गये भोजन का विचार करना चाहिए।।१।। कठिनं, मधुरं, रूक्षं, लेह्यपेयादिकं मृदुः।। चोष्याम्ल्गुडं दुग्धं विचित्रं स्वल्पभोजनम्।। वटकाद्यं बहुरसं पेयादि मधुरं हितम्।। क्रोधादिना कदन्नं स्यात्सूर्यादिः श्लोकपादतः।।३।। इति।।

सूर्य लग्न के द्वादशांश द्वारा दीप ज्ञान

गर्ग- लग्न के प्रथम भाव में सूर्य हो तो पूर्व, २,३ में हो तो ईशानकोण, ४ भाव में हो तो उत्तर ५,६ में हो तो वायव्यकोण, ७ में हो तो पश्चिम, ८,९ में हो तो नैऋत्यकोण १० में हो तो दक्षिण तथा ११,१२ भाव में हो तो अग्निकोण में प्रसव के समय दीपक होता है। इसमें भी चर लग्न से चर दीपक, स्थिर लग्न से स्थिर तथा द्विस्वभावलग्न से घूमता हुआ दीपक प्रसवकाल में होता है। प्रसवकाल में चन्द्रमा प्रथम द्रेष्कांण में हो तो दीपक में पूर्ण तेल भरा हुआ, द्वितीय से आधा भरा तथा तृतीय द्रेष्कांण से तेलहीन दीपक जानना चाहिए।

सूर्य के राशि द्वारा दीपक के दिशा का ज्ञान

सूर्यराशि	१,२	३	४,५	६
दीपस्थान	पूर्व में	आग्नेय में	दक्षिण में	नैऋत्य कोण में
सूर्यराशि	७,८	९	१०,११	१२
दीपस्थान	पश्चिम में	वायव्य में	उत्तर में	पृथ्वी पर

जन्माङ्ग द्वारा घर में सूतिका कक्ष ज्ञान

प्रसवकाल में १,४,७,८,११ लग्न से पूर्व ९,१२,३,६ लग्न से उत्तर, २ लग्न से पश्चिम तथा ५,१० लग्न से दक्षिण दिशा में गृहमध्य सूतिका कक्ष जानना चाहिए।

प्रसवकाल में मातृकष्टज्ञान

चन्द्रयुक्त पापग्रह यदि जन्मकाल में लग्न से चतुर्थ या सप्तम में स्थित हो अथवा चन्द्रमा से चतुर्थ या सप्तम में पापग्रह स्थित हों तो प्रसवकाल में माता को कष्ट कहना चाहिए। प्रसव काल पापग्रहों के अधिकार में हों अथवा पापग्रहों से युत या दृष्ट ४ एवं ७ भाव हों तो (इसका ठीक-ठाक विचार कर) मातृ कष्ट कहना चाहिए।

सूर्य आदि ग्रहों के अधि एवं प्रत्यधि देवता

अ.दे.	ईश्वर	उमा	स्कन्द	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	यम	काल	चित्रगुप्त
ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
प्र.दे.	अग्नि	अप	पृथिवी	विष्णु	इन्द्र	इंद्राणि	प्रजापति	सर्प	ब्रह्मा

प्रसव प्रकार ज्ञान

शीर्षोदय राशिलग्न में हो तो शिर से, पृष्ठोदय हो तो पैर एवं उभयोदय हो तो हाथ से प्रसव होता है। लग्न पर शुभ दृष्टि होने से सुखपूर्वक एवं पापदृष्टि होने पर कष्ट से प्रसव होता है। प्रसवकाल में सर्वप्रथम स्कन्ध दर्शन पर शिर, जंघा दर्शन से पैर एवं मणिबन्ध दर्शन से हाथ द्वारा प्रसव होता है।

लग्नेश एवं नवमांशेश वक्री होकर लग्न में हो अथवा परस्पर विपरीत गृह में हो तो कष्ट पूर्वक गर्भ का मोक्ष जानना चाहिए।

अन्तरिक्ष में जन्म का ज्ञान

यहा अन्तरिक्ष का अर्थ उच्चभूमि से है। ९,१२,६ तथा विशेषतः ३, लग्न में जन्म हो तो अन्तरिक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्माङ्ग द्वारा बालक के रोदन का ज्ञान

१,३,५ एवं ९ लग्न में जन्म से बालक पूर्व सोचकर बहुत होता है। ११,६,७ लग्न में अल्प तथा २,४,८,१०,१२ में जन्म से बालक ज्ञान बल से रोता है। रोदन का विचार चन्द्रमा एवं लग्न दोनों में जो बलवान हो उसके द्वारा करना चाहिए।

जन्माङ्ग द्वारा बालक के मस्तक का ज्ञान

जन्म काल में १,५,९ लग्न हो तो पूर्व, २,६,१० लग्न हो तो दक्षिण ३,११,७ लग्न हो तो पश्चिम तथा ४,८,१२ लग्न हो तो जन्मकाल में जातक का शिर उत्तर दिशा में होता है।

जन्माङ्ग द्वारा सूतिका के वस्त्र एवं चूड़ी का वर्ण ज्ञान

मेषादि बारह राशियों के लग्न से प्रसूता क्रमशः लाल, स्वच्छ, हरित, पाटल, पाण्डु, विचित्र, कृष्ण, पिशंग, पिंगल, अनेक वर्ण युक्त, धूम्र, एवं मलिन वर्ण का वस्त्र धारण किये हुए होती है। जितने ग्रहों की जन्मकाल में चतुर्थ एवं दशम भाव पर दृष्टि होती है, उतनी संख्यक उन ग्रह वर्णों की चूड़ियां प्रसूता के हाथ में होती है।

आधान कालिक चन्द्रमा द्वारा प्रसवकाल ज्ञानार्थ चक्र।				
चन्द्रराशियाँ				दिन
१	४	७	१०	२७१
२	५	८	११	२९७
३	६	९	१२	२८९ या २७६ दिन

प्रश्नकाल या आधान काल के द्वारा प्रसव कालिकचन्द्रमा का ज्ञान

गर्ग। प्रश्नकाल या आधान काल में चन्द्र जिस द्वादशांश में स्थित होता हो समय पूर्ति पर उतनी ही संख्यक राशि में चन्द्रमा के जाने पर प्रसव होता है।।

प्रमाण (सारावली)

यस्मिन् द्वादशभागे गर्भाधाने व्यवस्थितश्चन्द्रः। तत्तुल्यर्क्षे प्रसवो गर्भस्य नियतमादिशेत्प्राज्ञः।२। समुद्रजातकेऽपि। यतमे द्वादशभागेसूतिकास्त-त्संख्यके विधाविति। अत्रलग्नचन्द्रयोर्मध्ये यो बलवान् तस्य द्वादशांशकवशेन चन्द्रराशिज्ञेयः इत्युक्तं लघुजातके लग्नेन्दोर्यो बलवान् तस्याद्वि-सांशकान्विते विधौ प्रसवः।। अथकालज्ञानम्। तत्काले दिवसनिशासंज्ञो समुदेति राशिभागोयः। यावानुदयस्तावान् वाच्योदिवसस्य रात्रेर्वा।।

जातक तत्वोक्त सूत्रबद्ध सूतिका तत्व का ज्ञान

जन्मलग्न चन्द्रमा से अदृष्ट हो तो पिता के परोक्ष में जन्म होता है। सूर्य स्थिर राशि का होकर ८,९,११,१२ में होता है तो स्वदेशगत पिता के परोक्ष में तथा यदि चरराशिस्थ हो तो विदेश गत पिता के परोक्ष में जन्म होता है। सूर्य चर राशि का हो तो भी विदेशगत पितृकाल में जन्म होता है। शनि लग्न अथवा मंगल सप्तम में हो तो भी पितृ परोक्ष में जन्म होता है। सूर्य से त्रिकोण में शनि एवं मंगल पापग्रहों की राशि में स्थित हों तो जन्मकाल में जातक का पिता बन्धन में होता है। मातृ एवं पितृ कारक ग्रहों में जो बली हो उसके घर में जन्म होता है। मंगल से दृष्ट सूर्य बलवान हो तो बहुत दीपों वाले घर में जन्म होता है। चन्द्रमा से तेल तथा लग्न से दीप की बत्ती का ज्ञान करें। चरराशिस्थ सूर्य से चर, स्थिर से स्थिर एवं द्विस्वभाव से भ्रमणशील दीपक कहना चाहिए। शीर्षोदय लग्न में शिर, पृष्ठोदय में पैर, एवं उभयोदय में हाथ से प्रसव होता है। जन्मकाल एवं चन्द्रमा से चतुर्थ एवं सप्तम में पापग्रह हो तो मातृकष्ट होता है। केन्द्रस्थ बलीग्रह की दिशा में प्रसूतीगृह का द्वार होता है। सूर्यादि ग्रहों के बलवान रहनें पर क्रमशः काष्ठनिर्मित, नवीन, दग्ध, चित्र युक्त, मजबूत, मनोहर एवं प्राचीन प्रसूती गृह जानना चाहिए। १,२ लग्न से भवन के पूर्व, ३ से अग्निकोण, ४,५ से दक्षिण, ६ से नैऋत्य, ७,८ से पश्चिम, ९ से वायव्यकोण, १०,११ से उत्तर तथा १२ लग्न से ईशान कोंण में प्रसूती प्रकोष्ठ होता है। इसी प्रकार शैय्या विचार भी होता है। लग्न की दिशा में शैय्या का शिर तथा ३,६,९,१२ में पाये होतें हैं। जहाँ पापग्रह स्थित हों वहाँ शैय्या टूटी हुई होती है। लग्न से चन्द्रमा की बीच जितनें ग्रह हों उतनी उपसूतिकाएं होती है। उपसूतिका संख्या ज्ञान में वक्री एवं उच्चस्थ ग्रहसंख्या को त्रिगुणित, स्वराशि एवं स्वनवमांशगत संख्या को द्विगुणित तथा नीच एवं अस्तगत ग्रह संख्या को आधा करके रखना चाहिए। २,१,३,५ लग्न हो तो बहुत रोते हुए जन्म हो। लग्न में चन्द्रमा सभी ग्रहों से अदृष्ट हो तो निर्जन स्थान में जन्म कहें। दशम एवं चतुर्थ में शुभ ग्रह हो तो सुखपूर्वक तथा त्रिकोण एवं सप्तम में पापग्रह हो तो कष्ट से प्रसव होता है। चतुर्थ या दशम में सूर्य, मंगल एवं शनि का योग हो तो जन्म से पूर्व ही पिता का मरण जानें।

अनिष्ट नक्षत्रों में रोगोत्पत्ति की शान्ति- जिस अनिष्ट नक्षत्र में रोग उत्पन्न हो उसके अधिपति देवता की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर गन्धाक्षतपुष्प आदि से पूजन कर ब्राह्मणों को दान करने से उसकी शान्ति हो जाती है।

रोग से मुक्त होने पर स्नान मुहूर्त्त विचार- रे.पुन.कृ. उ३.स्वा.रो.श्ले. तथा मघा को छोड़कर अन्य नक्षत्रों, रिक्ता (४,९,१४) तिथियों, चरलग्नों तथा सू.मं.बु.बृ.श. वारों में चन्द्रमा के निर्बल तथा पापग्रहों के १।४।७।१०।५।९।११ में होने पर रोगी को रोग मुक्त होने पर स्नान करना चाहिए।

रोगोत्पत्ति में विशेष- आर्द्रा श्ले. ज्ये. श. भ. पू३. वि. श्र. तथा कृत्तिका नक्षत्रों सू. मं. तथा शनिवारों, ४।९।१२।६।१४ तिथियों के योग काल में रोग उत्पन्न होने पर मृत्यु हो जाती है तथा भ.ऽश्ले. मू. म. वि. कृ. एवं आर्द्रा नक्षत्रों में अगर सर्पदंश हो तो भी मृत्यु हो जाती है।

उत्पन्न रोग में शुभाशुभ विचार- स्वाती,श्ले, आर्द्रा पू३. ज्ये. नक्षत्रों, सू.मं.श. वारों एवं १।६।११। ४।९।१४ तिथियों के योग में रोगोत्पत्ति हो तो भगवान शंकर से रक्षित मनुष्य की भी मृत्यु हो जाती है।

कणमर्दन मुहूर्त्त विचार- अनु.श्र.मू.रे.पू.फा.ज्ये. रो. तथा मघा नक्षत्रों, शुभ तिथियों, शुभ वारों एवं शुभ लग्नों में कणमर्दन उत्तम होता है।

दुकान खोलने का मुहूर्त्त- अनु.उ३.पुष्य.रे.रो.मृ.ह. चि. अश्वि. नक्षत्रों एवं शुभ दिनों में व्यापार आरम्भ करना चाहिए।

धान्यसंग्रह मुहूर्त्त विचार- रो. उ३. स्वा. मू. रे. मृ. ह. अश्वि. ध. श्र. अनु. पुन. चि. पुष्य तथा शतभिषा नक्षत्रों, बृ. बु. चं. शु. वारों रिक्ता तथा अमावस्या से रहित तिथियों तथा स्थिर लग्नों में शुभ ग्रहों की स्थिति रहने पर धान्यसंग्रह शुभ होता है। वार प्रवृत्ति का विचार वारों के क्षण ज्ञानार्थ किया जाता है, परन्तु समस्त कार्यों में दिन का आरम्भ सूर्योदय काल से ही मान्य होता है।

धान्य स्थापन मुहूर्त्त विचार- मृ.पु.रे.अनु.श्र.ध.श. अश्वि.पुष्य.रो.उ३. नक्षत्रों, शुभतिथियों तथा सू.चं.बृ.शु. वारों में धान्य रखना तथा उ३.रो.ध.श. नक्षत्रों, शुभवारों, शुभ तिथियों एवं शुभलग्नों में धान्य निकालना शुभ होता है।

धान्यरोपण तथा फल पुष्पोत्तारण मुहूर्त्त- ह. चि. स्व. उ३. प. रो. मृ. पु. अश्वि. अनु. तथा मघा नक्षत्रों, शनि एवं भौम रहित दिवसों, शुभ तिथियों एवं शुभ लग्नों में उत्तम होता है।

वृक्ष-लता एवं गुल्म रोपण मुहूर्त्त- ह.पुष्य अश्वि. उ३. रो.वि.मू.रे.चि.अनु.मृ.शत. नक्षत्रों में गुरु के केन्द्रवर्ती तथा दशम के पाप ग्रह से रहित, तथा चन्द्रमा के जलचरराशि में रहने पर शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट लग्नों में शुभ होता है।

वृक्षरोपण मंत्र- ॐ वसुधेति शीतेतिपुण्यदेति धरेति च।। नमस्ते शुभगे देवि द्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते।।

वाहनारोहण मुहूर्त्त- रे.अश्वि.श.स्वा.मृ.चि.पुन.श्र. ह. पुष्य नक्षत्रों तथा बृ.चं.सू.शु.बु. वारों में हाथी, घोड़ा, रथ तथा अन्य वाहनों पर प्रथम आरोहण करना शुभ होता है।

शस्त्रकर्म मुहूर्त्त- उ३.एवं रो.को छोड़कर अन्य नक्षत्रों तथा सूर्य एवं मंगलवारों में रिक्ता एवं मंगल के केन्द्रस्थ रहने पर शस्त्रकर्म (आपरेशन) कराना शुभ होता है।

तैल लेपन में वर्ज्य काल- रवि, मंगल वारों, व्यतिपात, संक्रान्ति, वैधृति, षष्ठी एवं अष्टमी तिथि, भद्रा एवं पर्वकाल में तैल लेपन नहीं करना चाहिए।

तैल लेपन दोष का अपवाद- प्रतिदिन, उत्सव में वातरोग में, जलने-कटने पर तथा अभिमर्दित, क्वाथयुक्त, सरसों के फूल से युक्त, तथा अन्य द्रव्य से युक्त तैल के लेपन में दोष नहीं लगता है।

	नैसर्गिकचक्र १			चलचक्र २			योगचक्र ३		
जन्म	६	४	३	६	४	३	३	०	०
कर्म	२	०	०	६	४	३	५	४	०
आधान	५	०	०	२	०	०	४	०	०
पिण्ड	६	४	३	५	०	०	२	०	०
छिद्र	६	४	३	६	४	३	३	०	०

शक्ति यामलोक्त वाटिका चक्र- सूर्यनक्षत्र से दैनिक (चन्द्र) नक्षत्र तक गणना करने से वाटिका चक्र होता है। इसके फल ज्ञान के लिए चक्र-

शक्ति यामलोक्त वाटिका चक्र

नक्षत्र संख्या	३	३	४	३	३	१	५	२	४
भाग	मूल	त्वचा	शाखा	पत्र	शीर्ष	पूर्व	याम्य	पश्चिम	उत्तर
फल	रोग	धननाश	लाभ	दरिद्रता	शुभ	मृत्युकारक	उपाय	धनलाभ	लाभ

वारक्रम से तेल लगाने का फल तथा अनिष्टनिवारण हेतु तेल में डालने वाले वस्तु का नाम

सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
ताप	सुकान्ति	मृत्यु	धनप्राप्ति	वृत्तिहानि	विपत्तिहानि	सुख	फल
पुष्प	०	मिट्टी	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

शुभाशुभ ज्ञानार्थ पञ्चस्वरा द्वारा शून्यानयन का उदाहरण

जन्म	कर्म	आधा	पिण्ड	छिद्र
उदित	भौम	भ्रात	सध्वा	अस्त
८१	८७	९३	९९	१०५
अ	इ	उ	ए	ओ
आ	ई	ऊ	ऐ	औ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह
नामाद्याक्षर	नामाद्याक्षर	नामाद्याक्षर	नामाद्याक्षर	नामाद्याक्षर

जिस व्यक्ति का जिस वर्ष में अरिष्ट ज्ञात करना हो उसकी गत वय की संख्या तथा वृषराशि से आरम्भ कर जन्मराशि तक की संख्या और वर्णस्वरचक्र के अनुसार जन्मनाम के प्रथमाक्षर से वर्णस्वराङ्क को जोड़कर तीन स्थानों पर रखें। पुनः प्रथम स्थान में २ से गुणाकर सात से द्वितीय स्थान में चार से गुणाकर ८ से एवं तृतीय स्थान में तीन से गुणाकर छः से भाग देवें। जो शेष प्राप्त हो उसे क्रमशः उर्ध्व मध्य तथा अधः स्थापित करने से जन्मकोष्ठ का निर्माण होता है। पुनः वयराशिस्वरांक योग में ५ जोड़कर उपर्युक्त अंको से गुणन एवं भजन की क्रिया करने से शेषांक द्वारा कर्मकोष्ठक, योग में ९ जोड़कर क्रिया करने से आधान चक्र, योग में १४ जोड़कर क्रिया करने से शेषांक द्वारा पिण्डचक्र तथा योग में २८ जोड़कर उक्त क्रिया करने से छिद्र कोष्ठक के अंक प्राप्त होते हैं।

उदाहरण- गतवर्ष ३३, जन्मराशि ६, नामाद्यवर्ण (ठ) का स्वराङ्क- १०५, वृषादिगणना के अनुसार राशि = ५, वयराशि एवं स्वाराङ्क योग = १४३, इसे तीन जगह क्रमशः २,४,३ से गुणा करने पर गुणनफल = २८६।५७२।४२९, इसमें क्रमशः ७।६।८ से भाग करने पर शेषफल = ६।४।३, इस शेष को जन्म कोष्ठचक्र में अधोधः क्रम से लिखें। कर्मकोष्ठक साधनार्थ पिण्डयोग (१४३) में ५ जोड़कर उपर्युक्त अंको से क्रमशः गुणा करने पर गुणनफल २९६।५९२।४४४ में भाजक संख्याओं में भाग देने से शेष = २।०।० इसे अधोध क्रम से नैसर्गिक कर्म कोष्ठक में स्थापित करें। आधान चक्र हेतु पिण्डयोग में ९ जोड़कर योगफल १५३ में गुणक से गुणाकर भाजक संख्याओं से भाग देने पर शेषफल = ५।०।०, पिण्ड चक्र हेतु पिण्डयोग में १४ जोड़कर योगफल में गुणन भजन की क्रिया करने से शेषफल = ६।४।३, पुनः छिद्रचक्र हेतु पिण्ड अंक में २८ जोड़कर योगफल में गुणन भजन से शेष =६।४।३, इस प्रकार शेषफलों को पूर्ववत स्थापित करने से नैसर्गिक चक्र बनता है। इसके बाद चलचक्र का आनयन कर योगजफल प्राप्त कर जो उत्पन्न होता है वह वर्षफल के रूप होता है। नैसर्गिक चक्र साधन के अन्य भी प्रकार है परन्तु अधिकांश विद्वानों ने इसी मत का समर्थन किया है। योग चक्र साधन- नैसर्गिक एवं चल दानों चक्रों के जन्मकोष्ठकाङ्क के योग १२।८।६ में २।४।३ से गुणाकर गुणनफल = २४।३२।१८ में ७।८।६ से भाग देने पर क्रमशः शेषफल ३।०।० योगचक्र के जन्मकोष्ठक के अंक होंगे। इसी प्रकार कर्मस्वर योग साधन में दोनों चक्रो के कर्मकोष्ठक के योगफलों ८।४।३ से ५ ध्रुवांक जोड़ने से १३।९।८ में गुणन भजन करने से शेषफल = ५।४।०, आधान कोष्ठक के योगफलों में ०, पिण्ड में १४ तथा छिद्र कोष्ठक के योगफलों में २८ जोड़कर उक्त अंकों के गुणा भाग से क्रमशः शेषफल = ४।०।०, २।०।०, ३।०।० इस प्रकार योग चक्र के सभी कोष्ठक सिद्ध होते हैं। चलचक्रसाधन- में नैसर्गिक चक्र में साधित छिद्र कोष्ठक को जन्म, जन्म को कर्म कर्म को आधान, आधान को पिण्ड तथा पिण्ड को छिद्र कोष्ठक जानना चाहिए।

शक द्वारा अनुमान से अनेक पदार्थों के चैत्रादि बारह महीनों में समर्घता (सस्ती) एवं महर्घता (महँगी) ज्ञानार्थ ध्रुवांकचक्र।

सं	मासा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	पौ	मा	फा
१	यव	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
२	चना	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
३	गोधूम	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
४	धान	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
५	तिल	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
६	खांड	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
७	गुड़	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
८	घृत	१	०	२	१	०	२	२	०	१	०	२	१
९	लवंग	१	०	२	१	३	२	२	०	१	१	२	१
१०	शहद	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
११	अरहर	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
१२	मूंग	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
१३	कपास	१	०	२	१	०	०	२	०	२	०	२	१
१४	रेड़ी	१	०	२	१	०	०	२	०	१	०	२	१
१५	सूत	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
१६	वस्त्र	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
१७	कम्बल	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
१८	पाट	०	२	१	०	२	२	१	२	०	२	१	०
१९	सुपारी	१	०	२	१	०	०	२	०	१	०	२	०
२०	अलसी	०	२	१	०	२	२	१	२	१	२	१	०
२१	तैल	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२२	फिटकरी	०	२	१	०	०	०	१	२	०	२	१	१
२३	हींग	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२४	हल्दी	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२५	लौंग	०	२	१	०	१	२	१	२	०	२	१	०
२६	जीरा	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२७	अजवाइन	१	०	२	१	१	१	२	०	१	०	२	२
२८	कपूर	२	१	०	२	१	१	०	१	२	१	०	२
२९	ककुनी	०	२	१	०	२	२	२	२	०	१	१	०
३०	धनिया	१	१	२	१	०	०	१	०	१	०	२	१

चैत्रादि जिस मास में जिस वस्तु की समर्घता-महर्घता का विचार करना हो उसके ध्रुवांक को १६४९ घटे हुए शक संख्या में जोड़कर तीन से भाग दे, एकादि शेष से क्रमशः मध्यम, वृद्धि तथा हानि होती है।

चैत्रादि १२ मासों के नाम

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	मास
बैकुण्ठ	जनार्दन	उपेन्द्र	यज्ञपुरुष	वासुदेव	त्रिविक्रम	नाम
आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	मास
योगीश	पुण्डरीकाक्ष	कृष्ण	अनन्त	अच्युत	चक्रधर	नाम

।।अङ्गस्फुरण फल।।

स्थान	फल
मस्तकस्फुरण	पृथ्वीलाभ
ललाटस्फुरण	स्थानलाभ
स्कन्धस्फुरण	भोग,समृद्धि
भ्रुवमध्य	सुखप्राप्ति
भ्रुवयुग्म	महत्सौख्य
कपालस्फुरण	शुभप्राप्ति
नेत्र २ स्फुरण	धनप्राप्ति
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ
नेत्रपक्षस्फुरण	राज्यलाभ
नेत्रपक्ष२स्फुरण	संग्राम में जय
नेत्रकोपांगदेश२	कलत्रलाभ
नासिका२स्फुरण	प्रीति,सुख
हस्तस्फुरण	सद्द्रव्यलाभ
वक्षस्फुरण	विजय
हृदयस्फुरण	वांछितसिद्धि
कटिस्फुरण	प्रमोदबल
कटिपार्श्व	प्रीतिरनुत्तमा
नाभिस्फुरण	स्त्रीनाश
आंत्रिकस्फुरण	कोशवृद्धि
भगस्फुरण	पतिप्राप्ति
कुक्षिस्फुरण	सुप्रीतिलाभ
उदरस्फुरण	कोशप्राप्ति
लिङ्गस्फुरण	स्त्रीलाभ
गुदस्फुरण	वाहनप्राप्ति
वृषणस्फुरण	पुत्रलाभ
ओष्ठस्फुरण	प्रियवस्तुलाभ
हनुदेशस्फुरण	महत् भय
कण्ठस्फुरण	ऐश्वर्यलाभ
ग्रीवार्धस्फुरण	रिपुभय
पृष्ठस्फुरण	युद्धपराजय
कपोलस्फुरण	वरांगनाप्राप्ति
मुखस्फुरण	मित्रप्राप्ति
बाह्यस्फुरण	मधुरभोजन
बाहुमध्य	धनागम
वस्तिदेशस्फुरण	अभ्युदय
उरुस्फुरण	वस्त्रलाभ
जानुस्फुरण	शत्रुवृद्धि
जंघस्फुरण	स्वामिप्रीति
पादस्फुरण	स्थानलाभ
पादतलस्फुरण	नृपत्व
पादद्वयस्फुरण	अलाभ

स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन में श्रेष्ठ मास, पक्ष एवं तिथियाँ

मास	वैशाख, फाल्गुन, मार्गशीर्ष, श्रावण, आश्विन, माघ, ज्येष्ठ
पक्ष	शुक्ल पक्ष शुभ, कृष्ण पक्ष दशमी तक मध्यम, आगे अशुभ।
तिथियाँ	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ इन तिथियों में शुभ है।
वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।
नक्षत्र	अश्वि. मृग. ध. रे. चि. अनु. ह. श्रव. पुष्य उ३. तथा रोहिणी में शुभ, पू. पुन. म. वि. कृ. इनमें मध्यम तथा शेष में अशुभ।
लग्न	२।३।४।६।७।९।१२ इन राशियों के लग्न में शुभ दृष्ट रहने पर शुभ, विवाह की तरह ग्रह स्थिति भी विचारणीय होती है।
विशेष	श्वेतवस्त्र में, दिन में, भद्रादि अशुभ से विरत कालों में शुभ।

रजोदर्शन में निषिद्ध समय

अष्टमी, द्वादशी, षष्ठी, रिक्ता (४,९,१४), अमावस्या तिथियों में, सूर्य संक्रान्ति, भद्रा, निद्रा, व्यतिपात, ग्रहण, वैधृति, रोगावस्था दूसरे के घर, मार्ग, अशुभ स्थल एवं काले वस्त्र में प्रथम रजोदर्शन अशुभ होता है अतः इसकी शान्ति करानी चाहिए। शान्ति से अशुभ फल नष्ट हो जाते हैं।

रजस्वला स्नान मुहूर्त्त विचार

ह.स्वा. अश्वि. मृ. अनु. ध. रा. उ३. ज्येष्ठा, नक्षत्रों, शुभ तिथियों, शुभ वारों एवं शुभ लग्नों में रजस्वला स्नान शुभ होता है।

गर्भाधान मुहूर्त्त विचार

नक्षत्र, तिथि एवं लग्न गण्डान्त, जन्मतारा, मू. म. अश्वि. रे. नक्षत्र, ग्रहण दिन, व्यतिपात, वैधृति, माता-पिता का श्राद्ध दिन, दिन, परिघ योग का पूर्वार्द्ध, अन्तरिक्षोत्पात हस्त नक्षत्र, जन्मराशि एवं लग्न से अष्टम तथा पापग्रह युक्त राशि या नक्षत्र, भद्रा, पर्व दिन, ४।६।९।१४ तिथियाँ सन्ध्याकाल, सूर्य, भौम एवं शनिवार, रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रियाँ, इस सबको छोड़कर तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श. इन नक्षत्रों में लग्न से १।४।५।७।९।१० भावों में शुभ तथा ३।६।११ वें पाप ग्रहों की स्थिति में, लग्न के सू. मं. बृ. से दृष्ट रहने पर तथा चन्द्रमा के विषमराशि नवमांशगत होने पर युग्म (६।८।१०।१२) रात्रियाँ गर्भाधान में शुभ होती है। चि.पुन.अश्वि. एवं पुष्य नक्षत्र में मध्यम।

अशुभ रजोदर्शन निवृत्ति के लिए शान्ति- घी,दूर्वा,तिल एवं चावल मिश्रित शाकल्य से १०८ बार हवन कर स्वर्ण, गाय तथा भूमि का दान करें। विस्तृत विधि निबन्ध ग्रन्थों में वर्णित है।

जातकर्म के अनन्तर कृत्य- बारह दिन के बाद जातक का जन्माङ्ग देखकर अशुभ ग्रहों के शान्त्यर्थ उनका जप-दान कराना चाहिए। मूलोत्पन्न जातक के मुखावलोकन के पश्चात स्नान करें।

गर्भ के दश महीनों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६
स्वामी	शु.	मं.	गु.	सू.	चं.	श.
मास	७	८	९	१०		
स्वामी	बु.	गर्भलग्नपति	चं.	सू.		

गर्भाधान संस्कार में विशेष- विवाह, गर्भाधान आदि संस्कारों में स्त्री का एवं अन्य संस्कारों एवं कर्मों में पति का चन्द्र बल देखना चाहिए।

षोडश संस्कार- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण (मुण्डन), कर्णवेध, व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत), वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह अग्न्याधान तथा अन्त्येष्टि ये सनातन धर्म के प्रमुख सोलह संस्कार हैं।

सहोदरों का मंगलकार्य- नारद के अनुसार पुत्र विवाह के अनन्तर छः मास तक कन्या का विवाह वर्जित है। इसी प्रकार विवाह के बाद छः मास तक व्रतबन्ध भी नहीं करना चाहिए। वशिष्ठ के अनुसार मुण्डन के बाद छः मास आभ्यन्तर विवाह शुभ होता है परन्तु विवाह के अनन्तर मुण्डन नहीं। पुत्र के विवाहानन्तर छः मास तक कन्या का विवाह शुभ पद नहीं होता परन्तु पुत्री विवाह के बाद पुत्र का विवाह शुभ है। संवत्सर परिवर्तन हो जाने पर छः मास के भीतर भी उक्त (वर्जित) कर्म किये जाते हैं।

पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त- गर्भ से दूसरे या तीसरे मास में पुंसवन तथा छठे या आठवें मास में मासपति के बलवान रहने पर सीमन्तोन्नयन संस्कार शुभ होता है इसमें गुरु-शुक्र के अस्तादि का विचार नहीं होता है।

शुभ वार	सू. मं. एवं बृ. वारों में मतान्तर से बुध एवं चन्द्र एवं शुक्र वारों में दम्पति के चन्द्र तथा तारा के शुद्ध रहने पर पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन शुभ होता है।
शुभनक्षत्र	मृ. पुष्य, मूल, श्रवण, पुन., हस्त, रेवती, रो. तथा उ३. नक्षत्रों में पुरुष के जन्मनक्षत्र को छोड़कर शुभ होता है।
शुभतिथियाँ	शुक्लपक्ष की १।२।३।५।७।१०।११।१३ तथा कृष्ण पक्ष की उपर्युक्त दशमी पर्यन्त, तिथियाँ पूर्वाह्न में शुभ होती है।
लग्न शुद्धि	ये दोनों संस्कार पुरुष ग्रहों के लग्न एवं नवमांश में, लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ एवं ३।६।११ में पापग्रहों की स्थिति में तथा चन्द्रमा के १।६।८।१२ से अन्यत्र रहने पर शुभ होते हैं।

सूतिका का सूतिका गृह में प्रवेश मुहूर्त्त

रो. मृ. पुष्य. स्वा. श. पुन. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. उ३. श्र. इन नक्षत्रों, शुभवारों, रिक्ता, षष्ठी एवं अष्टमी रहित शुभ तिथियों, शुभलग्नों, लग्न से केन्द्रस्थ शुभग्रहों तथा ३।६।११ में पापग्रहों की स्थिति रहने पर एवं शुभग्रहों के नवमांश में शुभ होता है।

विहित कालातिक्रमण में जातकर्म मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ	१।२।३।५।६।७।१०।११।१३ तिथियों में व्यतिपात, भद्रा, संक्रान्ति तथा दोषरहित रहने पर शुभ है।
शुभ वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वार शुभ है। जन्म दिन से ग्यारह एवं बारहवाँ दिन विशेष शुभ होता है।
शुभ नक्षत्र	मृ. रे. चि. अनु. उ३. रोहि. पुन. स्वा. ध. श्र. श. पुष्य, हस्त. अश्वि. इन नक्षत्रों तथा शुभ लग्नों में शुभ है।

स्तनपान मुहूर्त्त

उ३. रो. अश्वि. रे. पुष्य. पुन. अनु. ह. चि. मृ. ध. श्र. श. इन नक्षत्रों, शुभ दिनों, शुभ तिथियों तथा स्थिर लग्नों में नवजात शिशु को प्रथम बार स्तनपान प्रशस्त होता है।

सूतिका पथ्य भक्षण मुहूर्त्त।। अन्नप्राशन मुहूर्त्त के नक्षत्रों तथा तिथियों में शुभ काल रहने पर उत्तम होता है।

बालक का प्रथम दुग्धपान (ऊपर का) समय

एकतीसवें दिन बालक को शंख द्वारा दुग्धपान कराना चाहिए। अन्नप्राशन मुहूर्त्त में कहे हुए नक्षत्र, दिन लग्न एवं राशियों में शुभ होता है। इन्द्र, वायु, यम, शूल, पणि, वह्नि, श्रवण, राक्षस के क्रम में मनुवासारोदित दिशाओं में अर्द्धयाम के अनुसार चर योगिनियाँ घूमती है।

ई.४	पू.१	आ.६
उ.७	चरयोगिनी	द.३
२वा.	५प.	८नै.

जन्म से प्रथमादि मासों में बालकों के दन्तोत्पत्ति का फल

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयंनाश	कनिष्ठ भ्रातृनाश	भगिनीनाश	मातृनाश	ज्येष्ठ भ्रातृनाश	सुभागम	तात सेसुख	पुष्टता	लक्ष्मीप्राप्ति	सुख	सुख	धनसम्पत्ति

सदन्त उत्पन्न बालक के लिए शास्त्रोचित शान्ति करानी चाहिए।

नामकरण मुहूर्त्त विचार- बृहस्पति के मत से सूतक की समाप्ति पर अपने कुल के अनुसार नामकरण करना चाहिए। अथवा वर्णक्रम से ११।१६।२० एवं २२वें दिन भी नामकरण शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र	मृ.रे.चि.अनु.उ३.रो.ह.पुन.पुष्य,अश्वि.अभि.स्वा.श्र.ध.श. शतभिष।
शुभ वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।
शुभ तिथि	१।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियाँ भद्रादिदोष से रहित रहने पर शुभ है।
शुद्धलग्न	२।५।८।११ लग्न, अष्टम शुद्ध रहने पर शुभ है।
लग्नशुद्धि	लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थान में शुभ ग्रह एवं ३।६।११वें पापग्रह हों तथा ६।८।१२ ग्रह रहित हो तो पिता-पुत्र का तारा बल विचारकर दिन के पूर्वार्द्ध में नामकरण शुभ तथा मध्याह्न में मध्यम होता है।

विशेष- व्यतिपात, संक्रान्ति, अमावस्या, वैधृति, ग्रहण एवं श्राद्ध दिन, पक्ष की छिद्र एवं रिक्ता, पूर्णा तिथियाँ, शकुनी, किंस्तुघ्न, विष्टि करणों को छोड़कर अन्य उपर्युक्त तिथियों में ही नामकरण में ग्राह्य है। विहितकालातिक्रमण के बाद गुरु-शुक्र के अस्तादि दोष से रहित उत्तरायण में शुभ होता है।

अन्नप्राशन मुहूर्त्त विचार

छठे से आरम्भ कर सम मासों में बालकों तथा पाँचवें से आरम्भ कर विषम मासों में बालिकाओं को अन्नप्राशन कराना चाहिए।

शुभ नक्षत्र	(सप्तशलाका से विद्ध एवं ग्रहण नक्षत्रों को छोड़कर) रो. उ३. मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य, अश्वि. अभि. पुन. श्र. ध. स्वा. श. शुभ है।
शुभ तिथियाँ	२।३।५।७।१०।१३।१५ शुभ तथा अन्य सम।
वार	चं. बु. बृ. शु. ये श्रेष्ठ तथा अन्य अशुभ।
लग्नशुद्धि	जन्म लग्न से आठवें लग्न-राशि एवं नवमांश को छोड़कर २।३।४।५।६।७।९।१२ लग्नों में शुभ होता है।

जल पूजन मुहूर्त्त- प्रसव दिन से एक मास की पूर्ति होने पर गुरु, शुक्र की अस्त स्थिति, चैत्र,पौष एवं अधिमास को छोड़कर अन्य मासों श्र.पुष्य.पुन.मृ.ह.मू.म. अनु. नक्षत्रों, चं.बु.गु. वारों तथा रिक्तावर्जित अन्य तिथियों में प्रसूता द्वारा जल पूजन शुभ होता है।

कर्णवेध मुहूर्त्त ज्ञानार्थ चक्र- जन्म दिवस से १२।१६वें दिन तथा उसके बाद ६।७।८वें महीने अथवा विषम वर्ष में कर्णवेध शुभ होता है। कर्णवेध में समवर्ष, चैत्र,पौष,अधिक जन्म तथा चातुर्मास, रिक्ता तथा अमावस्या तिथि और जन्मतारा का त्याग कर देना चाहिए।

शुभ नक्षत्र	पु.अश्वि.ह.पु.उ.मृ.चि.अनु.रे.श्र.ध. नक्षत्र, चन्द्रबल रहने पर शुभ होते हैं।
वार	चं. बु. बृ. तथा शुक्रवार उत्तम है।
शुभतिथियाँ	१।२।३।५।७।१०।१२।१३।१५ शुक्लपक्ष में तथा १।२।३।५।७।१० कृष्ण पक्ष में भद्रादि कुयोग के नहीं रहने पर शुभ होता है।
लग्न शुद्धि	लग्न से १।३।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रहों तथा ३।६।११वें में पाप ग्रहों की स्थिति में, अष्टम शुद्ध रहने पर शुभ है। लग्नस्थ गुरु कर्णवेध में विशेष शुभकारक होता है।

चौल (मुण्डन) मुहूर्त्त ज्ञापक चक्र- जन्मकाल से तीसरे से विषम वर्षों तथा चैत्र रहित उत्तरायण सूर्य के मासों में शुभ है। मनु के अनुसार प्रथम वर्ष में भी शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र	ज्ये,मृग,रे,चित्रा,हस्त,अश्वि.पुष्य,अश्वि.स्वाती,पुन.श्रवण,धनि.शत. इन नक्षत्रों में चन्द्रमा तथा तारा के अनुकूल रहने पर शुभ।
शुभ वार	चं. बु. गु. शु. भद्रादि कुयोग रहित।
शुभतिथियाँ	२।३।५।७।१०।११।१३ शुक्ल पक्षीय व तिथियाँ पूर्वाह्न में शुभ होती है।
शुभ लग्न	२।३।४।६।७।९।१२ लग्न तथा इनके नवमांश शुभ है।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त विचारार्थ चक्र

जन्म से पाँचवें वर्ष के उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा कुल देवताओं का सविधि पूजन तथा नमस्कार कर बालक को अक्षरारम्भ कराना चाहिए।

शुभ नक्षत्र	अश्वि. आर्द्रा, पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. शुभ है।
शुभ वार	चं. बु. बृ. शु. इन वारों में दुर्योगादि रहित कालों में शुभ है।
शुभ तिथि	२।३।५।६।१०।११।१२ शुक्लपक्ष की भद्रा रहित तिथियाँ उत्तम है।
लग्न शुद्धि	२।३।६।९।१२ इन राशियों के लग्न तथा नवमांश अष्टम शुद्ध तथा कुम्भ नवमांश के बिना उत्तम है। दशम के गुरु एवं लग्न के बुध-शुक्र के बलवान रहने पर श्रेष्ठ होता है।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त विचार

सौम्यायन तथा कन्यार्क रहने पर आश्विन में बुध के बलवान रहने पर गणेश तथा सरस्वती का पूजन कर विद्यारम्भ शुभ होता है।

शुभ तिथि	शुक्ल पक्ष की २।३।५।६।१०।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियाँ शुभ हैं।
शुभ वार	बु.सू.बृ. तथा शुक्रवार शुभ है।
शुभ नक्षत्र	अश्वि.पु.आ.अनु.मृ.पुन.ह.चि.स्व.र.ध.मू.पू३.श्ले.शत. शुभ है।
लग्न शुद्धि	२।३।६।९।१२ इन लग्नों में, लग्न से १।२।३।४।५।७।९।१०वें शुभ ग्रह, ३।६।११वें पापग्रहों तथा आठवाँ ग्रह वर्जित (शुद्ध) हो तो उत्तम होता है।

यज्ञोपवीत मुहूर्त्त बोधक चक्र

गुरु, शुक्र के वृद्ध-अस्त एवं शिशुत्व से अतिरिक्त उत्तरायण सूर्य के माघादि पाँच मासों में सूर्य, चन्द्र एवं गुरु की शुद्धि वश व्रतबन्ध शुभ होता है। चैत्र मास में मीन राशि का सूर्य रहने पर भी ब्राह्मणों का यज्ञोपवीत प्रशस्त है।

शुभ नक्षत्र	अश्वि. ह. पुष्य, उ३.रो. श्ले. स्वा. पुन. श्रव. ध. श. मू. चि. मृ. अनु. पूर्वा३. रेव, तथा आर्द्रा, वेध रहित नक्षत्र शुभ है।
शुभ तिथि	२।३।५।१०।११।१२ शुक्लपक्षीय तथा २।३।५ कृष्णपक्षीय भद्रादि रहित तिथियाँ मध्याह्न पर्यन्त शुभ है।
शुभ वार	सू. चं. बु. बृ. शु. इन वारों में रोगबाण के नहीं रहने पर शुभ।
लग्नशुद्धि	व्रतबन्ध में ३।६ में सभी पापग्रह, २।७।३।१०वें चन्द्रमा १।४।५।७।९।१० के शुभ ग्रह तथा ११वें सभी ग्रह शुभ होते हैं। व्रतबन्ध लग्न से ६।८ में चं.शु.बृ. तथा लग्नेश शुभ नहीं होते। चन्द्र एवं शुक्र १२वें में अशुभ, १।५।८ में पापग्रह अशुभ, ६।८।१२ शुभ ग्रह अशुभ तथा ३।६।११ के पापग्रह शुभ होते हैं। पूर्ण चन्द्रमा वृष एवं कर्कराशि का होकर लग्न में श्रेष्ठ होता है अन्यथा नहीं, लग्न में सूर्य भी शुभ है, परन्तु चन्द्र नवमांश न हो।

दीक्षाग्रहण मुहूर्त्त बोधक चक्र

मास	चै.वै.श्रा.आश्वि.का. मार्ग. माघ, फा. तथा अधिमास शुभ है।
शुभ नक्षत्र	अश्वि.रो.उ३.रे.अनु.पुष्य,स्वा.पुन.मू.श्र.ध.श.पू३.चि. इन नक्षत्रों में शुभ होता है।
शुभ वार	सू. चं. बु. बृ. शु. इन दिनों के भद्रादि दोष रहित काल में प्रशस्त है।
शुभ तिथि	२।३।५।७।१०।११।१२ शुक्ल पक्षीय तथा कृष्ण पक्षीय २।३।५ तिथियों में शुभ है।
शुभ लग्न	२।३।४।५।६।७।९।१२ इन लग्नों में चन्द्रमा तथा तारा के अनुकूल रहने पर करना चाहिए।
लग्न शुद्धि	लग्न से ३।६।११ में पापग्रह तथा १।४।५।७।९।१० में शुभ ग्रह शुभ है। अष्टमी को संक्रान्ति में तथा सूर्य एवं चन्द्रग्रहण काल में भी उत्तम होता है। गुरु-शुक्र, के उदयकाल में विशेष श्रेष्ठ है।

द्वादशस्थ चन्द्रमा का शुभत्व- विवाह, स्त्री प्रसङ्ग, अभिषेक, यात्रा, व्रतबन्ध, व्रत, उपवास आदि में गर्गादि महर्षियों के अनुसार द्वादशस्थ चन्द्रमा शुभ होता है।

देव प्रतिमा आदि भङ्ग होने पर शान्ति विधि- देव प्रतिमा, शिवलिंग, प्रसाद तथा कलश आदि के भंग होने पर स्वामी को मरणतुल्य कष्ट होता है। अतः इसकी शान्ति करनी चाहिए। **शान्तिविधि**- विधि पूर्वक कुण्डस्थापन कर चरु निर्माण पूर्वक यम देवता के लिए विधिवत हवन करें, पुनः दधि, खीर, घी एवं पीपल की लकड़ी द्वारा १०८ बार "इमारुद्रेति" मन्त्र से होम करें। पुनः माष, मूँग, तिल, घी एवं मधु द्वारा शक्ति बीज 'ह्रीं' मन्त्र से ५००० हवन करें। पुनः भूमि, गाय, बैल, स्वर्ण, धान्य एवं दक्षिणादान कर देवालय में पञ्चगव्य से स्नान कराना चाहिए। यम के लिए तिलौदन एवं पायस की बलि तथा ईशान के लिए भी बलि देवें। ऐसा करने से प्रतिमा भङ्ग दोष की शान्ति हो जाती है।

अन्य मुहूर्त्तविचार

क्रयविक्रय मुहूर्त्त- पुष्य,पू.भा.,उ.भा.,अनु.,श्रव.,अश्वि.,ह.,उ३.,मृग., स्वा., श्ले., रे. नक्षत्रों तथा चन्द्र, गुरु, शुक्र वारों में क्रय-विक्रय करना शुभ होता है।

कर्ज लेन-देन में त्याज्यकाल- मंगलवार को ऋणग्रहण तथा बुधवार को ऋण दान नहीं करना चाहिए। परन्तु इसके विपरीत मंगल को दान तथा बुध को ग्रहण शुभ होता है। हस्त नक्षत्र, रविवार एवं संक्रान्ति में दिया गया ऋण वृद्धि को प्राप्त होता है।

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त- ह.,चि.,अनु.,रे.,अश्वि.,मृग., एवं पुष्य नक्षत्रों बुध, गुरु तथा शुक्र वासरों एवं शुभ तिथियों में सेव्य-सेवक की योनियों में मैत्री रहने पर सेवाकार्य (नौकरी) आरम्भ करना श्रेष्ठ होता है।

गन्ना पेराई आरम्भ मुहूर्त्त विचार- सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र (वर्तमान) नक्षत्र तक गणना करने से जो संख्या प्राप्त हो उसका फल निम्न चक्र द्वारा देखें, अथोक्त शुभ नक्षत्रों में शुभ फल होता है।

नक्षत्र संख्या	४	२	२	१	५	५	२	६
फल	श्रीप्राप्ति	हानि	सर्वलाभ	क्षय	मृत्यु	शुभ	पीड़ा	धनक्षय

तैलिक यन्त्र (तेलमिल) लगाने का मुहूर्त्त- अश्वि.,पुन.,पुष्य.,ह.,चि.,अनु., ज्ये., ध.,रे. नक्षत्रों शुभवारों तथा रिक्तादि कुयोग रहित शुभ तिथियों में तैलिक यंत्र लगाना शुभ होता है।

संगीत एवं नृत्यारंभ मुहूर्त्त- अनु.,हस्त,रे.,ध.,उ३.,पुष्य,शत.,ज्ये. नक्षत्रों में नृत्य तथा गुरु दृष्ट बुध के लग्नस्थ तथा शुभ ग्रहों के चतुर्थस्थ होने पर संगीत आरम्भ श्रेष्ठ होता है।

राज्याभिषेक मुहूर्त्त- मृग.,रे.,चि.,अनु.,ह.,अश्वि.,पु.,अभि., ज्ये., उ३.,रो., नक्षत्रों में जन्मलग्न से दशमेश के शुभ ग्रहों या भौम के साथ बलवान रहने पर स्थिर एवं मिथुन लग्न में तथा भौम को छोड़कर अन्यवारों में राज्याभिषेक शुभ होता है।

पुत्र प्राप्त्यर्थ शुभ नक्षत्र- रजो दर्शन से सोलह रात्रियां, स्त्रीयों के लिए ऋतु संज्ञक होती है। इनमें विहित सम रात्रियों में पुरुष सम्बन्ध से पुत्र तथा विषम रात्रियों में सम्बन्ध से कन्या की प्राप्ति होती है। पुष्य.ध.मृ.रे.चि.अनु.स्व.मू.उ३.रो. अश्वि. म. ह. एवं उ.षा. नक्षत्रों में पतिप्रसङ्ग वाली स्त्री अनेक पुत्र पौत्रादि एवं गुणों से युक्त होकर चिरकाल तक जीवन यापन करती है।

नवचण्डी-शतचण्डी एवं सहस्त्रचण्डी आदि देवी के अराधना हेतु मुहूर्त्त विचार- मास विचार- वैशाख, फाल्गुन, माघ, श्रावण, मार्गशीर्ष, आश्विन एवं कार्तिक मास देवी पूजा में शुभप्रद होते हैं। **तिथि विचार**- ३।५।१०।१५।७।१३। १२।६।४।९ कृष्णाष्टमी एवं चतुर्दशी तिथियाँ शुभ होती है। **देवीपूजनार्थ शुभवार विचार**- सू.चं.बु.शु. एवं. बृ. शुभ होते हैं। **देवीपूजनार्थ नक्षत्र विचार**- अश्वि.रो.स्वा.रे.ज्ये.उ३. पुष्य तथा पुनर्वसु नक्षत्र श्रेष्ठ हैं। **होम आहुति विचार**- सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक क्रमशः तीन-तीन नक्षत्र सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्रमा, मंगल, गुरु, राहु एवं केतु के होते है। पाप ग्रहों के नक्षत्रों में आहुति देना शुभ नहीं होता है। **आहुतिदोष परिहार**- विवाह, यज्ञ, व्रतबंध, दीक्षा, सीमंतोन्नयन, चण्डी एवं गृहवास्तु शान्ति में ऊपर कथित सूर्य, शनि, मंगल, राहु एवं केतु दोष नहीं लगता है। **दुर्गा होम में आहुति चक्र विचार**- सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक क्रमशः तीन-तीन नक्षत्र ब्राह्मी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चण्डी, मेघा, माहेश्वरी तथा नारसिंही के होते हैं। इनमें हवन करने से क्रमशः श्री एवं पुत्र, शोक, भय, धन, राज्य सुख, रोग, विद्या सुख एवं राजसम्मान की प्राप्ति एवं लाभ होता है।

देवी होम में आहुति चक्र

ब्रा.	कौ.	वै.	वा.	ऐ.	चं.	मे.	मा.	ना.
३	३	३	३	३	३	३	३	३
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७
श्रे.	ने.	ने.	श्रे.	श्रे.	ने.	श्रे.	श्रे.	श्रे.
धन पुत्र	शोक	भय	धन	राज्य सुख	रोग	विद्या	सुख	राज सम्मा.

खट्वारोहण मुहूर्त्त विचार- जन्मदिन से १०।१२।१६ तथा २२वें दिन। मृ. रे. चि. अनु. उ३. रो. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. नक्षत्रों, शुभ वासरों, रिक्ता अमावस्या रहित तिथियों में पूर्व दिशा में शिर रखकर बालक को खट्वारोहण कराना शुभ होता है।

सूतिका का क्वाथ एवं औषधिभक्षण मुहूर्त्त- ह. अश्वि.पु.अभि.मृ.अनु.रे.चि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.मू. नक्षत्रों, सू.चं.बृ.शु. वासरों, रिक्ता तथा अमावस्या रहित तिथियों, ३।६।९।१२ लग्नों में, लग्न से ७।८।१२ भावों के शुद्ध रहने पर, पुरुष लग्न में पूर्ण चन्द्रमा के स्थित रहने पर औषधि रस भक्षण उत्तम होता है परन्तु जन्म राशि में ये सब भक्षण नहीं करना चाहिए।

सूतिका स्नान मुहूर्त्त विचार- रे.उ३.रो.हस्त.स्वा. अश्वि. तथा अनु. नक्षत्रों, सूर्य, भौम एवं गुरु वारों १।२।३।५।७।१०।१३।१५ तिथियों में सूतिका स्नान उत्तम होता है। आर्द्रा, पुन.पु.श्र.म.म.वि.कृ.मू.चि. नक्षत्रों बुध एवं शनि वारों, ४।६।८।९।१२।१४ तिथियों में अशुभ तथा अन्य वार, तिथि, नक्षत्रों में मध्यम होता है।

जातक को प्रथम बार भूमि पर बैठाने का मुहूर्त्त- सर्व प्रथम पृथिवी तथा वाराह का पूजन कर पांचवें मास में भौम के बलवान रहने पर उ३. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि.ह.पुष्य.अभि.नक्षत्रों, शुभ दिनों, रिक्ता अमावस्या रहित तिथियों तथा स्थिर लग्नों में कटिसूत्र (करधनी) बाँधकर प्रथम भूम्युपवेशन कराना चाहिए। उपवेशन मंत्र- रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभं। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये। भूम्युपवेशन के समय ही बालक के समक्ष-वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, लेखनी, स्वर्ण एवं चाँदी रखकर इनमें से जो बालक ग्रहण करे उसके अनुसार उसकी वृत्ति भी जान लेनी चाहिए।

निष्क्रमण मुहूर्त्त- जन्म से चौथे मास में यात्रा के मुहूर्त में अथवा बारहवें दिन प्रथम निष्क्रमण शुभ होता है।

विवाह मण्डप निर्माण का परिहार- धनिष्ठा नक्षत्र के अन्त की ५ घटी, शतभिषा नक्षत्र के आदि की ५ घटी, पूर्वाभाद्रपद के अन्त की ५ घटी, उत्तराभाद्रपद के आदि की ५ घटी तथा सम्पूर्ण रेवती नक्षत्र को छोड़कर विवाह में मण्डप निर्माण किया जा सकता है।

देवप्रतिष्ठा में मास विचार- चै.,फाल्गुन,ज्येष्ठ, वैशाख एवं माघ मास में समस्त देवों की प्रतिष्ठा शुभ दायक होती है। **प्रतिष्ठा के नक्षत्र**- ह.चि.स्वा. अनु. श्र.ध.श.रे. अ.पुन.पुष्य, उ३. रो. एवं मृग. नक्षत्रों में स्थापना शुभ होती है। **तिथि विचार**- जिस देवता का जो दिन होता है उसके दिन में उसकी प्रतिष्ठा करनी चाहिए। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३ एवं पूर्णिमा तिथि शुभ होती है। **पक्षविचार**- उत्तरायण का शुक्ल पक्ष शुभ है। **वार विचार**- च.बृ.शु. तथा बुध प्रतिष्ठा एवं यज्ञ कर्म में शुभ होते हैं। **देव स्थापन में लग्न शुद्धि**- सिंह लग्न में सूर्य, मिथुन में शिव, कन्या में नारायण, कुम्भ में ब्रह्मा, द्विस्वभाव लग्नों में देवियों की स्थिर लग्न में क्षुद्र देव तथा समस्त देवताओं की स्थिर लग्न में स्थापना शुभ कारक होती है।

सूर्य नक्षत्र से शिखर स्थापन चक्र

१०	[illegible]
१०	[illegible]
१०	[illegible]

श्री संवत् २०८२ शक १९४७, वैशाखकृष्णा ति. १ रविवार को रा.शे. ५।२९ पर मीन लग्न में जगल्लग्न प्रवेश होगा।

जगल्लग्न फल विचार- लग्न के बलवान, अपने अधिपति या शुभ ग्रहों से युत दृष्ट होने, तथा शुभ ग्रहों के केन्द्रस्थ होने से उस वर्ष समस्त वस्तु सस्ती तथा विपरीत अवस्था में महँगी रहती है।

सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के समय- लग्नेश शुभग्रह अपनी उच्चराशि या स्वराशि का होकर केन्द्रस्थान में शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर बलवान हो तो उस वर्ष लोक में सुख, शुभता, आरोग्यता एवं सुवृष्टि होती है। परन्तु वर्ष प्रवेशकालिक लग्नेश यदि क्रूरराशिस्थ होकर क्रूरग्रहों के प्रभाव में हो तो प्रजाजनों में शारीरिक कष्ट तथा भय व्याप्त रहता है तथा अन्न महँगे होते है। राका पूर्णिमा एवं कुहू अमावस्या के समय वर्ष प्रवेश में लग्नेश शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो उस वर्ष सौख्य प्रद तथा पापग्रहों से युत दृष्ट होने पर रोग एवं राजभय कारक होते हैं। सूर्य के वर्ष प्रवेश कालिक लग्न स्वराशि से या केन्द्र में चन्द्रमा यदि पापग्रहों के साथ इत्थसाल कर रहा हो एवं युत या दृष्ट हो तो लोक में रोग एवं कष्ट व्याप्त होता है।

जन्मलग्न एवं वर्ष लग्न से जगल्लग्न यदि ८ या १२वें हो तो वह वर्ष शुभप्रद नहीं होता। जन्मलग्न से वर्ष प्रवेश कालिक लग्न बलवान होकर जिस भाव में होता है उस भाव की वृद्धि करता है। तथा विपरीत रहने पर हानि करता है। इस क्रम में जन्मलग्न से वर्ष प्रवेश कालिक लग्न के प्रथमादि भावों में रहने पर क्रमशः देहसुख, अर्थलाभ, कुटुम्बवृद्धि, सुहृतप्राप्ति एवं सुखवृद्धि, पुत्रप्राप्ति या पुत्र से सुख, शत्रुभय एवं पराजय, स्त्रीसुख की प्राप्ति, रोगभय एवं मृत्युतुल्य कष्ट, धर्मप्राप्ति, वित्त, सुख एवं सन्तान प्राप्ति, लाभ एवं सुख तथा धनक्षय एवं दरिद्रता कारक होता है।

पुत्र/पुत्री गोद लेने का मुहूर्त्त

ह.चि.स्वा.वि.अनु.अश्वि.धनि. तथा पुष्य नक्षत्रों, सू.मं.बृ.शु. वासरों रिक्ता रहित तिथियों तथा ८।११।४।२ लग्नों में पुत्र गोद लेना शुभ होता है।

नाड़ीपरिहार-द्विर्द्वादश दोष में ताम्र एवं स्वर्ण, षडाष्टक में दो गाय ।। **वर-कन्या के नक्षत्र मेलाकपयोगी होड़ा चक्र** ।। नवपंचम में चाँदी-काँसा एवं नाड़ी तथा युजिभ दोष में गौ एवं स्वर्ण का दान कर विवाह करना चाहिए।

विविध वर्ण	नक्षत्र	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	यो.वै	राशीश	गण	नाड़ी
चू. चे. चो. ला	अश्विनी	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	महिष	भौम	देव	आदि
ली. लू. ले. लो	भरणी	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	सिंह	भौम	मनुष्य	मध्य
अ. ई. उ. ए.	कृत्तिका	मेष१ वृष३	क्षत्रि१ वैश्य३	चतुष्पद	मेष	वानर	भौम१ शुक्र३	राक्षस	अन्त्य
ओ. वा. वी. वू.	रोहिणी	वृष	वैश्य	चतुष्प	सर्प	नकुल	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य
वे. वो. का. की.	मृग	वृष२ मिथुन२	वैश्य२ शूद्र२	चतु२ मान२	सर्प	नकुल	शुक्र२ बुध२	देव	मध्य
कु. घ. ङ. छ.	आर्द्रा	मिथुन	शूद्र	मानव	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि
के. को. हा. ही.	पुनर्वसु	मिथु३ कर्क१	शूद्र३ विप्र१	मान३ जल१	मर्जार	मूषक	बुध३ चन्द्र१	देव	आदि
हू. हे. हो. डा.	पुष्य	कर्क	विप्र	जलचर	मेष	वानर	चन्द्र	देव	मध्य
डी. डू. डे. डो.	ऽश्लेषा	कर्क	विप्र	जलचर	मार्जार	मूषक	चन्द्र	राक्षस	अन्त्य
मा. मी. मू. मे.	मघा	सिंह	क्षत्रिय	चतुष्प	मूषक	मार्जार	सूर्य	राक्षस	अन्त्य
मो. टा. टी. टू.	पू.फा.	सिंह	क्षत्रिय	चतुष्प	मूषक	मार्जार	सूर्य	मनुष्य	मध्य
टे. टो. पा. पी.	उ.फा.	सिंह१ कन्या३	क्षत्रि१ वैश्य३	चतु१ मान३	गौ	व्याघ्र	सूर्य१ बुध३	मनुष्य	आदि
पू. ष. ण. ठ.	हस्त	कन्या	वैश्य	मानव	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि
पे. पो. रा. री.	चित्रा	कन्या२ तुला२	वैश्य२ शूद्र२	मानव	व्याघ्र	गौ	बुध२ शुक्र२	राक्षस	मध्य
रू. रे. रो. ता.	स्वाती	तुला	शूद्र	मानव	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य
ती. तू. ते. तो.	विशा.	तुला३ वृश्चि१	शूद्र३ विप्र१	मानव३ कीट१	व्याघ्र	गौ	शुक्र३ भौम१	राक्षस	अन्त्य
ना. नी. नू. ने.	अनु.	वृश्चिक	विप्र	कीट	मृग	श्वान	भौम	देव	मध्य
नो. या. यी. यू.	ज्येष्ठा	वृश्चिक	विप्र	कीट	मृग	श्वान	भौम	राक्षस	आदि
ये. यो. भा. भी	मूल	धनु	क्षत्रिय	मानव	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि
भू. ध. फ. ढ.	पू.षा.	धनु	क्षत्रिय	मान।। चतु३।।	वानर	मेष	गुरु	मनुष्य	मध्य
भे. भो. जा. जी.	उ.षा.	धनु१ मकर३	क्षत्रि१ वैश्य३	चतुष्प	नकुल	सर्प	गुरु१ शनि३	मनुष्य	अन्त्य
खी. खू. खे. खो.	श्रवण	मकर	वैश्य	चतु१।। जल२।।	वानर	मेष	शनि	देव	अन्त्य
गा. गी. गू. गे.	धनि.	मकर२ कुम्भ२	वैश्य२ शूद्र२	जचर मान२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य
गो. सा. सी. सू	शत.	कुम्भ	शूद्र	मानव	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि
से. सो. दा. दी	पू.भा.	कुम्भ३ मीन१	शूद्र३ विप्र१	मान३ जल१	सिंह	गज	शनि३ गुरु१	मनुष्य	आदि
दू. थ. झ. ञ.	उ.भा.	मीन	विप्र	चलच	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य
दे. दो. चा. ची	रेवती	मीन	विप्र	जलच	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य

गुरु एवं सूर्य बल का विचार- कन्या के विवाह तथा बटुक के उपनयन में गुरु बल एवं कुमार के विवाह तथा उपनयन में सूर्य तथा उपर्युक्त सर्वत्र चन्द्र बल का विचार करना चाहिए।

१ वर्ण सम्बन्धी गुण। (बगल में कन्या के वर्ण)

वर्ण	वि.	क्ष.	वै.	शू.
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्य सम्बन्धी गुण (बगल में कन्या का)

वश्य	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्प	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ ताराओं से प्राप्त गुण। (वर की तारा) (बगल में कन्या की तारा)

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

विवाह में रवि, चन्द्र एवं गुरु शुद्धि ज्ञानार्थ चक्र

रवि	चन्द्र	गुरु	ग्रह
३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११	शुभ स्थान
१।२।५।७।९	१।२।५।९	१।३।१०।६	पूज्य स्थान
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्दित स्थान

४ योनिकूट के गुण ज्ञानार्थ चक्र (उपर वर तथा बगल से कन्या की योनि)

योनियाँ	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	१	३	३	१	२	३	२	०
सर्प	२	२	२	४	२	२	१	३	३	१	३	०	३	१
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	१	२	२	२	२	०	२
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	०	२	२	१
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	१	२	२	२	२
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	३	१
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	३
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	१	१	१	२	२	२	२	४

७ राशि कूट के गुण। (उपर वर तथा बगल से कन्या का राशिकूट)

राशियाँ	१मे	२वृ	३मि	४क	५सि	६कं	७तु	८वृ	९ध	१०म	११कु	१२मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नैसर्गिक ग्रहमैत्री ज्ञानार्थ चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
चं.मं.बृ.	सू.बु.	सू.चं.बृ.	सू.शु.	सू.मं.चं.	बु.श.	बु.शु.	मित्र
बुध	मं.गु. शु.श.	शुक्र शनि	मं.बृ. शनि	शनि	भौम गुरु	गुरु	सम
शुक्र शनि	◆	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चं.मं.	शत्रु

५ ग्रहमैत्री गुण। (वर के राशीश) (बगल में कन्या के राशीश)

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	।।	।।
मंगल	५	४	५	।।	५	३	।।
बुध	४	१	।।	५	।।	५	४
गुरु	५	४	५	।।	५	।।	३
शुक्र	०	।।	३	५	।।	५	५
शनि	०	।।	।।	४	३	५	५

६ गण सम्बन्धि गुण (उपर वर के, बगल में कन्या)

गण	दे.	म.	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ नाड़ी के गुण (बगल में कन्या)

नाड़ी	आ.	म.	अं.
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त	८	८	०

अष्टवर्ग एवं उनके अधिपति

ट.५	चं.५	क.५	अं.७
श्वान	सिंह	मार्जार	गरुड़
श.४	य.४	प.५	त.५
अवि.	मृग	मूषक	सर्प

गुणविचार

मेलापक द्वारा प्राप्त वर कन्या के गुणों का योग सोलह से न्यून होने पर अशुभ, उसके बाद बीस तक मध्यम, तीस तक उत्तम तथा तदनन्तर उत्तमोत्तम होता है। मतान्तर से बीस से न्यून गुण प्राप्त कूट निन्द्य २५ तक मध्यम, ३० तक उत्तम एवं तदनन्तर उत्तमोत्तम होता है। **अन्य विशेष-** वर कन्या की एक राशि तथा पृथक नक्षत्र रहने पर अगर दोनों के चतुर्थ चरण हों तो अतीव शुभ।

नक्षत्र मेलापक चक्र। बगल में कन्या उपर वर के नक्षत्र

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृ.१	कृ.३	रोहि.	मृग.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	हस्त	चि.२	चि.२	स्वा
अश्विनी	२८	३३	२८।।	१८।।	२१।।	२२।।	२६	१७	१८	२२।।	३१।।	२७	२०।।	२६	१७।।	११	९	१३	२२।।	२६।।
भरणी	३४	२८	२९	१९	२२।।	१४।।	१७	२६	२६	३०।।	२३।।	२४।।	२१	१९	२८	२१।।	१९	६	१४।।	२९।।
कृत्तिका१	२७।।	२७।।	२८	१६।।	९	१५।।	१९	२०	२१	२५।।	२६।।	२३।।	१७।।	२१	२२	१५।।	१५।।	१८।।	२७।।	१५।।
कृत्तिका३	१८।।	१८।।	१९	२८	१९	२५।।	१६।।	१७।।	१८।।	२२	२३	२०	१९।।	२३	२४	२१	२१	२३।।	२२।।	१०।।
रोहिणी	२३।।	२३।।	१०	१९	२८	३६	२७	२३।।	२३।।	२७	२८	१३	१२।।	२६।।	२८	२५	२६	२०	१९	३५।।
मृगशिर२	२३।।	१३।।	१८।।	२८।।	३४	२८	१९	२५	२३।।	२६	२०	२२	२२।।	१७।।	२५।।	२३।।	२७	१३	१२	२५
मृगशिर२	२७	१८	२१	१८।।	२५।।	२०	२८	३३	३१।।	१९।।	१३	१५।।	२४	२०।।	२८।।	३०।।	३४	२१	१४	२७
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८।।	२४।।	२६	३४	२८	२५	१३	२०।।	१३।।	२३।।	२९।।	२२।।	२४।।	२४।।	२७	२०	२७
पुनर्वसु३	१९	२६	२२	१९।।	२३।।	२४।।	३२।।	२४	२८	१६	२३	१६।।	२२।।	२७।।	२१।।	२३।।	२४।।	२५।।	१८।।	२७
पुनर्वसु१	२१।।	२८।।	२५।।	२०	२४	२५	१९	१०।।	१४।।	२८	३५	२८।।	१५।।	२०	१४।।	१७	१८	२०।।	२०	२६
पुष्य	३०।।	३३।।	२६।।	२३	२४	१७	१०	१८	२१।।	३५	२८	३०	१८।।	१४।।	२३।।	२६	२७	१२	११।।	२६
ऽश्लेषा	२५	२३।।	२२।।	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८।।	२८।।	२८	१५	१५।।	१७।।	२०।।	२०	२६	२५।।	११।।
मघा	२१	२१	१७।।	१८।।	११।।	१९।।	२२।।	२२।।	२१।।	१६।।	१८।।	१६	२८	३०	२६।।	१६।।	१६।।	२२।।	२५।।	११।।
पू.फा.	२७	१९	२१	२२	२५।।	१७।।	२०।।	२८।।	२७।।	२२।।	१६।।	१६।।	३०	२८	३४	२४	२२।।	८।।	११।।	२५।।
उ.फा.१	१८।।	२७	२२	२३	२७	२५।।	२८।।	२१।।	२१।।	१६।।	२५।।	१८।।	२६।।	३४	२८	१८	१६।।	१४।।	१७।।	२६।।
उ.फा.३	१३	२१।।	१६।।	२१	२५	२३।।	३०।।	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२१।।	१७।।	२५	१९	२८	२५।।	२४।।	१६।।	२५।।
हस्त	१०	२०	१६।।	२१	२६	२६	३३	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२१।।	१७।।	२२।।	१७	२६	२८	२७	१९	२६।।
चित्रा२	१३	६	१९	२५।।	२०	१२	१९	२६	२४।।	२०।।	१२।।	२६।।	२३।।	९।।	१५।।	२४।।	२७	२८	२०	१९
चित्रा२	२२।।	१५।।	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२०	१८।।	२०	१२	२६	२५।।	१०।।	१७।।	१७।।	२०	२१	२८	२७
स्वाती	२७।।	२९।।	१७।।	१२।।	१६।।	२७	२७	२६	२६।।	२८	२८	१५।।	१३।।	२५।।	२५।।	२५।।	२७।।	२१	२८	२८
विशाखा३	२२।।	२२।।	२०।।	१५।।	१०।।	१८।।	१९।।	२१	२१	२२।।	२१।।	१९।।	१७।।	१९।।	१८।।	१७।।	१८।।	२७।।	३४।।	१८
विशाखा१	१६।।	१६।।	१४।।	१९।।	१४।।	२२।।	१३	१४।।	१४।।	१९	१८	१५।।	२१।।	२३।।	२१।।	१८	१९	२८	२३।।	८
अनुराधा	२४।।	१४।।	१९।।	२४।।	२७।।	२०।।	११	१६	२१।।	२६।।	१८	२१	२४।।	२०।।	२९।।	२६	२७	१२	७।।	२२।।
ज्येष्ठा	१२	१८।।	२४।।	२९।।	२२।।	२२।।	१३	३	६	१०।।	२०	२६	३१	२३।।	१६।।	१३	१२	२५	२०।।	१६।।
मूल	१२	२०	२४।।	१९	१३	१४	२१	१५	१२	८।।	१७।।	२४	२५	१९	९।।	१३	१३	२७	२७	२१
पू.षा.।।	२६	१९	१८	१२।।	१९	११	१९	२७	२७	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२५	२८।।	२७	१२	१२	२७
पू.षा.३।।	२७	२०	१९	१३।।	२०	१२	१८	२६	२६	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६
उ.षा.१	२५।।	२७	१४	८।।	११।।	१८	२४	२६	२६	२३।।	२४।।	९।।	११।।	२७	२८	२८।।	२७।।	२०	२०	१९
उ.षा.३	२८	२९।।	१६।।	१४	१७	२२।।	२०।।	२२।।	२२।।	२७	२८।।	१३	६।।	२२	२३	२६	२५	१७।।	२४।।	२३।।
श्रवण१।।	२८	२७	१४।।	१२	१८	२७	२४	२१।।	२१।।	२७	२५	१५	५।।	१९।।	२०	२४	२५	१९	२६	२३।।
श्रवण२।।	२७	२६	१३।।	१०	१७	२६	२३।।	२१	२३।।	२८	२६	१५	६।।	१८।।	२०।।	२३।।	२४।।	१८।।	२५।।	२३
धनिष्ठा२	२०।।	१०।।	२६	२३।।	२०	१२	८।।	१७।।	१७।।	२२	१३	२८	१८।।	५।।	१२।।	१६	१८।।	१६।।	२३।।	२६
धनिष्ठा२	२०	११	२६	३०।।	२७।।	२१	१०	२०	१९	१४	५	२०	२५।।	११।।	१९।।	१७।।	२१	१८	१९	२२
शतभिष	१५	२१	२८	३२।।	२५।।	२५	१८	१०	१०	७।।	१५	२०	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	८।।	२६	२६	१९
पू.भा.३	१८	२५	२०	२४।।	३१।।	३१।।	२४।।	१७	१७	१३।।	२०।।	१४	१९।।	२५।।	१७।।	१५।।	१७।।	१८।।	१९।।	२८
पू.भा.१	१४।।	२१।।	१६।।	१९	२६	२६	२५।।	१८	१८	१८	२५	१८।।	१६।।	२२।।	१४।।	१६।।	१८।।	१९।।	१२।।	१९
उ.भा.	२४।।	१५।।	१८।।	२१	२५	१७	१६।।	२५।।	२७	२६	१९	२०	१७।।	१५।।	२५।।	२७।।	२६	९।।	५	१९।।
रेवती	२५	२४।।	११।।	२४	१७	२६	२५।।	२४	२५।।	२४।।	२७।।	१३	१२	२२	२२।।	२४।।	२६।।	२०।।	१३।।	११।।

नक्षत्र	वि.३	वि.१	अनु.	ज्ये.	मूल	पूषा।।	पूषा३।।	उषा१	उषा३	श्र.१।।	श्र.२।।	धनि२	धनि२	शत.	पू.भा३	पू.भा१	उ.भा.	रेवती
अश्विनी	२२।।	१९।।	२६।।	१५	१३	२६	२७	२४।।	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४।।	२४।।	२६
भरणी	२२।।	१९।।	१७।।	१९।।	२०	१९	२०	२७	२८।।	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२।।	१६।।	२८
कृत्तिका१	१९।।	१६।।	२०।।	२६।।	२४।।	१८	१९	१४	१५।।	११।।	१०।।	२५	२५	२७	१९।।	१७।।	१९।।	११।।
कृत्तिका३	१४।।	२१।।	२५।।	३१।।	२०	१२।।	१३।।	९।।	१४	११	१०	२२।।	२९।।	३१	२३।।	२०	२२	१४
रोहिणी	९।।	१६।।	३०।।	२४।।	१४	१९	२०	१२।।	१७	१९	१८	२०	२६	२४।।	३०।।	२७	२६	१९
मृगशिर२	१७।।	२३।।	२२।।	२५।।	१५	१३	१३	१८	२२	२४।।	२४।।	१३	१९	२७	२९।।	२६	१७	२७
मृगशिर२	१९।।	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०।।	२५	२५	१२	१३	२१	२३।।	२७।।	१७	२७
आर्द्रा	२०	१३।।	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२।।	२२।।	२२।।	१७	१९	११	१६	१९	२७	२७
पुनर्वसु३	२१	१३।।	२०।।	५	१३	२७	२६	२७	२२।।	२२।।	२३।।	१७।।	१८।।	११	१७	१९।।	२७।।	२८
पुनर्वसु१	२०	१९	२६	१०।।	८	२१	२०।।	२१।।	२६।।	२५	२७	२१	१२।।	७।।	११	१७	२५	२५।।
पुष्य	२१	२०	१९	२२	१७	११	१४।।	२२।।	२६	२४	२५	१३	४।।	१४।।	१८	२४	१८	२७
ऽश्लेषा	१६।।	१५।।	२०	२६	२३।।	१६	१६।।	८।।	१२	१३	१३	२७	१८।।	१८।।	१२।।	१८।।	२०	१२
मघा	१७।।	२४।।	२६।।	३४	२४	२०	२१	११।।	५।।	५।।	४।।	१८।।	२४।।	२५।।	१८।।	१८।।	१८।।	१२
पू.फा.	१९।।	२६।।	३४।।	२४।।	१९	१९	१९	२७	२१	१९।।	१८।।	४।।	११।।	१९।।	२४।।	२३।।	१६।।	२४।।
उ.फा.१	१७।।	२४।।	३०।।	२९।।	१०।।	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११।।	१८।।	१२।।	१६।।	१५।।	२६।।	२४।।
उ.फा.३	१६।।	१८	२७	३३	१५।।	२९।।	२८।।	२९।।	२६	२६	२५	१६।।	१६।।	२०।।	१४।।	१८	२९।।	२७
हस्त	१७।।	१९।।	२६	१२	१४	२७	२६	२७।।	२३	२४	२४	१९	१९	८।।	१४।।	१९	२७।।	२७
चित्रा२	२६।।	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७।।	१९	१९	१८	१८	२४	१८।।	२२	११	२१
चित्रा२	३४।।	२४।।	७।।	२१।।	२८	१४	१३	२१	२५।।	२७	२७	२६	२०	२६	२०।।	१५	४	१३
स्वाती	२०	१०	२३।।	१८।।	२३	२७	२६	१८	२२।।	२३।।	२३।।	२७	२१	२०	२५	१९।।	२०	१३
विशाखा३	२८	१८	१७	२०।।	२८	२२	२१	१३	१७।।	१७।।	१७।।	३२।।	२६	२६	२२	१६।।	१३।।	५
विशाखा१	१७	२८	२७	३१।।	२३।।	१६।।	१६।।	९।।	१२	१२	१२	२७	२७	२६।।	२२।।	२१	१८	९।।
अनुराधा	१७	२८	२८	३१	२६।।	१४।।	१४।।	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४।।	२४	१८	२७
ज्येष्ठा	२०।।	३१।।	३०	२८	१५	१७।।	१७।।	१७।।	२०	२०	२०	२५	२५	१८	११	९	२१	२१
मूल	२७	२४।।	१६।।	१६	२८	१७	२७	२५।।	१५।।	१५।।	१५।।	२१।।	२८	२१।।	१६।।	१६।।	२५।।	२७।।
पू.षा.।।	२०	१६।।	१८।।	१७।।	२८	१७	२७	३३	२३	२३।।	२३।।	८।।	१६।।	२३।।	३१।।	३२।।	२३।।	३२
पू.षा.३।।	१९	१८।।	१८।।	१९।।	२७	१८	२८	३४	२४	२४	२३।।	८।।	१५।।	२२।।	२९।।	३२।।	२३।।	३२।।
उ.षा.१	१२	११।।	२५।।	१९।।	२५।।	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५।।	२२।।	२२।।	२८।।	३१।।	३२।।	२३।।
उ.षा.३	१६।।	१४	२८	२२	१६।।	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५।।	१७।।	१७।।	३३।।	३०।।	३२।।	२३।।
श्रवण१।।	१६।।	१४	२८	२३	१७।।	२३।।	२४।।	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८।।	२३।।	३१।।२	३०।।	२२।।
श्रवण२।।	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५।।	१५	२४	२७	२८	३०	२०।।	१८	२३	२९।।	३१।।	२४।।
धनिष्ठा२	३०	२८	१४	२६	२१	९	९।।	१६।।	२५।।	२८	२८	२८	१८।।	२३।।	२१	२६।।	१५।।	२२।।
धनिष्ठा२	२५।।	२८	१२	२६	२९।।	१७।।	१६।।	२३।।	१८।।	२१	२१	२०	२८	३३	२८।।	१८	७	१४।।
शतभिष	२६	२६।।	२२	१९	२२।।	२४।।	२३।।	२३।।	१८।।	१८।।	१८।।	२५	३३	२८	१९	९।।	१७	१६।।
पू.भा.३	२१	२१।।	२७।।	१२	१५।।	३१।।	३०।।	२९।।	२४।।	२५।।	२५।।	२०।।	२७।।	१९	२८	१८।।	२३।।	२०।।
पू.भा.१	१४	२१	२७	११।।	१५	३१	३१।।	३०।।	२८।।	२९।।	३०।।	२५।।	१७	७।।	१६।।	२८	२३	३०।।
उ.भा.	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२।।	३१।।	२९।।	२८।।	२९।।	१४।।	६	१६।।	२१।।	३३	२८	३५
रेवती	५।।	१२।।	२७	२२	२७	३०।।	३०	२१	१९	२०।।	२२।।	२२।।	१४	१६	१८	२९।।	३३	२८

समान गोत्र- प्रवर में विवाह से महापातक होता है- (आपस्तम्ब)- समान गोत्र- प्रवर की कन्या से विवाह एवं गमन से उत्पन्न ब्राह्मण जातक भी चाण्डाल हो जाता है। अन्य मत- समान प्रवर-गोत्र तथा माता के गोत्र में विवाह नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसे कुलों में उत्पन्न कन्या भगिनी होती है। पतित स्त्री से उत्न्न ब्राह्मणी एवं शुद्र से उत्पन्न तथा समान गोत्र प्रवर के पुरुष-स्त्री से उत्पन्न जातक चाण्डाल होता है। **समानक्रियादि विचार-** एक माता से उत्पन्न पुत्र-पुत्री का एक संवत्सर में समान क्रिया (संस्कार) नहीं करनी चाहिए। परन्तु माता के भेद होने पर हो सकता है। कन्या के भाई का वर के बहन से भी विवाह नहीं करना चाहिए। पुत्र के विवाह के बाद छः मास तक पुत्री का विवाह नहीं करना चाहिए। परन्तु संवत्सर परिवर्तन हो जाने पर छः मास के भीतर भी विवाह शुभ होता है। कन्या के विवाह के बाद पुत्र का विवाह श्रेष्ठ होता है। दो सहोदर कन्याओं का सहोदर भाइयों से विवाह नहीं करना चाहिए। दो सहोदर भाइयों या बहनों का विवाह भी छः मास के भीतर भी निषिद्ध है।

युजिभ ज्ञानार्थ चक्र

अ. भ. कृ. रो. मृ. रे.	आ.पुन.पु.श्ले.म.पू.फा.उ. फा.ह.चि.स्वा.विशा.अनु.	ज्ये.मू.पू.षा.उ.षा.श्र. धनि.शत.पू.भा.उ.भा.
पूर्वभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
पतिश्रेष्ठ	दोनों में प्रीति	कन्या श्रेष्ठ

विवाह लग्न में ग्रहप्रद रेखा

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥

सू. श. रा. के. ३।६।८।११, मं. ३।६।११, चं. २।३।११, बु. बृ. १।२।३।४।५। ६।९।१०।११, तथा शु. १।२।४।५।९।१०।११ इन स्थानों में रेखाप्रद होते हैं, अतः रेखाप्रद ग्रहों के अंकों का योग कर विवाह लग्न में ग्रहबल विश्वा जानना चाहिए। विवाह काल में लग्नेश तथा नवमांशेश यदि १।४।७।१०।११वें स्थान में स्थित हों तो दोष समूहों को नष्ट करते हैं।।

वधूप्रवेश मुहूर्त्त विचार

विवाह दिवस से २।४।५।६।७।८।९।१०।१२ एवं १४वें दिन वधू प्रवेश शुभ होता है। सोलह दिन के बाद विषम मास, वर्षों में तथा पाँच वर्ष बाद कभी भी कर लेना चाहिए।

तिथियाँ	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ भद्रादि दोष रहित।
शुभ वार	चं.बृ.शु. कुछ आचार्य बुधवार का भी ग्रहण करते हैं।
शुभ नक्षत्र	उ३.रो.अश्वि.पु.ह.अभि.मृ.रे.चि.अनु.श्र.ध.मू.म.स्वा. ये नक्षत्र प्रशस्त हैं।
विशेष- रात्रि में विवाह नक्षत्र के स्थिर लग्न एवं सन्मुहूर्त में वधू प्रवेश शुभ होता है इसमें प्रतिशुक्र विचार नहीं करते हैं।	

द्विरागमन मुहूर्त्त विचार

विवाह के बाद दूसरी बार पितृ गृह से कन्या के पति गृह गमन को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से विसम मास-वर्ष, मेष, वृश्चिक, कुम्भ राशि के सूर्य तथा शुक्ल पक्ष में वर की गुरु एवं रवि शुद्धि रहने पर द्विरागमन शुभ होता है। इसमें गुरु-शुक्र के अस्तादि काल तथा शुक्र के सम्मुख एवं दक्षिणस्थ स्थिति का त्याग अवश्य करना चाहिए।

शुभनक्षत्र	ह. अश्वि. पुष्य, उत्तरा३, रो. स्वा. पुन. अभि. श्र.ध. श. मू. मृ. रे. चि. अनु. ये नक्षत्र चन्द्रमा एवं तारा के अनुकूल रहने पर शुभ हैं।
शुभ वार	चं. बृ. बु. शु. भद्रादिदोष रहित इन दिनों में शुभ है।
शुभ तिथि	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ शुभ।
शुभलग्न	२।३।६।७।११ इन लग्नों के शुभ युक्त या दृष्ट रहने पर शुभ।
लग्नशुद्धि	गुरु ३।६।१०।११वें, शुक्र केन्द्र में तथा पाप ग्रहों के ३।६।११वें स्थितिवश शुभ एवं शुद्ध लग्नों में द्विरागमन शुभ है।

दोषयुक्त वर्णादि कूटों के परिहार- वर्गवैर, योनिवैर, गणवैर, नुदूर, एवं अन्य कूट सम्बन्धि समस्त दोष ग्रह मैत्री द्वारा नष्ट हो जाते हैं। वर्ण, वर्ग, गण, योनि, भकूट इत्यादि समस्त मेलापक सम्बन्धी दोष ग्रह मैत्री रहने पर नष्ट हो जाते हैं। सद् भकूट, योनि शुद्धि तथा ग्रह मैत्री इनमें से एक भी प्राप्त हो जाने पर कन्या के राक्षसगण जनित दोष की समाप्ति हो जाती है। राशीशों में या नवमांश पतियों में अगर मैत्री हो तो गण आदि दोष रहने पर भी विवाह पुत्र-पौत्र एवं समृद्धि को देने वाला होता है।

नवागत वधू पाककर्म मुहूर्त्त- मृ.उ३.पुष्य.कृत्ति.ज्ये.श्र.ध.शत.रो.वि. तथा रेवती नक्षत्रों, शुभ तिथियों एवं रवि-भौम रहित अन्य वारों में नववधू से पाकारम्भ कराना चाहिए। **लग्नशुद्धि-** स्थिर लग्नों में चतुर्थ एवं अष्टम के शुद्ध (ग्रह वर्जित) तथा सप्तम भाव के बलवान रहने पर नूतन वधू का प्रथम पाककर्म श्रेष्ठ होता है।

[illegible]

वैधव्य दोष परिहार- [illegible]

रजोदर्शन के चतुर्थ दिन शुद्धि- [illegible]

विवाह के बाद माताओं की रजोदोष विधि- [illegible]

विवाह बाद अशौच होने पर विधि- [illegible]

जन्मराशि वश सूर्यादि ग्रहों का गोचर फल एवं वेध ज्ञापक चक्र

	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१	स्थाननाश यात्रा	पुष्टि अलाभ	भय पीड़ा	बन्धन भय	अति विषाद	सुखहानि नाश	स्वर्णनाश पीड़ाभय	हानि कष्टभय	हानि रोगभय
२	हानि भय	धनलाभ सुख	धननाश नेत्ररोग	धनलाभ लाभ	धनहि लाभ	सुख लाभ	शोक धनहानि	नैस्व व्यय	हानि वित्तनाश
३	सुख श्रीप्राप्ति	द्रव्यप्राप्ति सुख	सुख श्रीप्राप्ति	भय शत्रु	भय रोगादि	सुख अर्थलाभ	सुखप्राप्ति धनागम	सुखप्राप्ति लाभ	सुखप्राप्ति बुद्धि
४	रोगभय मानहानि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	दैन्य रोग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	रिपुनाश सुख	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	गमन धनहानि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	रोग भय	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	कान्तिक्षय पापबुद्धि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	धनप्राप्ति कर्मसिद्धि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	धनप्राप्ति सुख	विविधार्थ लाभ	लाभ सुखाप्ति	शुभ अर्थागम	सौख्य वित्तलाभ	दुख धनागम	सुख वित्तलाभ	सुखवित्त- प्राप्ति	सुयशोऽथ लाभ
१२	द्रव्यनाश पीड़ाभय	रोग धननाश	रोग शोक	शोक धननाश	देहपीड़ा भय	धनागम लाभ	क्लेश- मनर्थ	हानि पीड़ा	पीड़ाभय वैर

ग्रहों के शुभ, पुज्य एवं निन्द्य स्थान

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि।राहु।केतु	ग्रह
३।६ १०।११	१।२।३।५।६ ७।९।१०।११	३।६ १०।११	२।६ १०।११	२।५।७ ९।११	१।२।३ ९।११	३।६ १०।११	शुभ
१।२।५ ७।९	*	१।२।५ ७।९	१।३।५ ७।९	१।३ ६।१०	५।६ ७।१०	१।२।५ ७।९	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्य

गर्भिणी प्रश्न ज्ञान- गर्भिणी के कन्या या पुत्र सम्बन्धिज्ञान में यदि पृच्छक अधोलिखित चक्र में सूर्य, मंगल या गुरु का स्पर्श करता है तो पुत्र, चन्द्र, बुध, शुक्र के स्पर्श से कन्या, शनि से गर्भपात, राहु से सुतासुत तथा केतु से क्लीव जानना चाहिए।

बुध	शुक्र	चन्द्र
गुरु	सूर्य	मङ्गल
राहु	शनि	केतु

गर्भ प्रश्न चक्र

पञ्चदशीयन्त्र प्रश्न- कार्य सिद्धि सम्बन्धि प्रश्नोत्तर ज्ञानार्थ यदि पृक्षक अधोलिखित चक्र में १।५।९ का स्पर्श करे तो तत्काल कार्य सिद्धि २।८ से कार्य सिद्धि नहीं तथा ३।४।६।७ का स्पर्श करे तो वार्ता चल रही है। ऐसा जानना चाहिए।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

पञ्चदशीय यन्त्र चक्र

ग्रहों के स्व गृह, उच्च, नीच, मूल, त्रिकोण, जाति, वर्ण, अवस्था एवं भाग्योदय वर्षादि बोधक चक्र

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
सिंह	कर्क	मे.वृश्चि.	मिथु.कन्या	धनु,मीन	वृष,तुला	मकर,कुंभ	कन्या	मीन	गृहराशि
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन	धनु	उच्चराशि
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	सन्ध्या	सन्ध्या	सन्ध्या	कालबल
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कुम्भ	सिंह	मूलत्रिकोण
ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्वादि
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	अन्त्यज	अन्त्यज	अन्त्यज	जातियाँ
चतुष्पद	सरीसृप	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सरीसृप	सरीसृप	वश्यादि
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री
क्रूर	सौम्य	पाप	सौम्यपाप	सौम्य	सौम्य	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
रक्त	श्वेत	रक्त	हरित	पीत	कर्बुर	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	वर्ण
वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर	संज्ञान्तर
पृथ्वीलोक	पृथ्वीलोक	नाग	स्वर्ग	स्वर्ग	नाग	नाग	नाग	नाग	लोक
पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदयादि
पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	कफ	वात	वात	वात	प्रकृतियाँ
कटुक	लवण	तिक्त	मिश्रित	मधुर	क्षीराम्ल	तिक्त	तिक्त	तिक्त	रस
व्योमदृक्	समदृक्	व्योमदृक्	तिर्यग्दृक्	समदृक्	तीक्ष्णग्दृक्	अधोदृक्	अधोदृक्	अधोदृक्	अवलोकन
पू.मुख	प.मुख	द.मुख	उ.मुख	उ.मुख	पू.मुख	प.मुख	द.मुख	द.मुख	गृहदिङ्मु
मुक्ता	रजत	पुत्र	स्वर्ण	रत्न	रजत	लौह	अस्थि	अस्थि	पदार्थ
वृद्ध	मध्य	युवा	बाल्य	वृद्ध	मध्य	गलित	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पशुस्थान	जलगृह	दग्धम	गोष्ठम्	देवस्थान	जलसमीप	ब्राह्मभू.	ब्राक्तभू.	ब्राक्तभू.	निवास
हरिवंशश्र.	शिवार्चन	रुद्राभिषेक	कन्यादान	अमाङ्ग	गोप्रतिमा	मृत्युञ्जय	भुजगदा	ध्वाजागदा	क्षेमोपाय
२२वर्ष	२४वर्ष	२८वर्ष	३२वर्ष	१६वर्ष	२५वर्ष	३६वर्ष	४२वर्ष	४८वर्ष	भाग्योदय
शुष्क	सजल	शुष्क	जल	सजल	शुष्क	शुष्क	शुष्कादि	संज्ञा	
अयन	मुहूर्त्त	दिवस	ऋतु १	मास	पक्ष १	वर्ष	कालसंज्ञा	उच्चसेसातवीं राशि नीच होती है।	
सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	सत्वादिगुण		
वह्नि	अम्बु	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	देवी	ब्रह्मा	ग्रहो के देवता		

भाग्योदय वर्ष का प्रयोजन- जो ग्रह अपने गृह, उच्च, अथवा षड्वर्गों में स्थित होकर शुद्ध हो, उसके भाग्योदय वर्षों में मनुष्य का सुख एवं भाग्योदय होता है।

सूर्य नक्षत्र से काष्ठ संचय चक्र

अधः	६	पाकसुरस
शिर में	२	शवदाह
मध्य में	४	सर्पभय
पूर्व में	४	मित्रागम
दक्षिण में	४	रोगभय
पश्चिम में	४	क्वाथादि
उत्तर में	४	सुख

सूर्य नक्षत्र में अश्व चक्र

स्थान	नं.	फल
शीर्ष में	५	सुख
पृष्ठ में	१०	लाभ
पुच्छ में	२	स्त्रीनाश
पाद में	४	रणभंग
उदर में	५	अश्वनाश
मुख में	२	सुख

सूर्य नक्षत्र में शिविका चक्र

स्थान	नं.	फल
पूर्व	५	सुख
दक्षिण	५	रोग
पश्चिम	५	भय
उत्तर	५	पीड़ा
मौ.लौ.	३	शुभ
दण्डयो	४	शुभ

सफलं भद्राङ्गा चक्र

स्थान	नं.	फल
मुख	५	कार्यहानि
कण्ठ	१	पीडन
वक्ष	११	द्रव्यहानि
नाभि	४	कलह
कटि	६	अर्थनाश
पुच्छ	३	शुभ

राहु नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक बीजवपन चक्र

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

हलप्रवहण एवं बीजवपन मुहूर्त्त- भ.कृ.आर्द्रा,आश्ले.पू.ज्ये. रहित चक्रशुद्ध नक्षत्रों ४।६।९।१४।३० तिथि रहित अन्य तिथियों, ११।४।१।१०।७ वर्जित अन्य लग्नों में पाप ग्रहों के निर्बल तथा चन्द्रमा के जलचर राशिस्थ, शुक्र के चन्द्र नवमांशस्थ, लग्न में गुरु के रहने पर रवि एवं शनि वर्जित अन्य दिवसों में हल जोतना श्रेष्ठ होता है। हल प्रवहण के नक्षत्रों तथा श्र.श.पुन.वि. नक्षत्रों, भौम रहित दिनों में चक्रशुद्धि रहने पर बीज वपन शुभ होता है।

सूर्य नक्षत्र से तैलिक चक्र

स्थान	नं.	फल
शृंङ्ग में	७	सम्पत्ति
अन्त्य में	३	शोक
तल में	२	विपत्ति
कर्ण	७	धन
दारुयु.	३	वृद्धि
सम्भार	५	सुख

अथ मेषादि राशियों की स्वामि, वर्ण, धातु, एवं संज्ञादि बोधक चक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशियाँ
भौम	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु	राशीश
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेतारुण	पाण्डुर	विचित्र	कृष्ण	कनक	पिङ्गल	कर्बुर	बभ्रुव	स्वच्छ	वर्ण
क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	जातियाँ
पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	धातु
चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चरादिसंज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पु.स्त्री.संज्ञा
पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	पृष्ठादिसंज्ञा
रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्रि	रात्रि	दिन	समान	बल
चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	जलचर	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	कीट	[illegible]	[illegible]	जलचर	जलचर	चतु:संज्ञा
शीर्ष	मुख	बाहु	हृदय	उदर	कटि	बस्ति	शिश्न	उरुद्वय	जानुद्वय	जंघाद्वय	पादद्वय	निवास
दक्षिण	अग्नि	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	अग्नि	याम्य	ईशान	पश्चिम	पश्चिम	ईशान	प्लवत्वादि
ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम	दीर्घादि
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	स्वभाव
पर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तद	दिशा
मेष	गोच	गीतनृत्य	युद्धजल	अरण्य	स्त्रीगृह	स्वसद्य	सर्पनि	युद्धभू	बनजल	शिल्पगृह	जल	निवास
भूमि	राख्य	स्थान	समीप	भूमि	नौका	नपरभू	वासभू	वाजिस्थान	समीप	भाण्डपार्श्व	समीप	स्थान

सूर्य नक्षत्र से गज चक्र

स्थान	नं.	फल
शीर्ष में	३	लक्ष्मी
कण्ठ में	३	श्रीलाभ
मुख में	२	मरण
हृदय में	३	सुख
अग्रपाद में	४	व्याधि
पृष्ठभाग में	४	भति
पुच्छ में	४	मृत्यु
पृष्ठ में	४	व्याधि

सूर्य नक्षत्र से प्रयोगारम्भ ज्ञान चक्र

स्थान	नं.	फल
शीर्ष में	३	हानि
मुख में	३	सिद्धि
कण्ठ में	३	मृत्यु
हस्त में	४	शत्रुभय
हृदय में	४	इष्टाप्ति
उदर में	३	हानि
कटि में	३	इष्टाप्ति
चरण में	४	धनद

सूर्य भुक्त नक्षत्र में नौका चक्र

स्थान	नं.	फल
स्तम्भाग्र में	३	अशुभ
मध्य में	६	शुभ
मुख में	३	अशुभ
हृदय में	३	अशुभ
पृष्ठ में	१	अशुभ
अग्र में	३	अशुभ
मुखाग्र	३	अशुभ
मध्य में	६	शुभ

शनि नक्षत्र से शनि चक्र

स्थान	नं.	फल
मुख में	१	अर्थनाश
द.भुज में	४	सुजयाप्ति
चरण में	६	भ्रमण
वा.भुज में	४	रोगभय
हृदय में	५	श्रियागम
मस्तक में	३	राज्यलाभ
नेत्र में	२	सुसौख्य
गुह्य में	२	मृत्युभय

सूर्य नक्षत्र से वृक्ष चक्र

नं.	फल
३	अशुभ
३	शुभ
४	अशुभ
२	अशुभ
३	शुभ
१	अशुभ
५	अशुभ
२	शुभ
४	शुभ

सूर्य नक्षत्र से तीन-तीन चन्द्र नक्षत्र में हवन फल ज्ञापक चक्र

३	सूर्य	अशुभ
३	बुध	शुभ
३	शुक्र	शुभ
३	शनि	अशुभ
३	चन्द्र	शुभ
३	मंगल	अशुभ
३	गुरु	शुभ
३	राहु	अशुभ
४	केतु	अशुभ

हवन हेतु अग्नि वास ज्ञान- शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक की संख्या में एक जोड़ कर वार संख्या भी जोड़े तथा चार से भाग दे, प्राप्त शेष के द्वारा निम्नलिखित फल जानना चाहिए-

हवन हेतु अग्नि वास चक्र

शेष संख्या	अग्निवास स्थान	फल
१	स्वर्ग	प्राणनाश
२	पाताल	धननाश
३,०	पृथ्वी	सुख

विशेष- वार की गणना रविवार से होगी।

कथा प्रारम्भ चक्र

(गुरु नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक)

नक्षत्र	फल
४	अर्थ
४	लाभ
४	सिद्धि
४	लाभ
४	मृत्यु
४	राज्य
३	मोक्ष

गुरु एवं सूर्य का बल विचार- गर्ग के अनुसार स्त्रियों का गुरुबल, पुरुषों का सूर्यबल तथा दोनों का चन्द्रबल श्रेष्ठ होता है। विवाह काल में जन्मराशि से ५।९।११।२।७ स्थानों में स्थित गुरु श्रेष्ठ १।३।६।१० स्थानों में पूजा द्वारा शुभ तथा ४।८।१२ में नेष्ट होता है। इसके अतिरिक्त अगर गुरु, अपनी उच्चराशि, स्वराशि, स्वमित्रराशि, अपने नवमांश तथा अपने वर्गोत्तम नवमांश में स्थित हो तो भी शुभ कारक होता है।

तन्वादि द्वादशभावों के विचारोपयोगी तथ्य- जो-जो भाव शुक्र, बुध, वृहस्पति एवं अपने स्वामी से दृष्ट या युक्त होकर अन्य किसी ग्रह से दृष्ट या युक्त नहीं हों वे उस भाव से उत्पन्न शुभ फलों को देने वाले होते हैं। कोई भी भाव यदि शुभराशि एवं अपने अधिपति ग्रह से दृष्ट एवं युक्त होकर किसी अन्य पापग्रहों से दृष्ट या युक्त न हों तो उस भाव की पुष्टि करता है। नीचराशि एवं शत्रुराशि में स्थित ग्रह भाव के विनाशक तथा मूल त्रिकोण, उच्च एवं मित्र राशि में स्थित ग्रह भाव के पोषक होते हैं।

राशियों के अधिपति ज्ञापक चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
मं	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	अधिपति

ग्रहों की उच्च नीच राशि एवं मूल त्रिकोणादि ज्ञानार्थ चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्चराशि	०	१	९	५	३	११	६
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीचराशि	६	७	३	११	९	५	०
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
मूल त्रिकोण राशियाँ	५	२	१	६	९	७	११

सूर्यादिग्रहों की दीप्तादि अवस्थायें- सूर्यादिग्रहों की दीप्त, स्वस्थ, मुदित, शान्त, दीन, अतिदुखी, विकल, खल एवं क्रोधी, ये नव अवस्थायें होती हैं।

अवस्था ज्ञानार्थ चक्र

स्थिति	उच्चस्थ	स्वगृही	अधिमित्र	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	पापयुक्त	पापदृष्ट	सूर्ययुक्त
अवस्था	दीप्त	स्वस्थ	मुदित	शान्त	दीन	दुखित	विकल	खल	क्रोधी

तन्वादि बारह भावों के स्थिर कारक- क्रमशः सूर्य, वृहस्पति, मंगल, चन्द्रमा, वृहस्पति, मंगल, शुक्र, शनि, वृहस्पति, बुध, वृहस्पति एवं शनि तन्वादि बारह भावों के कारक होते हैं।

जन्मांग द्वारा मृत्यु के कारण का ज्ञान- लग्नेश जिस राशि सम्बन्धी नवमांश में स्थित हो उस राशि के कोप से उत्पन्न रोग द्वारा उस जातक की मृत्यु होती है। लग्नेश के मेषादि राशियों के नवमांश में स्थित होने पर क्रमशः तापज्वर या अग्नि, श्वांस विकार एवं शूल, शिरोवेदना, वात व्याधि एवं उन्माद, विस्फोटक पदार्थ, जठराग्नि तथा गुह्यरोग, शोक, चतुष्पाद एवं ज्वर, पत्थर एवं शस्त्रादि, अत्यन्त वायु, व्याघ्रादि हिंसक पशुओं एवं शूल रोग, व्याघ्र एवं स्त्री, ज्वर एवं अतिसार द्वारा मृत्यु होती है।

कन्या का वैधव्य योग- कन्या की कुण्डली में चन्द्रमा से सप्तम में मंगल, शनि, राहु या सूर्य स्थित हों अथवा लग्न, अष्टम, या लग्न से सप्तम में स्थित हो तो वैधव्य कारक होते हैं। मंगल की राशि में पापग्रहों के साथ सूर्य बारहवें या आठवें में स्थित हो तो भी रण्डा होती है। सूर्य के साथ शनि, कर्क या तुला राशि का हो तो धन से हीन होती है। लग्न, चतुर्थ, अष्टम, द्वादश या सप्तम में पापयुक्त मंगल स्थित हो तो भी शुभ नहीं होता इसी प्रकार चन्द्रमा से इन स्थानों की स्थिति में भी जानना चाहिए। **विवाह में भौम दोष-** लग्न एवं चन्द्रमा से १।१२।४।७।८ इन स्थानों मंगल स्थित हो तो कन्या पति तथा पति कन्या का नाशक होता है।

नाड़ी दोष का परिहार- वर एवं कन्या दोनों के नक्षत्र यदि, रो.आ.मृग.वि.पुष्य,श्रवण,उ.भा. एवं रे. में से हों तो उन्हें नाड़ी दोष नहीं लगता है। कुछ लोग मृगशिरा के स्थान पर मघा नक्षत्र का ग्रहण करते हैं।

प्रमाण श्लोक- रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नि पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यभमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते।।

इष्टकाल वश रोगी का बाधा ज्ञान- तिथि, वार, नक्षत्र,लग्न एवं प्रहर इन सबको जोड़कर आठ का भाग दें, ३,७ के शेष रहने पर देवबाधा २,८ शेष से पितृबाधा, ६,४ से भूत तथा १,५ से ग्रहबाधा होती है। इसी प्रकार तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न एवं प्रहर के योग में १२ से भाग देकर शेष ३,५,६,८,९,११ हो तो जीवन तथा १,२,७,१०,४,१२ शेष से मृत्यु होती है। राजमार्त्तण्ड के अनुसार भी वार,नक्षत्र,तिथि, दिशा के योग में आठ से भाग दें, २,८ शेष से पितृ, ३,७ से देव, ६,४ से प्रेत तथा १,५ से ग्रहबाधा होती है। लब्धि को त्रिगुणित कर आठ जोड़ दें पुनः ४ से गुणा कर सात से भाग दें। एकादि शेष से क्रमशः कुलज, ग्राम्य, वन्यभव, राजकुलज, अन्नज, एक्तिज तथा ग्रहज बाधा होती है। इन बाधाओं की विविध उपायों द्वारा शान्ति करनी चाहिए।

भद्राकृत्य- वधबंध विषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादियत्। तुरङ्गमहिषोष्ट्रादिकर्म विष्टयां हि सिद्ध्यति।। वध करना, बन्धक बनाना, विषकर्म, अग्न्यास्त्र निर्माण तथा प्रयोग, छेदन, उच्चाटन, घोड़ा, भैंस एवं ऊंट, आदि से सम्बन्धित कर्म भद्रा में सिद्ध होते हैं।

भद्रादिदोषपरिहार- दिन की भद्रा रात्रि या रात्रि की भद्रा दिन में हो तो दोष कारक न होकर कल्याणकारक होती है। अन्य- भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, प्रत्यरी एवं जन्मतारा मध्याह्न के बाद शुभ होती है।

भद्राज्ञानार्थ चक्र

पक्ष	तिथियाँ	भाग
शुक्ल	८,१५	पूर्वार्द्ध
	११,४	परार्द्ध
कृष्ण	७,१४	पूर्वार्द्ध
	३,१०	उत्तरार्द्ध

राशिवश भद्रावास एवं फल ज्ञान

चन्द्रराशि	वासस्थान	फल
४,५,११,१२	मृत्युलोक	कार्यनाश
१,२,३,८	स्वर्गलोक	शुभ
६,७,९,१०	पाताललोक	धनागम

भद्रा-परिहार- जहाँ भद्रा होती है वहीं उसका फल भी होता है। अतः अत्यावश्यक होने पर उक्त चक्र द्वारा भद्रावास का ज्ञान कर शुभ कार्य किया जा सकता है। दिन की भद्रा रात्रि में तथा रात्रि की भद्रा दिन में शुभ होती है।

तात्कालिक करण द्वारा संक्रान्तियों के वाहनादि ज्ञानार्थ चक्र

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज्य	विष्टि	शकुनि	चतुष्प	नाग	किंस्तुघ्न
स्थिति	निवि	उपवि.	उर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निवि	निविष्ट	उर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व
तत्फल	सम	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवा.	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	बानर
तत्फल	भीति	भय	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कंबल	नग्न	धनाय
उपव.	श्वेत	रक्त	चित्र	पीत	नील	कंबल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	वेणव
आयुद्ध	बन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	शस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पावस	भक्ष	पक्वान्न	दुग्ध	दधि	चितान्न	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कंकुम	चन्दन	मृति.	गौरी	महावर	ओतु.	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कपूर
जातियाँ	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्णसं.
पुष्प	पुन्नांग	जाती	वकुल	केतकी	विल्व	अर्क	दूर्वा	कमल	वेला	पाटल	जपा
भो.पा.	सुवर्ण	चांदी	ताम्र	कांस्य	लोहा	खप्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	वज्र	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पीत	हरित	भूर्जप	सित	पांडु	नील	कृष्ण	चर्म	वन्दल	धूम्र
स्नान	गङ्गा	यमुना	सरस्वती	मंदाकिनी	नर्मदा	कृष्णा	गोदावरी	भागीरथी	तुंगा	कावेरी	कृष्णा
वय	बाल	कुमार	गताल.	युवा	पौढ़ा	प्रगल्भा	वृद्धा	बन्ध्या	बन्ध्या	पुत्रार्थि	प्र.चा.

चैत्रादि मासों की शून्य तिथि आदि ज्ञानार्थ चक्र (शुभ कार्यों में त्याज्य)

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्र.	आश्वि.	कार्त्तिक	मार्ग	पौष	माघ	फाल्गुन	मास
९ ति.	१२	कृ.१४	कृ.६	३	१	१०	कृ.५	७	४	कृ.५	कृ.४	शू.ति.पर
८ ति.	१२	शु.१३	शु.	२	२	११	शु.१४	८	५	शु.६	शु.३	शू.ति.पर
अश्विनी रोहिणी	चित्रा स्वाती	उ.षा. पुष्य	पू.फा. धनिष्ठा	उ.षा. श्रवण	शत. रेवती	पू.भा.	कृत्तिका मघा	चित्रा विशाखा	आर्द्रा अ.ह.	श्रवण मूल	भरणी ज्येष्ठा	शून्य नक्षत्र
कु.११	मी.१२	वृ.२	मि.३	मे.१	कं.६	वृ.८	तु.७	ध.९	क.४	म.१०	सि.५	राशियाँ

तिथि एवं वारों के योग से मृत्युयोग ज्ञानार्थ चक्र

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५	तिथि

भद्रा का मुख एवं पुच्छ ज्ञापक चक्र

४	८	११	१५	३	७	१०	१४	इन तिथियों में
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	इन दिशाओं में
५	२	७	४	८	३	६	१	इन प्रहरों के आदि में
५	५	५	५	५	५	५	५	भद्रा की मुखघटी ५, कृष्णपक्ष में शुभ
८	१	६	३	७	२	५	४	इन प्रहरों के अन्त की
३	३	३	३	३	३	३	३	३घटी पुच्छ शुक्लपक्ष में शुभ

संक्रान्ति एवं वाहनादि का दुष्ट फल- संक्रान्ति काल में संक्रान्तियों के जो-जो वस्त्र, भोजन, शस्त्र, लेप, जाति आदि होते हैं, उनका नाश होता है अथवा उक्त वस्त्र, भोजन, वाहानादि से जीविका करने वालों की हानि होती है।

नक्षत्रतारकामानोक्त प्रयोजन- जिस नक्षत्र में विवाह होता है, उस नक्षत्र की तारा संख्या तुल्य वर्षों में विवाह का शुभ या अशुभ फल प्राप्त होता है। तथा ज्वरादि एवं अन्य प्रकार की व्याधियाँ जिस नक्षत्र में प्रारम्भ होती है, उस नक्षत्र की तारा संख्या तुल्य दिनों तक उस व्याधि से कष्ट होता है।

स्थूल चन्द्रशृंङ्गोन्नति ज्ञान- मीन एवं मेषराशि के चन्द्रमा का शृंङ्ग दक्षिण में उन्नत, वृष एवं कुम्भ गत चन्द्र का सम तथा शेष राशियों में स्थित चन्द्रमा का शृंङ्ग उत्तर में उनत होता है। फल- याम्य उन्नत शृंङ्ग में दुर्भिक्ष, सम में समता तथा सौम्य उन्नत में सुभिक्ष होता है।

नक्षत्रों के स्वामी तथा शुभ-अशुभ आदि विशेष संज्ञाएं

नक्षत्र	स्वामी	शुभाशुभ	जातियाँ	संज्ञा	मुख	घ.उ.ने.	यात्रादि में दोहद
अश्विनी	अश्विनीकु.	शुभ	वैश्य	ल.क्षि.	तिर्यक	५०	तिलतण्डुल
भरणी	यम	नाशक	चाण्डाल	उ.क्रू.	अध	२४	साक्षतभाप
कृतिका	वह्नि	अशुभ	ब्राह्मण	मि.सा.	अध	३०	भाप
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभ	शूद्र	ध्रु.स्थि.	ऊर्ध्व	४०	गव्य
मृगशिरा	चन्द्र	शुभ	कृषक	मृदुमै.	तिर्यक	१४	गोघृत
आर्द्रा	शिव	शुभ	क्रूरजाति	दा.ति.	ऊर्ध्व	२१	दुग्ध
पुनर्वसु	अदिति	शुभ	वैश्य	च.च.	तिर्यक	३०	हरिणमांस
पुष्य	गुरु	शुभ	क्षत्रिय	ल.क्षि.	ऊर्ध्व	२०	मृगरक्त
श्लेषा	सर्प	अशुभ	चाण्डाल	ती.दा.	अध	३२	पायस
मघा	पितर	शोकद	शूद्र	उगक्रूर	अध	३०	वाषमांस
पू.फा.	भग	अशुभ	ब्राह्मण	उगक्रूर	अध	२०	मृगमांस
उ.फा.	आर्यमा	शुभ	क्षत्रिय	ध्रु.स्थि.	ऊर्ध्व	१९८	शशकमांस
हस्त	सूर्य	शुभ	वैश्य	लघु.क्षि.	तिर्यक	२१	शालि
चित्रा	त्वष्टा	शुभ	कृषक	मृ.मै.	तिर्यक	२०	प्रियंगु
स्वाती	वायु	शुभ	क्रूरजाति	च.च.	तिर्यक	१४	अपूप
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभ	चाण्डाल	मि.सा.	अध	१४	नानापक्षमांस
अनुराधा	मित्र	शुभ	शूद्र	मृ.मै.	तिर्यक	१०	सत्फल
ज्येष्ठा	इन्द्र	शुभ	कृषक	ती.दा.	तिर्यक	१४	कूर्ममांस
मूल	राक्षस	क्षय	क्रूरजाति	ती.दा.	अध	५६	सारिकमांस
पू.षा.	जल	धनहानि	ब्राह्मण	उगक्रूर	अध	२४	गोधिककमासं
उ.षा.	विश्वेदेवा	हानि	क्षत्रिय	ध्रुव.स्थि.	ऊर्ध्व	२०	शल्वमांस
श्रवण	विष्णु	वृद्धि	चाण्डाल	च.च.	ऊर्ध्व	१०	कृशरान्न
धनिष्ठा	वसु	शुभ	कृषक	च.च.	ऊर्ध्व	१०	मुद्गमोदकं
शतभिष	वरुण	शुभ	क्रूरजाति	च.च.	ऊर्ध्व	१८	यवपिष्ठ
पू.भा.	अजैकच.	अशुभ	ब्राह्मण	उगक्रूर	अध	१६	मत्यान्न
उ.भा.	अहिर्बु	शुभ	क्षत्रिय	ध्रु.स्थि.	अध	२४	चित्रितान्न
रेवती	पूषा	शुभ	शूद्र	मृ.मै.	तिर्यक	१०	दध्योदन

नक्षत्रपाद वश कष्टज्ञान चक्र

ज्वरादि रोगोत्पत्ति में		नक्षत्र के पादवश दिन संख्या				
दि.सं.	दानादि	१च	२च	३च	४पा	जपार्थमंत्र
दि.९	भोजन	९	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमंत्रजप
दि.११	गोत्रादि	०	८०	४०	११	यमयमत्वेतिमंत्र
दि.९	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निमूर्धतिमंत्र
दि.७	घृतदान	७	५	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेतिमंत्र
मा.१	तिलदान	९	१८	७	१०	इमं देवेतिमंत्र
मृत्यु	गोदान	०	१४	०	०	नमसतेरुद्रमंत्र
दि.७	पित्तल	७	७	२	२१	अदितिद्यौमंत्र
दि.७	तैलान्न	७	७	१०	२१	बृहस्पतेभिर्मंत्र
मृत्यु	गोजाऽदि	०	७	४१	०	नमोस्तुसर्पेतिमंत्र
दि.२०	वस्त्राज्य	१५	१५	१७	२०	पितृभ्यइतिमंत्र
मृत्यु	भोजन	०	१४	०	३०	भएप्रणोत्तमंत्र
दि.७	अन्नदान	७	१७	७	६०	अर्यमर्णमंत्र
दि.५	तिलदान	११	९	१५	०	उदुत्यंजातदेमंत्र
दि.११	दुग्धदा.	११	१७	९	१६	स्पष्टातुग्येतिमंत्र
मृत्यु	गोघृत	६०	०	३०	०	वायोरानेतिमंत्र
दि.१५	गोस्वर्ण	१५	१२	४	१३	इन्द्राग्नि इतिमंत्र
स्थिर	गोघृत	६०	९	३६	६०	नमोमित्रैतिमंत्र
मृत्यु	तिलान	५९	९	६	४	त्रातारामभन्देतिमंत्र
दि.९	रौप्योपान	०	१५	१५	६	मातापुत्रेतिमंत्र
मृत्यु	गोमुक्ता	०	२४	२४	१०	आपोधर्मैतिमंत्र
मा.१	भोजन	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवतिमंत्र
दि.११	श्रीफल	६०	४	६	९	विष्णोरराडितिमंत्र
दि.१५	अश्वान्न	१५	४५	२०	२१	वसौःपवित्रेतिमंत्र
दि.११	भोजनान्न	०	१२	३	२२	वरूणस्यमंत्र
मृत्यु	भोजन	०	१	२१	१९	अजैकचरणोतमंत्र
दि.७	अन्नदान	१०	१९	९	१५	अहिर्बुध्यन्येतिमंत्र
स्थिर	वृषदान	१८	१	१९	२०	पृषन्तवव्रततिमंत्र

नष्ट वस्तु ज्ञानार्थ नक्षत्रों की सुलोचनादि संज्ञा

संज्ञा	नष्टवस्तु	लाभालाभ	भाना	स्वरूप
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	३	अश्वमुख
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	३	योनिस्वरूप
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	८	क्षुरक्षाकृति
अन्ध	पूरब	शीघ्रलाभ	५	शंकटवत्
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	३	मृगास्य
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	१	मंणिसदृश
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	४	गृहसदृश
अन्ध	पूरब	शीघ्रलाभ	३	वाणाकृति
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	५	चक्राकार
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	५	गृहसदृश
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	मंचकाकृति
अन्त्य	पूरब	शीर्घलाभ	२	खट्वाकार
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	५	हस्ताकार
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	१	मौक्तिक
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	१	प्रवालाकार
अन्ध	पूरब	शीर्घलाभ	४	तोरणसम
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	४	बलिसदृश
मध्य	पश्चिम	दूरेश्रव.	३	कुण्डलाकृति
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	११	सिंहपुच्छवत्
अन्ध	पूरब	शीघ्रलाभ	२	गजदन्तसम
मन्द	दक्षिण	यत्नलाभ	२	मंचकसदृश
सुलोचन	उत्तर	दूरश्रव	३	विभानसदृश
अन्ध	पूरब	अलाभ	४	मृदङ्गाकृति
मन्द	दक्षिण	शीघ्रलाभ	१०	वर्तुल
मध्य	पश्चिम	यत्नलाभ	२	मंचाकाकर
सुलोचन	उत्तर	अलाभ	२	युग्मसदृश
अन्ध	पूरब	शीघ्रलाभ	३२	मर्द्दलाकार

तिथि-वार एवं नक्षत्र-वार के योग से उत्पन्न अनेक योग बोधक चक्र

योग नाम	क्रकच	दग्ध	विषा.	हुताश	यम घंट	अमृत सिद्धि	दग्ध योग	यम दंष्ट्र	सर्वार्थसिद्धि
सूर्य	१२	१२	४	१२	मघा	हस्त	भरणी	म.ध.	ह.मू.पु.अश्वि.उ.
चन्द्र	११	११	६	६	विशाखा	मृग	चित्रा	वि.मू.	पु.श्र.रो.मृ.अनु.
भौम	१०	५	७	७	आर्द्रा	अश्वि.	उ.षा.	कृ.भ.	अ.उ.भा.कृ.श्ले.
बुध	९	३	२	८	मूल	अनु	धनि.	पू.षा.पु	रो.अनु.ह.कृ.मृ.
गुरु	८	६	८	९	कृतिका	पुष्य	उ.फा.	उषा	रे.अनु.अ.पु.पु.
शुक्र	७	८	९	१०	रोहिणी	रेवती	ज्ये.	रो.अनु	रे.अनु.अश्वि.पु.पु.
शनि	६	९	७	११	हस्त	रोहिणी	रेवती	श्र.श.	श्र.रो.स्वा.

संक्रान्तियों के मुहूर्त ज्ञानार्थ चक्र

मु.	संज्ञा	नक्षत्र
४५	वृहत्	उ.३,रो.विशा.पुन.
१५	जघन्या	श्ले. ज्ये. श.
		भ. स्वा. आ.
३०	समा	मृ. रे. चि.
इसी प्रकार चन्द्रदर्शन में भी मुहूर्त्त का ज्ञान कर फल कहना चाहिए।		अनु. ह. अ.
		पु. धनि. अभि.
		कृ. श्र. म.
		पु. ३, मू.

वारबेलाज्ञानार्थ चक्र

वार	दिन	रात
सूर्य	४।५	६।४
चन्द्र	७।३	७।४
भौम	६।२	२
बुध	५।३	६।४
गुरु	६।८	५।८
शुक्र	३।४	३
शनि	६।८	६।१

दिन में- रविवार को ४।५, सोमवार को ७।२, मंगलवार को ६।२, बुधवार को ५।३, गुरुवार को ६।८, शुक्रवार को ३।४, शनिवार को १।६।८। रात्रि में- रविवार को ६।४, सोमवार को ७।४, मंगलवार को २, बुधवार को ६।४, गुरुवार को ५।८, शुक्रवार को ३, शनिवार को ६।१ बारवेलाएं त्याज्य हैं।

दिनमान का १६ कलांश जनित दुर्मुहूर्त्तादि ज्ञापक चक्र

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वासर
१४	९।१२	२।४	८	६।१२	४।६	१।२	दुष्टक्षण
१४	१२	१०	८	६	४	२	दि.कुलिका
१३	११	९	७	५	३	१	रा.कुलिका
६	४	२	१४	१२	१०	८	कंटकक्षण
८	६	४	२	१४	१२	१९	कालवेला
७।८	१०।१४	२।४	९।१०	१५।१६	५।६	११।१२	अर्धयाम्
१०	८	६	४	२	१४	१०	यमघंट

दोषकालज्ञान

वशिष्ठ के अनुसार- प्रहरार्ध में निधन, यमघंट में निर्धनता तथा कुलिक में सर्वनाश होता है, परन्तु रात्रि में ये दोषकारक नहीं होते हैं।

अरिष्ट शान्ति के लिए शताक्षर गायत्री मंत्र की जप विधि

विनियोग- ॐ अस्य श्रीशताक्षरागायत्रीमंत्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठाऋषयो गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्दांसि सवितृजातवेदस्त्र्यम्बको देवता: गायत्र्यक्षराणि बीजानित्रिष्टुबक्षराणि शक्तय: अरिष्टशान्तये जपे विनियोग:। विश्वामित्र मरीचिकश्यपवशिष्टऋषिभ्यो नम: शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नम: मुखे।। सवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नम: हृदये। गायत्र्यक्षराणिबीजानी गुह्ये।। त्रिष्टुवक्षराणि शक्तये नम: पादयो:।। ॐ तत्सवितुवरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नम:। ॐ धियो यो न: प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतोनिदहातिवेद: शिखायै वषट्। ॐ स न: पर्षदातिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुंदुरतात्याग्नि: कवचाय हुँ। ॐ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्व्वारुकमिववन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्। स्मर्तव्याखिललोकवर्त्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिध्यति।। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते। तद्वत्कृक्षितिसिद्धयेऽस्तुवरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं मह:।।१।। एरां ध्यात्वा शताक्षरां भावयेत्।

अथहोमार्थशताक्षरागायत्रीमंत्र:।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।। ॐ जात वेदसेसुनवाम सोममारातीयतो निदहातिवेद: स न: पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धु दुरितात्याग्नि:।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।।

अरिष्ट शान्त्यर्थ महामृत्युञ्जय वैदिक मंत्र जप विधि

आयाचम्य प्रणानायम्य, शान्तिपाठ, सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा।। संकल्प:। अमुकमासीयामुकपक्षीयाऽमुक तिथि वमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरेउत्पन्नोत्पत्स्यमानाऽखिलारिष्ट निवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादीर्घायुष्य संततारोग्यतावाप्तये श्रीमृत्युञ्जयमंत्रजपमहं करिष्ये।।

ऋष्यादिन्यास- वामदेवकहोलवंशिष्ठाऋषय:मूर्ध्नि।। पंक्तिर्गायत्री अनुष्टुप्छन्दांसि वक्त्रे।। सदाशिव महामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नम: हृदि।। ह्रीं शक्तये नम: लिङ्गे।। श्रीं बीजाय नम: पादयो:।। इति **ऋष्यादिन्यास।।** ॐ हौं ॐ जूं स: ॐभूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।। ऊर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ भूर्भुव: स्वरों जूं स: हौं ॐ।। *अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय मत्रस्य वामदेवकहोल वसिष्ठाऋषय: पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुपूछन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जय रुद्रो देवता ह्रीं शक्ति: श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।* ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं, ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाण्ये स्वाहा हृदयाय नम:।। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुस्व: स्व: यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा।। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखावै वषट् ।। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां ह्रीं हौं कवचायं हुं।। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: मृत्योर्मुक्षीम ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु: साममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ हौं ॐ जूं स: भूर्भुव: स्व: मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्वलज्वाल मां रक्षरक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।। **इति षडङ्गन्यास।।** त्र्यम्बकं शिरसि।। यजामहेभ्रुवो:।। सुगन्धिं नेत्रयो:।। पुष्टिवर्द्धनं मुखे।। उर्व्वारूकं गाण्डयो:।। इरा हृदये।। बन्धनात् जङ्गरे।। मृत्यो: लिङ्गे।। मुक्षीय उरों:।। मा जान्वो:।। अमृतात् पादयो:।। **इति पदन्यास।।** मूलेनव्यापकंकृत्वाध्यानंकुर्यात्।

अथ ध्यान।। हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिर:। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।। अक्षसंङ्गमृगहसतमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्त्रवत्पीयूषार्द्रतनुंभजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।। चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिंपीयूषपात्रंवहद्धसताब्जेनदधत्सुदिव्यममलहास्यास्यपङ्केरुहम्।। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलै: पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।२।। इतिध्यात्वा।। मानसोपचारै संपूजय, ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।। ॐ यं वाध्वात्मकं धूपं समर्पयामि।। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि।। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पाञ्जलि समर्पयामि।। मंत्र जपेत्। ॐ हौं ऽ जूं स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुव: स्वरों जूं स: हौं ॐ।। ततोजपान्तरं देवदक्षिणकरे जपं समर्पयेत्।। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।१।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगै: पीडितं कर्मबन्धनै: ।।२।।

अपर्ण।। अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जय: प्रीयतां न मम।। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु त्र्यम्बकं। जपसांगतासिद्ध्यर्थयथाकामनाद्रव्येणतद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्ता पामार्गसमिद्भिर्होम:।। तद्दशांशमार्जनम्।। तद्दशांशतर्पणम्। तद्दशांशब्राह्मणभोजनं कुर्यात् ।।इति।।

ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दान पदार्थ

सूर्य का दान	चन्द्र का दान	भौम का दान	बुध का दान	गुरु का दान	शुक्र का दान	शनि का दान	राहु का दान	केतु का दान
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम,पृथ्वी	कांस्यपात्र	पीताधान्य	श्वेतचन्दन	नीलम, तिल	सप्तधान्य	कम्बल,कस्तूरी
गोधूम, गुड़	श्वेतचावल	मसूर, द्विदल	हरितवस्त्र	पीतवस्त्र,सुवर्ण	श्वेतचावल	माषान्न, तेल	माषान्न,हेमनाग	माषान्न
सवत्सा गौ	श्वेतवस्त्र	गोधूम	गजदंत, घृत	घृत, पीतपुष्प	श्वेतचित्रवस्त्र	कृष्णवस्त्र	नीलवस्त्र,गोमेद	वैदूर्यमणि
कमलपुष्प	श्वेतचन्दन	रक्तवृषभ	मुद्गन्न, पन्ना	पीतफल	श्वेतपुष्प	कृरथी, लोहा	कृष्णपुष्प	कृष्णपुष्प
नूतनगृह	श्वेतपुष्प	गुड़, रक्तचन्दन	सुवर्ण, दासी	पुखराज	रजत, हीरा	महिषी	खड्ग, तिल	तिलतैल
रक्तचन्दन	चीनी, रजत	रक्तवस्त्र	सर्वपुष्प, रत्न	हरिद्रा	घृत, सुवर्ण	कृष्णधेनु:	तैल, लौह	रत्न, सुवर्ण
रक्तवस्त्र	वृषभ, घृत	रक्तपुष्प	कर्पूर, शास्त्र	पुस्तक, मधु	श्वेताश्व, दधि	कृष्णपुष्प	शूर्प, कम्बल	लोहा, बकरा
सुवर्ण, ताम्र	शङ्ख, दधि	सुवर्ण, ताम्र	अनेक फल	लवण, शर्करा	सुगंधद्रव्याणि	उपानह	सतिलताम्रपात्र	शस्त्र
केशर, मूँगा	मोती, कर्पूर	केशर, कस्तूरी	षट्रसभोजन	भूमि, छत्र	शर्करागौ,भूमि	कस्तूरी,सुवर्ण	सुवर्ण, रत्न	सप्तधान्य
वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणि	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा
ज.सं.७०००	ज.सं.११०००	ज.सं.१००००	ज.सं.९०००	ज.सं.१९०००	ज.सं.१६०००	ज.सं.२३०००	ज.सं.१८०००	ज.सं.१७०००

योगिनी दशा जनित अनिष्ट फल शान्ति हेतु मंगलादि योगिनीयों के मंत्र

मंगला का मंत्र	पिंगला का मंत्र	धान्या का मंत्र	भ्रामरी का मंत्र	भद्रिका का मंत्र	उल्का का मंत्र	सिद्धा का मंत्र	संङ्कटा का मंत्र
ॐह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	ॐग्लौं पिंगलेबैरिकारिणि- प्रसीदफट् स्वाहा	ॐश्रीं धनदे धान्यै स्वाहा	ॐभ्रामरिजगता- मधीश्वरी भ्रामरी क्लीं स्वाहा	ॐभद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा	ॐउल्के मम रोगं नाशय जृंभय स्वाहा	ॐह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा	ॐह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा

ग्रहों के एक राशि के भोगकाल एवं फलदायक काल का ज्ञान

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु/केतु	ग्रह
मा.१	दि.२।	मा.१।।	मा.१	मा.१३	मा.१	मा.३०	मा.१८	एक राशि का भोगकाल
आदिमें	अंत में	आदि में	सदा	मध्य में	मध्य में	अन्त्य में	अन्त्य में	फलसमय
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गन्तव्यराशि से पूर्व फलदायक

सभी ग्रहों के दोष शान्ति हेतु सामान्य औषधियाँ

सर्षप	देवदारु	हरिद्रा	लोध	सरपुङ्खा	कुष्ठ	तीर्थोदक
धानकालावा		बरियरा	लजालू	नागरमोथा	कंगुनी	

इन समस्त औषधियों को जल में डालकर उससे स्नान तथा तदनन्तर दान करने से ग्रह जनित पीड़ा दूर होती है।

अथात्रषड्भानि

जन्म	१	मृत्युभय
कर्म	१०	कर्मनाश
संघात	१६	बंधुनाश
समुदाय	१८	सुखनाश
विनाश	२४	देहनाश
मानस	२५	मनस्ताप

आवश्यकतावश अनिष्टतिथ्यादि निवारणार्थ दान

तिथि	वार	नक्षत्र	करण	योग
तण्डुल	रत्न	गौ	धान्य	सुवर्ण
चन्द्र	भद्रा	तारा	तिथ्यादिदोष रहने पर उससे सम्बन्धितवस्तु का दान कर वह कार्य किया जा सकता है।	
शंख	धान्य	लवण		

चान्द्र मासों में जन्मनक्षत्र का रविवारादि में फल

वार	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
फल	गमन	सुभोज्य	वह्निभय	सन्मति	वस्त्रलाभ	सौख्य	दुःख

वार दोष शमन हेतु दान।। रविवारदि दोषों के शमनार्थ क्रमशः ताम्बुल, श्रीखण्ड, भोजन, पुष्प का दान, विष्णु को प्रणाम, सफेदवस्त्र का दान तथा तैल स्नान करना चाहिए।

वर्ष पत्र में मुन्थादान

दान
चावल
सुवर्ण
कांस्य
पात्र
घृत
श्वेतवस्त्र
वर्णदक्षिणा

ग्रहों का तंत्रसारोक्तमंत्र

ग्रह	मंत्र
सूर्य	ॐ घृणि सूर्याय नमः
चन्द्र	ॐ सों सोमाय नमः
भौम	ॐ अं अंगारकाय नमः
बुध	ॐ बुं बुधाय नमः
गुरु	ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र	ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि	ॐ शं शनैश्चराय नमः
राहु	ॐ रां राहवे नमः
केतु	ॐ कें केतवे नमः

धारणार्थ ग्रहों के रत्न

सूर्य	मणिक्य	विद्रुम
चन्द्र	मोती	चाँदी
भौम	मूँगा	मूँगा
बुध	पन्ना	सोना
गुरु	पुष्पराज	मोती
शुक्र	वज्र	चाँदी
शनि	नीलम	लोहा
राहु	गोमेद	लाजावर्त
केतु	वैदूर्य	लाजावर्त

एक ही कोष्ठात्मक यंत्र में रत्नन्यास क्रम

ईशान	पूर्व
बुध, पन्ना	शुक्र, हीरा
उत्तर	मध्य
गुरु, पुखराज	सूर्य, मणिक
वायव्य	आग्नेय
केतु, वैदूर्य	चन्द्र, मोती
पश्चिम	दक्षिण
शनि, नीलम	भौम, मूँगा
नैऋत्य राहु गोमेद	

सभी ग्रहों का राशिफल नियम- सूर्य मंगल राशि के आदि में शुक्र एवं गुरु, मध्य में बुध सर्वदा तथा चन्द्रमा एवं शनि राशि के अन्त में विशेष फलदायक होते हैं। रविवार के दिन चान्द्रमास में अपने जन्म नक्षत्र का प्रवेश हो तो उस मास में यात्रा, चान्द्रवार में अन्नप्राप्ति, मंगलवार में अग्निभय, बुधवार में सान्मति, गुरुवार में वस्त्रप्राप्ति, शुक्रवार में सुखप्राप्ति, शनिवार के दिन जन्म नक्षत्र का प्रवेश हो तो उस मास पर्यन्त दुःख की प्राप्ति होती है। **ग्रहों के राशि भोग की दिन संख्या-** सूर्य, बुध एवं शुक्र ३० दिन, भौम ४५ दिन, गुरु १३ मास, चन्द्र २ दिन, राहु १८ मास तथा शनि ३० मास में एक राशि का भोग करते हैं। **शनि पाद विचार-** जन्मकाल में १,६,११ में शनि हो तो स्वर्ण, २,५,९ में हो तो रजत, ३,७,१० में हो तो ताम्र तथा ४,८,१२ में हो तो शनि का लौह पाद होता है। **फल-** जन्मकालिक शनि लौह पाद में हो तो धन विनाश, स्वर्ण में सुख, ताम्र में समता तथा रजत में हो तो सौभाग्य होता है। **शनि के अढ़ैया का फल-** जन्मराशि से ४,८ में शनि स्थित हो तो व्याधि, बंधुविरोध, प्रदेश गमन, क्लेश, दुर्जनों से भय, चिन्ता, मृत्यु, अग्निभय, लोहा एवं शस्त्र से भय तथा सर्वदा दुःख ही दुःख देता है। **शनि की साढ़ेसाती का फल-** यदि शनि राशि, राशि से द्वितीय तथा द्वादश में स्थित हो तो, अनेक प्रकार के कष्ट, दुर्जनों से भय, पुत्र तथा पशुओं को पीड़ा, हानि, मरण, विदेश यात्रा, साधारण सुख, अर्थ तथा ऋद्धि विनाश आदि करता है।

स्मार्तकर्म का क्रम। धर्मसिन्धु के अनुसार क्रमशः संकल्पशान्ति, विप्रवरण, दिग्रक्षण, पञ्चगव्यद्वारा भूमिशुद्धि, मुख्य देवताओं का पूजन, अन्य देवों का पूजन, पात्रासादन, हवनकर्म, यथाक्रमहोमकर्म, स्विष्ट होम, बलि, पूर्णाहुति, पूर्णपात्रदान, अग्निपूजन, अभिषेक, विसर्जन, श्रेयोदान, दाक्षिणादिदानकर्म, कर्मेश्वरार्पण आदि करना चाहिए।

ग्रहाणां बीजमन्त्राः

सूर्यः- ॐ ह्रां ह्रीं सूर्याय नमः।
चन्द्रः- ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।
भौमः- ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः।
बुधः- ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।
गुरुः- ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः।
शुक्रः- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।
शनिः- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।
राहुः- ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।
केतुः- ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।

ग्रहों की होम समिधा। सूर्यादिग्रहों की क्रमशः अर्क (मन्दार), पलाश, खदिरा, अपामार्ग (चिचिड़ा), पिप्पल,गुलर, शमी, दुर्वा एवं कुशा होम समिधाएं होती हैं।

ग्रहों के होम प्रमाण। प्रत्येक ग्रह के लिए १०८ अथवा २८ आहुतियां देनी चाहिए। अथवा मधु एवं सरसों से १००८ आहुति देनी चाहिए। **सन्तानप्रद मन्त्र।** देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगतः।। कौशल्या सुशुभे तेनपुत्रेणामित तेजसा। यथा वरेणदेवानामदितिर्वज्रपाणिना।। ऊपर लिखित मन्त्रों का १२५००० जप तथा इसके दशांश तिल, खीर एवं घी से हवन, हवन के दशांश तर्पण तथा तर्पण के दशांश ब्राह्मण भोजन कराने से पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है।

जन्म एवं नामराशि के प्रधानता का निर्णय। विवाह, समस्त मंगल कार्यों, यात्रा एवं ग्रहगोचर में जन्मराशि की प्रधानता होती है। यहाँ नामराशि का चिन्तन नहीं करना चाहिए। देश, ग्राम, गृह, युद्ध, सेवाकर्म तथा व्यवहार में नामराशि की प्रधानता होती है। अतः यहाँ जन्मराशि का चिन्तन न करें। **अन्य आवश्यक कार्यों में बृहस्पति का मत-** मास प्रयुक्त कार्यों में गुरु एवं शुक्र के मूढ़त्व, मलमास तथा गुर्वादित्य का विचार नहीं होता है।

ज्योति प्रकाश के अनुसार त्रिधा शान्ति- शास्त्र में कहे हुए ग्रहोषधियों से स्नान, ग्रह एवं ब्राह्मणों की पूजा तथा ग्रहों के उद्देश्य से होम, ये तीन प्रकार की ग्रह शान्ति होती है। **श्रीपति के अनुसार-** देव, ब्राह्मण की वन्दना तथा इनके वचनों के अनुपालन, साधुजनों के वचन श्रवण, भगवत कथा श्रवण, होम, तीर्थयात्रा एवं पवित्र मन से जप- दान करने वालों को ग्रह पीड़ा नहीं पहुँचाते हैं। **पिता के अभाव में कन्यादान का अधिकार-** (याज्ञवल्क्य) पिता, पितामह, भ्राता, स्वकुलपुरुष तथा जननी क्रमशः कन्यादान के अधिकारी होते हैं। इनके द्वारा कन्यादान नहीं करने पर ऋतुकाल में इनको भ्रूण हत्या का पाप लगता है। कन्यादान करने वालों के अभाव में कन्या स्वयं ही वर-वरण कर लेवे। **नारद-** पिता स्वयं ही अथवा पिता की अनुपस्थिति में भ्राता कन्यादान करे। अथवा क्रमशः मातामह, मामा, स्वकुलजन, जननी एवं इन सबके अभाव में स्वजातिजनों को कन्यादान करना चाहिए। अगर कन्या का ऊपर कहे हुए लोगों में कोई भी न हो तो कन्या को राजा के पास चले जाना चाहिए। इस प्रसङ्ग में ध्यातव्य है कि उपवीत संस्कार संस्कृत भाई ही कन्यादान का अधिकारी होता है। **पिता आदि के न रहने पर उपनयन का अधिकार-** पिता अथवा पिता के अभाव में पितामह उपनयन करें, इसके भी अभाव में चाचा तथा इसके भी अभाव में सहोदर तथा तदनन्तर क्रमशः संगोत्रपिण्ड, मामा, असपिण्डगोत्रजन उपनयन के अधिकारी होते हैं। परन्तु ये सब बटुक से बड़े होने चाहिए। किसी के भी न रहने पर श्रोत्रिय उपनयनाधिकारी होता है।

शिववास फल

द्विगुणित तिथि में ५ जोड़कर सात का भाग दें, एकादि शेष रहने पर क्रमशः कैलाश, गौरीसंग, वृषभारूढ़, सभा, भोजन, क्रीड़ा एवं श्मशान में शिव की उपस्थिति रहती है। जिससे क्रमशः सुख, सुख सम्पत्ति, अभिष्टसिद्धि, सन्ताप, पीड़ा, कष्ट तथा मरण होता है। **विशेष-** नित्य के शिवपूजन, श्रावणमास, तथा अधिक मास में शिव वास का विचार नहीं होता है।

नवग्रहाणां जपार्थ वैदिकमन्त्रा

सूर्यस्य।। ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मत्यञ्च।। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो याति भुवनानि पश्यम्।

चन्द्रस्य।। ॐ इमन्देवाऽअसपत्नर्ठसुबध्वं महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इममुष्यैपुत्रम मुष्यै पुत्रमध्यै विशऽएषवोमीराजा- सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ राजा।।

भौमस्य।। ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।। अपार्ठ रेतार्ठसिजिन्वति।।

बुधस्य।। ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहीत्वमिष्टापूतसर्ठ सृजेथामयञ्च।। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वदेवा यजमानश्चसीदत।।

गुरोः।। बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।। यद्दीदयच्छवसऋत- प्रजाततदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्।।

शुक्रस्य।। ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।।

शनेः।। ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयेऽआपोभवन्तुपीतये।। शंयोरभिस्रवन्तु नः।।

राहोः।। ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा।। कयाशचिष्ठयावृता।।

केतोः।। ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे।। समुषद्भिरजायथाः।।इति।।

शुभछिक्का- भोजन, शयन, दान, आसन, वाम, पृष्ठ, युद्ध, औषधसेवन, अध्ययन, बीजवपन में छिक्का शुभ होती है।।

छिक्का के शुभाशुभ फल ज्ञानार्थ चक्र

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	वार
विघ्न	विलंब	उत्तम	मृति	शुभ	आगमन	लाभ	विलंब	रवि
लाभ	विलंब	मृति	लाभ	शुभ	उत्तम	अल्पलाभ	विलंब	चन्द्र
मित्रागमन	लाभ	विलंब	मृति	लाभ	विदेशयात्रा	सुख	लाभ	भौम
सिद्धि	देहकष्ट	अरिष्ट	विलंब	मृति	धननाश	चौरभय	देहकष्ट	बुध
चिन्ता	वार्ता	विलंब	उत्तम	चौरभय	मृति	कष्ट	वार्ता	गुरु
धनादि	कलह	मित्रागमन	अर्थलाभ	उत्तम	विलंब	मरण	कलह	शुक्र
अर्थनाश	कष्टनाश	वार्ता	मित्रागमन	उत्तम	शुभ	विलंब	कष्टनाश	शनि

रव्यादिवारों के प्रमुख कर्म

रविवार- राज्याभिषेक, उत्सव, यानसेवा, गौ, अग्नि, मंत्र, औषधि तथा शस्त्रकर्म, स्वर्ण, ताम्र, ऊन, चर्म, एवं काष्ठ सम्बन्धित कर्म, संग्राम एवं द्रव्य सम्बन्धित कर्म।

सोमवार- शंख, मोती, चांदी, सम्बन्धित कार्य इक्षुभक्षण, स्त्री, वृक्ष, आभूषण, गायन सम्बन्धित कर्म, वाटिकागमन, गजादआरोहण, वस्त्रादि से सम्बन्धित कार्य।

भौमवार- भेदकराना, मिथ्याभाषण, चोरी, विष, अग्नि, शस्त्र, वेध, अभिघात, शाठ्य एवं दम्भ सम्बन्धित कर्म, सेना, निवेश, संग्रह, धातु, स्वर्ण, मूंगां एवं रत्न सम्बन्धित कार्य।

बुधवार- निपुणता प्राप्ति, पुण्य, अध्ययन, कला, शिल्पादि कर्म, सेव, लिपि, लेखन, धातुक्रिया, स्वर्ण, संधि, व्यायाम एवं वाद आदिकर्म बुधवार को करने चाहिए।

गुरुवार- धर्मकार्य, पौष्टिकपुरश्चरण, यज्ञ, विद्यालय, मांगलिकर्म, वस्त्र, स्वर्ण, गृह, यात्रा, रथ, अश्व, औषधि, आभूषण आदि से सम्बन्धित कार्य।

शुक्रवार- स्त्रीयों से सम्बन्धित, शय्या, मणि, रत्न, गन्ध, वस्त्र, उत्सव, अलंकरण, भूमि, द्रव्य, गो, कोष, कृषि आदि कर्म।

शनिवार- लौह, पत्थर, शीशा, शस्त्र, दास, पाप, चौर, विष, विद्या, गृहप्रवेश, वध, दीक्षा एवं स्थिरकर्म।

अथ वर्षप्रवेशसारणी। जन्म, वार, इष्ट, घटी पलों में प्रतिवर्ष हेतु वारादि क्षेपक

गव.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वा.	१	२	३	५	६	०	१	३	४	०	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
घ.	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६
प.	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गव.	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वा.	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३
घ.	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३
प.	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गव.	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६
वा.	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१
घ.	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०
प.	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ग्रहों का शुभाशुभ फलदातृत्व। (व्यास) लग्न में निषिद्ध स्थान में गये हुए पापग्रह भी यदि केन्द्र एवं त्रिकोणगत बुध, शुक्र एवं बृहस्पति से देखे जाते हो तो दोषकारक नहीं होते हैं। उच्चस्थ, स्वगृही एवं मित्रराशि में स्थित ग्रह फलदायक तथा अस्त, नीचराशिगत एवं शत्रुराशिगत ग्रह विफल होते हैं। **सामान्य सभी कार्यों में अनुकूल ग्रह स्थिति-** प्रायशः समस्त शुभकार्यों में लग्न में पापग्रह, षष्ठ में शुभग्रह, केन्द्र एवं त्रिकोण में पापग्रह तथा अष्टम एवं द्वादश में कोई भी ग्रह नहीं होने चाहिए। शुभकार्य के समय यदि शुभग्रह लाभ (११) स्थानगत हों तो श्रेष्ठ होते हैं। **बृहस्पति के अनुसार-** सर्वगुण सम्पन्न गुरु यदि स्ववर्ग का होकर लग्न से केन्द्र में स्थित हो तो लाखों दोषों को नष्ट कर देता है। गुरु की भाँति शुक्र एवं बुध यदि स्ववर्ग गत केन्द्र में स्थित हों तो क्रमशः १००००० एवं १००० दोषों को नष्ट करते हैं।

वारामिहिर के मतानुसार वस्तुओं का समर्घ चक्र- जिस वस्तु की तेजी मन्दी जाननी हो उसकी राशि देख लें, यदि उस राशि से वृहस्पति ४।१०।१।११।७।९।५, बुध २।१।११।५।८ में व शुक्र ६।७ को छोड़ कर शेष सब भाव में हो तो वह वस्तु सस्ती होगी। ग्रह सूर्य, मङ्गल, शनि व राहु के क्षीणचन्द्र वस्तु के राशि से ३।६।११।१ भाव में हो तो समर्घ अन्य में हो तो महर्घ जानना चाहिये। जिस वस्तु की राशि में ८वें पाप ग्रह हों तो वह वस्तु मँहगी रहेगी तथा जिसमें शुभ ग्रह हों वह वस्तु सस्ती रहेगी।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सुवर्ण	चावल	बाजरा	कोद्रव	चावल	तीसी	उरदी	ऊख,गुड़	अश्व	वृक्ष	जलफल	मोपज
गेहूँ, जौ	वस्त्र	कपास	केला	पटरस	जवास	लाल	चीनी	गज	कपड़ा	पुष्प	मोती
मसूर, राल	गोधूम	रूई	जायफल	गुड़	मटर	गेहूँ	शक्कर	लवण	रसकूट	रत्न	हीरा
कम्बल	यव	कमलकंद	तमालपत्र	खाँड़	कुलथी	सरसो	लोई	धनिया	जमींकंद	पोस्त	तस
पश्मीना	महिष	जुवार	दालचीनी	सिंह	मूँग	यव	ककरी	मुरई	सुवर्ण	रस	अँतर
दुशाला	बैल	मकाशा		मृगादिचर्म	गेहूँ	रहर	चमड़ा	तिल	कृष्ण	अपानक्र	समुद्रदोष
स्थलज	पुष्प	लंक		तुष	सेमदाना	मटर	बल्लीफल	वस्त्र	ऊव	चित्र	मत्स्य
औषधि	सरसो	ककुनी				अरण्ड	पान	आयुध	भंजिष्ट	वि.वस्तु	गजमोती

।। सारणी द्वारा दृष्टि आयनन।। द्रष्टाग्रह को दृश्य में घटाकर जो शेष प्राप्त हो उसी के द्वारा कलादिफल लेना चाहिए। राशि रहित शेष को गत एवं गम्य कला के अन्तर से गुणाकर ३० से भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हो उसका यथा योग्य राशिफल में धन-ऋण करने से स्पष्ट दृष्टि फल होता है।

अथ त्रिराशिप चक्र

लग्न	में	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रौ	गु.	चं.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

अथ होरा चक्र

में	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	
सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	१५
चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	३०

अथ द्रेष्काण चक्र

में	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	२०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	
गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	३०

अथ हद्दाचक्र

में	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अं.
गु.	शु.	बु.	मं.	गु.	बु.	श.	मं.	गु.	बु.	शु.	शु.	स्वा.
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अं.
शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	गु.	बु.	गु.	स्वा.
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अं.
बु.	गु.	गु.	बु.	श.	गु.	गु.	बु.	बु.	शु.	गु.	बु.	स्वा.
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अं.
मं.	श.	मं.	गु.	बु.	मं.	शु.	गु.	मं.	श.	मं.	मं.	स्वा.
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अं.
शं.	मं.	श.	श.	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	स्वा.

।। केन्द्रायु साधन ।। जन्मांग चक्र के केन्द्रस्थान में स्थित अंको का योग कर योगफल को त्रिगुणित करने से केन्द्रायु होता है। परन्तु यदि केन्द्रस्थान राहु एवं मंगल स्थित हों तो त्रिगुणित योगफल में राहु तथा मंगल के स्थित केन्द्रस्थान की संख्या घटाने से केन्द्रायु होता है।

राशियाँ	ध्रुवाङ्क
मेष	१०
वृष	६
मिथुन	२०
कर्क	५
सिंह	८
कन्या	२
तुला	२०
वृश्चिक	६
धनु	१०
मकर	१४
कुम्भ	३
मीन	४

जन्मांग चक्र में जो ग्रह जिस राशि में स्थित हो उन राशियों के ध्रुवांकों का योग आयु प्रमाण होता है।

वर्ष कुण्डली में तन्वादिभावस्थ ग्रहों का जातिकोक्त फल

श्री	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	क्लेश चिन्ता	शोक राजभय	पराक्रम धनलाभ	हानि पीड़ाभय	रोगभय पुत्रनाश	सुख शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट पीड़ाभय	शोक- कष्टादिभय	धर्मवृद्धि राज्यप्रद	सुखप्ति राज्याप्ति	सुखार्थ लाभ	उद्वेग पीड़ा
चन्द्र	कफज्वर पीड़ा	नेत्रपीड़ा धनप्राप्ति	धनप्राप्ति हर्ष	सुख शत्रुनाश	सुख सुमति	अङ्गपीड़ा व्यय	ज्वरादि भय	विविध कष्टभय	पुण्योदय धनागम	सुकर्म जयाप्ति	यशोर्थ लाभ	व्यय नेत्रपीड़ा
भौम	वातव्याधि व्रण	नेत्ररोग वित्तनाश	आरोग्यता द्रव्यलाभ	व्यसन रोगभय	पुत्रार्ति दुर्बुद्धि	सुख शत्रुनाश	स्त्रीनाश कष्ट	ज्वरार्ति व्रण	पुण्योदय धनाप्ति	राज्यार्थ लाभ	धनादि लाभ	विरोध कर्णपीड़ा
बुध	सुख,यश, धनलाभ	द्रव्यप्राप्ति सुख	सुख सुमान	सुख द्रव्यलाभ	पुत्रवित्त सुखाप्ति	रोगभय कलह	धनागम कफरोग	व्यग्रता कफरोग	धन कीर्त्याप्ति	मानसुखादि लाभ	सुख लाभ	शत्रु रोगादिभय
गुरु	सुख यशलाभ	कीर्तिधना दिलाभ	जय सुख	वाहन प्राप्तिसुख	पुत्राप्ति सुख	शत्रुरोगादि भय	सुख वित्तप्राप्ति	कठिन रोगभय	सुख भाग्यवृद्धि	राज्यार्थ लाभ	सुतार्थ लाभ	शोक रोगादिभय
शुक्र	सम्मान धनलाभ	धनाप्ति राज्यसुख	कीर्तिवृद्धि अर्थलाभ	सुख अर्थलाभ	धनागम सुख	रिपुभीति कष्ट	कलत्र सौख्य	ज्वरपीड़ा दिभय	धर्म धनागम	मानजया- दिलाभ	क्षेमार्थ लाभ	व्यय अर्थलाभ
शनि	शत्रुभय वातव्याधि	पीड़ाभय विरोध	धनाप्ति जय	सुख,अर्थ नाश, कष्ट	सुतहानि पीड़ा	धनप्राप्ति कष्टनाश	स्त्रीकष्ट कलह	दुःख रोगादिभय	भाग्यनाश शत्रुनाश	धनहानि पीड़ाभय	धनाप्ति पुत्राप्ति	क्लेश चिन्ता
राहु	शिरोवेदना कलह	नृपभय पीड़ा	शत्रुनाश शुभ	वातपीड़ा दुःख	बुद्धिनाश निर्धन	रिपुभय आरोग्य	पीड़ाभय धनक्षय	धनक्षय रोगभय	धनधर्म वृद्धि	वाहनलाभ जय	विपुत्र सुलाभ	व्याधि भय
केतु	पीड़ा,भय चिन्ता	क्लेश धनक्षय	आरोग्य धर्मनाश	कष्ट राजभय	सुख दुर्बुद्धि	सुख धनागम	क्लेश रोग	ज्वरपीड़ा दिभय	भाग्य यशोर्थलाभ	कीर्ति अर्थलाभ	पुत्रार्थ सुखलाभ	शोक एवं कष्ट भय
मुन्था	सुख शत्रुनाश	सुयश अर्थागम	कार्यपुष्टि धन	अङ्गपीड़ा दुःख	सुबुद्धि सुखाप्ति	रोगभय अर्थनाश	रोगभय व्यसन	दुर्व्यसन रोगभय	भाग्योदय	राज्यसुख धनाप्ति	धर्मार्थ लाभ	सुव्यय लाभ

सप्तमांशचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	४
मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	१७।९
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८
शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	३४।१७
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२
बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	५१।२५
४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	१७
चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	८।३४
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	२१
सू.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	२५।४२
६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	२५
बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	शु.	शु.	गु.	चं.	श.	४२।५१
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	३०
शु.	शु.	गु.	चं.	श.	बु.	मं.	मं.	बु.	श.	र.	गु.	०

अथ नवमांशचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.क.
मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	३।२०
शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	६।४०
बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	१०।०
चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	१३।२०
र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	१६।४०
बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	२०।०
शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	२३।२०
मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	२६।४०
गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	३०।०

अथ वर्ष मुद्दादशाचक्र

सू.	च.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	पति
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

गतवर्ष की संख्या में जन्म राशि की संख्या जोड़कर दो घटा दे, पुनः नौ से भाग दें, शेष संख्या गतग्रहदशापति होता है।

प्रश्न द्वारा वर्ष प्रवेश साधन- प्रश्नकाल में जो प्रश्नलग्न हो वही वर्षप्रवेश का लग्न एवं प्रश्नलग्न से चतुर्थेश बलसाधनार्थ जन्म लग्नेश होता है। प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि में १५ के भाग से प्राप्त फल राश्यादिक मुंथहा होती है। अथवा प्रश्नलग्न की कला में १५० के भाग से प्राप्तफल राश्यादिक मुंथहा होती है। प्रश्नकालिक सूर्य के तुल्य राश्यादि मान से सूर्य पुनः अग्रिम वर्ष में जब होगा उसी समय पुनः अग्रिमवर्ष प्रवेश होगा। अतः उसी काल का लग्न, ग्रह आदि साधन कर समीक्षा पूर्वक दैवज्ञों को विचार करना चाहिए। क्योंकि यहाँ पर किसी एक आचार्य का मत उपस्थापित है।

अथ द्वादशांशचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.क.
मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	२।३०
शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	५।०
बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	७।३०
चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	१०।०
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	१२।३०
बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	१५।०
शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	१७।३०
मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	२०।०
गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	२२।३०
श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	२५।०
श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	२७।३०
गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	ब.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	३०।०

वर्ष कुण्डली में प्रयुक्त द्रेष्काण चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंश
मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	अधिपति
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	अंश
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	अधिपति
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अंश
शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	अधिपति

अथ त्रिशांशचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	अं.
मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	स्वा.
५	७	५	७	५	७	५	७	५	७	५	७	अं.
श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	स्वा.
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	अं.
गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	स्वा.
७	५	७	५	७	५	७	५	७	५	७	५	अं.
बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	स्वा.
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	अं.
शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	स्वा.

साधारणतया सभी नक्षत्रों का शान्ति प्रयोग

देशकाल आदि का संकल्प कर "ममोत्पन्नव्याधेर्जीवच्छरीराविरोधेन समलनाशाथ- ममुकनक्षत्रशांति करिष्ये" का संकल्प कर पुनः गणपत्यादि देवताओं के पूजन पूर्वक आचार्य वरण करें, पुनः कलश के पूर्ण पात्र पर द्वादशदल बनाकर स्वर्ण निर्मित नक्षत्रदेवता की प्रतिमा का पूजन कर पुनः द्वादशदलों पर संकर्षणादि द्वादश सूर्य का अवाहन एवं पूजन करें। पूजन के पश्चात दुर्वा, शमी, तिल, खीर एवं घी से गायत्री एवं नक्षत्र देवता हेतु १०८ बार अथवा विशेष कष्ट रहने पर १००८ आहुति प्रदान कर पुनः दधिभक्त का बलि देवें। आचार्य को प्रतिमा एवं गौ दान कर ब्राह्मण भोजन करावें। शान्ति मयूख में सभी नक्षत्रों के देवताओं का मन्त्र आदि विस्तार से वर्णित है। कर्मविपाक के अनुसार ज्वर नाशार्थ "जातवेदस" इत्यादि से १०००० या ५००००० जप अथवा रुद्र के लिए "नमनुवाक" से १००० कलशो से स्नान करावें अथवा विष्णु प्रीत्यर्थ पुरुषसूक्त की १००० आवृति से १००० कलश स्नान करावें। अथवा श्रीभागवतस्थ ज्वरस्तोत्र का जप करावें।

तन्वादि भावों के स्थिर कारक

भाव	कारक
तनु १	सूर्य
धन २	गुरु
स. ३	भौम
मातृ ४	चन्द्र
पुत्र ५	गुरु
रोग ६	भौम
जाया ७	शुक्र
मृत्यु ८	शनि
भाग्य ९	गुरु
कर्म १०	बुध
लाभ ११	गुरु
व्यय १२	शनि

वर्षेश के पञ्चाधिकारिगण

१	जन्मलग्नपति।	४	मुंथहापति।
२	वर्षलग्नपति।	५	दिवारविभप।
३	त्रिराशिपति।	६	रात्रौचन्द्रभपः

वर्षमुद्दा दशा का बारवाँ भाग मासदशा होता है।

वर्षेशनिर्णय- सारिणी में दर्शाये हुए वर्षेश के पञ्चाधिकारीगणों में जो सबसे अधिक बलवान होकर लग्न को देखता है वही वर्षेश होता है। यदि कोई ग्रह बलवान होता हुआ भी लग्न को न देखता हो तो वह वर्षेश नहीं होता है। यदि पञ्चाधिकारी ग्रह बलवान होकर लग्न को देख रहे हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि होती है वही वर्षेश होता है। यदि सबकी समान दृष्टि हो व सभी निर्बल हों तो मुन्थहा लग्न का स्वामी वर्षेश होता है। पाँचो अधिकारियों में अगर कोईभी लग्न को न देख रहा हों तो सबसे अधिक बलवान ग्रह ही वर्षेश हो जाता है। कुछ आचार्यो के अनुसार बलादि साम्य रहने पर रात्रि के वर्ष प्रवेश में चन्द्र राशिपति एवं दिन के वर्षप्रवेश में सूर्य राशिपति वर्षेश होता है। अथवा- यदि कोई भी लग्न को न देख रहा हो तो वर्ष लग्नेश ही वर्षेश हो जाता है। **वर्ष में अरिष्टज्ञानार्थत्रिपताकीचक्र-** वर्ष प्रवेश काल से गत वर्ष की संख्या में एक जोड़कर ९ से भाग देने पर प्राप्त शेष राशि तुल्य स्थान अपनी राशि से जन्म के चन्द्र को आगे बढ़ाकर त्रिपताकी चक्र में रखना चाहिए। इसी तरह गत वर्ष की संख्या में ४ का भाग देने से शेष संख्या तुल्य स्थान अपनी राशि से जन्मकालिक ग्रह आगे हो जाते हैं। इस चक्र में लग्न एवं चन्द्र शुभग्रह से विद्ध हो तो शुभ एवं पापग्रहों से विद्ध हों तो अशुभ फल होता है। **मुंथहानयन-** जन्मलग्न से प्रत्येक वर्ष में एक-एक राशियों की वृद्धि से मुंथहा भ्रमण करती है। **मासदशानयन-** गत वर्ष की संख्या को १२ से गुणा कर जन्मराशि की संख्या जोड़े एवं २ घटाकर ९ से भाग दें शेष दशामास होता है।

अङ्ग के विभिन्न विभागों में छिपकली पतन फल ज्ञापक चक्र

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
शिर	राज्यलाभ	कण्ठ	शत्रुनाश	हस्तद्वय	वस्त्रलाभ	वामपाद	नाश
नासाग्र	व्याधि	जंघा	शुभप्रद	वाममणिबन्ध	कीर्त्तिविनाश	अधरोष्ठ	ऐश्वर्य
वामभुज	राजभय	दक्षिण	मनस्ताप	दक्षिणपाद	गमन	द.भुज	नृपतुल्यता
जानुद्वय	शुभागम	मणिबन्ध	धननाश	उत्तरोष्ठ	धननाश	पृष्ठदेश	बुद्धिनाश
कटिभाग	अश्वलाभ	केशान्त	मरण	नेत्र	धनप्राप्ति	नासिका	बहुधन
गुल्फ	धनलाभ	भ्रुवमध्य	राजसंबंध	उदर	भूषणलाभ	मुख	मिष्ठान्न
ललाट	बंधुदर्शन	वामकर्ण	बहुलाभ	स्कन्ध	विजय	पादमध्य	श्रीनाश
दक्षिणकर्ण	आयुवृद्धि	स्तनद्वय	दौर्भाग्य	हृदय	धनलाभ	पादान्त	मरण

विशेष छिपकली पतन फल- दानों पैरों, जघनों, गुदा एवं गुह्या स्थान पर पल्ली पतन से मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। अन्यत्र पतन से शुभ होता है। पल्ली पतन के अन्नतर सतैल स्नान करना चाहिए। यही फल गिरगिट के आरोहण में भी होता है। स्त्रियों के लिए उक्त फल विपरीत होता है।

छिपकली पतन जनित दुष्ट फल निवारणार्थ जप-दान- अशुभ अङ्गो में पल्ली पतन पर स्नान करके तिल एवं उड़द का दान कर, नमस्कार पूर्वक शिव के षडाक्षर मंत्र का जप करना शुभ प्रद होता है। साथ ही शिवालय में १०८ या १००८ वार दीप दान भी करना चाहिए। अथवा मृत्युञ्जय का जप तथा स्वर्ण, गोदान आदि करना श्रेयष्कर होता है।

।। श्री गणेशाय नमः। श्रीकाशीविश्वनाथः शरणम्।।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल वसन्तऋतु ।।

चैत्रशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ९ चैत्र से २२ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक ३० मार्च से १२ अप्रैल तक सन् २०२५ ई.।।

दि.मा. घ.	प.																									
३०	३५	१	र	२०	५२	दि	२	१४	रेवती	३०	५३	सा	६	१४	ऐन्द्र	३४	२७	रा	७	४०	वव	२०	५२	वा	४७	५३
३०	३९	२	चं	१४	५३	दि	११	४९	अश्विनी	२६	४३	सा	४	३३	वैधृति	२६	३८	सा	४	३१	कौ	१४	५३	तै	४१	५३
३०	४२	३	मं	८	५३	दि	९	२५	भरणी	२२	३७	दि	२	५५	विष्कुम्भ	१८	५७	दि	१	२७	गर	८	५३	व	३६	०
३०	४५	४	बु	३/५४	७/३४	प्रा	७/४	६/५५	कृत्तिका	१८	४६	दि	१	२१	प्रीति	११	२४	दि	१०	२५	भ	३	७	वव	३०/५७	२४/४१
३०	४९	६	गु	५२	४९	रा	२	५८	रोहिणी	१५	२१	दि	११	५८	आयुष्मान	४/५३	१२/१८	प्रा	७/४	३१/५०	कौ	२५	१५	तै	५२	४९
३०	५२	७	शु	४८	४७	रा	१	२१	मृगशिरा	१२	३६	दि	१०	५२	शोभन	५१	३१	रा	२	२६	गर	२०	४८	व	४८	४७
३०	५६	८	श	४५	३९	रा	१२	५	आर्द्रा	१०	४४	दि	१०	७	अतिगण्ड	४६	१६	रा	१२	१९	भ	१७	१३	वव	४५	३९
३०	५९	९	र	४३	३६	रा	११	१४	पुनर्वसु	९	४४	दि	९	४२	सुकर्मा	४१	५१	रा	१०	३२	वा	१४	३८	कौ	४३	३६
३१	३	१०	चं	४२	४६	रा	१०	५३	पुष्य	९	५५	दि	९	४५	धृति	३८	२५	रा	९	९	तै	१३	११	गर	४२	४६
३१	७	११	मं	४३	१२	रा	११	४	श्लेषा	११	१८	दि	१०	१८	शूल	३६	०	रा	८	११	व	१२	५९	भ	४३	१२
३१	१०	१२	बु	४५	२	रा	११	४७	मघा	१३	५९	दि	११	२२	गण्ड	३४	३८	रा	७	३७	वव	१४	७	वा	४५	२
३१	१४	१३	गु	४७	५५	रा	१२	५५	पू.फा.	१७	५२	दि	१२	५४	वृद्धि	३४	७	रा	७	२४	कौ	१६	२९	तै	४७	५५
३१	१७	१४	शु	५१	५७	रा	२	३२	उ.फा.	२२	५१	दि	२	५३	ध्रुव	३४	३०	रा	७	३३	गर	१९	५६	व	५१	५७
३१	२१	१५	श	५६	४८	रा	४	२७	हस्त	२८	४२	सा	५	१३	व्याघात	३५	३१	रा	७	५६	भ	२४	२३	वव	५६	४८

योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. ±	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
प्रवर्धमान	३०	१६	१६	१७	९	मेष	३०।५३	५	५३	६	७	११	१५	१५	२५	३	३८	+	३	७	२१
राक्षस	३१	१७	१७	१८	१०			५	५२	६	८	११	१६	१४	४२	४	१	+	२	८	३०
मुसल	१	१८	१८	१९	११	वृष	३६।३९	५	५२	६	८	११	१७	१३	५७	४	२५	+	२	९	४१
सिद्धि	२	१९	१९	२०	१२			५	५१	६	९	११	१८	१३	९	४	४८	+	२	१०	५०
उत्पात	३	२०	२०	२१	१३	मिथुन	४३।५९	५	५०	६	१०	११	१९	१२	१९	५	११	+	२	११	५६
मानस	४	२१	२१	२२	१४			५	५०	६	१०	११	२०	११	२७	५	३४	+	१	१२	५५
मुद्गर	५	२२	२२	२३	१५	कर्क	५४।५९	५	४९	६	११	११	२१	१०	३१	५	५७	+	१	१	४६
ध्वज	६	२३	२३	२४	१६			५	४८	६	१२	११	२२	९	३५	६	१९	+	१	२	२९
धाता	७	२४	२४	२५	१७			५	४७	६	१३	११	२३	८	३५	६	४२	+	०	३	६
आनन्द	८	२५	२५	२६	१८	सिंह	११।१८	५	४७	६	१३	११	२४	७	३२	७	५	-	०	३	३९
चर	९	२६	२६	२७	१९			५	४६	६	१४	११	२५	६	२८	७	२७	-	०	४	८
गद	१०	२७	२७	२८	२०	कन्या	३४।७	५	४५	६	१५	११	२६	५	२२	७	४९	-	१	४	३६
शुभ	११	२८	२८	२९	२१			५	४५	६	१५	११	२७	४	१३	८	११	-	१	५	४
मृत्यु	१२	२९	२९	३०	२२			५	४४	६	१६	११	२८	३	२	८	३३	-	१	५	३३

मेषराशि सा. ६।१४। ☾चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। दक्षिणशृंग महँगीकारक। चान्द्रसंवत्सर तथा वासन्तनवरात्र का प्रारम्भ। कलशस्थापन- ध्वजारोपण◆
मु. सव्वाल १० हिजरी सन् १४४६। मत्स्यावतार ३ (अपराह्न में)।☉रेवती नक्षत्र का सूर्य सा. ४।७। यायीजययोग सा. ४।३३ से।
भ. रा. ८।१६ से। वृषराशि रा. ८।३२। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। श्रीगणेशदमनकोत्सव। सौभाग्यसुन्दरी ३ व्रत। गणगौरी ३ व्रत (राजस्थान)। गौरीदोलोत्सव ३।○
भ. दि. ७।६ तक। श्रीरामराज्यमहोत्सव ५ (ल. ४)। लक्ष्मी पूजन। कल्पादि ५। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। रवियोग दि. १।२१ तक।
मिथुनराशि रा. ११।२६। श्री सूर्यषष्ठी ६ व्रत (बिहार)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६। श्री स्कन्ददमनक उत्सव ६। रवियोग दि. ११।५८ से।
भ.रा. १।२१ से। श्री भास्कर की दमनकपूजा ७। श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा रा.१।२१ से। ओली प्रारम्भ (जैन)। रवियोग दि. १०।५२ तक।

□बलिदान। नवमी में होम आदि। यायीजययोग दि.९।४२ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।४२ से। रवियोग दि.९।४२ से।

भ. दि. १२।४२ तक। कर्कराशि रा. ३।४९। महाष्टमी ८। व्रत ८। तारा ८। श्री भवानी उत्पत्ति। अशोककलिकाप्राशन। ब्रह्मपुत्रस्नान। महानिशापूजा तथा बलिदान आदि।❶
श्रीरामनवमी ९ व्रत सबका। मध्याह्न में कर्कलग्न में श्रीरामजन्ममहोत्सव। अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि स्थित मंदिर में दर्शन तथा पूजन। रामावतार ९। श्रीमहानवमी ९ व्रत।□
नवरात्र व्रत की पारणा। यायीजययोग रा. १०।५३ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ९।४५ तक। रवियोग समस्त। ❶ श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा रा. १२।५ तक। यायीजययोग रा. १२।५ से।
भ. दि. १०।५९ से रा. ११।४ तक। सिंहराशि दि. १०।१८। कामदा ११ एकादशी व्रत सबका। श्री विष्णुदोलोत्सव। सायं दोला स्थित लक्ष्मी-नारायण का पूजन।❸
मदन द्वादशी १२। ○आज दोलारुढ़ शिव पार्वती का पूजन। मन्वादि ३। सरहुल (बिहार)। अप्रैल ४। स्थायीजययोग दि. २।५५ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. २।५५ से।❖
कन्याराशि रा. ७।२४। प्रदोष १३ व्रत। श्री अनङ्ग १३ व्रत। श्रीमहावीरजयन्ती (जैन)। यायीजययोग रा. १२।५५ से। रवियोग दि. १२।५४ से। ❖रवियोग दि. २।५५ से।
भ. रा. २।३२ से। श्रीशिवनृसिंह दमनकारोपण तथा पूजन। रवियोग दि. २।५३ तक। ❸स्थायीजययोग रा. ११।४ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।१८ तक। रवियोग दि. १०।१८ तक।
भ. दि. ३।२९ तक। स्नान-दान- व्रत की १५ पूर्णिमा। श्री हनुमज्जयन्ती (दक्षिण में प्रसिद्ध)। सर्वदेवदमनकोत्सव। वैशाख-स्नान- दान-यम-नियम का आरम्भ।❷

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.वा.		मंगल				वक्रीबुध				गुरु				वक्रीशुक्र				शनि				राहु			
१	र	२	२७	१०	११	११	९	३	७	१	२२	५९	८	१०	२८	२६	३५	१०	२६	१०	४४	११	२	२९	२४
२	चं	२	२७	२९	१६	११	८	११	५२	१	२३	७	२३	१०	२७	३४	३५	१०	२६	१७	४८	११	२	२६	१३
३	मं	२	२७	४८	२१	११	७	२०	३७	१	२३	१५	४१	१०	२७	२६	०	१०	२६	२४	५३	११	२	२३	३
४	बु	२	२८	७	२६	११	६	२९	२१	१	२३	२३	५८	१०	२६	१७	२६	१०	२६	३१	५७	११	२	१९	५२
६	गु	२	२८	२६	३१	११	५	३८	५	१	२३	३२	१६	१०	२७	८	५१	१०	२६	३९	२	११	२	१६	४१
७	शु	२	२८	४५	३४	११	५	१०	०	१	२३	४०	३३	१०	२७	०	१७	१०	२६	४६	६	११	२	१३	३०
८	श	२	२८	४	२५	११	४	४७	५५	१	२३	४९	४१	१०	२६	५१	४२	१०	२६	५३	११	११	२	१०	१९
९	र	२	२९	२३	१६	११	४	२५	५४	१	२३	५९	५	१०	२६	४३	८	१०	२७	०	१५	११	२	७	९
१०	चं	२	२९	४२	७	११	४	३	५४	१	२४	६	५	१०	२६	३४	३३	१०	२७	७	१९	११	२	३	५८
११	मं	३	०	०	५८	मा	३	४१	५३	१	२४	१४	५५	१०	२६	२६	१७	१०	२७	१४	२३	११	२	०	४७
१२	बु	३	०	१८	५८	११	३	५१	४९	१	२४	२५	५९	१०	२६	१७	२४	१०	२७	२१	२७	११	१	५७	३६
१३	गु	३	०	३८	५	११	४	२	४३	१	२४	४०	४	१०	२६	८	५०	१०	२७	२८	३१	११	१	५४	२५
१४	शु	३	०	५४	५९	११	४	१४	१४	१	२४	५०	९	१०	२६	०	२७	१०	२७	३५	३५	११	१	५१	१५
१५	श	३	१	१२	५६	११	४	२५	४१	१	२५	०	१४	१०	२५	५२	२३	१०	२७	४२	३९	११	१	४८	४

ग्रहचार-मंगल-पुनर्वसु में। ति.१० सोम को कर्कराशि में रा. ४।३३।। वक्रीबुध- उत्तराभाद्रपद में। ति.११ मंगल को मार्गी रा. १०।३५।। गुरु-ति. ३ मंगल को मृगशिरा १ चरण में सा. ६।२२।। वक्रीशुक्र- पूर्वाभाद्रपद में।। शनि- ति. ६ गुरु को पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में दि. ९।७।। राहु- पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में तथा केतु उत्तराफाल्गुनी २ चरण में।।

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को रविवार हो तो वायु अधिक चले और धान्य, वर्षा तथा कम फल हों।

१ पं० चैत्रशुक्ल ८ शनि

अहर्गण ३७३५

अयनांश २४।११।३६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	२	११	१	१०	१०	११	५
२१	१७	२८	४	२३	२६	२६	२	२
१०	३२	४	४७	४९	५१	५३	१०	१०
३१	३३	२५	५५	४१	४२	११	१९	१९
५९	८२५	१८	२२	१०	८	७	३	३
४	४१	५१	१	१	५	३४	४	११
			व.		व.			

विविधमुहूर्त्त-ति. १ रवि को रेवती में सूर्यभोग्य है। ति.२ सोम को अश्विनी में वैधृतिदोष है। ति. ३ मंगल को दि. ९।२५ तक भरणी में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ४ बुध को कृत्तिका में चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता (प्रा. ७।६) के बाद गोक्रय-विक्रय वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि.१।२१ के बाद रोहिणी में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन गर्भाधान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण दँवरी शिल्पविद्या विपणि मुहूर्त्त है। ति. ६ गुरु को रोहिणी में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या विपणि ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। दि.११।५८ के बाद मृगशिरा में औषध सेवन नावनिर्माण ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। रात्रिशेष में सूतीस्नान पश्चिम दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ७ शुक्र को मृगशिरा में अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण दक्षिण दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। आर्द्रा में फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ शनि को भद्रा बाद पुनर्वसु में भौमयुति है। ति. ९ रवि को पुनर्वसु में भौमयुति तथा रिक्तादोष है। पुष्य में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति.१० सोम को पुष्य में अन्नप्राशन वाटिकारोपण दक्षिण दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वाहन खरीदने फसल पशुओं की खरीद-बिक्री पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन विप्रकुमारों का उपनयन (ल.१) विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। श्लेषा में विप्रकुमारों का उपनयन (ल.३ मौ.दा.) वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. ११ मंगल को श्लेषा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. १२ बुध को ☞

तिथि	१ र		२ चं		३ मं		४ बु		६ गु		७ शु		८ श		९ र		१० चं		११ मं		१२ बु		१३ गु		१४ शु		१५ श	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
मीन	६	३५	६	३१	६	२७	६	२४	६	२०	६	१६	६	१३	६	१०	६	६	६	२	५	५९	५	५५	५	५२	५	४८
मेष	८	१२	८	८	८	५	८	१	७	५७	७	५४	७	५०	७	४७	७	४३	७	३९	७	३६	७	३२	७	२९	७	२५
वृष	१०	८	१०	४	१०	१	९	५७	९	५३	९	५०	९	४६	९	४३	९	३९	९	३५	९	३२	९	२८	९	२५	९	२१
मिथुन	१२	२२	१२	१८	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	४	१२	०	११	५७	११	५३	११	४९	११	४६	११	४२	११	३९	११	३५
कर्क	२	४०	२	३६	२	३३	२	२९	२	२५	२	२२	२	१८	२	१५	२	११	२	७	२	४	२	०	१	५७	१	५३
सिंह	४	५४	४	५०	४	४७	४	४३	४	३९	४	३६	४	३२	४	२९	४	२५	४	२१	४	१८	४	१४	४	११	४	७
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	७	७	७	३	७	०	६	५६	६	५२	६	४९	६	४५	६	४२	६	३८	६	३४	६	३१	६	२७	६	२४	६	२०
तुला	९	२३	९	१९	९	१६	९	१२	९	८	९	५	९	१	८	५८	८	५४	८	५०	८	४७	८	४३	८	४०	८	३६
वृश्चिक	११	४०	११	३६	११	३३	११	२९	११	२५	११	२२	११	१८	११	१५	११	११	११	७	११	४	११	०	१०	५७	१०	५३
धनु	१	४६	१	४२	१	३९	१	३५	१	३१	१	२८	१	२४	१	२१	१	१७	१	१३	१	१०	१	६	१	३	१२	५९
मकर	३	३३	३	२९	३	२६	३	२२	३	१८	३	१५	३	११	३	८	३	४	३	०	२	५७	२	५३	२	५०	२	४६
कुम्भ	५	४	५	०	४	५७	४	५३	४	४९	४	४६	४	४२	४	३९	४	३५	४	३१	४	२८	४	२४	४	२१	४	१७

२ पं० चैत्रशुक्ल १५शनि

अहर्गण ३७४२

अयनांश २४।११।३७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	३	११	१	१०	१०	११	५
२८	१७	१	४	२५	२५	२८	१	१
३	३१	१२	२५	०	५२	४२	४८	४८
२	२०	५९	४२	१४	२२	४७	४	४
५८	७२८	२२	१४	१०	८	६	३	३
४७	५६	४९	२४	५	५	१८	११	११
			मा.		व.			

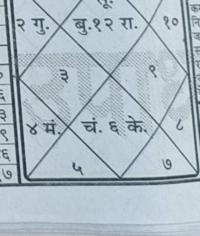

◆- वर्षपतिपूजा-साभ्यङ्गस्नान तथा पञ्चाङ्गफल का श्रवण। पौसरादानारम्भ। असमर्थता में धर्मघटादिदान।आरोग्य विद्या तिलकव्रत १। आज से वर्ष पर्यन्त तक संकल्प आदि में 'कालयुक्त' संवत्सर का विनियोग करना चाहिए। गुडीपडवा (दक्षिण भारत)। श्रीझूलेलाल जयन्ती (सिन्धी समाज)। सिन्धीनववर्ष दिवस। कल्पादि १। पञ्चक समाप्ति सा. ६।१४। यायीजययोग दि. १२।१४ तक। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ६।१४ से। ❷ओली समाप्ति (जैन)। मन्वादि १५। यायीजययोग सा. ५।१३ तक। यमघंटयोग सा. ५।१३ तक।

मूल विचार- रेवती/अश्विनी- ति. २ सोम को सा. ४।३३ तक।
श्लेषा/मघा- ति. ११ मंगल को दि. ११।४५ से। ति. १२ बुध को दि. ११।२२ तक।
पञ्चक विचार- ति. १ रवि को सा. ६।१४ तक।

चैत्र मास के कृत्य- (मत्स्य पुराण)- चैत्र मास में दधि, दूध एवं घी का त्याग कर जो मनुष्य सपत्नीक ब्राह्मण का पूजन कर सब वर्ण युक्त वस्त्र का दान करता है, उससे गौरी प्रसन्न होती हैं। इसे शास्त्रों में गौरी व्रत के नाम से जाना जाता है। भविष्योत्तर पुराण के अनुसार- चैत्र मास में जो मनुष्य तीन दिनों तक नक्त व्रत का आचरण करते हुए नदी में स्नान कर पाँच दूध देने वाली बकरीयों का दरिद्र परिवार को दान करता है वह जीवन के आवागमन से मुक्त हो जाता है। वामन पुराण- चैत्र मास में विष्णु के प्रीति के लिए ब्राह्मणों को विचित्र वस्त्र एवं शय्या का दान करना चाहिए। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में वायु परीक्षण- प्रतिपदा में सूर्योदय से पूर्व ग्राम के समतल भूमि में पताका का विन्यास एवं पूजन कर प्रार्थना करें। मन्त्र- ऐह्यात्मन्सर्वभूतानां कुरङ्गपतिवाहन। समादिश फलं चाष्मिन्वत्सरे हि समागते।।श्रीराम नवमी व्रत- चैत्र शुक्ल नवमी में स्वर्णनिर्मित रामचन्द्र की प्रतिमा का अग्नि उत्तारणपूर्वक प्रतिष्ठा तथा पुरुष सूक्त से षोडशोपचार पूजन करें। साथ ही दक्षिण भाग में अक्षत पुञ्ज पर दशरथ एवं कौशल्या, पृष्ठभाग में लक्ष्मण, बायें भरत-शत्रुघ्न तथा सम्मुख में हनुमान का आवाहन कर पूजन करें। फिर राम को अर्घ्य देवें-अर्घ्यदान मन्त्र- दशानन वधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। पूजनोपरान्त। रात्रि में जागरण करते हुए अपर दिन यथा संख्यक आहुति का दान विष्णु के लिए "इदं विष्णुः" इत्यादि मन्त्र से करें तथा पुनः उस स्वर्ण प्रतिमा का मन्त्र पढ़ते हुए ब्राह्मण को दान करें। मन्त्र- इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलंकृताम्। शुचिवस्त्रयुगच्छन्नां रामोऽहं राघवाय ते।। श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टोभवतु राघव इति।।अष्टमी में अशोक प्राशन- चैत्र शुक्ल अष्टमी को पुनर्वसु नक्षत्र में जो मनुष्य आठ अशोक की कलियों का पान करता है वह कभी भी शोक सन्तप्त नहीं होता। वृष्टि प्रसङ्ग- चैत्र मास के अश्विन्यादि दस नक्षत्रों में यदि मेघ हो तो आर्द्रादि दश नक्षत्रों (सूर्य नक्षत्र) में क्रमशः वृष्टि दायक होते हैं।

☞ मघा में दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। पू.फा. में विप्रकुमारों का उपनयन (ल.३) वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. १३ गुरु को पू.फा. में दँवरी नावनिर्माण वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। उ.फा. में केतुयुति है। ति. १४ शुक्र को उ.फा. में पूर्वदोष तथा रिक्तादोष है। ति. १५ शनि को हस्त में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। भद्रा भी है। चित्रा में राहुवेध है।

दि.मा. घ.	प.	श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल वसन्तऋतु।।																									योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. -	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
३१	२५	१	र	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	३५	१०	रा	७	४७	हर्षण	३६	५६	रा	८	२९	वा	२९	२३	कौ	६०	०	पद्म	१३	१	३०	३१	२३	तुला	१।५६	५	४३	६	१७	११	२९	१	४९	८	५५	-	२	६	४४
३१	२८	१	चं	१	५८	प्रा	६	२९	स्वाती	४१	४६	रा	१०	२४	वज्र	३८	३३	रा	९	७	कौ	१	५८	तै	३४	३४	छत्र	१४	२	१	१	२४			५	४२	६	१८	०	०	०	३३	९	१७	-	२	७	३७
३१	३२	२	मं	७	९	दि	८	३४	विशाखा	४८	७	रा	१२	५७	सिद्धि	३९	५७	रा	९	४१	गर	७	९	व	३९	३२	श्रीवत्स	१५	३	२	२	२५	वृश्चिक	३१।३२	५	४२	६	१८	०	०	५९	१५	९	३९	-	२	८	३१
३१	३५	३	बु	११	५४	दि	१०	२७	अनुराधा	५३	४८	रा	३	१२	व्यतिपात	४०	५४	रा	१०	३	भ	११	५४	वव	४३	५४	सौम्य	१६	४	३	३	२६			५	४१	६	१९	०	१	५७	५४	१०	०	-	२	९	२८
३१	३९	४	गु	१५	५३	दि	१२	१	ज्येष्ठा	५८	३३	रा	५	५	वरीयान	४१	१०	रा	१०	८	वा	१५	५३	कौ	४७	१९	काल्दण्ड	१७	५	४	४	२७	धनु	५८।३३	५	४०	६	२०	०	२	५६	३१	१०	२१	-	२	१०	२४
३१	४२	५	शु	१८	४५	दि	१	१०	मूल	६०	०	स	म	स्त	परिघ	४०	३१	रा	९	५२	तै	१८	४५	गर	४९	३९	सुस्थिर	१८	६	५	५	२८			५	४०	६	२०	०	३	५५	६	१०	४२	-	३	११	१९
३१	४५	६	श	२०	३२	दि	१	५२	मूल	२	१४	प्रा	६	३३	शिव	३८	५६	रा	९	१३	व	२०	३२	भ	५०	४५	गद	१९	७	६	६	२९			५	३९	६	२१	०	४	५३	३९	११	३	-	३	१२	९
३१	४९	७	र	२०	५७	दि	२	१	पू.षा.	४	३९	दि	७	३०	सिद्ध	३६	२१	रा	८	१०	वव	२०	५७	वा	५०	३१	शुभ	२०	८	७	७	३०	मकर	१९।५६	५	३८	६	२२	०	५	५२	१०	११	२४	-	३	१२	५७
३१	५२	८	चं	२०	५	दि	१	४०	उ.षा.	५	४५	दि	७	५६	साध्य	३२	४५	सा	६	४४	कौ	२०	५	तै	४९	३	मृत्यु	२१	९	८	८	१			५	३८	६	२२	०	६	५०	३८	११	४५	-	३	१	३९
३१	५६	९	मं	१८	०	दि	१२	४९	श्रवण	५	४१	दि	७	५३	शुभ	२८	१२	सा	४	५४	गर	१८	०	व	४६	२६	लुम्बक	२२	१०	९	९	२	कुम्भ	३५।५	५	३७	६	२३	०	७	४९	५	१२	५	-	४	२	१८
३१	५९	१०	बु	१४	५१	दि	११	३२	धनिष्ठा	४	२९	दि	७	२४	शुक्ल	२२	४८	दि	२	४३	भ	१४	५१	वव	४२	५०	मित्र	२३	११	१०	१०	३			५	३६	६	२४	०	८	४७	२९	१२	२५	-	४	२	५४
३२	२	११	गु	१०	४८	दि	९	५५	शतभिष	२/५७	२८/५	प्रा	६/९	३५/२५	ब्रह्म	१६	४४	दि	१२	१८	वा	१०	४८	कौ	३८	२१	वज्र	२४	१२	११	११	४	मीन	४५।१७	५	३६	६	२४	०	९	४५	५१	१२	४४	-	४	३	३०
३२	६	१२	शु	५	५४	दि	७	५७	उ.भा.	५६	२	रा	४	०	ऐन्द्र	१०	०	दि	९	३५	तै	५	५४	गर	३३	११	ध्वज	२५	१३	१२	१२	५			५	३५	६	२५	०	१०	४४	११	१३	५	-	४	४	५
३२	९	१३	श	०/५४	२७/१	प्रा	५/३	४५/२४	रेवती	५२	६	रा	२	२४	वैधृति	२/५२	४६/२८	प्रा	६/३	४०/४०	व	०	२७	भ	२७/५४	३२/३६	धाता	२६	१४	१३	१३	६	मेष	५२।६	५	३४	६	२६	०	११	४२	३०	१३	२४	-	४	४	४३
३२	१२	३०	र	४८	३२	रा	१२	५९	अश्विनी	४७	५९	रा	१२	४६	प्रीति	४७	४०	रा	१२	३८	च	२१	३४	नाग	४८	३२	आनन्द	२७	१५	१४	१४	७			५	३४	६	२६	०	१२	४०	४५	१३	४४	-	४	५	२६

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				मार्गीबुध				गुरु				मार्गीशुक्र				शनि				राहु			
१	र	३	१	३५	४८	११	४	४०	५	१	२५	१०	१९	मा	२५	४४	५५	१०	२७	४८	५	११	१	४४	५३
१	चं	३	२	२	३७	११	५	२०	३	१	२५	२०	२४	१०	२६	१५	४३	१०	२७	५४	२४	११	१	४१	४२
२	मं	३	२	२९	२६	११	६	०	३५	१	२५	३०	२८	१०	२६	४६	३२	१०	२८	०	४२	११	१	३८	३१
३	बु	३	२	५६	१५	११	६	४१	७	१	२५	४०	३३	१०	२७	१७	२१	१०	२८	७	०	११	१	३५	२१
४	गु	३	३	२३	४	११	७	२१	३९	१	२५	५०	४०	१०	२७	४८	९	१०	२८	१३	१९	११	१	३२	१०
५	शु	३	३	४९	५४	११	८	६	५६	१	२६	०	४७	१०	२८	१८	५८	१०	२८	१९	३७	११	१	२८	५९
६	श	३	४	१६	४३	११	९	८	२२	१	२६	१०	५४	१०	२८	४९	४७	१०	२८	२५	५६	११	१	२५	४८
७	र	३	४	४३	३२	११	१०	१०	१६	१	२६	२१	२	१०	२९	२०	२६	१०	२८	३२	१४	११	१	२२	३७
८	चं	३	५	१०	२१	११	११	१२	९	१	२६	३१	९	१०	२९	५०	४२	१०	२८	३८	३२	११	१	१९	२७
९	मं	३	५	३७	१०	११	१२	१४	३	१	२६	४२	१६	११	०	२०	५९	१०	२८	४४	५०	११	१	१६	१६
१०	बु	३	६	४	०	११	१३	२१	३	१	२६	५३	४९	११	०	५१	१६	१०	२८	५१	८	११	१	१३	५
११	गु	३	६	३०	४९	११	१४	३९	४	१	२७	५	२२	११	१	२१	३३	१०	२८	५७	२६	११	१	९	५४
१२	शु	३	६	५७	३८	११	१५	५७	१३	१	२७	१६	५५	११	१	५१	५०	१०	२९	३	४३	११	१	६	४३
१३	श	३	७	२४	२७	११	१७	१५	२३	१	२७	२८	२८	११	२	२२	७	१०	२९	१०	१	११	१	३	३३
३०	र	३	७	५१	१७	११	१८	३३	५७	१	२७	४०	२	११	२	५२	२३	१०	२९	१६	३	११	१	०	२२

ग्रहचार-मंगल-ति. ३ बुध को पुष्य में रा. २।५६।। मार्गीबुध-ति. १२ शुक्र को रेवती में सा. ६।४३।। गुरु- ति. ८ सोम को मृगशिरा २ चरण में रा. १२।४४।। वक्रीशुक्र- ति. १ रवि को मार्गी दि. १०।२३। ति. ८ सोम को मीन राशि में दि. १।०।। ति. ३० रवि को उत्तराभाद्रपद में रा. ३।२७।। शनि- पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में।। राहु- पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में तथा केतु उत्तराफाल्गुनी २ चरण में।।

३ पं० वैशाखकृष्ण ८ सोम

अहर्गण ३७५१

अयनांश २४।११।३८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	९	३	११	१	१०	११	११	५
६	८	५	११	२६	२९	२८	१	१
५०	४४	१०	१२	३१	५०	३८	१९	१९
३८	४०	२१	३१	४४	३२	२७	२७	
५८	७८५	२६	११	११	३०	६	३	३
२७	३५	४९	५४	७	१७	१८	११	११
				मा.	मा.			

२ गु.
बु.१२रा.
३
सू. १
शु. ११
श.
४ मं.
१० चं.
५
७
९
६ के.
८

विविधमुहूर्त्त-ति. १ रवि को चित्रा में शनिवेध है। रात्रिशेष में स्वाती में सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति. १ सोम को स्वाती में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन (द्वितीया में) नवान्नभक्षण औषधसेवन **चौलमुण्डन** (ल.३) **उपनयन** (ल.३) **वधूप्रवेश** (ल.५) **द्विरागमन** (ल.६) **गृहारम्भ** (च.शु.) बीजोप्ति वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. २ मंगल को विशाखा में भद्रा (रा. ९।३१) से पूर्व लालवस्त्रधारण आभूषणनिर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ३ बुध को अनुराधा में भद्रा के बाद रिक्तादोष तथा व्यतिपात है। ति. ४ गुरु को ज्येष्ठा में भौमवेध तथा रिक्तादोष है। चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ शुक्र को मूल में मंगल का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। ति.६ शनि को प्रा. ६।३३ के बाद पू.षा. में भद्रा पूर्व शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ७ रवि को दि. ७।३० के बाद उ.षा. में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण आभूषणनिर्माण वाटिकारोपण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ सोम को उ.षा. में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन **वधूप्रवेश-द्विरागमन** (ल.२) शिल्पविद्या **हलप्रवहण** विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. ७।५६ के बाद श्रवण में अष्टमी में दँवरी नवान्नभक्षण **वधूप्रवेश** (ल.५) **हलप्रवहण** वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ९ मंगल को श्रवण में नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता (दि. १२।४९) के बाद भद्रा पूर्व धनिष्ठा में लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण मकर के चन्द्रमा में **पूर्व-दक्षिण** तथा कुम्भ के चन्द्रमा में **पश्चिम दिशा की यात्रा हलप्रवहण** ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. १० बुध को भद्रा (दि. ११।३२) के बाद शतभिष में ☞

तिथि ल.अ.	१ र घं.	मि.	तिथि ल.अ.	१ चं घं.	मि.	२ मं घं.	मि.	३ बु घं.	मि.	४ गु घं.	मि.	५ शु घं.	मि.	६ श घं.	मि.	७ र घं.	मि.	८ चं घं.	मि.	९ मं घं.	मि.	१० बु घं.	मि.	११ गु घं.	मि.	१२ शु घं.	मि.	१३ श घं.	मि.	३० र घं.	मि.
मीन	५	४५	मेष	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	३	६	५९	६	५५	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३३	६	२९
मेष	७	२२	वृष	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५९	८	५५	८	५१	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३३	८	२९	८	२५
वृष	९	१८	मिथुन	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१३	११	९	११	५	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४३	१०	३९
मिथुन	११	३२	कर्क	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३१	१	२७	१	२३	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	१	१२	५७
कर्क	१	५०	सिंह	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४५	३	४१	३	३७	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१५	३	११
सिंह	४	४	कन्या	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५८	५	५४	५	५०	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२८	५	२४
ल.अ.	रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	६	१७	तुला	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१४	८	१०	८	६	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४४	७	४०
तुला	८	३३	वृश्चिक	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	१	९	५७
वृश्चिक	१०	५०	धनु	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	७	१२	३
धनु	१२	५६	मकर	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५४	१	५०
मकर	२	४३	कुम्भ	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५५	३	५१	३	४७	३	४४	३	४०	३	३६	३	३३	३	२८	३	२५	३	२१
कुम्भ	४	१४	मीन	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२३	५	१९	५	१५	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५३	४	४९

वैशाखकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २३ चैत्र से ७ वैशाख तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक १३ अप्रैल से २७ तक सन् २०२५ ई.।।

तुलाराशि प्रा. ६।२९। मासपर्यन्त प्रपा (पौसरा) का दान। असमर्थता में धर्मघटदान। प्रतिदिन पीपलवृक्ष में जलदान। तुलसीपत्र◆ सूर्योदय से मध्याह्नकाल तक मेषसंक्रान्ति का पुण्यकाल। हरिद्वार तथा काशी में अस्सी संगम स्नान। सत्तू-पंखा-जलकलश● भ.रा. ९।३१ से। वृश्चिकराशि सा. ६।१९। मृत्युबाण प्रारम्भ प्रा. ६।०। भ.दि. १०।२७ तक। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।२८। त्रिदण्डी स्वामी जयन्ती बक्सर (बिहार)। मृत्युबाण❶ धनुराशि रा. ५।५। ❶समाप्ति प्रा. ६।३३। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा. ३।१२ तक। ❸ प्रा. ६।३३ से ❷दि. ७।३० से दि. २।१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ७।३० से। त्रिपुष्करयोग दि. ७।३० से दि. २।१ तक। रवियोग दि. ७।३० तक। भ.दि. १।५२ से रा. १।५७ तक। ⊙सायन वृषराशि का सूर्य रा. ४।५। रवियोग ❸ मकरराशि दि. १।३६। गुरुअर्जुनदेवजयन्ती। भानुसप्तमी ७। यायीजययोग ❷ श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत। आज बासी भोजन शास्त्र विहित है। राष्ट्रीयवैशाखमास दि. ३१। भ.रा. १२।११ से। कुम्भराशि रा. ७।३९। पञ्चक प्रारम्भ रा. ७।३९। भ.दि. ११।३२ तक। बाबूकुँवरसिंहजयन्ती (बिहार)। यायी-स्थायी दुर्लभ सन्धिकरयोग दि. ७।२४ से दि. ११।३२ तक। मीनराशि रा. ११।४३। वरुथिनी ११ एकादशी व्रत सबका। श्री वल्लभाचार्य जयन्ती ११। मृत्युबाण प्रारम्भ दि. ११।२५। दिन में ७।५७ तक *एकादशी व्रत की पारणा*। प्रदोष १३ व्रत। मृत्युबाण समाप्ति दि. १२।५। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा. ४।० से भ.प्रा. ५।४५ से सा. ४।३५ तक। मेषराशि रा. २।२४। मासशिवरात्रि १४ व्रत। पञ्चक समाप्ति रा. २।२४। यायीजययोग प्रा. ५।४५ तक। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। ⊙भरणी नक्षत्र का सूर्य रा. ९।४५। यायीजययोग रा. १२।४९ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १२।४६ तक।

वैशाखमास के कृत्य
जो मनुष्य वैशाख मास में एक बार भोजन तथा प्रातः स्नान करने से अपने वर्ग में श्रेष्ठता को प्राप्त होता है। (महाभारत)
सुगन्धित पदार्थ, मुक्ता तथा गौ दान देने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। (वामन पुराण)

◆से श्रीविष्णुपूजन। ⊙सं. अश्विनी नक्षत्र तथा मेषराशि का सूर्य रा.शे. ५।२९। मु. ४५ जघन्य। फल महँगी। उत्तरगोल। खरमास समाप्ति। संक्रान्ति का पुण्यकाल दूसरे दिन। यायीजययोग रा. ७।४७ से। ●आदि का दान। वैशाखी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती। सौरवैशाखमासारम्भ। बंग सन् १४३२ प्रारम्भ। यायीजययोग प्रा. ६।२९ तक।

४ पं० वैशाखकृष्ण ३० रवि

अहर्गण ३७५७

अयनांश २४।११।३९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	०	३	११	१	११	१०	११	५
१२	१	७	१८	२७	२	२९	१	१
४०	५३	५१	३३	४०	५२	१६	०	०
४५	७	१७	५७	२	२३	३	२२	२२
५८	८५	२६	८२	११	३०	५	३	३
१३	५६	४९	५५	३४	१७	३२	११	११
				मा.	मा.			

गु. २
बु.१२शु. रा.
३
सू. १ चं.
११श.
४ मं
१०
५
७
९
६ के.
८

।। विवाहमुहूर्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श।।

ति. १ सोम को स्वाती में रे. ७ ल. गोधूलि रात्रि में पञ्चेष्टलग्न नहीं है।

ति. २ मंगल को रा. १२।५७ के बाद अनुराधा में मद्रादोष, व्यतिपात तथा मृत्युबाण है।

ति. ३ बुध को व्यतिपात (रा. १०।३) के बाद अनुराधा में रे. ५ ल. १० इष्ट५ ग्र.व.वि. १३।। (सप्तमस्थ मंगल शुभ नहीं है) वा ल. ११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।।

ति. ४ गुरु को रा. ५।५ के बाद मूल में मंगल का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है।

ति. ५ शुक्र को मूल में मंगल का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है।

ति. ६ शनि को मूल में पूर्ववेष है।

ति. ७ रवि को दि. ७।३० के बाद उ.षा. में रे. ८ दिन में ल. २ इष्ट५ ग्र.व.वि. १० (अष्टमस्थ चन्द्र शुभ नहीं है) वा ल. गोधूलि वा ल. ८ इष्ट५ ग्र.व.वि. १४ (गु.दा.) वा ल. ११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।।

ति. ८ सोम को उ.षा. में रे. ८ दिन में ल. २ इष्ट५ ग्र.व.वि. १०

ति. १२ शुक्र को उ.भा. में वैधृतिदोष तथा मृत्युबाण है। इसके बाद मासान्तदोष है।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ३ बुध को रा. ३।१२ से। ति. ६ शनि को प्रा. ६।३३ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. १२ शुक्र को रा. ४।० से। ति. ३० रवि को रा. १२।४६ तक।
पञ्चक विचार- ति. ९ मंगल को रा. ७।३९ से। ति. १३ शनि को रा. २।२४ तक।

वैशाख मास में देवों की जलाधिवास विधि- वैशाख या ज्येष्ठ मास में जब गर्मी अत्यधिक पड़ने लगे तो प्रातः काल नित्यपूजन पूर्वक गंधोदक से परिपूर्ण पात्र में विष्णु भगवान को स्थापित कर पंचोपचार पूजन करके सूर्यास्त तक जलाधिवास कराना चाहिए। पुनः सायं काल गन्धपूर्ण जल से बाहर निकालकर पंचोपचार पूजन करना चाहिए तथा उस जल से गृहजनों सहित समस्त गृह को पवित्र करना चाहिए। द्वादशी तिथि के दिन विष्णु का जलाधिवास नहीं करें, अपितु सायं काल कुछ समय तक जल में स्थापित कर पूजन करके पुनः स्व स्थान पर स्थापित कर देना चाहिए। प्रतिदिन के लिए स्मरणीय पाठ- अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः। जयः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।। १।। सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविनश्यति ।।२।। वैशाखस्नान का मन्त्र- वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमणं रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।१। माधवे मेषगे भानौ मुरारेमधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे नाथ फलदोभवपापहन्।। वैशाख में त्याज्य- कांसे का पात्र, मांस, मसूर दाल, चना, कोदो (अन्न विशेष) शाक, मधुपरान्न भोजन तथा मैथुन क्रिया का वैशाख में त्याग करना चाहिए। मेष के सूर्य में दान विशेष- जो मनुष्य मेष के सूर्य में देवों तथा पितरों को उद्देश्य कर सत्तू तथा जल पूर्ण घड़े का दान करता है उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। दान के मन्त्र- सक्तवो धर्मदा नित्यं ब्राह्मणप्रीतकारकाः। त्वद्दानान्ममपापानां क्षयोऽस्तु सुखमस्तु च।। जो लोग परिस्थित वश सम्पूर्ण वैशाख में तीर्थ स्थान नहीं कर सकते वे (त्रयोदशी, चतुर्दशी एवं पूर्णिमा) माह के अन्तिम तीन दिनों के नियम पूर्वक स्नान से भी समस्त पापों से मुक्त होकर सम्पूर्ण फल को प्राप्त करते हैं।

☞ जातकर्मनामकरण गर्भाधान पशुओं की खरीद-बिक्री शिल्पविद्या औषधसेवन द्विरागमन (ल.६ वा७) हलप्रवहण वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ११ गुरु को शतभिष में प्रा. ६।३५ तक जातकर्मनामकरण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री शिल्पविद्या वाहन खरीदने ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। पू.भा. में शनियुति है। ति. १२ शुक्र को वैधृति (दि. ९।३५) से पूर्व उ.भा. में पुंसवनसीमन्त (त्रयोदशी में) जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण *त्रयोदशी में* अन्नप्राशन सूतीस्नान गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण वधूप्रवेश (ल.२) द्विरागमन (ल.३) गृहप्रवेश (ल.२) विपणि व्यापार मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल वसन्तऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
३२	१५	१	चं	४२	२६	रा	१०	३१	भरणी	४३	५१	रा	११	५	आयुष्मान	३९	५३	रा	९	३०	किं	१५	२९	वव	४२	२६	चर	२८	१६	१५	१५	८	वृष	५७।५२	५	३३	६	२७	०	१३	३८	५८	१४	३	-	५	-	-
३२	१८	२	मं	३६	३३	रा	८	९	कृत्तिका	३९	५५	रा	९	३०	सौभाग्य	३२	२१	सा	६	२८	वा	९	३०	कौ	३६	३३	गद	२९	१७	१६	१६	९			५	३२	६	२८	०	१४	३७	८	१४	२१	-	५	८	२८
३२	२२	३	बु	३१	४	सा	५	५८	रोहिणी	३६	२५	रा	८	६	शोभन	२५	८	दि	३	३५	तै	३	४९	गर	३१/५८	४/३६	शुभ	३०	१८	१७	१७	१०			५	३२	६	२८	०	१५	३५	१७	१४	४०	-	५	९	३९
३२	२५	४	गु	२६	७	दि	३	५८	मृगशिरा	३३	२९	सा	६	५५	अतिगण्ड	१८	२३	दि	१२	५२	भ	२६	७	वव	५४	४	मृत्यु	१	१९	१८	१८	११	मिथुन	४।५७	५	३१	६	२९	०	१६	३३	२५	१४	५८	-	५	१०	४३
३२	२८	५	शु	२२	०	दि	२	१८	आर्द्रा	३१	२८	सा	६	५	सुकर्मा	१२	१७	दि	१०	२५	वा	२२	०	कौ	५०	२५	पद्म	२	२०	१९	१९	१२			५	३०	६	३०	०	१७	३१	३०	१५	१६	-	५	११	३९
३२	३१	६	श	१८	४९	दि	१	२	पुनर्वसु	३०	१५	सा	५	३६	धृति	६	५३	दि	८	१५	तै	१८	४९	गर	४७	४५	छत्र	३	२१	२०	२०	१३	कर्क	१५।३३	५	३०	६	३०	०	१८	२९	३३	१५	३४	-	५	१२	२६
३२	३४	७	र	१६	४०	दि	१२	९	पुष्य	३०	९	सा	५	३३	शूल	२/५४	१९/२२	प्रा	६/४	२५/५७	व	१६	४०	भ	४६	१३	श्रीवत्स	४	२२	२१	२१	१४			५	२९	६	३१	०	१९	२७	३४	१५	५२	-	५	१	६
३२	३७	८	चं	१५	४५	दि	११	४७	श्लेषा	३१	१५	सा	५	५९	वृद्धि	५६	५	रा	३	५५	वव	१५	४५	वा	४५	५६	सौम्य	५	२३	२२	२२	१५	सिंह	३१।१५	५	२९	६	३१	०	२०	२५	३३	१६	९	-	५	१	४०
३२	४०	९	मं	१६	७	दि	११	५५	मघा	३३	३९	सा	६	५६	ध्रुव	५४	२८	रा	३	१५	कौ	१६	७	तै	४६	५९	कालदण्ड	६	२४	२३	२३	१६			५	२८	६	३२	०	२१	२३	३०	१६	२६	-	५	२	११
३२	४३	१०	बु	१७	५१	दि	१२	३५	पू.फा.	३७	१९	रा	८	२३	व्याघात	५३	४९	रा	२	५९	गर	१७	५१	व	४९	१५	सुस्थिर	७	२५	२४	२४	१७	कन्या	५३।३०	५	२७	६	३३	०	२२	२१	२६	१६	४३	-	५	२	३९
३२	४६	११	गु	२०	३९	दि	१	४३	उ.फा.	४२	४	रा	१०	१७	हर्षण	५४	४	रा	३	५	भ	२०	३९	वव	५२	३७	मातङ्ग	८	२६	२५	२५	१८			५	२७	६	३३	०	२३	१९	१९	१७	०	-	६	३	७
३२	४९	१२	शु	२४	३५	दि	३	१६	हस्त	४७	४५	रा	१२	३२	वज्र	५५	४	रा	३	२८	वा	२४	३५	कौ	५६	५६	अमृत	९	२७	२६	२६	१९			५	२६	६	३४	०	२४	१७	१०	१७	१६	-	६	३	३६
३२	५१	१३	श	२९	१६	सा	५	८	चित्रा	५४	४	रा	३	४	सिद्धि	५६	३२	रा	४	३	तै	२९	१६	गर	६०	०	काण	१०	२८	२७	२७	२०	तुला	२०।५५	५	२६	६	३४	०	२५	१५	१	१७	३२	-	६	४	५
३२	५४	१४	र	३४	२५	रा	७	११	स्वाती	६०	०	स	म	स्त	व्यतिपात	५८	१२	रा	४	४२	गर	१	५१	व	३४	२५	लुम्बक	११	२९	२८	२८	२१			५	२५	६	३५	०	२६	१२	४८	१७	४७	-	६	४	३८
३२	५७	१५	चं	३९	३१	रा	९	१३	स्वाती	०	४१	प्रा	५	४१	वरीयान	५९	४४	रा	५	१९	भ	६	५८	वव	३९	३१	छत्र	१२	३०	२९	२९	२२	वृश्चिक	५०।३०	५	२५	६	३५	०	२७	१०	३३	१८	३	-	६	५	१५

वैशाखशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ८ वैशाख से २२ तक शक १९४७।। अंग्रेजी दिनांक २८ अप्रैल से १२ मई तक सन् २०२५ ई.।।

☞शुक्र पूर्व में- अतः पूर्व-उत्तर दिशा तथा वायव्य-ईशान दिशा से द्विरागमन शुभ होगा।

वृषराशि रा.४।४२। देवदामोदरतिथि (असम)। यायीजययोग रा.१०।३१ तक। ❶रा.९।३० तक। त्रिपुष्करयोग रा.८।९ तक।
◡चन्द्रदर्शन। मु.३० समा। फल समता। समश्रृंग समताकारक। श्रीपरशुरामजयन्ती ३ (प्रदोष में)। सर्वार्थसिद्धियोग ❶
भ. रा.४।५८ से। मु. जिल्काद ११ हिजरी सन् १४४६। अक्षयतृतीया ३। समुद्रस्नान। सत्तू-चीनी-जल-कलश-कुष्माण्ड में ◆
भ. दि.३।५८ तक। मिथुनराशि दि. ७।३०। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। मई ५। रवियोग सा.६।५५ तक।
आद्यजगद्गुरुशंकराचार्य जयन्ती ५। दृश्य अगस्तयास्त रा.११।१०। रोगबाण सा.५।१७ तक। सर्वार्थसिद्धियोग ❖
कर्कराशि दि. ११।४३। श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती ६। श्रीगंगासप्तमी ७ (मध्याह्न व्यापिनी)। "दिनद्वये तद्व्याप्तौ अव्याप्तौ ❷
भ. दि. १२।९ से रा.११।५८ तक। भानुसप्तमी ७। मृत्युबाण समाप्ति सा. ६।५५। सर्वार्थसिद्धियोग सा.५।३३ तक।
सिंहराशि सा.५।५९। यायीजययोग दि.११।४७ से सा.५।५९ तक। रवियोग सा.५।५९ से। ❖सा.६।५ से। रवियोग सा.६।५ से।
श्रीसीतानवमी ९। जानकी जन्मोत्सव। रवियोग समस्त। ♍यायीजययोग रा. ७।११ से। रवियोग सा.४।४३से।
भ. रा. १।९ से। कन्याराशि रा. २।५१। गुरुरविन्द्रनाथटैगोर जयन्ती। रवियोग रा. ८।२३ तक।
भ. दि. १।४३ तक। श्रीमोहिनी ११ एकादशी व्रत सबका। यायीजययोग दि.१।४३ तक।
प्रदोष १३ व्रत। परशुरामद्वादशी १२। रुक्मिणी द्वादशी (बंगाल)। रवियोग रा. १२।३२ से।
तुलाराशि दि. १।४८। सर्वार्थसिद्धियोग रा.३।४ से। रवियोग रा.३।४ तक। ❸☉कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य सा.४।४३।♍
भ. रा. ७।११ से। स्वाती नक्षत्र से युक्त श्रीनृसिंह १४ चतुर्दशी व्रत। ओंकारेश्वरयात्रा तथा दर्शन। नृसिंह अवतार। ❸
भ. दि. ८।१२ तक। वृश्चिकराशि रा.१।३७। स्नान- दान-व्रत की १५ पूर्णिमा। बुद्धपूर्णिमा १५। बुद्धजयन्ती। ☉

।।विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श।।

ति. २ मंगल को रा. ९।३० के बाद रोहिणी में रे. ९ ल. ११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।।

ति. ३ बुध को रोहिणी में रे. ९ दिन में ल. २ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०वा ल. ४ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५वा ल. गोधूलि। रा.८।६ के बाद मृगशिरा में भद्रा (रा.४।५८) से पूर्व रे.९ ल. ११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।।

ति. ४ गुरु को भद्रा (दि.३।५८) के बाद मृगशिरा में रे.९ल.गोधूलि।

ति. ८ सोम को सा. ५।५९ के बाद मघा में रे. ८ ल.गोधूलि वा ल. ११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।।(चं.दा.)

ति. ९ मंगल को मघा में रे.८ दिन में ल. २ इष्ट ५ ग्र.व.वि.९।। वा ल. ४ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३।। वा ल.गोधूलि।

ति. १० बुध को रा. ८।२३ के बाद उ.फा. में केतुयुति तथा भद्रा है।

ति. ११ गुरु को उ.फा. में पूर्वदोष है। रा.१०।१७ के बाद हस्त में रे.७ ल. ११ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३।। (अष्टमस्थ चन्द्र शुभ नहीं है)

ति. १२ शुक्र को हस्त में रे. ७ दिन में ल. २ इष्ट ५ ग्र.व.वि.९।। वा ल. ५ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३ (अष्टमस्थ शुक्र शुभ नहीं है) वा ल. गोधूलि वा ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १४

ति. १३ शनि को रा.३।४ के बाद स्वाती में रे. ७ व्यतिपात (रा.४।३) से पूर्व पञ्चेष्टलग्न नहीं है।

ति. १४ रवि को स्वाती में भद्रादोष तथा व्यतिपात है।

ति. १५ सोम को स्वाती में भद्रादोष है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.वा.		मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	चं	३	८	१८	६	११	१९	५६	५२	१	२७	५१	३५	११	३	२२	४०	१०	२९	२१	३५	११	०	५७	११
२	मं	३	८	४४	५५	११	२१	२५	४६	१	२८	३	८	११	३	५२	५७	१०	२९	२७	७	११	०	५४	०
३	बु	३	९	११	४४	११	२२	५४	४३	१	२८	१४	४१	११	४	२३	१४	१०	२९	३२	३९	११	०	५०	४९
४	गु	३	९	३८	३३	११	२४	२३	४१	१	२८	२६	१४	११	४	५३	३१	१०	२९	३८	१२	११	०	४७	३८
५	शु	३	१०	५	२३	११	२५	५२	३८	१	२८	३७	४७	११	५	२३	४८	१०	२९	४३	४४	११	०	४४	२७
६	श	३	१०	३२	१२	११	२७	२५	३२	१	२८	४९	२०	११	५	५४	४	१०	२९	४९	१६	११	०	४१	१७
७	र	३	१०	५९	१	११	२९	३	११	१	२९	०	५३	११	६	२४	२१	१०	२९	५४	४८	११	०	३८	६
८	चं	३	११	२५	५०	०	०	४०	५१	१	२९	१२	२६	११	६	५४	३८	११	०	०	२०	११	०	३४	५५
९	मं	३	११	५२	३९	०	२	१८	३१	१	२९	२४	०	११	७	२४	५५	११	०	५	५३	११	०	३१	४४
१०	बु	३	१२	१९	२९	०	३	५५	२७	१	२९	३५	३२	११	७	५५	१२	११	०	११	२५	११	०	२८	३४
११	गु	३	१२	४६	१८	०	५	३६	५९	१	२९	४७	५	११	८	२५	२९	११	०	१६	५६	११	०	२५	२३
१२	शु	३	१३	१३	७	०	७	२१	१३	२	०	०	१२	११	९	३५	४०	११	०	२२	२८	११	०	२२	१२
१३	श	३	१३	४४	३९	०	९	६	२०	२	०	१३	१३	११	१०	३०	२२	११	०	२७	५९	११	०	१९	१
१४	र	३	१४	१६	४	०	१०	५१	२७	२	०	२६	१४	११	११	२५	४	११	०	३३	३१	११	०	१५	५०
१५	चं	३	१४	४७	२०	०	१२	३६	३४	२	०	३९	१६	११	१२	१९	४५	११	०	३९	३	११	०	१२	४०

ग्रहचार- मंगल- पुष्य में।। बुध- ति. ७ रवि को अश्विनी तथा मेषराशि में रा. ७।२७। ति. १५ सोम को भरणी में दि. ३।९।। गुरु- ति. ११ गुरु को मृगशिरा ३ चरण तथा मिथुनराशि में रा.शे.५।५।। शुक्र- उत्तराभाद्रपद में।। शनि- ति. ७ रवि को पूर्वाभाद्रपद ४ चरण तथा मीनराशि में रा. ४।२।। राहु- पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में तथा केतु उत्तराफाल्गुनी २ चरण में।।

५ पं० वैशाखशुक्ल ८ सोम

अहर्गण ३७६५

अयनांश २४।११।४१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	३	३	०	१	११	११	११	५
२०	२३	११	०	२९	६	०	०	०
२५	१०	२५	४०	१२	५४	०	३४	३४
३३	५३	५०	५१	३१	३८	२०	५५	५५
५७	७८५	२६	९७	११	३०	५	३	३
५७	३६	४९	४०	३५	१७	३	११	११

विविधमुहूर्त्त–ति. १ सोम को भरणी में सूर्ययुति है। ति. २ मंगल को कृत्तिका में सूर्यभोग्य है। रात्रिशेष में रोहिणी में सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति. ३ बुध को सा.५।५८ तक रोहिणी में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण **अन्नप्राशन** सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण दँवरी शिल्पविद्या **उपनयन** (ल.२ के.दा.) **द्विरागमन** (ल.२ वा ३) **हलप्रवहण ईंट का भट्ठा लगाना** विपणि का मुहूर्त्त है। ति. ४ गुरु को रिक्ता (दि.३।५८) के बाद मृगशिरा में नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण **पश्चिम दिशा की यात्रा** शिल्पविद्या **द्विरागमन** (ल.६ वा ७) औषधसेवन नावनिर्माण **हलप्रवहण** विपणि व्यापार वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ५ शुक्र को आर्द्रा में **अक्षरारम्भ–विद्यारम्भ** (ल.३) **उपनयन** (रोगबाण) फसल काटने का मुहूर्त्त है। सा. ६।५ के बाद पुनर्वसु में नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण **द्विरागमन** (ल.७) पशुओं की खरीद–बिक्री शिल्पविद्या औषधसेवन वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ६ शनि को पुनर्वसु में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण **पश्चिम–उत्तर दिशा की यात्रा** (सप्तमी में) **जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा** (ल.३) मुहूर्त्त है। ति. ७ रवि को पुष्य में भौमयुति तथा भद्रा है। ति. ८ सोम को दि.११।४७ तक श्लेषा में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ मंगल को मघा में सूर्यवेध है। ति. १० बुध को पू.फा. में सूर्य का वेध समाप्त है किंतु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। ति. ११ गुरु को उ.फा. में केतुयुति तथा भद्रादोष है। ति. १२ शुक्र को हस्त में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान नवीन खटिया–चौकी आदि ☞

तिथि	१ चं		२ मं		३ बु		४ गु		५ शु		६ श		७ र		८ चं		९ मं		१० बु		११ गु		१२ शु		१३ श		१४ र		१५ चं	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
मेष	६	२५	६	२२	६	१८	६	१४	६	११	६	७	६	३	६	०	५	५५	५	५१	५	४७	५	४४	५	४०	५	३६	५	३३
वृष	८	२१	८	१८	८	१४	८	१०	८	७	८	३	७	५९	७	५६	७	५१	७	४७	७	४३	७	४०	७	३६	७	३२	७	२९
मिथुन	१०	३५	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	१०	१०	५	१०	१	९	५७	९	५४	९	५०	९	४६	९	४३
कर्क	१२	५३	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२८	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	१
सिंह	३	७	३	४	३	०	२	५६	२	५३	२	४९	२	४५	२	४२	२	३७	२	३३	२	२९	२	२६	२	२२	२	१८	२	१५
कन्या	५	२०	५	१७	५	१३	५	९	५	६	५	२	४	५८	४	५५	४	५०	४	४६	४	४२	४	३९	४	३५	४	३१	४	२८
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
तुला	७	३६	७	३२	७	२९	७	२५	७	२२	७	१८	७	१४	७	११	७	६	७	२	६	५८	६	५५	६	५१	६	४७	६	४४
वृश्चिक	९	५३	९	५०	९	४६	९	४२	९	३९	९	३५	९	३१	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	५	९	१
धनु	११	५९	११	५६	११	५२	११	४८	११	४५	११	४१	११	३७	११	३४	११	२९	११	२५	११	२१	११	१८	११	१४	११	१०	११	७
मकर	१	४६	१	४३	१	३९	१	३५	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१	१	१६	१	१२	१	८	१	५	१	१	१२	५७	१२	५४
कुम्भ	३	१७	३	१४	३	१०	३	६	३	३	२	५९	२	५५	२	५२	२	४७	२	४३	२	३९	२	३६	२	३२	२	२८	२	२५
मीन	४	४५	४	४२	४	३८	४	३४	४	३१	४	२७	४	२३	४	२०	४	१५	४	११	४	७	४	४	४	०	३	५६	३	५३

६ पं०वैशाखशुक्ल १५ सोम

अहर्गण ३७७२

अयनांश २४।११।४२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	६	३	०	२	११	११	११	५
२७	१९	१४	१२	०	१२	०	०	०
१०	५१	४७	३६	३९	१९	३९	१२	१२
३३	४७	२०	३४	१६	४५	३	४०	४०
५७	७२०	३१	१७७	१३	५४	४	३	३
४४	३२	१५	२	१	४२	५२	११	११

◆रत्न भरकर दान। चन्दन से श्री विष्णु पूजा। श्रीबदरी केदार यात्रा। काशी में त्रिलोचन यात्रा। कल्पादि ३। त्रेतायुगादि ३। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। रवियोग रा.८।६ से। ❷एकदेशेव्याप्तौ वापूर्वा"। श्रीगंगोत्पत्तिः ७। मृत्युबाण प्रारम्भ सा. ६।६। यायीजययोग दि.१।२ से सा.५।३६ तक। त्रिपुष्करयोग दि.१।२ से सा.५।३६ तक। रवियोग सा.५।३६ तक। ☉पुष्करादेवी जन्म। कृष्णा-जिन-जलकुम्भ-तिल-सुवर्ण-घृत तथा मधु का दान। सर्वपापक्षय। कूर्म जयन्ती १५। मृत्युबाण प्रारम्भ रा.१।५८। यायीजययोग प्रा. ५।४१ तक। रवियोग प्रा. ५।४१ तक।

मूलविचार-श्लेषा/मघा- ति. ७ रवि को सा. ५।३३ से। ति. ९ मंगल को सा.६।५६ तक।

अक्षय तृतीया के कृत्य- वैशाखशुक्ल पक्ष की तृतीया (अक्षय तृतीया) के दिन तीर्थों में स्नान, देवों के दर्शन तथा दान करने से अक्षय फल प्राप्त होता है। दान के वस्तु- अक्षय तृतीया के दिन जल पूर्ण घड़ा, स्वर्ण, सभी प्रकार के अन्न (यव, गेहूँ, चना, सत्तू, दही, चावल), पंखा, छाता, उपानह (जूता या चप्पल) इत्यादि का पितरों एवं देवों को उद्देश्यकर दान करना चाहिए। दान के लिए संकल्प- नामगोत्र आदि का उच्चारण कर (अद्यैतदन्नं शीतलोदकयुतं घटं विष्णुप्रीतये अमुकशर्मणे अमुकगोत्राय तुभ्यम् अहं सम्प्रददे) से संकल्पकर दान करना चाहिए। प्रार्थना- एष धर्मघटोदत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः। अस्य प्रदानात्सकला मम सन्तु मनोरथाः। गंधोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भफलान्वितम्। विष्णवे संप्रदास्यामि अक्षय्यमुपतिष्ठताम्।। पितरों को उद्देश्य कर किये गये दान में उपर लिखित प्रार्थना के अंतिम पाद में "पितृभ्यस्संप्रदानेन मम सन्तु मनोरथाः" को जोड़ देना चाहिए। तथा संकल्प करते समय 'विष्णुप्रीतये' के स्थान पर 'पितृणां प्रीतये' का उच्चारण करना चाहिए। साथ ही इसी दिन परशुराम का विधिवत् पूजन कर अर्घ्य देना चाहिए। अर्घ्यदान के लिए मन्त्र- जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।। अक्षयतृतीया के दिन विष्णु को चन्दन चढ़ाने का फल-अक्षय तृतीया के दिन जो मनुष्य चंदन द्वारा भगवान विष्णु का पूजन करता है वह विष्णु लोक को प्राप्त करता है। युगादि तिथि में दान का फल- उपवास कर जो मनुष्य युगादि तिथि में जल एवं अन्न का दान करते हैं उन्हें महत् पुण्य की प्राप्ति होती है।

☞का उपभोग नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (त्रयोदशी में) नवान्नभक्षण कर्णवेध (ल.३) अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल.३) उपनयन (ल.३) जलाश्याराम सुरप्रतिष्ठा (ल.३) वधूप्रवेश (ल.२) द्विरागमन (ल.३) गृहारम्भ (ल.८ गु.दा.) (भूषयनदोष का परिहार है) विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १३ शनि को चित्रा में शनिवेध है। ति. १४ रवि को स्वाती में व्यतिपातदोष है। ति. १५ सोम को भद्रा (दि.८।१२) के बाद विशाखा में पशुओं की खरीद-बिक्री का मुहूर्त्त है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल वसन्तऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.
३२	५९	१	मं	४४	११	रा	११	४	विशाखा	७	६	दि	८	१४	परिघ	६०	०	स	म	स्त	वा	११	५१	कौ	४४	११
३३	२	२	बु	४८	६	रा	१२	३८	अनुराधा	१२	५७	दि	१०	३५	परिघ	०	५१	प्रा	५	४४	तै	१६	९	गर	४८	६
३३	५	३	गु	५०	५४	रा	१	४५	ज्येष्ठा	१७	५७	दि	१२	३४	शिव	१	२०	प्रा	५	५५	व	१९	३०	भ	५०	५४
३३	७	४	शु	५२	३८	रा	२	२६	मूल	२१	५०	दि	२	७	सिद्ध	० / ५८	५५ / ४५	प्रा	५ / ५	४५ / १५	वव	२१	४६	वा	५२	३८
३३	१०	५	श	५२	५९	रा	२	३४	पू.षा.	२४	३२	दि	३	११	शुभ	५७	२१	रा	४	१८	कौ	२२	४९	तै	५२	५९
३३	१२	६	र	५२	४	रा	२	१२	उ.षा.	२५	५७	दि	३	४५	शुक्ल	५४	१	रा	२	५८	गर	२२	३२	व	५२	४
३३	१४	७	चं	४९	५६	रा	१	१९	श्रवण	२६	८	दि	३	४८	ब्रह्म	४९	४२	रा	१	१४	भ	२१	०	वव	४९	५६
३३	१७	८	मं	४६	४५	रा	१२	३	धनिष्ठा	२५	१०	दि	३	२५	ऐन्द्र	४४	३४	रा	११	११	वा	१८	२१	कौ	४६	४५
३३	१९	९	बु	४२	३७	रा	१०	२३	शतभिष	२३	१८	दि	२	३९	वैधृति	३८	४०	रा	८	४८	तै	१४	४१	गर	४२	३७
३३	२१	१०	गु	३७	४०	रा	८	२४	पू.भा.	२०	३४	दि	१	३४	विष्कुम्भ	३२	७	सा	६	११	व	१०	९	भ	३७	४०
३३	२३	११	शु	३२	९	सा	६	११	उ.भा.	१७	९	दि	१२	११	प्रीति	२५	३	दि	३	२०	वव	४	५५	वा	३२ / ५१	९ / १२
३३	२५	१२	श	२६	१५	दि	३	४९	रेवती	१३	१८	दि	१०	३८	आयुष्मान	१७	३८	दि	१२	२२	तै	२६	१५	गर	५३	११
३३	२७	१३	र	२०	७	दि	१	२२	अश्विनी	९	१४	दि	९	१	सौभाग्य	१०	३	दि	९	२०	व	२०	७	भ	४७	३
३३	३०	१४	चं	१३	५९	दि	१०	५४	भरणी	५	२	दि	७	१९	शोभन	२ / ५२	२४ / २९	प्रा	६ / ३	१६ / १५	श	१३	५९	च	४१	१
३३	३२	३०	मं	८	३	दि	८	३१	कृत्तिका	१ / ५६	३ / २४	प्रा	५ / ४	४३ / १७	सुकर्मा	४७	३८	रा	१२	२१	नाग	८	३	किं	३५	१६

ति.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	चन्द्र प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. -	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
१	श्रीवत्स	१३	१	३०	३०	२३			५	२४	६	३६	०	२८	८	१७	१८	१८	-	६	७	२२
२	सौम्य	१४	२	३१	३१	२४			५	२४	६	३६	०	२९	५	५९	१८	३३	-	६	८	१८
३	कालदण्ड	१५	३	१	१	२५	धनु	१७।५७	५	२३	६	३७	१	०	३	४०	१८	४७	-	६	९	१४
४	सुस्थिर	१६	४	२	२	२६			५	२३	६	३७	१	१	१	१८	१९	१	-	६	१०	६
५	मातङ्ग	१७	५	३	३	२७	मकर	३९।५३	५	२२	६	३८	१	१	५८	५६	१९	१५	-	६	१०	५४
६	अमृत	१८	६	४	४	२८			५	२२	६	३८	१	२	५६	३१	१९	२८	-	६	११	३७
७	सिद्धि	१९	७	५	५	२९	कुम्भ	५५।३९	५	२१	६	३९	१	३	५४	५	१९	४२	-	६	१२	१६
८	उत्पात	२०	८	६	६	३०			५	२१	६	३९	१	४	५१	३७	१९	५४	-	६	१२	५२
९	मानस	२१	९	७	७	३१			५	२०	६	४०	१	५	४९	७	२०	७	-	६	१	२७
१०	मुद्गर	२२	१०	८	८	१	मीन	६।१५	५	२०	६	४०	१	६	४६	३७	२०	१९	-	५	२	१
११	ध्वज	२३	११	९	९	२			५	१९	६	४१	१	७	४४	४	२०	३१	-	५	२	३६
१२	धाता	२४	१२	१०	१०	३	मेष	१३।१८	५	१९	६	४१	१	८	४१	३१	२०	४२	-	५	३	१५
१३	आनन्द	२५	१३	११	११	४			५	१९	६	४१	१	९	३८	५७	२०	५३	-	५	३	५९
१४	चर	२६	१४	१२	१२	५	वृष	१९।२	५	१८	६	४२	१	१०	३६	२०	२१	४	-	५	४	५०
३०	गद	२७	१५	१३	१३	६			५	१८	६	४२	१	११	३३	४३	२१	१४	-	५	-	-

ज्येष्ठकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २३ वैशाख से ६ ज्येष्ठ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक १३ मई से २७ तक सन् २०२५ ई.।।

आटा की ब्रह्मा की मूर्ति बनाकर ज्येष्ठमास में वस्त्रादि से पूजन करना चाहिये। माँ आनन्दमयी जयन्ती। मृत्युबाण ♍ नारदजयन्ती २।⊙सं.वृषराशि का सूर्य रा. ३।५२। मु.१५ जघन्या। फल महँगी। संक्रान्ति से पूर्व ६ घन्टा २४ मिनट ❶ भ. दि. १।११ से रा.१।४५ तक। धनुराशि दि. १२।३४। **सौरज्येष्ठमासारम्भ। मृत्युबाण प्रारम्भ** रा.शे. ४।५१। **संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत।** चन्द्रोदय रा.१०।६। स्थायीजययोग दि.२।७ से रा.२।२६ तक। **मृत्युबाण समस्त।** ❸ दि.१२।११ से। **मकरराशि** रा.९।१९। **मृत्युबाण समाप्ति** प्रा.५।४९। यायीजययोग दि.३।११ से रा.२।३४ तक। ♍ समाप्ति रा.२।५५। भ. रा. २।१२ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।४५ तक। रवियोग दि. ३।४५ से। ❷ दि. ३।४८ तक। रवियोग दि. ३।४८ तक। भ.दि. १।४५ तक। **कुम्भराशि** रा. ३।३७। **पञ्चक प्रारम्भ** रा. ३।३७। यायीजययोग दि.३।४८ से रा.१।१९ तक। सर्वार्थसिद्धियोग ❷ **श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत।** आज वासी भोजन शास्त्र विहित है। **त्रिलोचनाष्टमी** (बंगाल)। ⊙**सायन मिथुनराशि का सूर्य** रा.शे. ५।०।
● ⊙**रोहिणी नक्षत्र का सूर्य** दि.२।७। यायीजययोग दि. ९।१ से दि. १।२२ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।१ तक। भ. दि. ९।२४ से रा. ८।२४ तक। **मीनराशि** दि. ७।५०। **पौराणिक अगस्तयास्त** दि. १०।५६। **राष्ट्रीयज्येष्ठमास** दि.३१। ☯ **अचला ११ एकादशी व्रत सबका।** जलक्रीड़ा एकादशी (उड़ीसा)। भद्रकाली एकादशी (पंजाब)। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग ❸ **मेषराशि** दि. १०।३८। **शनिप्रदोष १३ व्रत।** *पुत्र प्राप्ति के लिए* /**वटसावित्री व्रतारम्भ** (तीन दिनों तक)। **पञ्चक समाप्ति** दि. १०।३८। भ.दि. १।२२ से रा. १२।८ तक। **वटसावित्री व्रत का द्वितीय दिन। मासशिवरात्रि १३ व्रत। मृत्युबाण प्रारम्भ** दि. २।७। ● **वृषराशि** दि. १२।५५। **वटसावित्री व्रत।** स्त्रियों के लिए आवश्यक व्रत। श्राद्ध की **३० अमावस्या। मृत्युबाण समाप्ति** दि. ३।१२। स्नान–दान की **३० अमावस्या। भौमवती अमावस्या।** यदि अमावस्या के दिन मंगलवार पड़े तो उस दिन गंगा स्नान करने ❍ से करोड़ो सूर्यग्रहण में स्नान करने के समान फल मिलता है।

❶ पुण्यकाल। गो–अन्न–जल–तिल आदि का दान। गोदावरी में स्नान। **ग्रीष्मऋतु प्रारम्भ।** सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग दि.१०।३५ तक। ☯ यायीजययोग रा.८।२४ से। ❍ से करोड़ो सूर्यग्रहण में स्नान करने के समान फल मिलता है। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.५।४३ तक।

।।विवाहमुहूर्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श।।

ति. १ मंगल को दि.८।१४ से अनुराधा में सूर्य वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से मुक्त न होने से अशुभ है। मृत्युबाण भी है।

ति. २ बुध को अनुराधा में सूर्य वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से मुक्त न होने से अशुभ है।

ति. ३ गुरु को दि.१२।३४ के बाद भद्रा (दि.१।११) से पूर्व मूल में रे. ७ दिन में पञ्चेष्टलग्न नहीं है। भद्रा (रा.१।४५) के बाद मृत्युबाण (रा.शे. ४।५१) से पूर्व ल. ११ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १७

ति. ४ शुक्र को मूल में मृत्युबाणव्याप्ति है।

ति. ५ शनि को दि.३।११ के बाद उ.षा.में रे. ८ गोधूलि वा ल.१२ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १७

ति. ६ रवि को उ.षा.में रे.८ दिन में पञ्चेष्टलग्न नहीं है

ति. १० गुरु को भद्रा (रा.८।२४) के बाद उ.भा.में रे. ८ ल.११ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३।। (के.दा.) वाला ल. १२ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१२ वा ल. २ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५

ति. ११ शुक्र को उ.भा.में रे. ८ दिन में ल. २ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५। दि.१२।११ के बाद रेवती में केतुवेध है।

ति. १२ शनि को रेवती में पूर्वदोष है। इसके बाद मासान्तदोष है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	मं	३	१५	१८	३५	०	१४	२३	३६	२	०	५२	१७	११	१३	१४	२७	११	०	४३	५५	११	०	९	२९
२	बु	३	१५	४९	५१	०	१६	१२	२६	२	१	५	१८	११	१४	९	९	११	०	४८	१८	११	०	६	१८
३	गु	३	१६	२१	६	०	१८	१	१५	२	१	१८	१९	११	१५	३	५१	११	०	५२	४१	११	०	३	७
४	शु	३	१६	५२	२२	०	१९	५०	५	२	१	३१	२०	११	१५	५८	३३	११	०	५७	५	१०	२९	५९	५६
५	श	३	१७	२३	३८	०	२१	३८	५५	२	१	४४	१७	११	१६	५३	१४	११	१	१	२८	१०	२९	५६	४६
६	र	३	१७	५४	५३	०	२३	३०	१९	२	१	५७	१२	११	१७	४७	५६	११	१	५	५१	१०	२९	५३	३५
७	चं	३	१८	२६	९	०	२५	२४	५	२	२	१०	७	११	१८	४२	३८	११	१	१०	१४	१०	२९	५०	२४
८	मं	३	१८	५७	२५	०	२७	१७	५१	२	२	२३	३	११	१९	३७	२०	११	१	१४	३७	१०	२९	४७	१३
९	बु	३	१९	२८	४०	०	२९	११	३८	२	२	३५	५८	११	२०	३२	२	११	१	१९	१	१०	२९	४४	२
१०	गु	३	१९	५९	५६	१	१	५	२४	२	२	४८	५४	११	२१	२६	४३	११	१	२३	२४	१०	२९	४०	५२
११	शु	३	२०	३१	१२	१	२	५९	४९	२	३	१	४९	११	२२	२१	२५	११	१	२७	४६	१०	२९	३७	४१
१२	श	३	२१	२	२७	१	४	५४	४९	२	३	१४	४५	११	२३	१६	७	११	१	३२	८	१०	२९	३४	३०
१३	र	३	२१	३३	४३	१	६	४९	४९	२	३	२७	४४	११	२४	१०	३८	११	१	३६	३१	१०	२९	३१	१९
१४	चं	३	२२	४	५९	१	८	४४	४९	२	३	४१	१	११	२५	४	५५	११	१	४०	५३	१०	२९	२८	८
३०	मं	३	२२	३६	१४	१	१०	३९	५०	२	३	५४	१८	११	२५	५९	११	११	१	४५	१५	१०	२९	२४	५८

ग्रहचार- मंगल- ति. ३ गुरु को श्लेषा में रा.७।५३।। बुध-ति. ७ सोम को कृत्तिका में रा. ९।२२। ति. ९ बुध को वृषराशि में दि. ३।३२। ति. १४ सोम को रोहिणी में रा. ८।५९।। गुरु-ति. १२ शनि को मृगशिरा ४ चरण में दि.३।१।। शुक्र- ति. ४ शुक्र को रेवती में रा. ११।३५।। शनि-पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में।। राहु- ति. ३ गुरु को पूर्वाभाद्रपद ३ चरण तथा कुम्भराशि में केतु उत्तराफल्गुनी १ चरण तथा सिंहराशि में रा.४।५३।।

७ पं० ज्येष्ठकृष्ण ८ मंगल

अहर्गण ३७८०

अयनांश २४।११।४३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१०	३	०	२	११	११	१०	४
४	०	१८	२७	२	१९	१	२९	२९
५१	५८	५७	१७	२३	३७	१४	४७	४७
३७	५३	२५	५१	३	२०	३७	१३	१३
५७	८१३	३१	११३	१२	५४	४	३	३
३०	६	१५	४७	५५	४२	२४	११	११

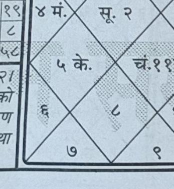

विविधमुहूर्त्त–ति. १ मंगल को विशाखा में लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। दि. ८।१४ के बाद अनुराधा में सूतीस्नान **उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा** ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। **ति.** २ बुध को अनुराधा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन **अन्नप्राशन** नवीनवस्त्रधारण **उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा** दँवरी नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषध सेवन **कर्णवेध** (ल.२ वा ३) **विद्यारम्भ** (ल.२वा ३). **उपनयन** (ल.२ के.दा.) विपणि व्यापार वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ज्येष्ठा में भौमवेध है। **ति.** ३ गुरु को ज्येष्ठा में पूर्वदोष है। दि.१२।३४ के बाद भद्रा (दि.१।११) से पूर्व मूल में शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या नावनिर्माण **बीजोप्ति** फसल काटने का मुहूर्त्त है। **ति.** ४ शुक्र को मूल में रिक्तादोष है। **ति.** ५ शनि को पू.षा. में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। दि. ३।११ के बाद उ.षा.में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। **ति.** ६ रवि को उ.षा.में नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण शिल्पविद्या विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। श्रवण में सूर्यवेध है। **ति.** ७ सोम को श्रवण में पूर्वदोष तथा भद्रा है। दि.३।४८ के बाद धनिष्ठा में गर्भाधान पशुओं की खरीद–बिक्री **दक्षिण दिशा की यात्रा** (सप्तमी में) नवान्नभक्षण औषधसेवन **हलप्रवहण** वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। **ति.** ८ मंगल को धनिष्ठा में लालवस्त्रधारण आभूषणनिर्माण **हलप्रवहण** मुहूर्त्त है। दि.३।२५ के बाद शतभिष में ऑपरेशन मुहूर्त्त है। ति. ९ बुध को शतभिष में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति.१० गुरु को पू.भा. में शनियुति तथा ☞ भद्रा है। भद्रा (रा.८।२४) के बाद उ.भा. में गर्भाधान नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण **गृहप्रवेश** (च.शु.) मुहूर्त्त है। **ति.११** शुक्र को उ.भा. में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण नवीन खटिया–चौकी आदि का वाटिकारोपण नावनिर्माण **गृहप्रवेश** (ल.३) **हलप्रवहण** विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। रेवती में केतुवेध है। ति. १२ शनि को रेवती में पूर्वदोष है। दि. १०।३८ के बाद अश्विनी में कृष्णवस्त्रधारण पूर्व को छोड़कर अन्य **दिशा की यात्रा** (त्रयोदशी में) वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। **इसके बाद मासान्तदोष है।**

तिथि / ल.अ.	१ मं घं.	मि.	२ बु घं.	मि.	तिथि / ल.अ.	३ गु घं.	मि.	४ शु घं.	मि.	५ श घं.	मि.	६ र घं.	मि.	७ चं घं.	मि.	८ मं घं.	मि.	९ बु घं.	मि.	१० गु घं.	मि.	११ शु घं.	मि.	१२ श घं.	मि.	१३ र घं.	मि.	१४ चं घं.	मि.	३० मं घं.	मि.
मेष	५	२९	५	२६	वृष	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५२	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७
वृष	७	२५	७	२२	मिथुन	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	६	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१
मिथुन	९	३९	९	३६	कर्क	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२४	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९
कर्क	११	५७	११	५४	सिंह	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३८	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३
सिंह	२	११	२	८	कन्या	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५१	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६
कन्या	४	२४	४	२१	तुला	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	७	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
तुला	६	४०	६	३७	वृश्चिक	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२४	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९
वृश्चिक	८	५७	८	५४	धनु	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३०	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५
धनु	११	३	११	०	मकर	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१७	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२
मकर	१२	५०	१२	४७	कुम्भ	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४८	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३
कुम्भ	२	२१	२	१८	मीन	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१६	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१
मीन	३	४९	३	४६	मेष	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५३	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८

८ पं० ज्येष्ठकृष्ण ३० मंगल

अहर्गण ३७८७

अयनांश २४।११।४४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१	३	१	२	११	११	१०	४
११	९	२२	१०	३	२५	१	२९	२९
३३	४५	३६	३९	५४	५९	४५	२४	२४
४३	७	१४	५०	१८	११	१५	५८	५८
५७	८५६	३२	११५	१३	५४	४	३	३
२१	५३	१६	०	१७	१६	२३	११	११

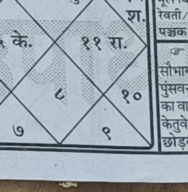

उपवास आदि षड्विध कर्म– उपवास– एकभक्त–नक्त–आयाचित–व्रत एवं दान भेद से षड्विध कर्म होते हैं। उपवास का काल अहोरात्र पर्यन्त होता है, जिसमें अहोरात्र पर्यन्त भोजन नहीं करने का आत्म संकल्प होता है। अहोरात्र में द्वितीय भोजनाभाव एवं विशिष्ट मध्याह्न भोजनकृत् व्रत एकभक्त, तथा समस्त अहोरात्र में एक बार प्रदोष काल में विशिष्ट भोजन कृत् व्रत नक्तव्रत कहलाता है। अयाचित (बिना माँगे ही प्राप्त) भोजन को एक बार करना आयाचित व्रत होता है, ये भोजन भी मध्याह्नादि अहोरात्र के विशेष अंशों में ही किया जाता है। तथा दान एवं व्रत भी प्रातः आदि काल भेद एवं उस काल की व्यापिनी तिथि से सम्बन्धित होते हैं। **अमावस्या में वट सावित्री विधि**– ज्येष्ठमास की अमावस्या को वट वृक्ष के नीचे त्रिरात्रोपोषित (तीन रात तक उपवास की हुई) स्त्री द्वारा सोने अथवा मीट्टी की सावित्री प्रतिमा बनाकर सप्तधान्य से संयुक्त प्रतिमा का षोडशोपचार पूजन कर ब्राह्मण को दान करना चाहिए। पूजन मन्त्र– सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती ब्राह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मण प्रतिगृह्यताम् ।।इति।।आठवें वर्ष से आरम्भ कर अस्सी वर्ष पर्यन्त एकादशी व्रत का अधिकार– सक्षम रहने पर अस्सीवें वर्ष के बाद भी एकादशी व्रत करने का अधिकार है। सौभाग्यवती स्त्रियों को पति अथवा पिता आदि पुज्यजनों की अनुमति के विना व्रत उपवास आदि नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से उन्हें कोई सुफल नहीं मिलता, प्रत्युत पति की आयु क्षय तथा स्वयं नरक की प्राप्ति होती है। निर्जल व्रत करने में असमर्थ जनों को एक बार भोजन, चावल रहित हविष्यान्न, फल, तिल, दूध, जल अथवा पञ्चगव्य का पान कर या निर्जल व्रत रहना चाहिए। उपर्युक्त विधि उत्तरोत्तर प्रशस्त है। शक्ति के तारतम्य से केवल एक पक्ष की एकादशी व्रत के आचरण भी एकादशी त्याग नहीं होता। प्रमादवश एकादशी व्रत छूट जाने पर द्वादशी को भी व्रत किया जाता है। द्वादशी को भी छूट जाने पर यवमध्य चान्द्रायण व्रत द्वारा प्रायश्चित करें नस्तिकता वश एकादशी नहीं करने वाले पिपीलिका मध्य चान्द्रायण व्रत द्वारा प्रायश्चित करें। अशक्त पति, पिता आदि के उद्देश्य से उनके पुत्र, भगिनी, एवं भाइयों द्वारा एकादशी व्रत करने पर १०० यज्ञों का पुण्य प्राप्त होता है।

ज्येष्ठमास के कृत्य

ज्येष्ठमास में आटा की ब्रह्मा की मूर्ति बनाकर विधिपूर्वक पुष्प, धूप, दीप, गंध, वस्त्र, आभूषण से मूर्ति की पूजा करने से करोड़ो वर्ष सूर्यलोक में निवास मिलता है। ज्येष्ठमास में जलपूर्ण कुम्भ, गौ, पंखा, चन्दन आदि का दान, भगवान वामनदेव की प्रसन्नता के लिये करना चाहिए।

मूल विचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. २ बुध को दि. १०।३५ से। ति. ४ शुक्र को दि.२।७ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. ११ शुक्र को दि.१२।११ से। ति. १३ रवि को दि.९।१ तक।
पञ्चक विचार- ति. ७ सोम को रा. ३।३७ से। ति. १२ शनि को दि.१०।३८ तक।

☞ति. १५ बुध को गुरु का अस्त पश्चिम में।।

ज्येष्ठशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ७ ज्येष्ठ से २१ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक २८ मई से ११ जून तक सन् २०२५ ई.।।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

दि.मा. घ.	प.																										योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. -	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
३३	३३	१	बु	२/५४	२८/५८	प्रा	६/४	१६/१५	मृगशिरा	५४	२२	रा	३	२	धृति	४०	५१	रा	९	३७	वव	२	२८	वा	११/४७	५७/२६	अमृत	२८	१६	१४	१४	७	मिथुन	२५।५५	५	१७	६	४३	१	१२	३१	४	२१	२४	-	५	८	२३
३३	३५	३	गु	५३	१३	रा	२	३४	आर्द्रा	५२	९	रा	२	९	शूल	३४	३९	रा	७	९	तै	२५	२०	गर	५३	१३	काण	२९	१७	१५	१५	८			५	१७	६	४३	१	१३	२८	२४	२१	३४	-	५	९	२५
३३	३७	४	शु	४९	५४	रा	१	१५	पुनर्वसु	५०	४२	रा	१	३४	गण्ड	२९	९	सा	४	५७	व	२१	३४	भ	४९	५४	लुम्बक	३०	१८	१६	१६	९	कर्क	३६।४	५	१७	६	४३	१	१४	२५	४२	२१	४३	-	५	१०	१७
३३	३९	५	श	४७	३९	रा	१२	२०	पुष्य	५०	२१	रा	१	२४	वृद्धि	२४	२८	दि	३	३	वव	१८	४७	वा	४७	३९	मित्र	३१	१९	१७	१७	१०			५	१६	६	४४	१	१५	२२	५९	२१	५२	-	५	११	२
३३	४०	६	र	४६	३७	रा	११	५५	श्लेषा	५१	१३	रा	१	४५	ध्रुव	२०	४१	दि	१	३२	कौ	१७	८	तै	४६	३७	वज्र	१	२०	१८	१८	११	सिंह	५१।१३	५	१६	६	४४	१	१६	२०	१५	२२	०	-	४	११	३९
३३	४२	७	चं	४६	५१	रा	१२	०	मघा	५३	१९	रा	२	३६	व्याघात	१७	५५	दि	१२	२६	गर	१६	४४	व	४६	५१	ध्वांक्ष	२	२१	१९	१९	१२			५	१६	६	४४	१	१७	१७	३०	२२	८	-	४	१२	११
३३	४३	८	मं	४८	२६	रा	१२	३७	पू.फा.	५६	४४	रा	३	५७	हर्षण	१६	११	दि	११	४३	भ	१७	३९	वव	४८	२६	धूम्र	३	२२	२०	२०	१३			५	१५	६	४५	१	१८	१४	४३	२२	१६	-	४	१२	४१
३३	४५	९	बु	५१	६	रा	१	४१	उ.फा.	६०	०	स	म	स्त	वज्र	१५	२६	दि	११	२५	वा	१९	४६	कौ	५१	६	प्रवर्धमान	४	२३	२१	२१	१४	कन्या	१२।५२	५	१५	६	४५	१	१९	११	५४	२२	२३	-	४	१	९
३३	४६	१०	गु	५४	५५	रा	३	१३	उ.फा.	१	१५	प्रा	५	४५	सिद्धि	१५	३५	दि	११	२९	तै	२३	१	गर	५४	५५	मातङ्ग	५	२४	२२	२२	१५			५	१५	६	४५	१	२०	९	५	२२	३०	-	४	१	३८
३३	४७	११	शु	५९	२९	रा	५	३	हस्त	६	४६	दि	७	५७	व्यतिपात	१६	२९	दि	११	५१	व	२७	१२	भ	५९	२९	अमृत	६	२५	२३	२३	१६	तुला	३९।५२	५	१५	६	४५	१	२१	६	१५	२२	३७	-	४	२	७
३३	४८	१२	श	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	१२	५७	दि	१०	२५	वरीयान	१७	५४	दि	१२	२४	वव	३२	०	वा	६०	०	काण	७	२६	२४	२४	१७			५	१४	६	४६	१	२२	३	२३	२२	४३	-	३	२	३८
३३	४९	१२	र	४	३०	प्रा	७	२	स्वाती	१९	३१	दि	१	२	परिघ	१९	३५	दि	१	४	वा	४	३०	कौ	३७	२	लुम्बक	८	२७	२५	२५	१८			५	१४	६	४६	१	२३	०	३१	२२	४९	-	३	३	१४
३३	५०	१३	चं	९	३४	दि	९	४	विशाखा	२५	५९	दि	३	३८	शिव	२१	११	दि	१	४२	तै	९	३४	गर	४१	५४	मित्र	९	२८	२६	२६	१९	वृश्चिक	९।२२	५	१४	६	४६	१	२३	५७	३७	२२	५४	-	३	३	५४
३३	५१	१४	मं	१४	१३	दि	१०	५५	अनुराधा	३१	५६	सा	६	०	सिद्ध	२२	२५	दि	२	१२	व	१४	१३	भ	४६	११	वज्र	१०	२९	२७	२७	२०			५	१४	६	४६	१	२४	५४	४३	२२	५९	-	३	४	३९
३३	५२	१५	बु	१८	८	दि	१२	२९	ज्येष्ठा	३७	१०	सा	८	६	साध्य	२३	५	दि	२	२८	वव	१८	८	वा	४९	३२	ध्वांक्ष	११	३०	२८	२८	२१	धनु	३७।१०	५	१४	६	४६	१	२५	५१	४७	२३	४	-	३	-	-

मिथुनराशि दि. ३।३९।◡चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। काशी में १० दिनों तक ☉ मु. जिलहिज १२ हिजरी सन् १४४६। रम्भा ३ व्रत। महाराणाप्रतापजयन्ती ३(राजस्थान)। यायीजययोग रा. २।९ से ☎ भ. दि. १।५५ से रा. १।१५ तक। कर्कराशि रा. ७।४३। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। उमावतार ४। उमाचतुर्थी (बंगाल)। ❶ रवियोग रा. १।२४ से। ❶ गुरुअर्जुन देवशहीद दिवस। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।३४ तक। रवियोग रा. १।३४ तक। सिंहराशि रा. १।४५। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत। जमाईषष्ठी (बंगाल)। अरण्यषष्ठी। अरण्यगौरीव्रत। शीतलाषष्ठी (उड़ीसा)। जून ६। ☪ भ. रा. १२।० से। ☪यायीजययोग रा. ११।५५से रा. १।४५ तक। यमघंटयोग रा. १।४५ से। रवियोग रा. १।४५ तक। भ. दि. १२।१९ तक। शुक्लादेवी का पूजन। मृत्युबाणारम्भ रा. १२।१५। स्थायीजययोग रा. १२।३७ तक। रवियोग रा. ३।५७ से। कन्याराशि दि. १०।२४। नवमी में उपवास पूर्वक शुक्लादेवी का पूजन। मृत्युबाणसमाप्ति रा. १।२६। रवियोग समस्त। ❷ दि१०।२५ तक। श्रीगंगादशहरा १०। श्री गंगा अवतरण। श्रीगंगाजन्म (ल. २)। काशी में दशाश्वमेध तीर्थ में स्नान तथा गंगा पूजन करना ☐ भ. दि. ४।८ से रा.शे. ५।३ तक। तुलाराशि रा. ९।१२। निर्जला ११ एकादशी व्रत स्मार्त्तों का। भीमसेनी एकादशी। ◆ वैष्णवों का एकादशी व्रत। कूर्म जयन्ती १२। चम्पक द्वादशी (उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।२५ से। द्विपुष्करयोग ❷ प्रदोष १३ व्रत। दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रतारम्भ (तीन दिनों तक)। गोत्तमेश्वर दर्शन। त्रिविक्रमपूजा। ⊙मृगशिरा नक्षत्र ❖ वृश्चिकराशि दि. ८।५९। दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रत का द्वितीय दिन। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।३८ से। यमघंटयोग दि. ३।३८ तक। ♍ भ. दि. १०।५५ से रा. ११।४२ तक। व्रत की १५ पूर्णिमा। दाक्षिणात्य वटसावित्रीव्रत। रवियोग सा. ६।० तक। धनुराशि रा. ८।६। स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। जलयात्रा १५। संत कबीरजयन्ती १५। मन्वादि १५। विल्वत्रिरात्रव्रत। ❸

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श।।

ति. १ बुध को मृगशिरा में सूर्यभोग्य है।
ति. ६ रवि को रा. १।४५ के बाद मघा में रे. ६ ल. १२ इष्ट५ ग्र.व.वि. १२ (षष्ठस्थ चन्द्र शुभ नहीं है)
ति. ७ सोम को मघा में भद्रा (रा. १२।०) से पूर्व दिन में ल. ४ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १४ वा ल.गोधूलि वा ल.१०इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० (सप्तमस्थ मंगल शुभ नहीं है)
ति. ८ मंगल को रा. ३।५७ के बाद उ.फा. में केतुयुति तथा मृत्युबाण है।
ति. ९ बुध को उ.फा. में पूर्वदोष है।
ति. १० गुरु को प्रा. ५।४५ के बाद व्यतिपात (दि. ११।२९) से पूर्व हस्त में रे. ८ दिन में ल. ४ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १४ वा ल.५ इष्ट५ ग्र.व.वि. १३।। (रा.दा.)
ति. ११ शुक्र को हस्त में व्यतिपातदोष है।
ति. १२ शनि को दि. १०।२५ के बाद स्वाती में रे. ८ दिन में ल. ५ इष्ट५ ग्र.व.वि. १३।। (रा.दा.) वा ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३ (शनि दान) वा ल.गोधूलि वा ल.१०इष्ट ५ग्र.व.वि. १० (सप्तमस्थ मंगल शुभ नहीं है) वा ल.१२ इष्ट५ ग्र.व.वि. १२ (अष्टमस्थ चन्द्र शुभ नहीं है)
ति. १२ रवि को स्वाती में रे. ८ दिन में ल. ५ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३।। (रा.दा.) वा ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३ (अष्टमस्थ शुक्र शुभ नहीं है)

इसके बाद गुरुवार्धक्य आदि दोष होने से विवाह मुहूर्त्त नहीं है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१ बु	३	२३	७	३०	१	१२	३४	५०	२	४	७	३६	११	२६	५३	२७	११	१	४९	३८	१०	२९	२१	४७
३ गु	३	२३	३८	४६	१	१४	२९	५०	२	४	२०	५२	११	२७	४७	४४	११	१	५३	६	१०	२९	१८	३६
४ शु	३	२४	१०	५	१	१६	२४	५१	२	४	३४	९	११	२८	४१	५८	११	१	५६	१९	१०	२९	१५	२५
५ श	३	२४	४१	३६	१	१८	१९	९	२	४	४७	२६	११	२९	३६	१२	११	१	५९	३३	१०	२९	१२	१४
६ र	३	२५	१३	३	१	२०	१२	५५	२	५	०	४३	०	०	३४	९	११	२	२	४७	१०	२९	९	३
७ चं	३	२५	४४	२९	१	२२	६	३	२	५	१४	०	०	१	३८	६	११	२	६	०	१०	२९	५	५३
८ मं	३	२६	१५	५६	१	२३	५८	३५	२	५	२७	१८	०	२	४२	४	११	२	९	१२	१०	२९	२	४२
९ बु	३	२६	४७	२३	१	२५	५१	८	२	५	४०	३५	०	३	४६	२	११	२	१२	२९	१०	२८	५९	३१
१० गु	३	२७	१८	५०	१	२७	४३	४०	२	५	५३	५२	०	४	५०	०	११	२	१५	४३	१०	२८	५६	२०
११ शु	३	२७	५०	१७	१	२९	३६	११	२	६	७	१०	०	५	५३	५७	११	२	१८	५७	१०	२८	५३	९
१२ श	३	२८	२१	४४	२	१	२८	४५	२	६	२०	२८	०	६	५७	५५	११	२	२२	१०	१०	२८	४९	५९
१२ र	३	२८	५३	११	२	३	२१	१९	२	६	३३	४९	०	८	१	५३	११	२	२५	२३	१०	२८	४६	४८
१३ चं	३	२९	२४	३८	२	५	१३	५३	२	६	४७	५	०	९	५	५०	११	२	२८	३६	१०	२८	४३	३७
१४ मं	३	२९	५६	५	२	७	६	२७	२	७	०	२३	०	१०	९	४८	११	२	३१	४९	१०	२८	४०	२६
१५ बु	४	०	२७	३२	२	८	५९	१	२	७	१३	४१	०	११	१३	४६	११	२	३५	२	१०	२८	३७	१५

ग्रहचार- **मंगल-** ति. १३ सोम को मघा तथा सिंहराशि में रा. ९।९।। **बुध-** ति. ७ सोम को मृगशिरा में रा. ९।२।। ति. ११ शुक्र को मिथुनराशि में दि. १०।२७।। ति. १३ सोम को आर्द्रा में रा. ३।१७।। **गुरु-** ति. १२ रवि को आर्द्रा १ चरण में दि. ४।२७।। **शुक्र-** ति. ५ शनि को अश्विनी तथा मेषराशि में दि. ३।८।। **शनि-** पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में ।। **राहु-** पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में तथा केतु उत्तराफाल्गुनी १ चरण में।।

९ पं०ज्येष्ठशुक्ल ८ मंगल

अहर्गण ३७९४

अयनांश २४।११।४५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	४	३	१	२	०	११	१०	४
१८	१४	२६	२३	५	२	२	२९	२९
१४	४४	१५	५८	२७	४२	९	२	२
४३	१३	५६	३५	१८	४	१५	४२	४२
५७	७५६	३१	११२	१३	६३	३	३	३
११	५४	२७	३३	१७	५८	१४	११	११

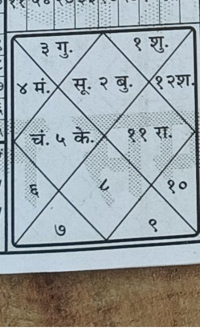

विविधमुहूर्त्त- ति. १ बुध को मृगशिरा में सूर्यभोग्य है। ति. ३ गुरु को आर्द्रा में अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. ३) उपनयन (ल. ३ वा ६) फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ४ शुक्र को पुनर्वसु में रिक्तादोष तथा भद्रा है। ति. ५ शनि को पुष्य में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) मुहूर्त्त है। ति. ६ रवि को श्लेषा में भौमयुति है। ति. ७ सोम को मघा में दँवरी हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त्त है। ति. ८ मंगल को भद्रा (दि. १२।१९) के बाद पू.फा. में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ९ बुध को उ.फा. में केतुयुति है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १० गुरु को प्रा. ५।४५ के बाद व्यतिपात (दि. ११।२९) से पूर्व हस्त में अन्नप्राशन सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण दक्षिण को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण चौलमुण्डन (ल. ३) कर्णवेध (ल. ३) अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. ३) उपनयन (ल. ३) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) हलप्रवहण ईंट का निर्माण विपणि व्यापार वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ११ शुक्र को हस्त में व्यतिपात है। व्यतिपात (दि. ११।५१) के बाद चित्रा में शनिवेध तथा भद्रा है। ति. १२ शनि को दि. १०।२५ के बाद स्वाती में कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। ति. १२ रवि को स्वाती में सूतीस्नान (त्रयोदशी में) नवीनवस्त्रधारण आभूषणनिर्माण नवान्नभक्षण द्वादशी में विद्यारम्भ (ल.३) उपनयन (ल.३) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल.३) वस्तुक्रय वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति.१३ सोम को ☞ ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि.१।२ के बाद विशाखा में वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री

तिथि	१ बु		३ गु		४ शु		५ श		६ र		७ चं		८ मं		९ बु		१० गु		११ शु		१२ श		१२ र		१३ चं		१४ मं		१५ बु	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
वृष	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५६	५	५१	५	४७	५	४४	५	४०	५	३६	५	३३	५	२९
मिथुन	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	१०	८	५	८	१	७	५८	७	५४	७	५०	७	४७	७	४३
कर्क	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२८	१०	२३	१०	१९	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	५	१०	१
सिंह	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४२	१२	३७	१२	३३	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१९	१२	१५
कन्या	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५५	२	५०	२	४६	२	४३	२	३९	२	३५	२	३२	२	२८
तुला	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	११	५	६	५	२	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४४
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृश्चिक	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२८	७	२३	७	१९	७	१६	७	१२	७	८	७	५	७	१
धनु	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३४	९	२९	९	२५	९	२२	९	१८	९	१४	९	११	९	७
मकर	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२१	११	१६	११	१२	११	९	११	५	११	१	१०	५८	१०	५४
कुम्भ	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५२	१२	४७	१२	४३	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२९	१२	२५
मीन	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	२०	२	१५	२	११	२	८	२	४	२	०	१	५७	१	५३
मेष	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५७	३	५२	३	४८	३	४५	३	४१	३	३७	३	३४	३	३०

१०पं०ज्येष्ठशुक्ल १५ बुध

अहर्गण ३८०२

अयनांश २४।११।४६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	७	४	२	२	०	११	१०	४
२५	२२	०	८	७	११	२	२८	२८
५१	२४	४५	३५	१४	१३	३५	३७	३७
४७	१३	४१	४१	८	४६	२	१५	१५
५७	७३५	३४	१०४	१४	६३	३	३	३
४	४९	१०	३०	२३	५७	१३	११	११

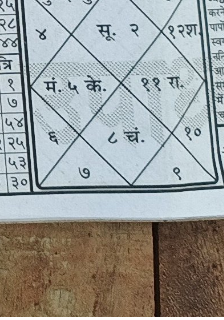

☉दशाश्वमेधस्नान प्रारम्भ। वृद्धिक्रम से गंगास्तोत्र का नित्य पाठ। करवीर१ व्रत। सोपपदा २ वेदारम्भ वर्जित है। यायी-स्थायी दुर्लभ सन्धिकरयोग रा. ३।२ से रा. ४।१५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।२ तक। ☎रा. २।३४ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. २।९ से। रवियोग रा. २।९ से। ☐चाहिये। अन्यत्र पास के जलाश्य या नदी में स्नान करने से गंगा स्नान के समान फल मिलता है। सेतुबन्धरामेश्वर प्रतिष्ठादिन। गंगास्तोत्रपाठ-दशाश्वमेध स्नान समाप्ति। यायीजययोग रा. ३।१३ से। रवियोगसमस्त। ◆आज चीनी-सुवर्ण तथा जलकुम्भदान। दानमन्त्र- "देव-देव हृषीकेश संसारार्णवतारक उदकुम्भप्रदानेन यास्यामिहरिमंदिरम्।" श्रीकाशी विश्वनाथपञ्चाङ्ग प्रवर्तक पं. हृषीकेश उपाध्याय जयन्ती ११। स्थायीजययोग रा.शे. ५।१३ से। रवियोग दि. ७।५७ तक। ❖का सूर्य दि. १।२५। गुरुवार्द्धक्यआरम्भ सा. ६।५५। यायीजययोग प्रा. ७।२ से दि. १।२ तक। ♍रवियोग दि. ३।३८ से। ❸गुरु का अस्त पश्चिम में सा. ६।५५। यमघंटयोग रा. ८।६ से।

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति. ५ शनि को रा. १।२४ से। ति. ७ सोम को रा. २।३६ तक।
ज्येष्ठा/मूल- ति. १४ मंगल को सा. ६।० से।

ज्येष्ठशुक्ल में दशाश्वमेध घाट पर स्नान का फल- ज्येष्ठ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि में दशाश्वमेध घाट (वाराणसी) पर स्नान करने से समस्त पापों से मुक्ति मिल जाती है। दशहरा- ज्येष्ठ शुक्ल दशमी जब हस्त नक्षत्र से युत होती है तो दशाश्वमेध स्नान दशविध पापों को नष्ट करने वाला होता है। इसलिए इसे दशहरा कहा जाता है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, हस्त नक्षत्र एवं मंगलवार दिन को ही गंगा स्वर्ग से धरती पर अवतरित हुई थीं। गंगादशहरा को गंगा पूजन मंत्र- नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै कृष्णायै विष्णुरूपिण्ये नन्दिन्यै नमो नमः। दशहरा में दशयोग- ज्येष्ठमास के शुक्ल पक्ष में दशमी तिथि, बुधवार, हस्तनक्षत्र, व्यतिपातयोग, गर करण, आनन्दयोग, कन्या राशि के चन्द्र तथा वृष राशि के सूर्य का योग हो तो 'दशयोग' होता है इसमें दशाश्वमेध स्नान करने से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इसकी अप्राप्ति में जहाँ उपर्युक्त योगों की बाहुलता हो उसी का ग्रहण करना चाहिए। उपनयन प्रसङ्ग में मनु का वचन- सोलह वर्ष पर्यन्त ब्राह्मण, २२ वर्ष पर्यन्त क्षत्रिय तथा २४ वर्ष पर्यन्त वैश्यों का उपनयन अवश्य ही कर देना चाहिए। इसके बाद ये यथा काल असंस्कृत होने के कारण स्व वर्ण से पतित होकर आर्यों के लिए अग्राह्य हो जाते हैं।

☞ दि. ९।४ तक विशाखा में पशुओं की खरीद-बिक्री वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति. १४ मंगल को अनुराधा में मंगल का का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। भद्रा भी है। चतुर्दशी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ बुध को ज्येष्ठा में शिशुताम्बूलभक्षण पशुओं की खरीद-बिक्री फसल काटने का मुहूर्त्त है।

दि.मा. घ. प.	श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।																								
३३ ५३	१	गु	२०	५५	दि	१	३५	मूल	४१	१५	रा	९	४३	शुभ	२२	५२	दि	२	२२	कौ	२०	५५	तै	५१	४८
३३ ५४	२	शु	२२	४०	दि	२	१७	पू.षा.	४४	१२	रा	१०	५४	शुक्ल	२१	४९	दि	१	५७	गर	२२	४०	व	५२	५१
३३ ५४	३	श	२३	२	दि	२	२६	उ.षा.	४५	५३	रा	११	३४	ब्रह्म	१९	४२	दि	१	६	भ	२३	२	बव	५२	३४
३३ ५५	४	र	२२	६	दि	२	३	श्रवण	४६	१९	रा	११	४५	ऐन्द्र	१६	३६	दि	११	५१	बा	२२	६	कौ	५१	३
३३ ५५	५	चं	१९	५९	दि	१	१३	धनिष्ठा	४५	३५	रा	११	२७	वैधृति	१२	२९	दि	१०	१३	तै	१९	५९	गर	४८	२४
३३ ५६	६	मं	१६	४८	दि	११	५६	शतभिष	४३	५०	रा	१०	४५	विष्कुम्भ	७	३१	दि	८	१३	व	१६	४८	भ	४४	४४
३३ ५६	७	बु	१२	४०	दि	१०	१७	पू.भा.	४१	१५	रा	९	४३	प्रीति	१ ५३	४६ ३५	प्रा	५ ३	५५ २१	बव	१२	४०	बा	४०	११
३३ ५७	८	गु	७	४२	दि	८	१८	उ.भा.	३७	५९	रा	८	२५	सौभाग्य	४८	२२	रा	१२	३४	कौ	७	४२	तै	३४	५६
३३ ५७	९	शु	२ ५४	१० ३	प्रा	६ ३	५ ४२	रेवती	३४	१२	सा	६	५४	शोभन	४१	२	रा	९	३८	गर	२	१०	व	२९ ५६	१२ १३
३३ ५७	११	श	५०	३	रा	१	१४	अश्विनी	३०	६	सा	५	१५	अतिगण्ड	३३	३०	सा	६	३७	बव	२३	८	बा	५०	३
३३ ५७	१२	र	४३	५२	रा	१०	४६	भरणी	२५	५४	दि	३	३५	सुकर्मा	२५	५०	दि	३	३३	कौ	१६	५८	तै	४३	५२
३३ ५७	१३	चं	३७	५१	रा	८	२१	कृत्तिका	२१	५०	दि	१	५७	धृति	१८	१९	दि	१२	३३	गर	१०	५२	व	३७	५१
३३ ५७	१४	मं	३२	१४	सा	६	७	रोहिणी	१८	७	दि	१२	२८	शूल	११	२	दि	९	३८	भ	५	३	श	३२ ५९	१४ ४१
३३ ५७	३०	बु	२७	८	दि	४	४	मृगशिरा	१४	५४	दि	११	११	गण्ड	४ ५३	९ ४२	प्रा	६ ४	५३ २१	नाग	२७	८	किं	५४	५९

योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	चन्द्र प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. ∓	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
धूम्र	१२	१	२९	२९	२२			५	१३	६	४७	१	२६	४८	५१	२३	८	–	२	८	२
प्रवर्धमान	१३	२	३०	३०	२३	मकर	५९।३७	५	१३	६	४७	१	२७	४५	५४	२३	११	–	२	८	५२
राक्षस	१४	३	३१	३१	२४			५	१३	६	४७	१	२८	४२	५५	२३	१५	–	२	९	३७
गद	१५	४	३२	१	२५			५	१३	६	४७	१	२९	३९	५६	२३	१८	–	२	१०	१६
शुभ	१६	५	१	२	२६	कुम्भ	१५।५७	५	१३	६	४७	२	०	३६	५६	२३	२०	–	२	१०	५३
मृत्यु	१७	६	२	३	२७			५	१३	६	४७	२	१	३३	५६	२३	२२	–	१	११	२७
पद्म	१८	७	३	४	२८	मीन	२६।५४	५	१३	६	४७	२	२	३०	५४	२३	२४	–	१	१२	०
छत्र	१९	८	४	५	२९			५	१३	६	४७	२	३	२७	५२	२३	२५	–	१	१२	३४
श्रीवत्स	२०	९	५	६	३०	मेष	३४।१२	५	१३	६	४७	२	४	२४	४८	२३	२६	–	१	१	१०
सौम्य	२१	१०	६	७	३१			५	१३	६	४७	२	५	२१	४५	२३	२६	–	१	१	५१
कालदण्ड	२२	११	७	८	१	वृष	३९।५३	५	१३	६	४७	२	६	१८	४१	२३	२६	–	०	२	३७
सुस्थिर	२३	१२	८	९	२			५	१३	६	४७	२	७	१५	३७	२३	२६	–	०	३	३२
मातङ्ग	२४	१३	९	१०	३	मिथुन	४६।३१	५	१३	६	४७	२	८	१२	३३	२३	२५	+	०	४	३३
अमृत	२५	१४	१०	११	४			५	१३	६	४७	२	९	९	२७	२३	२४	+	०	–	–

आषाढ़कृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २२ ज्येष्ठ से ४ आषाढ़ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक १२ जून से २५ तक सन् २०२५ ई.।।

इस पक्ष में गुरु का अस्त है।

आषाढ़मास के प्रथम पक्ष में सूर्यमण्डल में यदि मेघ न दिखे, न गरजे तो दो माह तक वर्षा का अभाव होता है। गुरुहरगोविन्दसिंह जयन्ती।
भ.रा. २।२१ से। मकरराशि रा.शे. ५।४। ☯रा. ८।२१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१।५७ से।
भ.दि. २।२६ तक। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।३७। यायीजययोग दि. २।२६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ११।३४ से।
⊙सं. मिथुनराशि का सूर्य दि. १।४०। मु.३० समा। फल समता। बाद का ६ घंटा २४ मिनट पुण्यकाल। वस्त्र–अन्न–◆
कुम्भराशि दि. ११।३६। पञ्चक प्रारम्भ दि. ११।३६। सौरआषाढ़ मासारम्भ। यायीजययोग दि.१।१३ तक। रवियोग रा.११।२७ से।
भ. दि. ११।५६ से रा.११।७ तक। त्रिपुष्करयोग रा. १०।४५ से। रवियोग रा. १०।४५ तक।
मीनराशि दि. ३।५९। कालाष्टमी ८ (सायाह्न में)। ◆गोदान। मन्दाकिनी में स्नान। यायीजययोग रा. ११।४५ से। ♍सूर्य सा. ४।२३। यायीजययोग सा. ५।१५ से रा.१।१४ तक।
श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत। आज वासी भोजन शास्त्र विहित है। यायीजययोग दि. ८।१८ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।२५ से।
भ. सा. ४।५४ से रा. ३।४२ तक। मेषराशि सा. ६।५४। पञ्चक समाप्ति सा. ६।५४। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग सा. ६।५४ तक।
योगिनी ११ एकादशी व्रत स्मार्त्तों का।'' *आषाढ़कृष्ण एकादशी का व्रत करने से कुष्ठ रोग नष्ट होता है।*'' श्री देवराहा बाबापुण्यतिथि। ⊙सायन कर्कराशि का
वृषराशि रा. ९।१०। वैष्णवों का एकादशी व्रत। ⊙आर्द्रा नक्षत्र का सूर्य दि. २।१२। स्त्री. पु.–चं.चं. योग मूषकवाहन चंडानाड़ी अधिपति शनि खण्डवृष्टियोग।
भ. रा. ८।२१ से। सोमप्रदोष १३ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए। मासशिवरात्रि १३ व्रत। ''भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशत्युक्तेः।'' यायीजययोग दि.१।५७ से
भ. दि. ७।१४ तक। मिथुनराशि रा. ११।४९। स्थायीजययोग दि. १२।२८ से सा. ६।७ तक। ❶राष्ट्रीयआषाढ़मास दि. ३१। त्रिपुष्करयोग दि. ३।३५ से रा. १०।४६ तक
स्नान–दान–श्राद्ध की ३० अमावस्या। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है। सर्वार्थसिद्धियोग दि.११।११ तक।

आषाढ़मास के कृत्य
आषाढ़मास में जो व्यक्ति एक बार भोजन करता है, वह धन–धान्य एवं पुत्र–पौत्रादि से युक्त होता है। वामनपुराणे–इस मास में उपानह, छाता, नमक एवं आंवला आदि का दान ब्राह्मण को भक्ति पूर्वक करना चा

इस पक्ष में गुरु का अस्त होने से विवाह आदि शुभ मुहूर्त्त नहीं है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	गु	४	१	११	५१	२	१०	२०	११	२	७	२८	३१	०	१२	१७	४३	११	२	३८	१५	१०	२८	३४	५
२	शु	४	१	५३	५२	२	१२	३	१४	२	७	४२	५४	०	१३	२१	४१	११	२	४१	२७	१०	२८	३०	५४
३	श	४	२	२७	५३	२	१३	३६	१६	२	७	५७	१६	०	१४	२५	३९	११	२	४१	३१	१०	२८	२०	५४
४	र	४	३	१	५४	२	१५	२९	१९	२	८	११	३९	०	१५	२९	३६	११	२	४३	३१	१०	२८	२७	४३
५	चं	४	३	३५	५६	२	१७	१२	१८	२	८	२५	४१	०	१६	३३	३४	११	२	४५	३६	१०	२८	२४	३२
६	मं	४	४	९	५७	२	१८	५१	७	२	८	३९	४३	०	१७	३७	३२	११	२	४७	४०	१०	२८	२१	२१
७	बु	४	४	४३	५८	२	२०	२७	५७	२	८	५३	४६	०	१८	४१	३०	११	२	४९	४३	१०	२८	१८	१०
८	गु	४	५	१७	५९	२	२२	४	४८	२	९	७	४८	०	२०	४१	३०	११	२	५१	४९	१०	२८	१४	५९
९	शु	४	५	५२	०	२	२३	४१	३८	२	९	२१	५१	०	२१	४५	२८	११	२	५३	५२	१०	२८	११	४८
११	श	४	६	२६	१	२	२५	१८	२८	२	९	३५	५३	०	२२	४९	२५	११	२	५५	५६	१०	२८	८	३७
१२	र	४	७	०	२	२	२६	४८	३०	२	९	५०	५६	०	२३	५३	२३	११	२	५८	०	१०	२८	५	२६
१३	चं	४	७	३४	३	२	२८	१५	४८	२	१०	६	४	०	२५	५७	२०	११	३	०	७	१०	२८	२	१५
१४	मं	४	८	८	४	२	२९	४३	३	२	१०	२०	६	०	२७	१	१८	११	३	०	७	१०	२७	५९	६
३०	बु	४	८	४२	५	३	१	१०	२४	२	१०	३४	९	०	२८	५	१६	११	३	४	१५	१०	२७	५५	५५
																		११	३	६	१८	१०	२७	५२	४४

ग्रहचार– मंगल–मघा में।। बुध–ति. ६ मंगल को पुनर्वसु में रा. १०।१७।ति. १४ मंगल को कर्कराशि में दि. ९।५१।। गुरु– ति.१२ रवि को आर्द्रा २ चरण में सा.६।२।। शुक्र–ति. १ गुरु को भरणी में रा. शे. ४।३५। ति. ३० बुध को कृत्तिका में दि.३।५१।। शनि–पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में।। राहु–पूर्वाभाद्रपद १ चरण में तथा केतु उत्तराफाल्गुनी ३ चरण में।।

आषाढ़कृष्ण चतुर्दशी में रोहिणी राजयुद्धकारक तथा प्रजा में शोक एवं व्याकुलतादायक होती है।

११ पं० आषाढ़कृष्ण ८ गुरु

अहर्गण ३८१०

अयनांश २४।११।४७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	११	४	२	२	०	११	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	१९	२	२८	२८
२७	४४	१७	४	[illegible]	४५	५३	११	११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२७	५४	४९	४९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६३	२	३	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५८	४	११	११

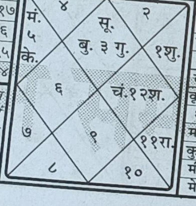

विविधमुहूर्त्त– ति. १ गुरु को मूल में पुंसवनसीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण वाटिकारोपण दँवरी धान्यारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण बीजोप्ति फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति.२ शुक्र को पू.षा.में शिल्पविद्या नावनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ३ शनि को उ.षा.में सूर्यवेध तथा भद्रा है। ति. ४ रवि को श्रवण में चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति.५ सोम को वैधृति (दि.१०।१३) के बाद धनिष्ठा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन (पंचमी में) पशुओं की खरीद–बिक्री मकर के चन्द्रमा में दक्षिण दिशा की यात्रा तथा कुम्भ के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा (पंचमी में) नवान्नभक्षण औषधसेवन हलप्रवहण (पंचमी में) वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ मंगल को भद्रा (दि.११।५६) से पूर्व शतभिष में आभूषण निर्माण वस्तुक्रय ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. ७ बुध को पू. भा. में शनियुति है। ति. ८ गुरु को उ.भा. में दि. ८।१८ तक शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण नावनिर्माण हलप्रवहण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ शुक्र को रेवती में केतुवेध तथा भद्रा है। ति.११ शनि को अश्विनी में कृष्णवस्त्रधारण पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. १२ रवि को भरणी में भौमवेध है। कृत्तिका में आभूषण निर्माण पशुओं की खरीद–बिक्री वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

तिथि / ल.अ.	१ गु घं.	मि.	२ शु घं.	मि.	३ श घं.	मि.	४ र घं.	मि.	तिथि / ल.अ.	५ चं घं.	मि.	६ मं घं.	मि.	७ बु घं.	मि.	८ गु घं.	मि.	९ शु घं.	मि.	११ श घं.	मि.	१२ र घं.	मि.	१३ चं घं.	मि.	१४ मं घं.	मि.	३० बु घं.	मि.
वृष	५	२५	५	२२	५	१८	५	१४	मिथुन	७	२४	७	२०	७	१५	७	१०	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५
मिथुन	७	३९	७	३६	७	३२	७	२८	कर्क	९	४२	९	३८	९	३३	९	२८	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३
कर्क	९	५७	९	५४	९	५०	९	४६	सिंह	११	५६	११	५२	११	४७	११	४२	११	३६	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७
सिंह	१२	११	१२	८	१२	४	१२	०	कन्या	२	९	२	५	२	०	१	५५	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०
कन्या	२	२४	२	२१	२	१७	२	१३	तुला	४	२५	४	२१	४	१६	४	११	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	४९	३	४५
तुला	४	४०	४	३७	४	३३	४	२९	वृश्चिक	६	४२	६	३८	६	३३	६	२८	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृश्चिक	६	५७	६	५४	६	५०	६	४६	धनु	८	४८	८	४४	८	३९	८	३४	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९
धनु	९	३	९	०	८	५६	८	५२	मकर	१०	३५	१०	३१	१०	२६	१०	२१	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६
मकर	१०	५०	१०	४७	१०	४३	१०	३९	कुम्भ	१२	६	१२	२	११	५७	११	५२	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७
कुम्भ	१२	२१	१२	१८	१२	१४	१२	१०	मीन	१	३४	१	३०	१	२५	१	२०	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५
मीन	१	४९	१	४६	१	४२	१	३८	मेष	३	११	३	७	३	२	२	५७	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२
मेष	३	२६	३	२३	३	१९	३	१५	वृष	५	७	५	३	४	५८	४	५३	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८

१२ पं० आषाढ़कृष्ण ३० बुध

अहर्गण ३८१६

अयनांश २४।११।४८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	२	४	३	२	०	११	१०	४
९	३	८	१	१०	२६	३	२७	२७
९	१०	४२	१०	३५	९	६	५२	५२
२७	०	५	२५	२७	५७	१८	४४	४४
५६	८४५	३४	८७	१४	६७	२	३	३
५५	११	१	६	२३	५२	४	११	११

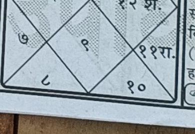

मूलविचार– ज्येष्ठा/मूल– ति.१ गुरु को रा.९।४३ तक।
रेवती/अश्विनी– ति. ८ गुरु को रा. ८।२५ से। ति. ११ शनि को सा. ५।१५ तक।
पञ्चक विचार– ति. ५ सोम को दि.११।३६ से। ति. ९ शुक्र को सा. ६।५४ तक।

वृष्टि विचार– आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पू.भा., रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पू.षा., उ.षा., श्रवण, एवं धनिष्ठा ये चौदह नक्षत्र चन्द्र तथा शेष नक्षत्र सूर्य के होते हैं। यदि सूर्य चन्द्रमा के नक्षत्र में तथा चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्र में स्थित होता है तो वृष्टि होती है। परन्तु यदि सूर्य एवं चन्द्र दोनों चन्द्र नक्षत्र में हों तो स्वल्प वृष्टि तथा सूर्य नक्षत्र में स्थित हों तो वृष्टि नहीं होती है। सद्यो वृष्टि विचार– वर्षा सम्बन्धित प्रश्न के ज्ञान में वर्षा ऋतु का चन्द्रमा यदि जलचर राशि का होकर लग्न या केन्द्र में स्थित हो अथवा शुक्लपक्ष का होकर शुभग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र ही अत्यधिक वृष्टि होती है। परन्तु यदि पापग्रहों से दृष्ट हो तो वर्षा काल में शीघ्र ही अल्प वृष्टि होती है। चन्द्रमा की तरह यदि शुक्र भी उपर कहे हुए परिस्थितियों में स्थित हो तो उपर्युक्त समस्त फल होते हैं। वर्षा कालीन चन्द्रमा यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट होकर शुक्र से सात राशियों में स्थित हो अथवा शनि से सात राशियों में स्थित होकर त्रिकोणस्थ हो तो भी वृष्टि कारक होता है। यदि वृष्टि योगकारक होकर शुक्र बुध के समीप स्थित हों तथा इन दोनों के मध्य सूर्य बैठा हो तो निश्चय ही वृष्टि विनाश हो जाता है, परन्तु सूर्य के आगे और पीछे दोनों तरफ आसन्नवर्ती शुभग्रह हों तो वृष्टिविनाश नहीं होता अपितु वृष्टि होती है। ग्रहों के उदयास्त, अयनराशि परिवर्तन, संयोगकाल तथा पक्ष के अन्त में प्रायः वृष्टि होती है। उदय एवं अस्त होते हुए शुक्र तथा बुध वृष्टि कारक होते है। मंगल के उदयास्त काल में चलवृष्टि तथा शनि के उदयास्त काल में स्वल्प, मध्य एवं अति (त्रिधा) वृष्टि स्थान भेद से होती है। बृहस्पति उदयास्त काल में अतिवृष्टि तथा अनन्तर अल्पवृष्टि कराता है। वृष्टि विचार– चैत्रमास के अश्विन्यादि दश नक्षत्रों में मेघ का गर्भधारण होता है तो आर्द्रा आदि दश नक्षत्रों (सूर्यनक्षत्रों) में क्रमशः वृष्टि होती है। व्यापार मुहूर्त्त– मृगशीर्ष, पुष्य, अश्विनी, अनुराधा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती नक्षत्रों तथा चन्द्र, गुरू एवं शुक्रवारों में व्यापार आरम्भ करना शुभ होता है।

आषाढ़कृष्णाष्टमी को चन्द्रोदय के समय आकाश में अधिक मेघ हों तो अधिक वर्षा होती है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.		घ.	प.		घं.	मि.		घ.	प.		घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.		+	रे.अं. + मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
३३	५६	१	गु	२२	५०	दि	२	२१	आर्द्रा	१२	२५	दि	१०	११	ध्रुव	५२	१३	रा	२	६	वव	२२	५०	वा	५१	७	काण	२६	१५	११	१२	५	कर्क	५६।११	५	१३	६	४७	२	१०	६	२२	२३	२२	+	१	८	४
३३	५६	२	शु	१९	२४	दि	१२	५९	पुनर्वसु	१०	४६	दि	९	३१	व्याघात	४७	२५	रा	१२	११	कौ	१९	२४	तै	४८	१३	लुम्बक	२७	१६	१२	१३	६			५	१३	६	४७	२	११	३	१६	२३	२०	+	१	८	५३
३३	५५	३	श	१७	२	दि	१२	२	पुष्य	१०	९	दि	९	१७	हर्षण	४३	२९	रा	१०	३७	गर	१७	२	व	४६	२७	मित्र	२८	१७	१३	१४	७			५	१३	६	४७	२	१२	०	९	२३	१९	+	१	९	३४
३३	५५	४	र	१५	५२	दि	११	३४	श्लेषा	१०	४४	दि	९	३१	वज्र	४०	३१	रा	९	२५	भ	१५	५२	वव	४५	५६	वज्र	२९	१८	१४	१५	८	सिंह	१०।४४	५	१३	६	४७	२	१२	५७	२	२३	१५	+	१	१०	९
३३	५४	५	चं	१५	५९	दि	११	३७	मघा	१२	३२	दि	१०	१४	सिद्धि	३८	३५	रा	८	३९	वा	१५	५९	कौ	४६	४३	ध्वांक्ष	३०	१९	१५	१६	९			५	१३	६	४७	२	१३	५३	५४	२३	१२	+	१	१०	४०
३३	५३	६	मं	१७	२६	दि	१२	११	पू.फा.	१५	३९	दि	११	२९	व्यतिपात	३७	४१	रा	८	१७	तै	१७	२६	गर	४८	४२	धूम्र	१	२०	१६	१७	१०	कन्या	३१।४२	५	१३	६	४७	२	१४	५०	४६	२३	८	+	२	११	१०
३३	५३	७	बु	१९	५८	दि	१	१२	उ.फा.	१९	५१	दि	१	९	वरीयान	३७	३९	रा	८	१७	व	१९	५८	भ	५१	५०	प्रवर्धमान	२	२१	१७	१८	११			५	१३	६	४७	२	१५	४७	३७	२३	४	+	२	११	३८
३३	५२	८	गु	२३	४१	दि	२	४२	हस्त	२५	९	दि	३	१८	परिघ	३८	२६	रा	८	३६	वव	२३	४१	वा	५५	५५	राक्षस	३	२२	१८	१९	१२	तुला	५८।११	५	१४	६	४६	२	१६	४४	२८	२२	५९	+	२	१२	७
३३	५१	९	शु	२८	८	सा	४	२९	चित्रा	३१	१२	सा	५	४३	शिव	३९	४३	रा	९	७	कौ	२८	८	तै	६०	०	मुसल	४	२३	१९	२०	१३			५	१४	६	४६	२	१७	४१	१९	२२	५४	+	२	१२	३८
३३	५०	१०	श	३३	६	सा	६	२८	स्वाती	३७	४१	रा	८	१८	सिद्ध	४१	२१	रा	९	४६	तै	०	३७	गर	३३	६	सिद्धि	५	२४	२०	२१	१४			५	१४	६	४६	२	१८	३८	१०	२२	४९	+	२	१	१२
३३	४९	११	र	३८	८	रा	८	२९	विशाखा	४४	१२	रा	१०	५५	साध्य	४३	०	रा	१०	२६	व	५	३७	भ	३८	८	उत्पात	६	२५	२१	२२	१५	वृश्चिक	२७।३४	५	१४	६	४६	२	१९	३५	१	२२	४३	+	३	१	५०
३३	४८	१२	चं	४२	४६	रा	१०	२०	अनुराधा	५०	१८	रा	१	२१	शुभ	४४	१८	रा	१०	५७	वव	१०	२७	वा	४२	४६	मानस	७	२६	२२	२३	१६			५	१४	६	४६	२	२०	३१	५२	२२	३७	+	३	२	३४
३३	४६	१३	मं	४६	४३	रा	११	५६	ज्येष्ठा	५५	४१	रा	३	३१	शुक्ल	४५	४	रा	११	१७	कौ	१४	४५	तै	४६	४३	मुद्गर	८	२७	२३	२४	१७	धनु	५५।४१	५	१५	६	४५	२	२१	२८	४४	२२	३१	+	३	३	२४
३३	४५	१४	बु	४९	३५	रा	१	५	मूल	६०	०	स	म	स्त	ब्रह्म	४५	२	रा	११	१६	गर	१८	९	व	४९	३५	ध्वज	९	२८	२४	२५	१८			५	१५	६	४५	२	२२	२५	३६	२२	२४	+	३	४	१९
३३	४४	१५	गु	५१	२४	रा	१	४९	मूल	०	२	प्रा	५	१६	ऐन्द्र	४४	९	रा	१०	५५	भ	२०	३०	वव	५१	२४	धूम्र	१०	२९	२५	२६	१९			५	१५	६	४५	२	२३	२२	२८	२२	१७	+	३	–	–

आषाढ़शुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ५ आषाढ़ से १९ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक २६ जून से १० जुलाई तक सन् २०२५ ई.।।

☞ति. १२ सोम को गुरु का उदय पूर्व में।।

कर्कराशि रा. ३।४१।◡चन्द्रदर्शन। मु.४५ वृहत्ती। फल सस्ती। उत्तरशृंग सस्तीकारक। गुप्तनवरात्रारम्भ। मनोरथ द्वितीया २(चन्द्रोदय व्यापिनी)। यायीजययोग दि.१०।११ से◐
मु. मुहर्रम १ हिजरी सन् १४४७। रथयात्रा २। श्रीराम (बलराम) रथोत्सव। रथ पर सवार राम-बलराम को देखने वाले पर विपत्ति नहीं आती-जगन्नाथपुरी में विशेष।❶
भ.रा. ११।४८ से। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। *तृतीयायोग प्राशस्यात्*/यायीजययोग दि.९।१७ से दि. १२।२ तक। रवियोग दि.९।१७ से। ❶ सर्वार्थसिद्धियोग दि.९।३१ तक।
भ.दि. ११।३४ तक। सिंहराशि दि. ९।३१। यमघंटयोग दि. ९।३१ से। रवियोग दि. ९।३१ तक। ◐ दि. २।२१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।११ से।
श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत(पूर्व विद्धा)। रवियोग दि.१०।१४ से। *गुरुदयमासफल-आषाढ़मास में गुरु का उदय हो तो राजाओं में रण तथा अन्न की महर्घता होती है।*
कन्याराशि सा. ५।५४। कुमारषष्ठी ६। कर्दमषष्ठी ६(बंगाल)। जुलाई ७। त्रिपुष्करयोग दि. १२।११ से। रवियोग दि. ११।२९ तक।
भ. दि. १।१२ से रा. १।५७ तक। विवस्वतसूर्यपूजा ७। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १।९ से। ☐रा. १०।२० से रा. १।२१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।२१ तक।
तुलाराशि रा. ४।३०। परशुरामाष्टमी(उड़ीसा)। खर्चीपूजा (त्रिपुरा)। यायीजययोग दि. २।४२ से दि. ३।१८ तक। रवियोग दि. ३।१८ से।
रवियोग समस्त। ☯⊙पुनर्वसु नक्षत्र का सूर्य (दि. ३।४७)। स्त्री. नपुं.-सू.चं. योग अश्ववाहन चंडानाड़ी अधिपतिशनि खण्डवृष्टियोग। त्रिपुष्करयोग रा.८।२९ से ☎
सोपपदा १० *वेदारम्भ वर्जित है*/गिरिजापूजा १०। मन्वादि १०। यायीजययोग सा. ६।२८ से रा. ८।१८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।१८ तक। रवियोग रा. ८।१८ तक।
भ.प्रा. ७।२९ से रा. ८।२९ तक। वृश्चिकराशि दि. ४।१६। श्रीविष्णुशयनी ११ एकादशी व्रत सबका। रात्रि में श्रीविष्णुशयनोत्सव। रविनारायण एकादशी (उड़ीसा)। ☯
संगवकाल को छोड़कर प्रातः ७।५६ तक एकादशी व्रत की पारणा। चातुर्मास्य व्रतारम्भ। शाकत्याग व्रतारम्भ। श्रीवामन पूजन। गुरु का उदय पूर्व में दि.३।३। यायीजययोग ☐
धनुराशि रा. ३।३१। भौमप्रदोष १३ व्रत। *ऋण मुक्ति के लिए*/स्थायीजययोग रा. ११।५६ से रा. ३।३१ तक। रवियोग रा. ३।३१ से। ☎रा.१०।५५ तक। रवियोग दि.३।४७ से।
भ. रा. १।५ से। चौमासी चौदस (जैन)। यमघंटयोग समस्त। रवियोग समस्त। *गुरुदयराशिफल-मिथुनराशि में यदि गुरु का उदय हो तो गणिकाओं को पीड़ा होती है।*
भ.दि. १।२७ तक। स्नान-दान-व्रत की १५ पूर्णिमा। गुरुपूर्णिमा १५। गुरु तथा व्यास की पूजा १५। कर्णघंटा तथा कनखल में स्नान। श्रीशिवशयनोत्सव। श्रीशिवपवित्रारोपण। ◆

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	गु	४	९	१६	६	३	२	३७	३१	२	१०	४९	५०	०	२७	१७	४९	११	३	८	२२	१०	२७	४९	३३
२	शु	४	९	५०	७	३	३	५६	१९	२	११	४	१३	०	२८	२५	४२	११	३	१०	२६	१०	२७	४६	२२
३	श	४	१०	२४	८	३	५	१३	३९	२	११	१८	३६	०	२९	३३	३४	११	३	१२	२९	१०	२७	४३	१२
४	र	४	१०	५८	९	३	६	३०	५९	२	११	३२	५९	१	०	४१	२६	११	३	१४	१०	१०	२७	४०	१
५	चं	४	११	३२	१०	३	७	४८	२०	२	११	४७	२१	१	१	४९	१९	११	३	१४	४२	१०	२७	३६	५०
६	मं	४	१२	६	४१	३	९	५	२५	२	१२	१	४४	१	२	५७	११	११	३	१५	१५	१०	२७	३३	३९
७	बु	४	१२	४२	४	३	१०	६	५७	२	१२	१६	७	१	४	५	४	११	३	१५	४७	१०	२७	३०	२८
८	गु	४	१३	१७	२७	३	११	८	४	२	१२	३०	३०	१	५	१२	५५	११	३	१६	१९	१०	२७	२७	१८
९	शु	४	१३	५२	५०	३	१२	९	१०	२	१२	४४	५३	१	६	२०	४८	११	३	१६	५१	१०	२७	२४	७
१०	श	४	१४	२८	१४	३	१३	१०	१३	२	१२	५९	१६	१	७	२८	४०	११	३	१७	२४	१०	२७	२०	५६
११	र	४	१५	३	३७	३	१४	८	५२	२	१३	१३	३८	१	८	३६	३३	११	३	१७	५६	१०	२७	१७	४५
१२	चं	४	१५	३९	०	३	१४	४७	३६	२	१३	२८	१	१	९	४४	२५	११	३	१८	२८	१०	२७	१४	३४
१३	मं	४	१६	१४	२३	३	१५	२६	२०	२	१३	४२	२४	१	१०	५१	३१	११	३	१९	०	१०	२७	११	२४
१४	बु	४	१६	४९	४७	३	१६	५	४	२	१३	५६	४६	१	११	५८	२६	११	३	१९	३२	१०	२७	८	१३
१५	गु	४	१७	२५	१०	३	१६	४३	४३	२	१४	११	७	१	१३	५	२२	११	३	२०	३	१०	२७	५	२

ग्रहचार- मंगल-ति. ८ गुरु को पूर्वाफाल्गुनी में प्रा.६।५८।। बुध- ति.१ गुरु को पुष्य में सा.६।९। ति.१४ बुध को श्लेषा में रा.२।५७।। गुरु- ति.११ रवि को आर्द्रा ३ चरण में दि.३।५२।। शुक्र-ति.३ शनि को वृषराशि में दि.२।३४। ति. १२ सोम को रोहिणी में दि.१०।४८।। शनि-ति. १४ बुध को उत्तराभाद्रपद १ चरण में रा.२।५६।। राहु-पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में तथा केतु उत्तराफाल्गुनी १ चरण में।।

१३पं०आषाढ़शुक्ल ८गुरु

अहर्गण ३८२४

अयनांश २४।११।४९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	४	३	२	१	११	१०	४
१६	१८	१३	११	१२	५	३	२७	२७
४४	११	१७	८	३०	१२	१६	२७	२७
२८	४७	२७	४	३०	५५	१९	१८	१८
५६	७३५	३५	६१	१४	६७	०	३	३
५१	४	२३	६	२३	५३	३२	११	११

विविधमुहूर्त्त-ति. १ गुरु को आर्द्रा में सूर्ययुति है। पुनर्वसु में सूर्यभोग्य है। ति. २ शुक्र को पुनर्वसु में पूर्वदोष है। दि. ९।३१ के बाद पुष्य में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषध सेवन नावनिर्माण हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ शनि को पुष्य में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। दि. ९।१७ से दि. १२।२ तक श्लेषा में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ४ रवि को श्लेषा में रिक्तादोष तथा भद्रा है। मघा में भौमयुति है। ति. ५ सोम को मघा में पूर्वदोष है। पू.फा. में भौमभोग्य तथा व्यतिपात है। ति. ६ मंगल को पू.फा. में व्यतिपात है। ति. ७ बुध को उ.फा. में केतुयुति है। हस्त में भद्रादोष है। ति. ८ गुरु को हस्त में दि.२।४२ तक शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण हलप्रवहण विपणि व्यापार वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ९ शुक्र को चित्रा में राहुवेध तथा रिक्तादोष है। सा.५।४३ के बाद स्वाती में गर्भाधान नवीनवस्त्रधारण औषधसेवन नावनिर्माण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति.१० शनि को स्वाती में कृष्णवस्त्रधारण बीजोप्ति मुहूर्त्त है। ति. ११रवि को विशाखा में भद्रा (दि.७।२९) से पूर्व नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है।☞

तिथि	१ गु		२ शु		३ श		४ र		५ चं		६ मं		७ बु		८ गु		९ शु		१० श		११ र		१२ चं		१३ मं		१४ बु		१५ गु	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
मिथुन	६	४१	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४
कर्क	८	५९	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२
सिंह	११	१३	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६
कन्या	१	२६	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९
तुला	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५
वृश्चिक	५	५९	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
धनु	८	५	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८
मकर	९	५२	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५
कुम्भ	११	२३	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६
मीन	१२	५१	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४
मेष	२	२८	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१
वृष	४	२४	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७

१४ पं० आषाढ़शुक्ल १५गुरु

अहर्गण ३८३१

अयनांश २४।११।५०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	८	४	३	२	१	११	१०	४
२३	१३	१७	१६	१४	१३	३	२७	२७
२२	१९	२५	४३	११	५	२०	५	५
२८	३३	१०	४३	७	२२	३	२	२
५६	७४५	३५	३१	१४	६६	०	३	३
५३	५५	२३	२१	२२	५५	३१	११	११

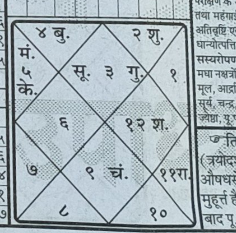

◆**कोकिला १५ पूर्णिमा।** कोकिला रुपि शिव का प्रतिदिन पूजन। नक्त (रात्रि) भोजन का आरम्भ। सायंकाल ह्रासवृद्धि तथा परीक्षण के लिए सभी प्रकार के अन्न का अधिवासन। प्रातः अन्न तोलन। सायं वायुपरीक्षण। **मन्वादि** १५। आवश्यक होने पर **गुरुबालत्व की समाप्ति** दि. ३।३। रवियोग प्रा. ५।१६ तक।

मूलविचार- श्लेषा/मघा-ति. ३ शनि को दि. ९।१७ से। ति. ५ सोम को दि. १०।१४ तक। ज्येष्ठा/ मूल- ति. १२ सोम को रा. १।२१ से। ति. १५ गुरु को प्रा. ५।१६ तक।

आषाढ़ मास द्वारा शुभाशुभ निर्णय- आषाढ़ शुक्लपक्ष की द्वितीया तथा नवमी को यदि चन्द्र, गुरु या शुक्रवार हो तो सुवृष्टि तथा वस्तुएं सस्ती होती हैं। इसी प्रकार आषाढ़ पूर्णिमा को यदि पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, मूल हो तो दुर्भिक्ष, तथा उत्तराषाढ़ा हो तो पीड़ा एवं कष्ट होता है।**आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (रथयात्रा)-** आषाढ़ शुक्ल द्वितीया युक्त पुष्यनक्षत्र में सुभद्रा सहित बलराम को सुसज्जित रथ पर स्थापित कर यात्रा उत्सव करना चाहिए। अगर आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को पुष्य नक्षत्र की प्राप्ति न हो तो भी द्वितीया को यात्रा उत्सव करना चाहिए।**आषाढ़ पूर्णिमा में धान्यों का तोलन-** आषाढ़ पूर्णिमा को सन्ध्याकाल में सभी धान्यों को स्व-स्व वर्ण मान से तौलकर रात्रि पर्यन्त अभिमन्त्रित कर रखना चाहिए तथा प्रातःकाल दैवज्ञों द्वारा पुनः उसको तोलना चाहिए। अगर उक्त धान्यों में वृद्धि हुई हो तो वृद्धि, जितना रखा गया उतना ही हो तो समता तथा कम होने से हानि होती है।**आषाढ़ पूर्णिमा को वायु परीक्षण-**आषाढ़ पूर्णिमा को दिन-रात या प्रदोष काल में कभी भी वायु परीक्षण करना चाहिए, परीक्षण के समय यदि पूर्व से वायु चले तो सुवृष्टि तथा धान्य की उत्पत्ति अच्छी, आग्नेयकोंण से चले तो अल्पवृष्टि, अग्निभय तथा महंगाई, दक्षिण वायु चले तो स्वल्प वृष्टि, प्रजापीड़ा, तथा महंगाई, नैऋत्य की वायु से दुर्भिक्ष एवं अनावृष्टि, पश्चिम से अतिवृष्टि एवं मध्यम धान्योत्पत्ति, वायव्य से वायु चले तो प्रचण्ड वायु चलन तथा धान्य एवं वृष्टि मध्यम, उत्तर से चले तो बहु धान्योत्पत्ति एवं सुखीजन तथा ईशानकोण से चले तो धन-धान्य प्राप्ति तथा प्रजा सुखी रहती है। **पुनर्वसु एवं पुष्य के सूर्य में सस्यरोपण मुहूर्त्त विचार-** हस्त, उ.फा., उ.षा.,उ.भा., मूल, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, विशाखा, अनुराधा, रेवती एवं मघा नक्षत्रों, रिक्ता रहित तिथियों तथा शनि एवं मंगल को छोड़कर अन्य दिनों में सस्य रोपण शुभ होता है। **कर लेने का मुहूर्त्त-** मूल, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, पू.फा., पू.षा.,पू.भा., भरणी, मघा तथा कृत्तिका को छोड़कर अन्य नक्षत्रों ,शीर्षोदय लग्नों तथा सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में राजा को प्रजा से कर ग्रहण करना चाहिए। **शिकार करने का मुहूर्त्त-** आश्लेषा, भरणी, ज्येष्ठा, पू.फा., आर्द्रा, स्वाती, मूल तथा विशाखा नक्षत्रों तथा शनि, रवि एवं मंगलवारों में राजा को शिकार करने जाना चाहिए।

☞ति. १२ सोम को अनुराधा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान (त्रयोदशी में) पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (त्रयोदशी में) दँवरी नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १३ मंगल को ज्येष्ठा में शस्त्रनिर्माण ऑपरेशन मुहूर्त्त है। ति.१४ बुध को मूल में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ गुरु को भद्रा (दि.१।२७) के बाद पू.षा. में सूर्य का वेध समाप्त है,किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। वैधृति भी है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण उत्तरगोल ग्रीष्मऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.		रे.अं. +	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
३३	४२	१	शु	५१	५१	रा	२	०	पू.षा.	३	१६	प्रा	६	३४	वैधृति	४२	१३	रा	१०	९	वा	२१	३८	कौ	५१	५१	प्रवर्धमान	११	१	२६	२७	२०	मकर	१८।४५	५	१६	६	४४	२	२४	१९	२१	२२	९	+	३	७	३४
३३	४१	२	श	५०	५९	रा	१	४०	उ.षा.	५	१३	दि	७	२१	विष्कुम्भ	३९	१६	रा	८	५८	तै	२१	२५	गर	५०	५९	राक्षस	१२	२	२७	२८	२१			५	१६	६	४४	२	२५	१६	१४	२२	१	+	३	८	१६
३३	३९	३	र	४८	५५	रा	१२	५०	श्रवण	५	५४	दि	७	३८	प्रीति	३५	२०	रा	७	२४	व	१९	५७	भ	४८	५५	गद	१३	३	२८	२९	२२	कुम्भ	३५।३९	५	१६	६	४४	२	२६	१३	९	२१	५३	+	४	८	५४
३३	३८	४	चं	४५	४७	रा	११	३५	धनिष्ठा	५	२४	दि	७	२६	आयुष्मान	३०	३०	सा	५	२८	वव	१७	२१	वा	४५	४७	शुभ	१४	४	२९	३०	२३			५	१६	६	४४	२	२७	१०	३	२१	४४	+	४	९	२९
३३	३६	५	मं	४१	४३	रा	९	५८	शतभिष	३	४९	प्रा	६	४९	सौभाग्य	२४	५३	दि	३	१४	कौ	१३	४५	तै	४१	४३	मृत्यु	१५	५	३०	३१	२४	मीन	४७।३	५	१७	६	४३	२	२८	६	५९	२१	३५	+	४	१०	२
३३	३४	६	बु	३६	४७	रा	८	०	पू.भा.	१/५६	२८/५१	प्रा	५/४	५२/३७	शोभन	१८	३४	दि	१२	४३	गर	९	१५	व	३६	४७	पद्म	१६	६	३१	३२	२५			५	१७	६	४३	२	२९	३	५५	२१	२५	+	४	१०	३५
३३	३२	७	गु	३१	१५	सा	५	४७	रेवती	५४	३७	रा	३	८	अतिगण्ड	११	४०	दि	९	५७	भ	४	१	वव	३१/५८	१५/१७	मित्र	१७	७	१	१	२६	मेष	५४।३७	५	१७	६	४३	३	०	०	५१	२१	१५	+	४	११	१०
३३	३१	८	शु	२५	१९	दि	३	२६	अश्विनी	५०	३४	रा	१	३२	सुकर्मा	४/५२	२३/२९	प्रा	७/४	३/३	कौ	२५	१९	तै	५२	१४	वज्र	१८	८	२	२	२७			५	१८	६	४२	३	०	५७	४८	२१	५	+	४	११	४८
३३	२९	९	श	१९	९	दि	१२	५८	भरणी	४६	२२	रा	११	५१	शूल	४९	११	रा	१२	५८	गर	१९	९	व	४६	३	ध्वांक्ष	१९	९	३	३	२८			५	१८	६	४२	३	१	५४	४५	२०	५४	+	४	१२	३१
३३	२७	१०	र	१२	५६	दि	१०	२९	कृत्तिका	४२	१५	रा	१०	१३	गण्ड	४१	३८	रा	९	५८	भ	१२	५६	वव	३९	५४	धूम्र	२०	१०	४	४	२९	वृष	०।२०	५	१९	६	४१	३	२	५१	४४	२०	४३	+	४	१	२१
३३	२५	११	चं	६	५१	दि	८	३	रोहिणी	३८	२५	रा	८	४१	वृद्धि	३४	१६	रा	७	१	वा	६	५१	कौ	३४	२	प्रवर्धमान	२१	११	५	५	३०			५	१९	६	४१	३	३	४८	४३	२०	३२	+	४	२	१८
३३	२२	१२	मं	१/५४	१२/५०	प्रा	५/३	४९/४५	मृगशिरा	३५	२	रा	७	२१	ध्रुव	२७	१७	सा	४	१५	तै	१	१२	गर	२८/५६	३७/२	राक्षस	२२	१२	६	६	३१	मिथुन	६।४४	५	२०	६	४०	३	४	४५	४३	२०	२१	+	४	३	२२
३३	२०	१४	बु	५१	४१	रा	२	०	आर्द्रा	३२	२०	सा	६	१६	व्याघात	२०	५१	दि	१	४०	भ	२३	५२	श	५१	४१	मुसल	२३	१३	७	७	१			५	२०	६	४०	३	५	४२	४३	२०	९	+	४	४	२८
३३	१८	३०	गु	४८	९	रा	१२	३६	पुनर्वसु	३०	२९	सा	५	३२	हर्षण	१५	५	दि	११	२२	च	१९	५५	नाग	४८	९	सिद्धि	२४	१४	८	८	२	कर्क	१५।५७	५	२०	६	४०	३	६	३९	४६	१९	५६	+	४	-	-

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.वा.		मंगल				मार्गीबुध				गुरु				शुक्र				मार्गीशनि				राहु			
१	शु	४	१८	०	३३	३	१७	१६	४	२	१४	२५	२९	१	१४	१२	१७	११	३	२०	३४	१०	२७	१	५१
२	श	४	१८	३५	५६	३	१७	२६	४	२	१४	३९	५१	१	१५	१९	१२	११	३	२१	५	१०	२६	५८	४०
३	र	४	१९	११	२०	३	१७	३५	५	२	१४	५४	१२	१	१६	२६	८	११	३	२१	३६	१०	२६	५५	३०
४	चं	४	१९	४६	४३	३	१७	४५	५	२	१५	८	३४	१	१७	३३	३	व	३	२२	७	१०	२६	५२	१९
५	मं	४	२०	२२	४	व	१७	५४	५७	२	१५	२१	५७	१	१८	३९	५८	११	३	२१	५४	१०	२६	४९	८
६	बु	४	२०	५७	२३	३	१७	५१	२२	२	१५	३५	१४	१	१९	४६	५३	११	३	२०	५३	१०	२६	४५	५७
७	गु	४	२१	३२	४२	३	१७	२८	५०	२	१५	४८	३२	१	२०	५३	४८	११	३	१९	५३	१०	२६	४२	४६
८	शु	४	२२	८	१	३	१७	६	१८	२	१६	१	४९	१	२२	०	४०	११	३	१८	५३	१०	२६	३९	३६
९	श	४	२२	४३	२०	३	१६	४३	४६	२	१६	१५	६	१	२३	९	५९	११	३	१७	५२	१०	२६	३६	२५
१०	र	४	२३	१८	४४	३	१६	२१	३	२	१६	२८	२३	१	२४	१९	२९	११	३	१६	५२	१०	२६	३३	१४
११	चं	४	२३	५४	४२	३	१५	४१	४१	२	१६	४१	४०	१	२५	२८	५९	११	३	१५	५२	१०	२६	३०	३
१२	मं	४	२४	३०	४१	३	१४	५०	१८	२	१६	५४	५७	१	२६	३८	१५	११	३	१४	५१	१०	२६	२६	५२
१४	बु	४	२५	६	३९	३	१३	५८	५५	२	१७	८	१४	१	२७	४७	२८	११	३	१३	५१	१०	२६	२३	४१
३०	गु	४	२५	४२	३८	३	१३	७	३३	२	१७	२१	३१	१	२८	५६	४०	११	३	१२	५१	१०	२६	२०	३१

ग्रहचार- मंगल-पूर्वाफाल्गुनी में।। मार्गीबुध- ति. ५ मंगल को वक्री रा.१०।५३। ति. ९ शनि को पुष्य में दि.९।१४।। गुरु- ति. १० रवि को आर्द्रा ४ चरण में रा.२।१८।। शुक्र- ति. ९ शनि को मृगशिरा में दि. ८।४६। ति. ३० गुरु को मिथुनराशि में रा.३।१८।। मार्गीशनि- ति. ४ सोम को वक्री रा.१०।१०। ति. ६ बुध को पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में रा.२।२९ ।। राहु- ति. ७ गुरु को पूर्वाभाद्रपद २ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी ४ चरण में रा.२।९।।

१५ पं.श्रावणकृष्ण ८ शुक्र

अहर्गण ३८३९

अयनांश २४।११।५२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	०	४	३	२	१	११	१०	४
०	२२	१७	१६	१७	२२	३	२६	२६
५७	१६	८	६	१	०	१८	३९	३९
४८	५३	१	१८	४९	४०	५३	३६	३६
५७	८५७	३५	२२	१३	६९	२१	३	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	११
			व.			व.		

मं. ५ के.		३ गु.
६	सू. ४ बु.	२ शु.
७		चं. १
८	१०	१२ श.
९		११ रा.

विविधमुहूर्त- ति. १ शुक्र को पू.षा. में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। वैधृति भी है। ति. २ शनि को उ.षा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। दि. ७।२१ के बाद श्रवण में दक्षिण दिशा की यात्रा वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति.३ रवि को श्रवण में पुंसवनसीमन्त नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग आभूषण निर्माण पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. ७।३८ के बाद भद्रा (दि. १।१५) से पूर्व धनिष्ठा में नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ४ सोम को धनिष्ठा में रिक्तादोष है। ति. ५ मंगल को शतभिष में आभूषण निर्माण शिल्पविद्या वस्तुक्रय ऑपरेशन मुहूर्त्त है। पू.भा. में राहुयुति है। ति. ६ बुध को प्रा. ५।५२ के बाद उ.भा. में शनियुति तथा भद्रा है। ति. ७ गुरु को रेवती में केतुवेध तथा भद्रा है। ति. ८ शुक्र को अश्विनी में केतुवेध तथा रिक्तादोष है। ति. ९ शनि को भरणी में नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता (दि.१२।५८) बाद वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति.१० रवि को भद्रा (दि. १०।२९) बाद कृत्तिका में आभूषण निर्माण पशुओं की खरीद-बिक्री शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति.११ सोम को रोहिणी में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण दँवरी धान्यारोपण शिल्पविद्या जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ६) विपणि मुहूर्त्त है। रा. ८।४१ के बाद मृगशिरा में गर्भाधान औषधसेवन ☞

तिथि ल.अ.	१ शु घं.	मि.	२ श घं.	मि.	३ र घं.	मि.	४ चं घं.	मि.	५ मं घं.	मि.	६ बु घं.	मि.
मिथुन	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०
कर्क	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८
सिंह	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२
कन्या	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५
तुला	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१
वृश्चिक	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
धनु	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४
मकर	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१
कुम्भ	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२
मीन	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०
मेष	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७
वृष	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३

तिथि ल.अ.	७ गु घं.	मि.	८ शु घं.	मि.	९ श घं.	मि.	१० र घं.	मि.	११ चं घं.	मि.	१२ मं घं.	मि.	१४ बु घं.	मि.	३० गु घं.	मि.
कर्क	७	३३	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६
सिंह	९	४७	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०
कन्या	१२	०	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३
तुला	२	१६	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९
वृश्चिक	४	३३	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६
धनु	६	३९	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मकर	८	२६	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९
कुम्भ	९	५७	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०
मीन	११	२५	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८
मेष	१	२	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५
वृष	२	५८	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१
मिथुन	५	१२	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५

श्रावणकृष्णपक्ष ।।

मकरराशि दि. १२।४६। श्रावण मास में चातुर्मास्य व्रती को साग खाना वर्जित है। मासपर्यन्त श्री काशीविश्वनाथ को नित्य विल्वपत्रार्पण। नैमित्तिक पार्थिवार्चनारम्भ। ❖

अशून्यशयन २ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।१६। श्री लक्ष्मी सहित विष्णु का पलंग पर रखकर पूजन करने से अक्षय-धन तथा दाम्पत्य सुख की प्राप्ति। प्रार्थनामन्त्रः-पत्नी ☯

भ. दि. १।१५ से रा. १२।५० तक। कुम्भराशि रा. ७।३२। पञ्चक प्रारम्भ रा. ७।३२। यायीजययोग दि. ७।३८ से रा. १२।५० तक। ❷ सायंकाल भोजन करना चाहिए।

संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।२९। श्रावण सोमवार व्रत। प्रदोष व्रत की भाँति। नैमित्तिक पार्थिवार्चन। श्रावणमास में सोमवार का व्रत विधिपूर्वक करके ❷

मीनराशि रा. १२।६। भौमव्रत। दुर्गायात्रा-गौरीपूजा तथा हनुमानजी का दर्शन। ❖मैथिलनववर्षारम्भ।

भ. रा. ८।० से। ⊙सं.कर्कराशि का सूर्य रा.शे. ४।५५। मु. ३० समा। फल समता। पूर्व का ६ घंटा २४ मिनट या १२ घन्टा पुण्यकाल। घी-धेनुदान। मन्दाकिनी स्नान। □

भ. प्रा. ६।५३ तक। मेषराशि रा. ३।८। कालाष्टमी ८ व्रत (सायाह्न में)। श्रीशीतलासप्तमी (उड़ीसा)। मनसापूजा प्रारम्भ। पञ्चक समाप्ति रा. ३।८। सौरश्रावणमासारम्भ। ●

मन्वादि ८। स्थायीजययोग दि. ३।२६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।३२ तक। ◐सुखकारक होती है। मन्वादि ३०। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग सा. ५।३२ से।

भ.रा. ११।४३ से। यायीजययोग दि. १२।५८ तक। ○तथा हनुमानजी का दर्शन। स्थायीजययोग प्रा. ५।४९ तक। यमघंटयोग रा. ७।२१ से। द्विपुष्करयोग प्रा. ५।४९ तक।

भ.दि. १०।२९ तक। वृषराशि प्रा. ५।२७। ⊙पुष्य नक्षत्र का सूर्य सा. ५।१३। स्त्री.पु.-चं.चं.योग चातक वाहन चंडा नाड़ी अधिपति शनि सामान्यवृष्टियोग। यायीजययोग रा. १०।१३ से।

कामदा ११ एकादशी व्रत सबका। श्रावण सोमवार व्रत। प्रदोष व्रत की भाँति। यायीजययोग दि. ८।३ तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग रा. ८।४१ से।

भ. रा. ३।४५ से। मिथुनराशि दि. ८।२। प्रातः ५।४९ तक *एकादशी व्रत की पारणा*। भौमप्रदोष १३ व्रत। *ऋण मुक्ति के लिए* / भौमव्रत। दुर्गायात्रा- गौरीपूजा ○

भ. दि. २।५३ तक। मासशिवरात्रि १४ व्रत। ⊙सायन सिंहराशि का सूर्य दि. ७।३६। राष्ट्रीयश्रावणमास दि. ३१। ● यायीजययोग सा. ५।४७ तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त।

कर्कराशि दि. ११।४३। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। हरियाली ३० (पश्चिम में प्रसिद्ध)। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए ◐

१६ पं० श्रावणकृष्ण ३०गुरु

अहर्गण ३८४५

अयनांश २४।११।५३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	२	४	३	२	१	११	१०	४
६	२६	२५	१३	१७	२८	३	२६	२६
३९	२०	४२	७	२१	५६	१२	२०	२०
४६	४०	३८	३३	३१	४०	५१	३१	३१
५७	८२५	३५	५१	१३	६९	१	३	३
३	२७	५८	२३	१७	१३	२	११	११
			व.			व.		

मं. ५ के.		चं.३ गु.
६	सू. ४ बु.	२ शु.
७		१
८	१०	१२श.
९		११ रा.

☯ मर्तृवियोगं च भर्ता-भार्या समुद्भवम्। नाप्नुवंति यथा दुःखं दाम्पत्यानि तथा कुरुः। सर्वार्थसिद्धियोग दि.७।२१ से। त्रिपुष्करयोग दि.७।२१ तक। □ दैत्यों का दिन तथा देवताओं की रात्रि। दक्षिणायन प्रारम्भ। अयन संक्रान्ति के बाद तीन दिनों तक शुभ कार्य वर्जित है। वर्षविश्वा १२। वर्षाऋतु प्रारम्भ। रवियोग प्रा. ५।५२ से रा.शे. ४।३७ तक।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. ६ बुध को रा.शे. ४।३७ से। ति.८ शुक्र को रा. १।३२ तक।
पञ्चक विचार- ति. ३ रवि को रा. ७।३२ से। ति. ७ गुरु को रा. ३।८ तक।

समस्त प्रदोषों का निर्णय- माधव के अनुसार शुक्ल पक्ष की पूर्वा तथा कृष्णपक्ष की पर त्रयोदशी प्रदोष में ग्राह्य होती है। (शुक्ला त्रयोदशी पूर्वा, परा कृष्णा त्रयोदशी)। गौड़ग्रन्थ, हेमाद्रि, तथा वत्स के अनुसार प्रदोष समय-सूर्यास्त के बाद में दो घटी प्रदोष काल होता है। अथवा मतानतर से सूर्यास्त के बाद तीन मुहूर्त्त प्रदोष काल होता है, अतः प्रदोषकाल व्यापिनी त्रयोदशी तिथि का ही प्रदोष व्रत में ग्रहण होता है। परन्तु दो दिन यदि त्रयोदशी का प्रदोष काल से सम्बन्ध हो रहा हो तो स्पर्श मात्र से भी द्वितीय दिन का ही व्रत ग्राह्य होता है। यदि कृष्ण पक्ष में पर विद्ध त्रयोदशी न प्राप्त हो रही हो तो, यहाँ भी पूर्व विद्ध ही ग्राह्य हो जाती है। वशिष्ठ के अनुसार- एकादशी, षष्ठी, तृतीया, एवं त्रयोदशी दूसरे दिन नहीं होने पर पूर्वविद्ध भी हो तो करनी चाहिए। शनिवार के दिन प्रदोषव्रत सभी देह धारियों के लिये अत्यंत दुर्लभ है-इसमें भी शुक्ल पक्ष की अपेक्षा कृष्ण पक्षीय शनि प्रदोष विशेष पुण्यदायक कहा गया है। अतः इसे अवश्य करना चाहिए। श्रावण मास में सोमवार व्रत तथा कृत्य- श्रावण मास में विधि पूर्वक सोमवार व्रत करना चाहिए, सक्षम रहने पर सम्पूर्ण उपवास पूर्वक तथा अक्षम रहने पर रात्रि में भोजन कर सकते हैं। सप्तनाड़ी द्वारा साधारण वृष्टि विमर्श- सूर्य, चन्द्रमा एवं मंगल यदि एकनाड़ी में स्थित हों तो अत्यधिक वृष्टि के कारण पृथ्वी जल से परिपूर्ण होती है। बुध एवं शुक्र यदि एक नाड़ी में स्थित होकर गुरु से युक्त हों तो सुवृष्टि होती है। परन्तु यदि चन्द्र एवं सूर्य का योग हो रहा हो तो अत्यधिक वृष्टि होती है। कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन का आरम्भ- सूर्य की कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन का आरम्भ होता है। इसमें जलाशय, देव, बागीचा आदि की प्रतिष्ठा, उपनयन, अन्याधान, विवाह, मुण्डन, राज्याभिषेक, नवगृहप्रवेश आदि नहीं करना चाहिए। शिववास एवं फल- तिथिं द्विगुणीकृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः। सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत् ॥ एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरीसन्निधौ। तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये। पञ्चमे भोजने चैव क्रीडायां च रसात्मके। श्मशाने सप्तशेषे च शिववासः उदीरितः। कैलाशे लभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः। वृषभेऽभीष्टसिद्धिः स्यात् सभायां सन्तापकारिणी॥ भोजने च भवेत् पीडा क्रीडायां कष्टमेव चाश्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचारयेत् ॥ द्विगुणित तिथि में ५ जोड़कर सात का भाग दें, एकादि शेष रहने पर क्रमशः कैलाश, गौरीसंग, वृषभारूढ़, सभा, भोजन, क्रीड़ा एवं श्मशान में शिव की उपस्थिति रहती है। जिससे क्रमशः सुख, सुख सम्पत्ति, अभिष्टसिद्धि, सन्ताप, पीड़ा, कष्ट तथा मरण होता है। विशेष- नित्य के शिवपूजन, श्रावणमास, तथा अधिक मास में शिव वास का विचार नहीं होता है।

श्रावणमास के कृत्य

जो मनुष्य श्रावण मास में मासपर्यन्त एक समय भोजन करने और भगवान का अभिषेक करने से वंश तथा जाति की वृद्धि होती है।
(महाभारत)

श्रावण मास में दूध, घी, धेनू का दान करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं ऐसा विद्वानों ने कहा है। श्रावण मास में एक बार भोजन करना तथा विष्णु और शिव का अभिषेक कराना चाहिये।
(वामन पुराण)

☞ जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.३) वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १२ मंगल को मृगशिरा में त्रयोदशी में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान वृष के चन्द्रमा में पूर्व-दक्षिण तथा मिथुन के चन्द्रमा में पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

दि.मा.	घ.प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.		रे.अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
३३	१६	१	शु	४५	४३	रा	११	३८	पुष्य	२९	३७	सा	५	१२	वज्र	१०	४	दि	९	२३	किं	१६	५६	वव	४५	४३	उत्पात	२५	१५	९	९	३			५	२१	६	३९	३	७	३६	४९	१९	४४	+	४	-	-
३३	१४	२	श	४४	२८	रा	११	८	श्लेषा	२९	५३	सा	५	१८	सिद्धि	५	५३	दि	७	४२	वा	१५	६	कौ	४४	२८	मानस	२६	१६	१०	१०	४	सिंह	२९।५३	५	२१	६	३९	३	८	३३	५३	१९	३१	+	४	८	५
३३	११	३	र	४४	३०	रा	११	१०	मघा	३१	२४	सा	५	५६	व्यतिपात	२	४३	प्रा	६	२७	तै	१४	२९	गर	४४	३०	मुद्गर	२७	१७	११	११	५			५	२२	६	३८	३	९	३०	५९	१९	१७	+	४	८	३८
३३	८	४	चं	४५	५२	रा	११	४३	पू.फा.	३४	१२	रा	७	३	वरीयान	०/५८	३२/५३	प्रा	५/५	३५/८	व	१५	११	भ	४५	५२	ध्वज	२८	१८	१२	१२	६	कन्या	५०।११	५	२२	६	३८	३	१०	२८	५	१९	४	+	४	९	९
३३	६	५	मं	४८	१९	रा	१२	४३	उ.फा.	३८	८	रा	८	३८	शिव	५९	८	रा	५	२	वव	१७	६	वा	४८	१९	धाता	२९	१९	१३	१३	७			५	२३	६	३७	३	११	२५	११	१८	५०	+	४	९	३८
३३	४	६	बु	५१	५८	रा	२	१०	हस्त	४३	१३	रा	१०	४०	सिद्ध	५९	४४	रा	५	१७	कौ	२०	९	तै	५१	५८	आनन्द	३०	२०	१४	१४	८			५	२३	६	३७	३	१२	२२	१९	१८	३६	+	४	१०	६
३३	१	७	गु	५६	२३	रा	३	५७	चित्रा	४९	६	रा	१	२	साध्य	६०	०	स	म	स्त	गर	२४	११	व	५६	२३	चर	३१	२१	१५	१५	९	तुला	१६।१०	५	२४	६	३६	३	१३	१९	२८	१८	२१	+	४	१०	३७
३२	५८	८	शु	६०	०	स	म	स्त	स्वाती	५५	२९	रा	३	३६	साध्य	०	५५	प्रा	५	४६	भ	२८	५२	वव	६०	०	गद	१	२२	१६	१६	१०			५	२४	६	३६	३	१४	१६	३९	१८	६	+	४	११	९
३२	५६	८	श	१	२१	प्रा	५	५७	विशाखा	६०	०	स	म	स्त	शुभ	२	२७	प्रा	६	२४	वव	१	२१	वा	३३	५३	शुभ	२	२३	१७	१७	११	वृश्चिक	४५।२४	५	२५	६	३५	३	१५	१३	५०	१७	५१	+	४	११	४६
३२	५३	९	र	६	२४	दि	७	५९	विशाखा	२	२	प्रा	६	१४	शुक्ल	४	६	दि	७	३	कौ	६	२४	तै	३८	४५	उत्पात	३	२४	१८	१८	१२			५	२५	६	३५	३	१६	११	३	१७	३६	+	४	१२	२७
३२	५०	१०	चं	११	६	दि	९	५२	अनुराधा	८	१४	दि	८	४४	ब्रह्म	५	२७	दि	७	३७	गर	११	६	व	४३	७	मानस	४	२५	१९	१९	१३			५	२६	६	३४	३	१७	८	१५	१७	२०	+	४	१	१५
३२	४८	११	मं	१५	७	दि	११	२९	ज्येष्ठा	१३	४८	दि	१०	५७	ऐन्द्र	६	१८	दि	७	५७	भ	१५	७	वव	४६	३६	मुद्गर	५	२६	२०	२०	१४	धनु	१३।४८	५	२६	६	३४	३	१८	५	२९	१७	४	+	४	२	७
३२	४५	१२	बु	१८	५	दि	१२	४१	मूल	१८	२४	दि	१२	४९	वैधृति	६	२६	दि	८	१	वा	१८	५	कौ	४९	३	ध्वज	६	२७	२१	२१	१५			५	२७	६	३३	३	१९	२	४५	१६	४८	+	४	३	६
३२	४२	१३	गु	२०	१	दि	१	२८	पू.षा.	२१	५४	दि	२	१४	विष्कुम्भ	५	३९	दि	७	४४	तै	२०	१	गर	५०	१८	धाता	७	२८	२२	२२	१६	मकर	३७।२७	५	२८	६	३२	३	२०	०	३	१६	३१	+	४	४	७
३२	३९	१४	शु	२०	३४	दि	१	४२	उ.षा.	२४	७	दि	३	७	प्रीति	३	५३	दि	७	१	व	२०	३४	भ	५०	११	आनन्द	८	२९	२३	२३	१७			५	२८	६	३२	३	२०	५७	२१	१६	१४	+	४	५	१०
३२	३६	१५	श	१९	४७	दि	१	२४	श्रवण	२५	३	दि	३	३०	आयुष्मान	१/५६	७/१२	प्रा	५/४	५६/२५	वव	१९	४७	वा	४८	५०	सुस्थिर	९	३०	२४	२४	१८	कुम्भ	५४।५६	५	२९	६	३१	३	२१	५४	४१	१५	५७	+	४	-	-

श्रावणशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ३ श्रावण से १८ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक २५ जुलाई से ९ अगस्त तक सन् २०२५ ई.।।

श्रीविष्णुशिवात्मक अभिषेक आरम्भ।
सिंहराशि सा. ५।१८। ◡चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। धर्मसम्राट् स्वामीकरपात्री जयन्ती २। ◆सा.५।५६ तक। रवियोग सा.५।५६ से।
मु. सफर २ हिजरी सन् १४४७। मधुश्रवा ३ (मिथिला तथा गुजरात में प्रसिद्ध)। स्वर्णगौरी ३ व्रत। सुकृतव्रत। ठकुराइन जयन्ती (पश्चिम में प्रसिद्ध)। यमघंटयोग ◆
भ. दि. ११।२६ से रा. ११।४३ तक। कन्याराशि रा. १।२६। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। श्रावण सोमवार व्रत। प्रदोष व्रत की भाँति। यायीजययोग रा. ११।४३ से। ❶
श्रीनागपञ्चमी ५। दीवार पर बनाये हुए नागों का यथा शक्ति पूजन। तक्षकपूजा ५। काशी में नागकूप यात्रा। गाँव-गाँव में विविध व्यायाम प्रदर्शन। जागृतगौरी पञ्चमी (उड़ीसा)। ◉ भौमव्रत। दुर्गायात्रा- गौरीपूजा तथा हनुमानजी का दर्शन। रवियोग रा. ८।३८ से।
कल्कि अवतार ६। लुण्ठनषष्ठी (बंगाल)। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १०।४० तक। रवियोग रा. १०।४० तक। ◉
भ. रा. ३।५७ से। तुलाराशि दि. ११।५२। श्रीगोस्वामी तुलसीदास जयन्ती ७। यायीजययोग रा. १।२ से रा. ३।५७ तक। ❶ रवियोग रा. ७।३ तक।
भ. सा. ४।५७ तक। लोकमान्यतिलक स्मृति दिवस। अगस्त ८। स्थायीजययोग रा. ३।३६ से। रवियोग रा. ३।३६ से।
वृश्चिकराशि रा. ११।३५। रवियोग समस्त। ❖वालों के लिए उपाकर्म (श्रावणी)। झूलनयात्रासमापन। अमरनाथयात्रा। पञ्चक प्रारम्भ रा. ३।२७। यायीजययोग ❷ दि. ३।३० से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।३० तक।
⊙श्लेषा नक्षत्र का सूर्य सा. ५।३४। स्त्री.नपुं.-सू.चं. योग नाग वाहन चंडानाड़ी अधिपति शनि सामान्यवृष्टियोग। यायीजययोग ❷
भ. रा. १०।४१ से। श्रावण सोमवार व्रत। प्रदोष व्रत की भाँति। झूलनयात्रा आरम्भ (प्रदोष में)। यायीजययोग प्रा. ६।१४ से दि. ७।५९ तक। रवियोग समस्त।
भ. दि. ११।२९ तक। धनुराशि दि. १०।५७। पुत्रदा ११ एकादशी व्रत सबका। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।४४ तक। रवियोग समस्त।
प्रदोष १३ व्रत। श्रीविष्णुपवित्रारोपण (उड़ीसा)। दामोदर द्वादशी। शाक दान-दहिं त्याग व्रतारम्भ। नात्रत्यागस्तक्रादीनाम्। भौमव्रत। दुर्गायात्रा- गौरीपूजा तथा हनुमानजी का दर्शन। रवियोग दि. १०।५७ तक।
मकरराशि रा. ८।२७। आखेटक त्रयोदशी (उड़ीसा)। यमघंटयोग दि. १२।४९ तक।
भ. दि. १।४२ से रा. १।३२ तक। व्रत की १५ पूर्णिमा। हयग्रीव उत्पत्ति (सायं)। काशी में भदैनी स्थित मन्दिर में दर्शन तथा पूजन। श्रीशिव अधिवासन तथा पवित्रारोपण (उड़ीसा)-रात्रिव्यापिनी चतुर्दशी में। रवियोग दि. २।१४ से।
कुम्भराशि रा. ३।२७। स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। संस्कृत दिवस। रक्षाबन्धन (राखी)। ऋग्वेदि (शुद्ध श्रवण में)-यजुर्वेद-आपस्तम्ब-माध्यन्दिनी-तैत्तिरीयशाखा ❖। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।७ से। रवियोग दि. ३।७ तक।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				वक्रीबुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	शु	४	२६	१८	३६	३	१२	२६	१०	२	१७	३४	४८	२	०	५	५३	११	३	११	४९	१०	२६	१७	२०
२	श	४	२६	५४	३५	३	११	२४	४७	२	१७	४८	५	२	१	१५	५	११	३	१०	४७	१०	२६	१४	९
३	र	४	२७	३०	३४	३	१०	३३	२४	२	१८	१	२२	२	२	२४	१८	११	३	९	४६	१०	२६	१०	५८
४	चं	४	२८	७	३३	३	९	४२	१	२	१८	१४	३८	२	३	३३	३०	११	३	८	४४	१०	२६	७	४७
५	मं	४	२८	४४	३९	३	८	५०	३९	२	१८	२७	५५	२	४	४२	४२	११	३	७	४३	१०	२६	४	३७
६	बु	४	२९	२१	४४	३	७	५९	३४	२	१८	४१	११	२	५	५१	५४	११	३	६	४१	१०	२६	१	२६
७	गु	४	२९	५८	५०	३	७	३४	४४	२	१८	५४	२५	२	७	१	७	११	३	४	३३	१०	२५	५८	१५
८	शु	५	०	३५	५५	३	७	१२	१२	२	१९	७	२०	२	८	१०	१९	११	३	२	०	१०	२५	५५	४
८	श	५	१	१३	०	३	६	४९	४०	२	१९	२०	१५	२	९	१९	३१	११	२	५९	२७	१०	२५	५१	५३
९	र	५	१	५०	६	३	६	२७	११	२	१९	३३	१०	२	१०	२८	४४	११	२	५६	५४	१०	२५	४८	४३
१०	चं	५	२	२७	११	मा	६	७	३९	२	१९	४६	५	२	११	३७	५६	११	२	५४	२१	१०	२५	४५	३२
११	मं	५	३	४	१६	३	६	१७	४०	२	१९	५९	०	२	१२	४७	८	११	२	५१	४८	१०	२५	४२	२१
१२	बु	५	३	४१	२२	३	६	२७	४०	२	२०	११	५६	२	१३	५६	२१	११	२	४९	१५	१०	२५	३९	१०
१३	गु	५	४	१८	२७	३	६	३७	४१	२	२०	२४	५१	२	१५	५	३३	११	२	४६	४२	१०	२५	३५	५९
१४	शु	५	४	५५	३२	३	६	४७	४६	२	२०	३७	४६	२	१६	१४	४५	११	२	४४	९	१०	२५	३२	४९
१५	श	५	५	३२	३८	३	७	४	५५	२	२०	५०	४१	२	१७	२३	५७	११	२	४१	३६	१०	२५	२९	३८

ग्रहचार-मंगल-ति.१ शुक्र को उत्तराफाल्गुनी में रा.७।३७। ति.७ गुरु को कन्याराशि में प्रा.६।९।। वक्रीबुध-ति.१० सोम को मार्गी रा.९।१८।। गुरु-ति.११ मंगल को पुनर्वसु १ चरण में दि.७।१७।। शुक्र-ति.६ बुध को आर्द्रा में रा.१०।४।। वक्रीशनि-पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में।। राहु-पूर्वाभाद्रपद २ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी ४ चरण में।।

श्रावणीपूर्णिमा को श्रवण हो तो अधिक अन्न से प्रजा प्रसन्न होती है।

१७ पं० श्रावणशुक्ल ८ शुक्र

अहर्गण ३८५३

अयनांश २४।११।५४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	५	३	२	२	११	१०	४
१४	८	०	७	१९	८	३	२५	२५
१६	५१	३५	१२	७	१०	२	५५	५५
३९	२०	५५	१२	२०	१९	०	४	४
५७	७२३	३७	२२	१२	६९	२	३	३
११	४	५	३२	५५	१२	३३	११	११
			व.			व.		

५ के. | गु. ३ शु. | ६मं. | सू. ४ बु. | २ | चं. ७ | १ | ८ | १० | १२श. | ९ | ११रा.

विविधमुहूर्त्त-ति. १ शुक्र को पुष्य में सूर्ययुति है। ति. २ शनि को श्लेषा में सूर्यभोग्य है। ति. ३ रवि को व्यतिपात (प्रा. ६।२७) के बाद मघा में शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ४ सोम को पू.फा. में केतुयुति तथा भद्रा है। ति. ५ मंगल को उ.फा. में भौमयुति है। रा. ८।३८ के बाद हस्त में लालवस्त्रधारण आभूषणनिर्माण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (पंचमी में) ऑपरेशन मुहूर्त्त है। ति. ६ बुध को हस्त में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति.७ गुरु को चित्रा में शनिवेध है। ति. ८ शुक्र को स्वाती में भद्रा (सा. ४।५७) के बाद गर्भाधान नवीनवस्त्रधारण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.) वस्तुविक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ८ शनि को प्रा. ५।५७ तक विशाखा में कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ९ रवि को नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता (दि. ७।५९) के बाद अनुराधा में सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वाहन खरीदने ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। ति. १० सोम को अनुराधा में सूर्यवेध है। ज्येष्ठा में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। भद्रा भी है। ति. ११ मंगल को ज्येष्ठा में पूर्वदोष तथा वैधृति है। ति. १२ बुध को वैधृति (दि. ८।१) के बाद मूल में शिशुताम्बूलभक्षण ☞

तिथि / ल.अ.	१ शु घं.	मि.	२ श घं.	मि.	३ र घं.	मि.	४ चं घं.	मि.	५ मं घं.	मि.	६ बु घं.	मि.	७ गु घं.	मि.	८ शु घं.	मि.	८ श घं.	मि.	९ र घं.	मि.	१० चं घं.	मि.	११ मं घं.	मि.	१२ बु घं.	मि.	१३ गु घं.	मि.	१४ शु घं.	मि.	१५ श घं.	मि.
कर्क	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३५	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	५
सिंह	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४९	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१९
कन्या	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	२	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३२
तुला	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१८	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४८
वृश्चिक	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३५	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	५
धनु	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४१	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	११
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मकर	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२८	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५८
कुम्भ	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५९	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२९
मीन	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२७	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५७
मेष	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	८	१२	४	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३४
वृष	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	२	०	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	३०
मिथुन	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१४	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४४

१८ पं० श्रावणशुक्ल १५ शनि

अहर्गण ३८६१

अयनांश २४।११।५५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	९	५	३	२	२	११	१०	४
२१	१७	५	७	२०	१७	२	२५	२५
५४	५१	३२	४	५०	२३	४१	२९	२९
४१	७	३८	५५	४१	५७	३६	३८	३८
५७	७८७	३७	३८	१२	६९	२	३	३
२०	४५	५	४४	५५	२३	३५	११	११
			मा.			व.		

के.५ | गु.३शु. | ६ मं. | सू. ४ बु. | २ | ७ | १ | ८ | १० चं. | १२श. | ९ | ११ रा.

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति. १ शुक्र को सा. ५।१२ से। ति. ३ रवि को सा. ५।५६ तक।
ज्येष्ठा/मूल- ति. १० सोम को दि. ८।४४ से। ति. १२ बुध को दि. १२।४९ तक।
पञ्चक विचार-ति. १५ शनि को रा. ३।२७ से।

सूर्य के उत्तरायण एवं दक्षिणायन में स्वरप्रवाह द्वारा प्रातः जागरण- प्रतिदिन प्रातःकाल स्वारम्भ स्वरों द्वारा जागरण करना चाहिए। अर्थात् दक्षिणायन में चन्द्र स्वर तथा उत्तरायण में सूर्य स्वर द्वार दिन का आरम्भ करें। अगर उक्त स्थिति न हो तो प्राणायाम आदि यत्नों से अनुकूल स्वर प्रवाह कराना चाहिए। **श्रावण शुक्ल की पंचमी अर्थात् नागपञ्चमी-** श्रावण शुक्ल पञ्चमी को नाग पञ्चमी कहा जाता है। नाग पञ्चमी पर विद्ध ग्राह्य होती है, अतः नाग पूजा में षष्ठी युक्त पञ्चमी का ही ग्रहण करना चाहिए क्योंकि उसी में नागगण सन्तुष्ट होते हैं। चतुर्थी सहित पञ्चमी में अन्य गण। नाग पञ्चमी को छोड़कर अन्य प्रयोजनों में चतुर्थी युक्त पञ्चमी ही लाभप्रद होती है। **नागपूजन विधि-** श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पञ्चमी तिथि को द्वार के दोनों तरफ गोमय से सर्प की आकृति बनाकर घी, जल, एवं दूध से तर्पण करके दधि, दूर्वाङ्कुर, धूप, दीप, फूलमाला आदि से विधि पूर्वक पूजन कर गेहुँ, दूध तथा धान के लावा का भोग लगाना चाहिए इससे पद्म, तक्षक आदि नागगण सन्तुष्ट होते हैं, तथा पूजन कर्त्ता को सात कुलों तक सर्प भय नहीं होता। निम्नलिखित मन्त्र सर्प विष का प्रतिशोधक है, अतः विधिपूर्वक इसके जप से सर्प विष नहीं लगता। मन्त्र- ॐ कुं कुलाय हुँ फट् स्वाहा। सर्व प्रथम दरवाजे पर लिखित सर्प आकृति पर 'सर्वनागेभ्यो नमः सर्वनागानावाहयामि, इससे आवाहन कर 'नागेभ्यो नमः' के द्वारा पूजन कर पुनः प्रार्थना करें- **प्रार्थनामन्त्र-** अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मकम्बलमेव च। तथा कर्कोटकं नागं नागमश्वतरं तथा।। धृतराष्ट्रं शङ्खपालं कालाख्यं तक्षकं तथा। पिङ्गलञ्च महानागं प्रणमामि मुहुर्मुहुरिति। **स्नान क्षौर विचार-** देव तथा पितृ कर्म हेतु शिर से स्नान करना चाहिए। पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके क्षौरकर्म कराना चाहिए। **श्रावणी कर्म-** श्रावण मास में श्रवण नक्षत्र से युक्त दिन अर्थात् पूर्णिमा में परन्तु श्रावणी के दिन ग्रह संक्रान्ति या ग्रहण लगने पर हस्त नक्षत्र युक्त श्रावण शुक्ल पञ्चमी में ही श्रावणी कर्म करना चाहिए।

☞ देवरी धान्यारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. १२।४९ के बाद पू.षा. में शिल्पविद्या मुहूर्त्त है। ति. १३ गुरु को दि.१।२८ तक पू.षा. में शिल्पविद्या नावनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. १४ शुक्र को उ.षा. में रिक्ता के बाद भद्रादोष है। ति.१५ शनि को श्रवण में दक्षिण दिशा की यात्रा (प्रतिपदा में) वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। दि.३।३० के बाद धनिष्ठा में कृष्णवस्त्रधारण मकर के चन्द्रमा में दक्षिण तथा कुम्भ के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है।

भाद्रपदकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि १९ श्रावण से १ भाद्रपद तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक १० अगस्त से २३ तक सन् २०२५ ई.।।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु ।।

दि.मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.		घ. प.	नक्षत्र	घ. प.		घ. प.	योग	घ. प.		घ. प.	करण	घ. प.	करण	घ. प.	योग
३२|३३	१ र	१७|५२	दि	११|२८	धनिष्ठा	२४|४८	दि	३|२४	शोभन	५२|३८	रा	२|३२	कौ	१७|५२	तै	४६|२२	मातङ्ग
३२|३०	२ चं	१४|५१	दि	११|२६	शतभिष	२३|२७	दि	२|५३	अतिगण्ड	४७|६	रा	१२|२०	गर	१४|५१	व	४२|५१	अमृत
३२|२७	३ मं	१०|५१	दि	९|५१	पू.भा.	२१|१८	दि	२|२	सुकर्मा	४०|५४	रा	९|१२	वि	१०|५१	बव	३८|२६	काण
३२|२४	४ बु	६|१	दि	७|५५	उ.भा.	१८|१६	दि	१२|४९	धृति	३४|१४	रा	९|५३	भ	६|१	बा	३३|१८	लुम्बक
३२|२१	५ गु	०/५४	प्रा	५/३	रेवती	१४|४०	दि	११|२४	शूल	२६|४९	सा	४|१६	तै	०|३४	गर	२७/५४ ३८/४१	मित्र
३२|१८	७ शु	४८|३४	रा	१२|५८	अश्विनी	१०|३९	दि	९|४८	गण्ड	१९|१७	दि	१|१५	भ	२१|३८	बव	४८|३४	वज्र
३२|१५	८ श	४२|२१	रा	१०|२९	भरणी	६|२८	दि	८|८	वृद्धि	११|३५	दि	१०|११	बा	१५|२८	कौ	४२|२१	ध्वांक्ष
३२|१२	९ र	३६|१९	रा	८|६	कृत्तिका	२|४ ५९/५४	प्रा	६/४ ५/१४	ध्रुव	३|४५ ५४/१४	प्रा	९|२०	तै	९|२०	गर	३६|१९	धूम्र
३२|८	१० चं	३०|२९	सा	५|५०	मृगशिरा	५४|५०	रा	३|३०	हर्षण	४९|२४	रा	१|२	व	३|२९	व	३०/२९ ४८/३९	आनन्द
३२|५	११ मं	२५|२९	दि	३|४७	आर्द्रा	५१|५५	रा	२|२१	वज्र	४२|४४	रा	१०|४४	बा	२५|२९	कौ	५३|२७	चर
३२|२	१२ बु	२१|४	दि	२	पुनर्वसु	४९|५५	रा	१|३४	सिद्धि	३६|५७	रा	८|६	तै	२१|४	गर	४८|५४	गद
३१|५८	१३ गु	१७|३१	दि	१२|३६	पुष्य	४८|४५	रा	१|६	व्यतिपात	३१|३७	सा	६|२१	व	१७|३१	व	४६|२६	शुभ
३१|५५	१४ शु	१५|११	दि	११|३७	श्लेषा	४८|४२	रा	१|६	वरीयान	२७|४	सा	४|२७	श	१५|११	च	४६|२६	मृत्यु
३१|५२	३० श	१३|४४	दि	११|१	मघा	४९|४२	रा	१|३५	परिघ	२३|३७	दि	३|५	ना	१३|४४	किं	४३|४४	पद्म

अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे.अं. +मि.		चन्द्रोदय स्टै. टा.	
१०	१	२५	२५	१९			५	२९	६	३१	३	२२	५२	१	१५	४०	+	४	७	२९
११	२	२६	२६	२०			५	३०	६	३०	३	२३	४९	२४	१५	२२	+	४	८	३
१२	३	२७	२७	२१	मीन	६|५०	५	३१	६	२९	३	२४	४६	४७	१५	४	+	४	८	३७
१३	४	२८	२८	२२			५	३१	६	२९	३	२५	४४	१२	१४	४६	+	४	९	११
१४	५	२९	२९	२३	मेष	१४|४०	५	३२	६	२८	३	२६	४१	३९	१४	२८	+	३	९	४९
१५	६	३०	३०	२४			५	३२	६	२८	३	२७	३९	७	१४	९	+	३	१०	२९
१६	७	३१	३१	२५	वृष	२०|२६	५	३३	६	२७	३	२८	३६	३६	१३	५१	+	२	११	१७
१७	८	३२	१	२६			५	३४	६	२६	३	२९	३४	६	१३	३२	+	२	१२	१०
१८	९	१	२	२७	मिथुन	२६|३६	५	३४	६	२६	४	०	३१	३९	१३	१२	+	२	१	११
१९	१०	२	३	२८			५	३५	६	२५	४	१	२९	१३	१२	५३	+	२	२	१५
२०	११	३	४	२९	कर्क	३५|२५	५	३६	६	२४	४	२	२६	४८	१२	३३	+	२	३	२१
२१	१२	४	५	३०			५	३६	६	२४	४	३	२४	२६	१२	१४	+	१	४	२४
२२	१३	५	६	३१	सिंह	४८|४२	५	३७	६	२३	४	४	२२	५	११	५४	+	१	५	२५
२३	१४	६	७	१			५	३८	६	२२	४	५	१९	४६	११	३३	+	१	-	-

भाद्रपद मास में चातुर्मास्य व्रती को दही खाना वर्जित है। नात्रत्यागस्तक्रादीनाम्। अशून्यशयन २ व्रत। चन्द्रोदय रा. ७।२९। श्रीलक्ष्मी सहित विष्णु का पलंग पर ❷ भ.रा. १०।३८ से। विन्ध्याचली तथा भीमचण्डी देवी जयन्ती २। कज्जलीनिमित्तक रात्रि जागरण (रतजग्गा)। ❷रखकर पूजन करने से अक्षय-धन तथा दाम्पत्य सुख की प्राप्ति। ◆ भ.दि. ९।५१ तक। मीनराशि दि. ८।१५। संकष्टी (बहुला) श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।३७। विशालाक्षी यात्रा ३। कज्जली (कजरी) ३। गोपूजा ३। गायों को ○ रक्षापञ्चमी (उड़ीसा)। ○अलंकृत करके पूजन। बहुला चतुर्थी (मध्यप्रदेश)। स्थायीजययोग दि. ९।५१ से दि. २।२ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. २।२ से। भ. रा. ३।२४ से। मेषराशि दि. ११।२४। हलषष्ठी ६ व्रत (ललही छठ)। श्रीचन्द्रषष्ठी ६। चन्द्रोदय रा. ९।४९। पञ्चक समाप्ति दि. ११।२४। यायीजययोग ☾ भ. दि. २।११ तक। भारतीय ७९ वाँ स्वतन्त्रता दिवस। ध्वजोत्तोलन-राष्ट्रगान तथा राजधानी में विविध उत्सव तथा आयोजन। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ९।४८ तक। □ वृषराशि दि. १।४३। श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रत सबका। कृष्णावतार ८। चन्द्रोदय रा. ११।१७। गोकुलाष्टमी ८। ♍ सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा. १।६ तक। रोहिणी मतावलम्बी वैष्णवों का श्रीकृष्णजन्म व्रत। ⊙सं. मघा नक्षत्र तथा सिंहराशि का सूर्य सा. ४।२२। मु. ४५ वृहत्ती। फल सस्ती। पूर्व का ६ घंटा २४ मिनट ⍓ भ. प्रा. ६।५८ से सा. ५।५० तक। मिथुनराशि सा. ४।१२। सौरभाद्रपद मासारम्भ। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा. ३।३० तक। □रवियोग दि. ९।४८ तक। जया ११ एकादशी व्रत सबका। यमघंटयोग रा. २।२१ तक। त्रिपुष्करयोग रा. २।२१ से। ☾ प्रा. ५।४६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। रवियोग दि. ११।२४ से। कर्कराशि रा. ७।४६। प्रदोष १३ व्रत। ◆श्रीनारायणगुरुदेवजन्म दिवस (केरल)। यायीजययोग दि. १२।३८ तक। द्विपुष्करयोग दि. १२।३८ से दि. ३।२४ तक। भ. दि. १२।३६ से रा. १२।६ तक। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशत्युक्तेः।" कलियुगादि १३। अघोरचतुर्दशी १४ (प्रदोष में)। ♍ सिंहराशि रा. १।६। श्राद्ध की ३० अमावस्या। ❶दृश्य अगस्त्योदय सा. ४।१०। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है। स्नान-दान की ३० अमावस्या। कुशोत्पाटनी ३० अमावस्या। "ऊँहूँफट्" मन्त्र से कुशग्रहण। ⊙सायन कन्याराशि का सूर्य सा. ५।२४। राष्ट्रीयभाद्रपदमास दि. ३१। ❶

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.वा.	मंगल	मार्गीबुध	गुरु	शुक्र	वक्रीशनि	राहु
१ र … ३० श	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचार-मंगल-ति. ८ शनि को हस्त में दि. ८।४२।। मार्गीबुध-ति. ११ मंगल को श्लेषा में रा. २।५१।। गुरु-ति. १३ गुरु को पुनर्वसु २ चरण में दि. ७।२९।। शुक्र-ति. २ सोम को पुनर्वसु में दि. ११।६।। ति. ११ मंगल को कर्कराशि में रा. ११।५९।। ति. १४ शुक्र को पुष्य में रा. ८।५।। वक्रीशनि-पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में।। राहु-पूर्वाभाद्रपद २ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी ४ चरण में।।

सिंहराशि के सूर्य में गन्ना, शर्करा आदि मीठे पदार्थ, लाल बर्तन, तिल का तेल महँगा होता है।

१९ पं० भाद्रपदकृष्ण ८ शनि

अहर्गण ३८६८

अयनांश २४।११।५६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विविधमुहूर्त-ति. १ रवि को धनिष्ठा में नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण पशुओं की खरीद-बिक्री औषधसेवन नावनिर्माण वाहन खरीदने का मुहूर्त है। शतभिष में वाटिकारोपण वस्तुविक्रय ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त है। ति. २ सोम को शतभिष में अन्नप्राशन पशुओं की खरीद-बिक्री धान्यारोपण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है। पू.भा. में शनियुति तथा भद्रा है। ति. ३ मंगल को पू.भा. में पूर्वदोष है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। ति. ४ बुध को रिक्ता (दि. ७।५५) के बाद उ.भा. में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण विपणि फसल काटने का मुहूर्त है। दि. १२।४९ के बाद रेवती में नवीनवस्त्रधारण पश्चिम दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण विपणि व्यापार वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त है। ति. ५ गुरु को रेवती में पंचमी में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण पश्चिम-उत्तर दिशा की यात्रा दँवरी औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त है। अश्विनी में केतुवेध है। ति. ७ शुक्र को अश्विनी में पूर्वदोष तथा भद्रा है। भद्रा (दि. २।११) के बाद भरणी में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वस्तुविक्रय मुहूर्त है। ति. ८ शनि को भरणी में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। कृत्तिका में वस्तुविक्रय मुहूर्त है। ति. ९ रवि को कृत्तिका में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। रिक्ता (रा. ८।६) के बाद रोहिणी में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर ☞

तिथि ल.अ.	१ र घं.	मि.	२ चं घं.	मि.	३ मं घं.	मि.	४ बु घं.	मि.	५ गु घं.	मि.	७ शु घं.	मि.	८ श घं.	मि.	९ र घं.	मि.	तिथि ल.अ.	१० चं घं.	मि.	११ मं घं.	मि.	१२ बु घं.	मि.	१३ गु घं.	मि.	१४ शु घं.	मि.	३० श घं.	मि.
कर्क	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३८	५	३४	सिंह	७	४४	७	४०	७	३६	७	३३	७	२९	७	२५
सिंह	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५२	७	४८	कन्या	९	५९	९	५३	९	४९	९	४६	९	४२	९	३८
कन्या	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला … मिथुन	[illegible]																													

२० पं० भाद्रपदकृष्ण ३० शनि

अहर्गण ३८७५

अयनांश २४।११।५७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

⍓पुण्यकाल। छत्र-सुवर्णदान। गंगा में स्नान। स्त्री. पु.-सू.चं. योग मेष वाहन वातनाड़ी अधिपति रवि सामान्यवृष्टियोग। मनसादेवीपूजा (बंगाल)। मनसापूजासमाप्त। यायीजययोग प्रा. ६।२९ से रा. ८।६ तक।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी- ति. ४ बुध को दि. १२।४९ से। ति. ७ शुक्र को दि. ९।४८ तक। श्लेषा/मघा- ति. १३ गुरु को रा. १।६ से। ति. ३० शनि को रा. १।३५ तक।
पञ्चक विचार- ति. ५ गुरु को दि. ११।२४ तक।

[illegible]

...नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण विपणि ऑपरेशन का मुहूर्त है। रात्रिशेष में मृगशिरा में सूतीस्नान ... दक्षिण दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ११ मंगल को आर्द्रा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। ति. १२ बुध को पुनर्वसु में व्यतिपात ... चन्द्रमा में पश्चिम-दक्षिण तथा कर्क के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा ... नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री मिथुन के ... शिल्पविद्या औषधसेवन वाहन खरीदने का मुहूर्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.
३१	४८	१	र	१३	४३	दि	११	७	पू.फा.	५२	२०	रा	२	३४	शिव	२१	११	दि	२	६	वव	१३	४३	वा	४४	२२	छत्र	२४	१५	७	८	२
३१	४५	२	चं	१५	१	दि	११	३९	उ.फा.	५६	२	रा	४	४	सिद्ध	१९	४८	दि	१	३४	कौ	१५	१	तै	४६	१५	श्रीवत्स	२५	१६	८	९	३
३१	४२	३	मं	१७	२९	दि	१२	४०	हस्त	६०	०	स	म	स्त	साध्य	१९	१५	दि	१	२२	गर	१७	२९	व	४९	१८	सौम्य	२६	१७	९	१०	४
३१	३८	४	बु	२१	७	दि	२	७	हस्त	०	५१	प्रा	६	०	शुभ	१९	३७	दि	१	३१	भ	२१	७	वव	५३	२१	आनन्द	२७	१८	१०	११	५
३१	३५	५	गु	२५	३४	दि	३	५५	चित्रा	६	३१	दि	८	१७	शुक्ल	२०	३७	दि	१	५६	वा	२५	३४	कौ	५८	४	चर	२८	१९	११	१२	६
३१	३१	६	शु	३०	३३	सा	५	५५	स्वाती	१२	४९	दि	१०	५०	ब्रह्म	२२	३	दि	२	३१	तै	३०	३३	गर	६०	०	गद	२९	२०	१२	१३	७
३१	२८	७	श	३५	४०	रा	७	५८	विशाखा	१९	२०	दि	१	२६	ऐन्द्र	२३	३७	दि	३	९	गर	३	७	व	३५	४०	शुभ	३०	२१	१३	१४	८
३१	२४	८	र	४०	२७	रा	९	५४	अनुराधा	२५	४०	दि	३	५९	वैधृति	२५	१	दि	३	४३	भ	८	४	वव	४०	२७	मृत्यु	३१	२२	१४	१५	९
३१	२१	९	चं	४४	३४	रा	११	३४	ज्येष्ठा	३१	२३	सा	६	१७	विष्कुम्भ	२५	५६	दि	४	६	वा	१२	३१	कौ	४४	३४	पद्म	१	२३	१५	१६	१०
३१	१७	१०	मं	४७	४०	रा	१२	४९	मूल	३६	१४	रा	८	१५	प्रीति	२६	११	दि	४	१३	तै	१६	७	गर	४७	४०	छत्र	२	२४	१६	१७	११
३१	१४	११	बु	४९	४२	रा	१	३८	पू.षा.	३९	५९	रा	९	४५	आयुष्मान	२५	३१	दि	३	५७	व	१८	४१	भ	४९	४२	श्रीवत्स	३	२५	१७	१८	१२
३१	१०	१२	गु	५०	२३	रा	१	५५	उ.षा.	४२	३०	रा	१०	४६	सौभाग्य	२३	५६	दि	३	२०	वव	२०	३	वा	५०	२३	सौम्य	४	२६	१८	१९	१३
३१	७	१३	शु	४९	४५	रा	१	४१	श्रवण	४३	४३	रा	११	१६	शोभन	२१	२१	दि	२	१९	कौ	२०	४	तै	४९	४५	धूम्र	५	२७	१९	२०	१४
३१	३	१४	श	४७	५५	रा	१२	५७	धनिष्ठा	४३	४५	रा	११	१७	अतिगण्ड	१७	४४	दि	१२	५३	गर	१८	५०	व	४७	५५	प्रवर्धमान	६	२८	२०	२१	१५
३१	०	१५	र	४४	५८	रा	११	४७	शतभिष	४२	३७	रा	१०	५१	सुकर्मा	१३	१२	दि	११	५	भ	१६	२७	वव	४४	५८	राक्षस	७	२९	२१	२२	१६

ति.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. ±	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
१			५	३८	६	२२	४	६	१७	२८	११	१३	+	०	७	८
२	कन्या	८।१६	५	३९	६	२१	४	७	१५	१३	१०	५२	+	०	७	३८
३			५	४०	६	२०	४	८	१२	५९	१०	३२	-	०	८	६
४	तुला	३३।४१	५	४०	६	२०	४	९	१०	४७	१०	११	-	०	८	३६
५			५	४१	६	१९	४	१०	८	३५	९	५०	-	१	९	८
६			५	४२	६	१८	४	११	६	२८	९	२९	-	१	९	४२
७	वृश्चिक	२।४२	५	४२	६	१८	४	१२	४	२२	९	७	-	१	१०	२१
८			५	४३	६	१७	४	१३	२	१७	८	४६	-	२	११	६
९	धनु	३१।२३	५	४४	६	१६	४	१४	०	१५	८	२४	-	२	११	५६
१०			५	४५	६	१५	४	१४	५८	१५	८	२	-	२	१२	५१
११	मकर	५५।३७	५	४५	६	१५	४	१५	५६	१५	७	४०	-	३	१	५१
१२			५	४६	६	१४	४	१६	५४	१९	७	१८	-	३	२	५३
१३			५	४७	६	१३	४	१७	५२	२४	६	५६	-	३	३	५५
१४	कुम्भ	१३।४४	५	४७	६	१३	४	१८	५०	३१	६	३४	-	४	४	५८
१५			५	४८	६	१२	४	१९	४८	४१	६	१२	-	४	-	-

भाद्रपदशुक्लपक्ष ।।

चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. २।३४ से। त्रिपुष्करयोग रा. २।३४ से। (सिंह के सूर्य में)। मन्वादि ३। रवियोग समस्त। कन्याराशि दि. ८।५७। मु. रविउल्लवल ३ हिजरी सन् १४४७। श्री शंकरदेव तिथि (असम)। वाराह अवतार ३ (अपराह्न में)। यायीजययोग दि. ११।३९ से। रवियोग रा. ४।४ से। भ. रा. १।२३ से। हरितालिका ३ व्रत (तीज)। स्त्रियों के लिए आवश्यक व्रत। आज चन्द्रदर्शन वर्जित है। चन्द्रास्त रा. ८।६। हस्त नक्षत्र में सामवेदियों का उपाकर्म। भ. दि. २।७ तक। तुलाराशि रा. ७।८। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। श्रीगणेशोत्सव प्रारम्भ (महाराष्ट्र)। विनायक चतुर्थी (तमिलनाडु)। सर्वार्थसिद्धियोग प्रा. ६।० तक। ऋषिपञ्चमी ५ व्रत। मध्याह्न में सप्तर्षिपूजा। सात वर्षों तक ऋषि प्रतिमाओं का पूजन कर ब्राह्मण को दान देना चाहिये। आज बीना जोते भूमि का साग खाना चाहिये। लोलार्कषष्ठी ६ व्रत। काशी में भदैनी स्थित लोलार्ककुण्ड में पुत्रार्थियों को स्नान करना चाहिए। लोलार्केश्वर दर्शन। श्री सूर्यषष्ठी ६ व्रत। देव ६। स्वामीकार्त्तिकेयदर्शन। ब्रह्महत्या। भ. रा. ७।५८ से। वृश्चिकराशि प्रा. ६।४७। सन्तानसप्तमी ७। अपराजिता पूजा ७। मुक्ताभरण ७। महालक्ष्मी व्रतारम्भ (१६ दिनों तक)। काशी में श्रीलक्ष्मी कुण्ड में स्नान तथा दर्शन। भ. दि. ८।५७ तक। अनुराधा नक्षत्र में ज्येष्ठा देवी का आवाह्न। दूर्वाष्टमी ८। स्त्रियों के लिए आवश्यक व्रत। राधाष्टमी ८। महारविवार व्रत। आज नमक रहित भोजन करना चाहिए। धनुराशि सा. ६।१७। श्रीचन्द्रजयन्ती ९ (श्रौतशाखा उदासीन)। महानन्दानवमी ९। मध्याह्न में ज्येष्ठा देवी का पूजन। सितम्बर १। रवियोग सा. ६।१७ से। रवियोग प्रा. ६।० तक। दशावतार १० व्रत। मूल नक्षत्र में ज्येष्ठा देवी का विसर्जन। रवियोग समस्त। रक्षापञ्चमी ५ (बंगाल)। यायीजययोग दि. ८।१७ से दि. ३।५५ तक। रवियोग दि. ८।१७ से। भ. दि. १।१३ से रा. १।३८ तक। मकरराशि रा. ४।०। पद्मा ११ एकादशी व्रत सबका। कर्मा एकादशी (झारखण्ड)। डोलग्यारस (मध्यप्रदेश)। रवियोग रा. ९।४५ तक। एकादशी व्रत की पारणा। वामन द्वादशी १२। वामनावतार। दहिदान। दुग्धत्याग व्रतारम्भ। शक्रध्वजोत्थान। श्रीविष्णुपरिवर्तनोत्सव। रवियोग रा. ११।१७ तक। आदि पाप का नाश। रवियोग दि. १०।५० तक। प्रदोष १३ व्रत। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ११।१६ तक। रवियोग रा. ११।१६ से। भ. रा. १२।५७ से। कुम्भराशि दि. ११।१७। अनन्त १४ चतुर्दशी व्रत। आज नमक रहित भोजन करना चाहिए। श्रीशिवपरिवर्तनोत्सव। पञ्चक प्रारम्भ दि. ११।१७। भ. दि. १२।२३ तक। स्नान-दान-व्रत की १५ पूर्णिमा। उमामाहेश्वर व्रत। अनन्तव्रत की भाँति। लोकपालपूजा। नान्दीमातामहश्राद्ध-पार्वणविधि के अनुसार।

यायीजययोग दि. १।२६ से रा. ७।५८ तक। त्रिपुष्करयोग दि. १।२६ तक। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का सूर्य दि. १।३। स्त्री. नपुं.-सू. सू. योगमहिष वाहन चंडानाड़ी अधिपतिशनि खण्डवृष्टियोग। काशी में खग्रास चन्द्रग्रहण (विवरण पृष्ठ ?पर)।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ८ रवि को दि. ३।५९ से। ति. १० मंगल को रा. ८।१५ तक।
पञ्चक विचार- ति. १४ शनि को दि. ११।१७ से।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	र	५	१५	२	५८	३	२१	५८	३९	२	२३	५३	२८	३	४	५८	३४	११	१	५२	४६	१०	२४	४१	५६
२	चं	५	१५	४२	३	३	२३	२४	१८	२	२४	४	४८	३	६	९	६	११	१	४९	३	१०	२४	३८	४५
३	मं	५	१६	२१	९	३	२४	४९	२२	२	२४	१६	१	३	७	१९	३८	११	१	४५	१९	१०	२४	३५	३४
४	बु	५	१७	०	१५	३	२६	१४	११	२	२४	२७	१४	३	८	३०	१०	११	१	४१	३५	१०	२४	३२	२३
५	गु	५	१७	३९	२१	३	२७	३८	५९	२	२४	३८	२७	३	९	४०	४२	११	१	३७	५१	१०	२४	२९	१२
६	शु	५	१८	१८	२७	३	२९	११	३५	२	२४	४९	४०	३	१०	५१	१४	११	१	३४	७	१०	२४	२६	२
७	श	५	१८	५७	३३	४	०	४५	६	२	२५	०	५२	३	१२	१	४६	११	१	३०	२३	१०	२४	२२	५१
८	र	५	१९	३६	३९	४	२	१८	३७	२	२५	१२	५	३	१३	१२	१८	११	१	२६	३४	१०	२४	१९	४०
९	चं	५	२०	१५	४५	४	३	५२	८	२	२५	२३	१७	३	१४	२३	१३	११	१	२१	३२	१०	२४	१६	२९
१०	मं	५	२०	५४	५१	४	५	२६	८	२	२५	३४	३०	३	१५	३४	५१	११	१	१६	३९	१०	२४	१३	१८
११	बु	५	२१	३३	५६	४	७	५	५२	२	२५	४५	४१	३	१६	४७	१५	११	१	११	४७	१०	२४	१०	८
१२	गु	५	२२	१३	२	४	८	४५	३६	२	२५	५४	२७	३	१७	५९	३९	११	१	६	५४	१०	२४	६	५७
१३	शु	५	२२	५२	८	४	१०	२५	२०	२	२६	४	१३	३	१९	१२	३	११	१	२	२	१०	२४	३	४६
१४	श	५	२३	३१	१४	४	१२	५	२	२	२६	१३	५९	३	२०	२४	२६	११	०	५७	९	१०	२४	०	३५
१५	र	५	२४	१०	२०	४	१३	४५	२०	२	२६	२३	४५	३	२१	३६	५०	११	०	५२	१७	१०	२३	५७	२४

ग्रहचार- मंगल-ति. १३ शुक्र को चित्रा में रा. १०।५३।। बुध-ति. ६ शुक्र को मघा तथा सिंहराशि में सा. ६।८। ति. १४ शनि को पूर्वाफाल्गुनी में रा. ११।४३।। गुरु-पुनर्वसु २ चरण में।। शुक्र-ति. १० मंगल को श्लेषा में रा. ३।२१।। वक्रीशनि-पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में।। राहु-पूर्वाभाद्रपद २ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी ४ चरण में।।

२१ पं० भाद्रपदशुक्ल ८ रवि

अहर्गण ३८८३

अयनांश २४।११।५८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	७	५	४	२	३	११	१०	४
१३	११	१९	२	२५	१३	१	२४	२४
२	३०	३६	१८	१२	३८	२६	१९	१९
१७	२७	३९	३७	५	१८	३४	४०	४०
५७	७२३	३९	९३	११	७०	४	३	३
५८	३७	६	३१	१२	५५	५	११	११
						व.		

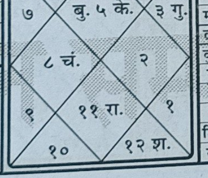

विविधमुहूर्त्त-ति. १ रवि को पू.फा. में सूर्यभोग्य है। ति. २ सोम को उ.फा. में मंगल से भुक्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। ति. ३ मंगल को हस्त में भौमयुति है। चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ४ बुध को चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। चित्रा में भौमभोग्य है। ति. ५ गुरु को दि. ८।१७ के बाद स्वाती में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन सूतीस्नान (पंचमी में) नवीनवस्त्रधारण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ शुक्र को स्वाती में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण नवीनवस्त्रधारण औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। विशाखा में वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री धान्यारोपण मुहूर्त्त है। ति. ७ शनि को विशाखा में कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। दि. १।२६ के बाद वैधृति (दि.३।९) से पूर्व अनुराधा में पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ८ रवि को अनुराधा में भद्रादोष तथा वैधृति है। दि. ३।५९ के बाद अष्टमी में ज्येष्ठा में पशुओं की खरीद-बिक्री ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ सोम को ज्येष्ठा में रिक्तादोष है। ति. १० मंगल को मूल में पुंसवनसीमन्त शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ११ बुध को पू.षा. में भद्रा (दि. १।१३) से पूर्व शिल्पविद्या मुहूर्त्त है। ति. १२ गुरु को उ.षा. में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान नवीन खटिया- चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती की छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण शिल्पविद्या नावनिर्माण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १३ शुक्र को श्रवण में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण अन्नप्राशन गर्भाधान नवीन खटिया- ☞

तिथि	१ र	२ चं	३ मं	४ बु	५ गु	६ शु	७ श	८ र	९ चं	१० मं	११ बु	१२ गु	१३ शु	१४ श	१५ र
ल.अ.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
सिंह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
धनु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मकर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ल.अ.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
कुम्भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मेष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

२२ पं० भाद्रपदशुक्ल १५रवि

अहर्गण ३८९०

अयनांश २४।११।५९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१०	५	४	२	३	११	१०	४
१९	१०	२४	१३	२६	२१	०	२३	२३
४८	२०	१०	४५	२३	३६	५२	५७	५७
४१	५३	२०	२०	४५	५०	१७	२४	२४
५८	८१५	३९	१०३	९	७२	४	३	३
१२	२४	६	३	४६	२४	५३	११	११
						व.		

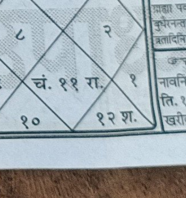

हरित तालिका निर्णय- भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से युक्त तृतीया तिथि (हरित तालिका) वैधव्यदोष नाशक तथा पुत्र-पौत्रादि को बढ़ाने वाली होती है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को चन्द्रदर्शन दोष की शान्ति के लिए मन्त्र- सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारकुमारोदीस्तवह्येष स्यमन्तकः ।। पञ्चमी को अपामार्ग से दन्तधावन करने का मन्त्र- आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते।।१।। मुखदौर्गन्ध्यनाशाय दन्तानाञ्च विशुद्धये। ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्।।२।। षष्ठी में सूर्य पूजन- (निर्णय सिन्धु) भाद्रपद शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि में तीर्थ स्नान कर सूर्यपूजन एवं पञ्चगव्य पान से अश्वमेधयज्ञ से भी अधिक फल प्राप्त होता है। पञ्चगव्य पान करने का मन्त्र- यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।। श्रवण नक्षत्र युक्त द्वादशी में विष्णु का परिवर्तन उत्सव- रात्रि काल में भगवान विष्णु का षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करना चाहिए। प्रार्थना मन्त्र- वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वेन परिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव।। श्रवण द्वादशी यदि उत्तराषाढ़ा से युक्त हो तो उसका व्रत नहीं करना चाहिए। उत्तराषाढ़ा से युक्त श्रवण नक्षत्र यदि मध्याह्न में प्राप्त हो तो भी व्रत न करें। क्योंकि यह आसुरी तारा हो जाती है तथा पूर्व कृत पुण्यों को भी नष्ट कर देती है। यदि यह श्रवण युक्त द्वादशी बुधवार को प्राप्त होती है तो उसकी विशेष महत्ता होती है, तथा इसमें दिया गया दान अक्षय होता है। अनन्त चतुर्दशी निर्णय- त्रिमुहूर्तोदय काल तथा मध्याह्न व्यापिनी चतुर्दशी ही इस पक्ष में ग्राह्य है। इस सन्दर्भ में केवल 'माधव' ही उदयकाल व्यापिनी तथा शेष दिवादास, प्रतापमार्त्तण्डकार, विश्वरूप एवं कालीदास आदि विद्वान मध्याह्न व्यापिनी स्वीकार करते हैं। उपर्युक्त वचनद्वय निर्णय सिन्धु से गृहीत है। इस प्रसङ्ग में अन्य आचार्यों का मत प्रस्तुत है। विश्वरूप- मध्याह्नव्यापिनी या च भाद्रशुक्लचतुर्दशी। सैवानन्तव्रते ग्राह्या पर्वयुक्ता विशेषतः।। ज्योतिर्विदाभरण। मध्याह्नकालान्तगता चतुर्दशी हिता हि सा भाद्रपदे नृयोषिताम्। कुर्यरनन्तव्रतमादृतन्तदा तथा कलोनापि ततः फलाप्तये।। माधव निर्णये निर्णयसिन्धुकाराः प्रान्ति कथयन्ति। सा कथाप्रसंगैकभुक्तव्रतादिनिर्णय विरोधादिनाऽयुक्तमेव। इन सब मतों के निष्कर्ष भूत मध्याह्न व्यापिनी चतुर्दशी का ही व्रत करना चाहिए।

☞ चौकी आदि का उपभोग पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा दँवरी नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वस्तुक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १४ शनि को धनिष्ठा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १५ रवि को शतभिष में भद्रा (दि. १२।२३) के बाद आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण शिल्पविद्या नावनिर्माण वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल वर्षाऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घं.	मि.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.
३०	५६	१	चं	४१	५	रा	१०	१५	पू.भा.	४०	३७	रा	१०	४	धृति	७	४८	दि	८	५६	वा	१३	२	कौ	४१	५	मुसल	८	१	२२	२३	१७
३०	५२	२	मं	३६	२२	रा	८	२३	उ.भा.	३७	४६	रा	८	५६	शूल	१/५३	४२/१५	प्रा	६/३	३१/४१	तै	८	४४	गर	३६	२२	सिद्धि	९	२	२३	२४	१८
३०	४९	३	बु	३१	२	सा	६	१५	रेवती	३४	१५	रा	७	३२	वृद्धि	४७	४४	रा	१२	५६	व	३	४२	भ	३१/५८	९/७	उत्पात	१०	३	२४	२५	१९
३०	४५	४	गु	२५	१२	दि	३	५६	अश्विनी	३०	१९	सा	५	५९	ध्रुव	४०	११	रा	९	५५	वा	२५	१२	कौ	५२	१०	मानस	११	४	२५	२६	२०
३०	४२	५	शु	१९	८	दि	१	३१	भरणी	२६	८	सा	४	१९	व्याघात	३२	२९	सा	६	५२	तै	१९	८	गर	४६	४	मुद्गर	१२	५	२६	२७	२१
३०	३८	६	श	१३	०	दि	११	४	कृत्तिका	२१	५६	दि	२	३८	हर्षण	२४	४६	दि	३	४६	व	१३	०	भ	४०	१	ध्वज	१३	६	२७	२८	२२
३०	३४	७	र	७	१	दि	८	४१	रोहिणी	१७	५३	दि	१	२	वज्र	१७	८	दि	१२	४४	वव	७	१	वा	३४	११	धाता	१४	७	२८	२९	२३
३०	३१	८	चं	१/५४	२१/५३	प्रा	६/४	२६/२४	मृगशिरा	१४	१५	दि	११	३६	सिद्धि	९	४९	दि	९	५०	कौ	१	२१	तै	२८/५६	४८/१४	आनन्द	१५	८	२९	३०	२४
३०	२७	१०	मं	५१	५२	रा	२	४०	आर्द्रा	११	१०	दि	१०	२३	व्यतिपात	२/५३	५७/४४	प्रा	७/४	५/३७	व	२४	३	भ	५१	५२	चर	१६	९	३०	३१	२५
३०	२३	११	बु	४८	२०	रा	१	१५	पुनर्वसु	८	५६	दि	९	२९	परिघ	५१	१२	रा	२	२४	वव	२०	६	वा	४८	२०	गद	१७	१०	३१	१	२६
३०	२०	१२	गु	४५	५१	रा	१२	१६	पुष्य	७	३०	दि	८	५६	शिव	४६	३१	रा	१२	३२	कौ	१७	६	तै	४५	५१	शुभ	१८	११	१	२	२७
३०	१६	१३	शु	४४	३४	रा	११	४७	श्लेषा	७	१०	दि	८	४९	सिद्ध	४२	४५	रा	११	३	गर	१५	१३	व	४४	३४	मृत्यु	१९	१२	२	३	२८
३०	१२	१४	श	४४	३२	रा	११	४७	मघा	८	२	दि	९	११	साध्य	४०	०	रा	९	५८	भ	१४	३३	श	४४	३२	पद्म	२०	१३	३	४	२९
३०	९	३०	र	४५	५०	रा	१२	१८	पू.फा.	१०	९	दि	१०	२	शुभ	३८	१५	रा	९	१६	च	१५	११	नाग	४५	५०	छत्र	२१	१४	४	५	३०

अं.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.	+	रे. अं. -	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
८	मीन	२६।७	५	४९	६	११	४	२०	४६	५३	५	४९	-	४	६	३५
९			५	५०	६	१०	४	२१	४५	५	५	२७	-	५	७	१०
१०			५	५०	६	१०	४	२२	४३	२०	५	४	-	५	७	४७
११	मेष	३४।१५	५	५१	६	९	४	२३	४१	३७	४	४१	-	५	८	२७
१२			५	५२	६	८	४	२४	३९	५७	४	१८	-	६	९	१४
१३	वृष	४०।५	५	५२	६	८	४	२५	३८	२०	३	५५	-	६	१०	६
१४			५	५३	६	७	४	२६	३६	४४	३	३२	-	६	११	५
१५	मिथुन	४६।४	५	५४	६	६	४	२७	३५	१०	३	९	-	७	१२	८
१६			५	५५	६	५	४	२८	३३	३८	२	४६	-	७	१	१२
१७	कर्क	५४।३०	५	५५	६	५	४	२९	३२	९	२	२३	-	७	२	१५
१८			५	५६	६	४	५	०	३०	४२	२	०	-	८	३	१६
१९			५	५७	६	३	५	१	२९	१७	१	३७	-	८	४	१३
२०	सिंह	७।१०	५	५८	६	२	५	२	२७	५५	१	१३	-	८	५	८
२१	कन्या	२६।१	५	५८	६	२	५	३	२६	३५	०	५०	-	९	-	-

आश्विनकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि १७ भाद्रपद से ३० तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक ८ सितम्बर से २१ तक सन् २०२५ ई.।।

मीनराशि सा. ४।१६। आश्विनमास में चातुर्मास्य व्रती को दूध पीना वर्जित है। नात्रत्यागस्तत्रादीनाम्महालयारम्भ। प्रतिपदा श्राद्ध। पितृपक्ष में पितरों को जल देने से वर्षपर्यन्त मनुष्य सुखी ❶
द्वितीयाश्राद्ध। अशून्यशयन २ व्रत। चन्द्रोदय रा. ७।१०। श्रीलक्ष्मी सहित विष्णु का पलंग पर रखकर पूजन करने से अक्षय-धन तथा दाम्पत्य सुख की प्राप्ति। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।५६ तक।
भ.दि. ७।१९ से सा. ६।१५ तक। मेषराशि रा. ७।३२। तृतीया श्राद्ध। ललितादेवी यात्रा ३। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ७।४७। पञ्चक समाप्ति रा. ७।३२।
चतुर्थी श्राद्ध। यायीजययोग सा. ५।५९ से। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ५।५९ तक।
वृषराशि रा. ९।५४। आज ही पञ्चमी तथा षष्ठी श्राद्ध। श्रीचन्द्रषष्ठी ६ व्रत (चन्द्रोदय व्यापिनी)। ❷ यायीजययोग रा. १२।१८ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।२ से।
भ.दि. ११।४ से रा. ९।५२ तक। सप्तमी श्राद्ध। यायीजययोग दि. २।३८ से। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग दि. २।३८ से। चन्द्रोदय रा. ९।१४। भरणी श्राद्ध। पार्वणविधि के अनुसार। ○
मिथुनराशि रा. १२।१९। जीवत्पुत्रिका ८ व्रत। जीमूतवाहनपूजा। अष्टमी श्राद्ध। गया मध्याष्टमी ८। महालक्ष्मी ८ व्रत। त्रिपुष्करयोग दि. ११।४ से दि. २।३८ तक। रवियोग दि. २।३८ तक।
प्रातः ६।२६ के बाद जीवत्पुत्रिका व्रत की पारणा। मातृनवमी ९। सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध। अन्वष्टका श्राद्ध। चन्द्रोदय रा. ११।५। लक्ष्मीकुण्ड में स्नान समाप्ति। ❖
भ.दि. ३।३२ से रा. २।४० तक। कर्कराशि रा. ३।४३। दशमी श्राद्ध। यमघंटयोग दि. १०।२३ तक। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग दि. ११।३६ तक।
इन्दिरा ११ एकादशी व्रत सबका। एकादशी श्राद्ध। ⊙सं.कन्याराशि का सूर्य सा. ५।२०। मु. ३० समा। फल समता। बाद का ६ घन्टा २४ मिनट पुण्यकाल। ♍ गृहवस्त्रदान। गोदावरी में स्नान। शरद् ऋतु प्रारम्भ। श्रीविश्वकर्मापूजा।
द्वादशी श्राद्ध। सन्यासी-यति वैष्णवों का श्राद्ध। सौरआश्विनमासारम्भ। यायीजययोग रा. १२।१६ से। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग दि. ८।५६ तक।
भ.रा. ११।४७ से। सिंहराशि दि. ८।४९। प्रदोष १३ व्रत त्रयोदशी श्राद्ध। मघा-त्रयोदशी श्राद्ध। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "मघेद्युत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" ❸ स्थायीजययोग रा. ११।४७ से।
भ.दि. ११।४७ तक। शस्त्र आदि से मृत व्यक्तियों का १४ चतुर्दशी श्राद्ध। ☐ महालय समाप्ति। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है।
कन्याराशि सा. ४।२२। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। सर्वपैत्री ३०। अज्ञात तिथि वालों का श्राद्ध। महाविष्णुप्रीत्यर्थ ब्राह्मण भोजन। पितृविसर्जन।☐

◐ रहता है। फसली नववर्षारम्भ। फसली सन् १४३३ प्रारम्भ। पौराणिकअगस्त्योदय दि. ११।१३। यायीजययोग रा. १०।४ से रा. १०।१५ तक। ○पितृपक्ष में भरणी श्राद्ध करने से पुण्य मिलता है। इस श्राद्ध को करने से गया श्राद्ध के समान फल मिलता है। रवियोग सा. ४।१९ से। ❖ ⊙उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का सूर्य दि. ७।२३। स्त्री.पु.-सू.सू. योग जम्बूक वाहन वातनाड़ी अधिपति रवि सामान्यवृष्टियोग। भानुसप्तमी ७। यायीजययोग दि. ८।४३ तक। रवियोग दि. ७।२३ से दि. १।२ तक।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. २ मंगल को रा. ८।५६ से। ति. ४ गुरु को सा. ५।५९ तक। श्लेषा/मघा- ति. १२ गुरु को दि. ८।५६ से। ति. १४ शनि को दि. ९।११ तक।
पञ्चक विचार- ति. ३ बुध को रा. ७।३२ तक। (☞ एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।)

जीवत्पुत्रिका तथा महालक्ष्मी व्रत का निर्णय- [illegible]

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	चं	५	२४	४९	२६	४	१५	२८	२३	२	२६	३३	३३	३	२२	४९	१४	११	०	४७	२४	१०	२३	५४	१४
२	मं	५	२५	२९	५४	४	१७	११	२५	२	२६	४३	१७	३	२४	१	३८	११	०	४२	३२	१०	२३	५१	३
३	बु	५	२६	१०	२३	४	१८	५४	२८	२	२६	५३	३	३	२५	१४	१	११	०	३७	३९	१०	२३	४७	५२
४	गु	५	२६	५०	५२	४	२०	३७	३०	२	२७	२	४९	३	२६	२६	२५	११	०	३२	४५	१०	२३	४४	४१
५	शु	५	२७	३१	२१	४	२२	२२	५२	२	२७	१२	३६	३	२७	३८	४९	११	०	२७	५२	१०	२३	४१	३०
६	श	५	२८	११	५१	४	२४	१०	५३	२	२७	२२	२१	३	२८	५१	१३	११	०	२२	५८	१०	२३	३८	२०
७	र	५	२८	५२	२०	४	२५	५८	५५	२	२७	३२	७	४	०	३	३६	११	०	१८	५	१०	२३	३५	९
८	चं	५	२९	३२	४९	४	२७	४६	५६	२	२७	४१	५२	४	१	१६	१३	११	०	१३	११	१०	२३	३१	५८
१०	मं	६	०	१३	१८	४	२९	३४	५७	२	२७	५१	३८	४	२	२८	५३	११	०	८	१८	१०	२३	२८	४७
११	बु	६	०	५३	४७	५	१	२३	३२	२	२८	१	२३	४	३	४१	३४	११	०	३	२४	१०	२३	२५	३६
१२	गु	६	१	३४	१६	५	३	११	३४	२	२८	११	९	४	४	५४	१४	१०	२९	५८	३१	१०	२३	२२	२५
१३	शु	६	२	१४	४५	५	४	५९	३६	२	२८	२०	४९	४	६	६	५४	१०	२९	५३	३७	१०	२३	१९	१५
१४	श	६	२	५५	१४	५	६	४७	३८	२	२८	२८	४४	४	७	१९	३५	१०	२९	४८	४४	१०	२३	१६	४
३०	र	६	३	३५	४३	५	८	३५	४१	२	२८	३६	४२	४	८	३२	१५	१०	२९	४३	५०	१०	२३	१२	५३

ग्रहचार- मंगल-ति. ८ सोम को तुलाराशि में रा. १०।१।। बुध- ति. ७ रवि को उत्तराफाल्गुनी में दि. ३।११ ति. १० मंगल को कन्याराशि में दि. ११।२७। ति. ३० रवि को हस्त में रा. १२।४२।। गुरु-ति. १ सोम को पुनर्वसु ३ चरण में रा. ९।४५।। शुक्र-ति. ६ शनि को मघा तथा सिंहराशि में रा. ४।४०।। वक्रीशनि-ति. ११ बुध को वक्री होकर पूर्वाभाद्रपद ३ चरण तथा कुम्भराशि में रा. १०।३७।। राहु-ति. १२ गुरु को पूर्वाभाद्रपद १ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी ३ चरण में रा. १२।९।। (☞ एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।)

२३ पं० आश्विनकृष्ण ८ सोम

अहर्गण ३८९८

अयनांश २४।१२।१०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	२	५	४	२	४	११	१०	४
२७	३	२९	२७	२७	१	०	२३	२३
३५	१७	३२	४६	४१	१६	१३	३१	३१
१०	४७	४९	५६	५२	१३	११	५८	५८
५८	८५४	४०	१०८	९	७२	४	३	३
२८	३४	२९	१	४६	४०	५	११	११
						व.		

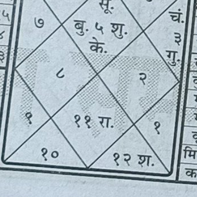

विविधमुहूर्त्त-ति. १ सोम को पू.भा. में भौमवेध है। ति. २ मंगल को उ.भा. में भौम का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। रा.८।५६ के बाद रेवती में पश्चिम दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। रात्रिशेष में सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति.३ बुध को भद्रा (दि.७।१९) से पूर्व रेवती में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन नवीनवस्त्रधारण पश्चिम दिशा की यात्रा दँवरी औषध सेवन विपणि वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ४ गुरु को अश्विनी में सूर्यवेध है। चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ शुक्र को भरणी में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ शनि को कृत्तिका में भद्रा (दि.११।४) से पूर्व वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ७ रवि को रोहिणी में सप्तमी में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण शिल्पविद्या विपणि ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। दि.१।२ के बाद मृगशिरा में नवान्नभक्षण वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ सोम को मृगशिरा में प्रा.६।२६ तक शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति.१० मंगल को व्यतिपात (प्रा.७।६) के बाद आर्द्रा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। दि.१०।२३ के बाद भद्रा (दि.३।३२) से पूर्व पुनर्वसु में पुंसवनसीमन्त सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. ११ बुध को पुनर्वसु में पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम दिशा की यात्रा शिल्पविद्या ☞

तिथि ल.अ.	१ चं घं.	मि.	२ मं घं.	मि.	३ बु घं.	मि.	४ गु घं.	मि.	५ शु घं.	मि.	६ श घं.	मि.	७ र घं.	मि.	८ चं घं.	मि.	१० मं घं.	मि.	११ बु घं.	मि.
सिंह	६	२८	६	२४	६	२१	६	१८	६	१४	६	१०	६	७	६	३	५	५९	५	५६
कन्या	८	४१	८	३७	८	३४	८	३०	८	२७	८	२३	८	२०	८	१६	८	१२	८	९
तुला	१०	५७	१०	५३	१०	५०	१०	४६	१०	४३	१०	३९	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२५
वृश्चिक	१	१४	१	१०	१	७	१	३	१	०	१२	५६	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४२
धनु	३	२०	३	१६	३	१३	३	९	३	६	३	२	२	५९	२	५५	२	५१	२	४८
मकर	५	७	५	३	५	०	४	५६	४	५३	४	४९	४	४६	४	४२	४	३८	४	३५
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कुम्भ	६	३८	६	३४	६	३१	६	२७	६	२४	६	२०	६	१७	६	१३	६	९	६	६
मीन	८	६	८	२	७	५९	७	५५	७	५२	७	४८	७	४५	७	४१	७	३७	७	३४
मेष	९	४३	९	३९	९	३६	९	३२	९	२९	९	२५	९	२२	९	१८	९	१४	९	११
वृष	११	३९	११	३५	११	३२	११	२८	११	२५	११	२१	११	१८	११	१४	११	१०	११	७
मिथुन	१	५३	१	४९	१	४६	१	४२	१	३९	१	३५	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१
कर्क	४	११	४	७	४	४	४	०	३	५७	३	५३	३	५०	३	४६	३	४२	३	३९

तिथि ल.अ.	१२ गु घं.	मि.	१३ शु घं.	मि.	१४ श घं.	मि.	३० र घं.	मि.
कन्या	८	५	८	१	७	५८	७	५४
तुला	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	१०
वृश्चिक	१२	३८	१२	३४	१२	३१	१२	२७
धनु	२	४४	२	४०	२	३७	२	३३
मकर	४	३१	४	२७	४	२४	४	२०
कुम्भ	६	२	५	५८	५	५५	५	५१
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	७	३०	७	२६	७	२३	७	१९
मेष	९	७	९	३	९	०	८	५६
वृष	११	३	१०	५९	१०	५६	१०	५२
मिथुन	१	१७	१	१३	१	१०	१	६
कर्क	३	३५	३	३१	३	२८	३	२४
सिंह	५	४९	५	४५	५	४२	५	३८

२४ पं० आश्विनकृष्ण ३० रवि

अहर्गण ३९०४

अयनांश २४।१२।११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	४	६	५	२	४	१०	१०	४
३	२४	३	८	२८	८	२९	२३	२३
२६	२९	३५	३५	३६	३२	४३	१२	१२
३५	२०	४३	४१	४२	१५	५०	५३	५३
५८	७७२	४०	१०८	७	७२	४	३	३
४१	४४	३९	२	५७	४०	५	११	११
						व.		

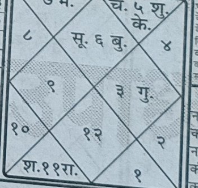

❖ औषधसेवन वाहन खरीदने का मुहूर्त है। पुष्य में भूम्युपवेशन दोलारोहण सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (एकादशी में) विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है। ति. १२ गुरु को पुष्य में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि व्यापार वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त है। श्लेषा में वस्तुविक्रय मुहूर्त है। **इसके बाद मासान्तदोष है।**

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल शरद् ऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.
३०	५	१	चं	४८	२०	रा	१	१९	उ.फा.	१३	३५	दि	११	२५	शुक्ल	३७	२६	रा	८	५७	किं	१७	५	वव	४८	२०
३०	१	२	मं	५२	१	रा	२	४८	हस्त	१८	६	दि	१	१४	ब्रह्म	३७	३२	रा	९	१	वा	२०	११	कौ	५२	१
२९	५८	३	बु	५६	३२	रा	४	३७	चित्रा	२३	३६	दि	३	२६	ऐन्द्र	३८	२०	रा	९	२०	तै	२४	१७	गर	५६	३२
२९	५४	४	गु	६०	०	स	म	स्त	स्वाती	२९	४५	सा	५	५५	वैधृति	३९	३६	रा	९	५१	व	२९	४	भ	६०	०
२९	५०	४	शु	१	३५	प्रा	६	४०	विशाखा	३६	१७	रा	८	३३	विष्कुम्भ	४१	७	रा	१०	२९	भ	१	३५	वव	३४	१२
२९	४६	५	श	६	४८	दि	८	४६	अनुराधा	४२	४१	रा	११	७	प्रीति	४२	२९	रा	११	३	वा	६	४८	कौ	३९	१५
२९	४३	६	र	११	४२	दि	१०	४४	ज्येष्ठा	४८	३५	रा	१	२९	आयुष्मान	४३	२९	रा	११	२७	तै	११	४२	गर	४३	४९
२९	३९	७	चं	१५	५५	दि	१२	२६	मूल	५३	४२	रा	३	३३	सौभाग्य	४३	५१	रा	११	३६	व	१५	५५	भ	४७	३२
२९	३५	८	मं	१९	९	दि	१	४५	पू.षा.	५७	४१	रा	५	९	शोभन	४३	२०	रा	११	२५	वव	१९	९	वा	५०	१३
२९	३२	९	बु	२१	१७	दि	२	३७	उ.षा.	६०	०	स	म	स्त	अतिगण्ड	४२	०	रा	१०	५४	कौ	२१	१७	तै	५१	४२
२९	२८	१०	गु	२२	६	दि	२	५६	उ.षा.	०	३१	प्रा	६	१८	सुकर्मा	३९	३५	रा	९	५६	गर	२२	६	व	५१	५१
२९	२४	११	शु	२१	३५	दि	२	४५	श्रवण	२	५	प्रा	६	५७	धृति	३६	१२	रा	८	३६	भ	२१	३५	वव	५०	४३
२९	२१	१२	श	१९	५१	दि	२	४	धनिष्ठा	२	२६	प्रा	७	६	शूल	३१	४८	सा	६	५१	वा	१९	५१	कौ	४८	२६
२९	१७	१३	र	१७	०	दि	१२	५७	शतभिष	१ / ५८	३६ / ११	प्रा	६ / ६	४७ / ४	गण्ड	२६	३५	सा	४	४७	तै	१७	०	गर	४५	५
२९	१३	१४	चं	१३	१०	दि	११	२६	उ.भा.	५७	६	रा	५	०	वृद्धि	२०	३६	दि	२	२४	व	१३	१०	भ	४०	५१
२९	१०	१५	मं	८	३१	दि	९	३४	रेवती	५३	४६	रा	३	४०	ध्रुव	१३	५७	दि	११	४५	वव	८	३१	वा	३५	५३

योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति उ.द.	+−	रे. अं. −मि.		चन्द्रास्त स्टै. टा.	
श्रीवत्स	२२	१५	५	६	३१			५	५९	६	१	५	४	२५	१६	०	२७	−	९	−	−
सौम्य	२३	१६	६	७	१	तुला	५०।५१	६	०	६	०	५	५	२४	०	उ.	३	−	१०	६	३६
कालदण्ड	२४	१७	७	८	२			६	०	६	०	५	६	२२	४७	द.	२०	−	१०	७	७
सुस्थिर	२५	१८	८	९	३			६	१	५	५९	५	७	२१	३६	०	४३	−	१०	७	४१
मातङ्ग	२६	१९	९	१०	४	वृश्चिक	११।३९	६	२	५	५८	५	८	२०	२७	१	३	−	१०	८	१८
अमृत	२७	२०	१०	११	५			६	३	५	५७	५	९	१९	२१	१	३०	−	११	९	०
काण	२८	२१	११	१२	६	धनु	४८।३५	६	३	५	५७	५	१०	१८	१७	१	५३	−	११	९	४७
लुम्बक	२९	२२	१२	१३	७			६	४	५	५६	५	११	१७	१५	२	१७	−	११	१०	३९
मित्र	३०	२३	१३	१४	८			६	५	५	५५	५	१२	१६	१५	२	४०	−	१२	११	३७
वज्र	१	२४	१४	१५	९	मकर	१३।२४	६	६	५	५४	५	१३	१५	१८	३	३	−	१२	१२	३६
सौम्य	२	२५	१५	१६	१०			६	६	५	५४	५	१४	१४	२३	३	२७	−	१३	१	३७
धूम्र	३	२६	१६	१७	११	कुम्भ	३२।१६	६	७	५	५३	५	१५	१३	३१	३	५०	−	१३	२	३८
प्रवर्धमान	४	२७	१७	१८	१२			६	८	५	५२	५	१६	१२	४०	४	१३	−	१३	३	४०
राक्षस	५	२८	१८	१९	१३	मीन	४५।१४	६	९	५	५१	५	१७	११	५३	४	३६	−	१३	४	४३
गद	६	२९	१९	२०	१४			६	१०	५	५०	५	१८	११	७	४	५९	−	१४	५	४७
शुभ	७	३०	२०	२१	१५	मेष	५३।४६	६	१०	५	५०	५	१९	१०	२४	५	२२	−	१४	−	−

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
										२	२८	४४	३९	४	९	४४	५५	१०	२९	३८	५७	१०	२३	९	४२
१	चं	६	४	१६	१०	५	१०	२३	४३	२	२८	५२	३६	४	१०	५७	३५	१०	२९	३४	३	१०	२३	६	३१
२	मं	६	४	५७	२	५	१२	११	४५	२	२९	०	३४	[illegible]				[illegible]				१०	२३	३	२१
३	बु	६	५	३८	६	५	१३	५९	४७	२	२९	८	३१	[illegible]				[illegible]				१०	२३	०	१०
४	गु	६	६	१९	१०	५	१५	४७	४९	२	२९	१६	२८	[illegible]				[illegible]				१०	२२	५६	५९
४	शु	६	७	०	१४	५	१७	३५	४१	२	२९	२४	२६	[illegible]				[illegible]				१०	२२	५३	४८
५	श	६	७	४१	१७	५	१९	२२	३८	२	२९	३२	२३	[illegible]				[illegible]				१०	२२	५०	३७
६	र	६	८	२२	२१	५	२१	८	४८	२	२९	४०	२०	[illegible]				[illegible]				१०	२२	४७	२७
७	चं	६	९	३	२५	५	२२	५४	४६	२	२९	४८	१७	[illegible]				[illegible]				१०	२२	४४	१६
८	मं	६	९	४४	२९	५	२४	४०	४५	२	२९	५६	१३	[illegible]				[illegible]				१०	२२	४१	५
९	बु	६	१०	२५	३२	५	२६	१०	१९	३	०	४	१०	[illegible]				[illegible]				१०	२२	३७	५४
१०	गु	६	११	६	३६	५	२८	५	४२	३	०	१२	६	[illegible]				[illegible]				१०	२२	३४	४३
११	शु	६	११	४८	२	५	२९	४६	४१	३	०	२०	३	[illegible]				[illegible]				१०	२२	३१	३३
१२	श	६	१२	३०	५४	६	१	२७	४०	३	०	२७	५९	[illegible]				[illegible]				१०	२२	२८	२२
१३	र	६	१३	१३	४६	६	३	८	४०	३	०	३५	१	[illegible]				[illegible]				१०	२२	२५	११
१४	चं	६	१३	५६	३९	६	४	४७	८	३	०	४०	४८	[illegible]				[illegible]				१०	२२	२२	०
१५	मं	६	१४	३९	३१	६	६	२४	२२					[illegible]											

ग्रहचार-मंगल-ति. ४ गुरु को स्वाती में सा. ६।११।। बुध-ति. ७ सोम को चित्रा में दि. ११।४७। ति. ११ शुक्र को तुलाराशि में दि. ९।१७। ति. १५ मंगल को स्वाती में दि. १०।२।। गुरु- ति. ९ बुध को पुनर्वसु ४ चरण तथा कर्कराशि में सा. ५।३१।। शुक्र-ति. ३ बुध को पूर्वाफाल्गुनी में रा. ५।२। ति. १३ रवि को उत्तराफाल्गुनी में रा. २।२।। वक्रीशनि-पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में ।। राहु-पूर्वाभाद्रपद १ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी ३ चरण में ।।

२५ पं० आश्विनशुक्ल ८ मंगल

अहर्गण ३९१३

अयनांश २४।१२।२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	८	६	५	२	४	१०	१०	४
१२	१४	९	२४	२९	१९	२८	२२	२२
१६	३८	४४	४०	४८	३०	५९	४४	४४
१५	४०	२९	४५	१७	३७	४९	१६	१६
५९	७५०	४१	८९	७	७३	४	३	३
३	१२	३	३४	५६	४१	५४ व.	११	११

विविधमुहूर्त्त-ति. १ सोम को उ.फा. में सूर्ययुति है। हस्त में सूर्यभोग्य है। ति. २ मंगल को हस्त में पूर्वदोष है। चित्रा में भौमयुति है। ति. ३ बुध को चित्रा में पूर्वदोष है। स्वाती में भौमभोग्य तथा वैधृति है। ति. ४ गुरु को स्वाती में पूर्वदोष तथा रिक्तादोष है। ति. ४ शुक्र को प्रा. ६।४० के बाद विशाखा में नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। रा. ८।३३ के बाद अनुराधा में गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा औषधसेवन मुहूर्त्त है। ति. ५ शनि को अनुराधा में कृष्णवस्त्रधारण पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (पंचमी में) वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ६ रवि को ज्येष्ठा में पशुओं की खरीद-बिक्री ऑपरेशन शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ७ सोम को मूल में भद्रा (दि. १२।२६) से पूर्व शिशुताम्बूलभक्षण दँवरी औषधसेवन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ मंगल को दि. १।४५ तक पू.षा. में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ९ बुध को रिक्ता (दि. २।३७) के बाद उ.षा. में गर्भाधान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण शिल्पविद्या विपणि मुहूर्त्त है। ति. १० गुरु को प्रा. ६।१८ के बाद श्रवण में अन्नप्राशन गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग पूर्व दिशा की यात्रा दँवरी नवान्नभक्षण वस्तुक्रय वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। अभिजित् मुहूर्त्त दि. ११।३६ से दि. १२।२३ तक। अपराह्नकाल दि. १।१० से दि. ३।३२ तक। विजयमुहूर्त्त दि. १।५८ से दि. २।४५ तक अथवा तारकोदयकाल में। ति. ११ शुक्र को भद्रा (दि. २।४५) बाद धनिष्ठा में गर्भाधान नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण औषधसेवन वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १२ शनि को ☞

तिथि	१ चं	२ मं	३ बु	४ गु	४ शु	५ श	६ र	७ चं	८ मं	९ बु	१० गु	११ शु	१२ श	१३ र	१४ चं	१५ मं
ल.अ.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
कन्या	७ ५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ०	६ ५६
तुला	१० ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] १६	९ १२
वृश्चिक	१२ २४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ३३	११ २९
धनु	२ ३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ३९	१ ३५
मकर	४ १७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] २६	३ २२
कुम्भ	५ ४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ५७	४ ५३
ल.अ.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
मीन	७ १६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] २५	६ २१
मेष	८ ५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] २	७ ५८
वृष	१० ४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ५८	९ ५४
मिथुन	१ ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] १२	१२ ८
कर्क	३ २१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ३०	२ २६
सिंह	५ ३५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ४४	४ ४०

आश्विनशुक्लपक्ष ।।

◆दौहित्रकर्तृक मातामह (नाना) का श्राद्ध। पिता के जीवित होने पर भी नाना का श्राद्ध करना चाहिए। शारदनवरात्रारम्भ। कलशस्थापन तथा ध्वजारोपण। प्रतिपदा को◆
तुलाराशि रा. २।२०। ◡चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। द्वितीया को रशमीपट्ट केश हेतु। ⊙सायन तुलाराशि का सूर्य दि. ३।४७। राष्ट्रीयआश्विन❶
मु. रविउस्सानी ४ हिजरी सन् १४४७। तृतीया को दर्पण, सिन्दूर तथा अलता का समर्पण। रवियोग दि. ३।२६ से। ❶मास दि. ३०। द्विपुष्करयोग दि. १।१४ से रा. २।४८ तक।
भ. सा. ५।३९ से। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। मधुपर्कं चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्रमण्डनम्। रवियोग सा. ५।५५ तक। ◐पुनः रवियोग रा. ११।७ से। ☐ रवियोग रा. ८।३३ से।
भ. प्रा. ६।४० तक। वृश्चिकराशि दि. ११।३९। उपाङ्गललिता ५ व्रत। पञ्चमी को अङ्गराग (शरीर में लगाने योग्य द्रव्य) एवं शक्ति के अनुसार समर्पण। स्थायीजययोग प्रा. ६।४० तक।
⊙हस्त नक्षत्र का सूर्य रा. १०।३६। स्त्री.नपुं.-सू.सू. योग चातक वाहन चंडानाड़ी अधिपति शनि खण्डवृष्टियोग। यायीजययोग दि. ८।४६ तक। रवियोग रा. १०।३६ तक।
धनुराशि रा. १।२९। प्रातः काल बेल वृक्ष को आमंत्रण। षष्ठी को सायंकाल में बेलवृक्ष पर देवी का पूजन एवं आवाहन। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।२९ से। रवियोग रा. १।२९ तक।
भ. दि. १२।२६ से रा. १।१५ तक। सप्तमी को प्रातः काल बेल लाकर पूजन करना चाहिए। पत्रिका प्रवेशन। मूल नक्षत्र में सरस्वती का आवाहन। निशीथकाल☒
महाष्टमी ८ व्रत। अष्टमी को उपवास पूर्वक यथाशक्ति पूजन करना चाहिए। अन्नपूर्णापरिक्रमा दि. १।४५ तक। पू.षा. में सरस्वती का पूजन। सायंत्रिमुहूर्त नवमी में श्रीमहानवमी ९ व्रत।
मकरराशि दि. ११।२८। उ.षा. में बलि दान तथा सरस्वती पूजन। नवमी के अन्त में बलिदान करके देवी पूजन। नवमी में होम आदि। दशमी में नवरात्र व्रत की पारणा। ❷
भ. रा. २।५० से। श्रीदुर्गाविसर्जन। श्रवण नक्षत्र में सरस्वती विसर्जन। दशमी तिथि तथा श्रवण नक्षत्र के योग में विजयादशमी १०। शमीपूजन। जयन्तीग्रहण। अपराजितापूजा। ◯
भ. दि. २।४५ तक। कुम्भराशि रा. ७।१। पापाङ्कुशा ११ एकादशी व्रत सबका। काशी में प्रसिद्ध नाटी इमली का भरतमिलाप। पञ्चक प्रारम्भ रा. ७।१। सर्वार्थसिद्धियोग
शनिप्रदोष १३ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए/पद्मनाभ द्वादशी १२ व्रत। दुग्धदान। दाल त्याग व्रतारम्भ। द्विपुष्करयोग प्रा. ७।६ तक। ◐प्रा. ६।५७ तक। रवियोग प्रा. ६।५७ तक।
मीनराशि रा. १२।१५। सर्वार्थसिद्धियोग रा.शे. ६।४ से। रवियोग प्रा. ६।४७ से रा.शे. ६।४ तक। ●पञ्चक समाप्ति रा. ३।४०। पाराशरजयन्ती। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा. ३।४० से।
भ. दि. ११।२६ से रा. १०।३० तक। व्रत की १५ पूर्णिमा। शरत्पूर्णिमा १५। कोजागरी १५। रात्रि में लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेर आदि की पूजा। यायीजययोग दि. ११।२६ से।
मेषराशि रा. ३।४०। स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। महर्षिवाल्मीकीजयन्ती। कार्तिकव्रत-स्नान-यम-नियम का आरम्भ। कार्तिक मास दीपदानारम्भ। ओली समाप्ति (जैन)।●

२६पं० आश्विनशुक्ल १५ मंगल

अहर्गण ३९२०

अयनांश २४।१२।३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	११	६	६	३	४	१०	१०	४
१९	१७	१४	६	०	२८	२८	२२	२२
१०	२०	३९	२४	४०	६	३२	२२	२२
२४	५३	३१	२२	४८	१८	७	०	०
५९	८४	४२	९७	५	७३	३	३	३
१९	४	५२	१५	४७	४०	४४ व.	११	११

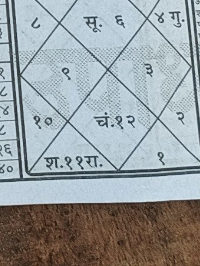

◆केश पवित्र हेतु (चन्दन, लेप व त्रिफला)। महाराजा अग्रसेनजयन्ती। यायीजययोग रा. ११।२९ तक। ☒में महानिशापूजा तथा बलिदान आदि। अन्नपूर्णा परिक्रमा दि. १२।२६ से। ओलीप्रारम्भ (जैन)। ◕ श्रीदुर्गानवमी। नवमी को चण्डदेवी का पूजन तथा बलिदान आदि करना। सन्धिपूजा। स्थायीजययोग दि. १।४५ तक। रवियोग रा. ५।१ से। ❷ बौधावतार १० (सायं)। मन्वादि ९। रवियोग समस्त। अक्टूबर १०। ◯ सीमा का उल्लंघन। नीलकण्ठदर्शन। विजययात्रा। राज चिन्ह तथा अपराजिता देवी का पूजन। पट्टाभिषेक पूजन। राजा द्वारा अपनी सीमा का उल्लंघन कर दूसरे के क्षेत्र में जाकर शावरों के साथ उत्सव करना। श्रीसाईंबाबा पुण्यतिथि। महात्मागांधी-शास्त्री जयन्ती।

देवी आगमन एवं वाहन का फल- रविवार- सोमवार को देवी का आगमन हाथी पर। शनिवार- मंगलवार को देवी का आगमन घोड़े पर। बुधवार- को देवी का आगमन नौका पर। गुरुवार- शुक्रवार को देवी आगमन डोली पर होता है। हाथी पर देवी आगमन से वर्षा होती है। घोड़े पर आगमन से छत्रभंग होता है। नौका पर आगमन से सर्वसिद्धि होती है। डोली पर देवी आगमन से मृत्युभय होता है। देवी गमन एवं वाहन का फल- रविवार- सोमवार को विजयादशमी हो तो भैंसा पर। शनिवार- मंगलवार को विजयादशमी हो तो मुर्गा पर। बुधवार- शुक्रवार को विजयादशमी हो तो हाथी पर। गुरुवार को हो तो नर वाहन पर देवी का गमन होता है। भैंसा पर गमन से रोग-शोक। मुर्गा पर गमन से व्याकुलता। हाथी पर गमन से शुभ एवं वृष्टि। नरवाहन गमन से सुख एवं शुभता को प्रदान करने वाला होता है।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ५ शनि को रा. ११।७ से। ति. ७ सोम को रा. ३।३३ तक। रेवती/अश्विनी- ति. १४ सोम को रा. ५।० से।

पञ्चक विचार- ति. ११ शुक्र को रा. ७।१ से। ति. १५ मंगल को रा. ३।४० तक।

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में कलश स्थापन विधि- [illegible]

☞ धनिष्ठा में कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। शतभिष में भौमवेध है। ति. १३ रवि को प्रा. ६।४७ के बाद पू.भा. में राहुयुति है। ति. १४ सोम को उ.भा. में सूर्यवेध तथा भद्रा है। ति. १५ मंगल को रेवती में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन उत्तरगोल शरद् ऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.						नक्षत्र						योग						करण						योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	–	रे.अं. –	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२९	६	१	बु	३ ५४	१५ १६	प्रा	७ ५	२१ ११	अश्विनी	४९	५६	रा	२	९	व्याघात	६ ५२	४६ २८	प्रा	८ ५	५३ ५३	कौ	३	१५	तै	३० ५७	२३ ३१	मृत्यु	८	१	२१	२२	१६			६	११	५	४९	५	२०	९	४३	५	४५	–	१४	६	२१
२९	२	३	गु	५१	३२	रा	२	४९	भरणी	४५	४९	रा	१२	३२	वज्र	५१	२८	रा	२	४७	व	२४	३२	भ	५१	३२	पद्म	९	२	२२	२३	१७	वृष	५९।४६	६	१२	५	४८	५	२१	९	५	६	८	–	१५	७	६
२८	५९	४	शु	४५	२९	रा	१२	२४	कृत्तिका	४१	३५	रा	१०	५०	सिद्धि	४३	३५	रा	११	३८	वव	१८	३१	बा	४५	२९	छत्र	१०	३	२३	२४	१८			६	१२	५	४८	५	२२	८	२८	६	३१	–	१५	७	५८
२८	५५	५	श	३९	३४	रा	१०	३	रोहिणी	३७	३०	रा	९	१३	व्यतिपात	३५	५१	रा	८	३३	कौ	१२	३२	तै	३९	३४	श्रीवत्स	११	४	२४	२५	१९			६	१३	५	४७	५	२३	७	५४	६	५४	–	१५	८	५६
२८	५२	६	र	३३	५९	रा	७	५०	मृगशिरा	३३	४५	रा	७	४४	वरीयान	२८	२३	सा	५	३५	गर	६	४७	व	३३	५९	सौम्य	१२	५	२५	२६	२०	मिथुन	५।३८	६	१४	५	४६	५	२४	७	२२	७	१६	–	१५	१०	०
२८	४८	७	चं	२८	५६	सा	५	४८	आर्द्रा	३०	३१	सा	६	२६	परिघ	२१	१८	दि	२	४५	भ	१	२८	वव	२८ ५६	५६ ४७	कालदण्ड	१३	६	२६	२७	२१			६	१४	५	४६	५	२५	६	५३	७	३९	–	१६	११	५
२८	४४	८	मं	२४	३८	सा	४	६	पुनर्वसु	२८	४	सा	५	२९	शिव	१४	४९	दि	१२	११	कौ	२४	३८	तै	५२	५५	सुस्थिर	१४	७	२७	२८	२२	कर्क	१३।४१	६	१५	५	४५	५	२६	६	२६	८	१	–	१६	१२	९
२८	४१	९	बु	२१	११	दि	२	४४	पुष्य	२६	२५	सा	४	५०	सिद्ध	९	१	दि	९	५२	गर	२१	११	व	४९	५९	मातङ्ग	१५	८	२८	२९	२३			६	१६	५	४४	५	२७	६	१	८	२४	–	१६	१	१०
२८	३७	१०	गु	१८	४६	दि	१	४६	श्लेषा	२५	४९	सा	४	३६	साध्य	४ ५५	९ ५४	प्रा	७ ६	५२ १४	भ	१८	४६	वव	४८	१०	अमृत	१६	९	२९	३०	२४	सिंह	२५।४९	६	१६	५	४४	५	२८	५	३९	८	४६	–	१६	२	८
२८	३३	११	शु	१७	३४	दि	१	१९	मघा	२६	२४	सा	४	५१	शुक्ल	५६	४७	रा	५	०	बा	१७	३४	कौ	४७	३६	काण	१७	१०	३०	३१	२५			६	१७	५	४३	५	२९	५	१९	९	८	–	१६	३	३
२८	३०	१२	श	१७	३७	दि	१	२१	पू.फा.	२८	१५	सा	५	३६	ब्रह्म	५४	३९	रा	४	१०	तै	१७	३७	गर	४८	१९	लुम्बक	१८	११	१	१	२६	कन्या	४४।२	६	१८	५	४२	६	०	५	१	९	३०	–	१७	३	५५
२८	२६	१३	र	१९	०	दि	१	५५	उ.फा.	३१	२२	सा	६	५२	ऐन्द्र	५३	३४	रा	३	४५	व	१९	०	भ	५०	१७	मित्र	१९	१२	२	२	२७			६	१९	५	४१	६	१	४	४५	९	५२	–	१७	४	४७
२८	२३	१४	चं	२१	३३	दि	२	५६	हस्त	३५	३५	रा	८	३३	वैधृति	५३	२०	रा	३	३९	श	२१	३३	च	५३	२५	वज्र	२०	१३	३	३	२८			६	१९	५	४१	६	२	४	३२	१०	१३	–	१७	५	३९
२८	१९	३०	मं	२५	१६	सा	४	२६	चित्रा	४०	५३	रा	१०	४१	विष्कुम्भ	५३	५३	रा	३	५३	नाग	२५	१६	किं	५७	३५	ध्वांक्ष	२१	१४	४	४	२९	तुला	८।१४	६	२०	५	४०	६	३	४	२१	१०	३५	–	१७	–	–

कार्तिककृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि १६ आश्विन से २९ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक ८ अक्टूबर से २१ तक सन् २०२५ ई.।।

कार्तिक मास में चातुर्मास्यव्रती को दाल खाना वर्जित है। अशून्यशयन २ व्रत। चन्द्रोदय रा. ६।२१। श्री लक्ष्मी सहित विष्णु का पलंग पर रखकर पूजन करने से ◆

भ. सा. ४।१ से रा. २।४९ तक। वृषराशि रा.शे. ६।६। यायीजययोग रा. १२।३२ तक। यमघंटयोग रा. १२।३२ से। ❷यायीजययोग सा. ५।३६ से

संकष्टी करक(करवा) श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ७।५८। चन्द्रमा को अर्घ्यदान। दशरथचतुर्थी (बंगाल)। स्थायीजययोग रा. १०।५० तक। यमघंटयोग रा. १०।५० से

⊙चित्रा नक्षत्र का सूर्य दि. ११।६। स्त्री.पु.-सू.सू. योग नाग वाहन वातनाड़ी अधिपति रवि सामान्यवृष्टियोग। यायीजययोग रा. ९।१३ तक। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा. ९।१३ तक

भ. रा. ७।५० से। मिथुनराशि दि. ८।२९। रवियोग रा. ७।४४ से। ❍को दान करना चाहिए। धनवन्तरिजयन्ती १३। कामेश्वरीजयन्ती १३। सौरकार्तिकमासारम्भ। ❷

भ. प्रा. ६।४९ तक। अहोई ८ व्रत। चन्द्रोदय रा. ११।५। रवियोग सा. ६।२६ तक। ❶ रात्रि के अन्त में दरिद्रा का निःसारण। निशीथकाल में महाकालीपूजा।

कर्कराशि दि. ११।४३। श्रीराधाजयन्ती ८। अरुणोदयकाल में मथुरा में श्री राधाकुण्ड में स्नान।

भ. रा. २।१६ से। ◆अक्षय-धन तथा दाम्पत्य सुख की प्राप्ति। प्रार्थनामन्त्रः-पत्नी भर्तृवियोगं च भर्ता-भार्या समुद्भवम्। नाप्नुवंति यथा दुखं दाम्पत्यानि तथा कुरु।

भ.दि. १।४६ तक। सिंहराशि सा. ४।३६। यायीजययोग दि. १।४६ से सा. ४।३६ तक। ◐पुण्यकाल। दीप-तिल-गोरस आदि का दान। गोदावरी स्नान।स्थायीजययोग दि. १।१९ से।

रम्भा ११ एकादशी व्रत सबका। गोवत्सद्वादशी १२ व्रत (प्रदोष में)। ⊙सं.तुलाराशि का सूर्य रा. ४।१६। मु. ३० समा। फल समता। पूर्व का ६ घण्टा २४ मिनट ◐

कन्याराशि रा. ११।५५। शनिप्रदोष १३ व्रत। *पुत्र प्राप्ति के लिए।* धनत्रयोदशी १३(धनतेरस)। सायं काल घर से बाहर मृत्युनिवारक चार बत्तियों वाला दीपक यमराज ❍

भ.दि. १।५५ से रा. २।२६ तक। मासशिवरात्रि १३ व्रत। “भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।” सायं मेषलग्न में श्रीहनुमानजन्म। नरकचतुर्दशी १४ (चन्द्रोदय व्यापिनी)। ◐

दीपावली ३० (प्रदोष में)। साभ्यंग स्नान। प्रातःयम को तर्पण। प्रातः हनुमान जी का दर्शन तथा पूजन। लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेरादि की पूजा। सायं देवमन्दिरों में दीपदान। ❶

तुलाराशि दि. ९।३८। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। महावीर निर्वाण दिवस (जैन)। भौमवती अमावस्या। यदि अमावस्या के दिन मंगलवार पड़े तो ●

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	बु	६	१५	२२	२३	६	८	१	३७	३	०	४६	३५	४	२९	१९	५८	१०	२८	२८	२३	१०	२२	१८	४९
३	गु	६	१६	५	१५	६	९	३८	२७	३	०	५२	२२	५	०	३३	३८	१०	२८	२४	३८	१०	२२	१५	३९
४	शु	६	१६	४८	७	६	११	१४	५७	३	०	५८	८	५	१	४७	१८	१०	२८	२०	५३	१०	२२	१२	२८
५	श	६	१७	३०	५९	६	१२	४५	२५	३	१	३	५५	५	३	०	५८	१०	२८	१७	८	१०	२२	९	१७
६	र	६	१८	१३	५२	६	१४	१५	३७	३	१	९	४२	५	४	१४	४९	१०	२८	१३	२४	१०	२२	६	६
७	चं	६	१८	५६	४४	६	१५	४५	४९	३	१	१५	२८	५	५	२८	४५	१०	२८	९	४०	१०	२२	२	५५
८	मं	६	१९	३९	३६	६	१७	१६	१	३	१	२१	१५	५	६	४२	४१	१०	२८	५	५६	१०	२१	५९	४४
९	बु	६	२०	२२	२८	६	१८	४४	१३	३	१	२७	२	५	८	५६	३७	१०	२८	२	१३	१०	२१	५६	३४
१०	गु	६	२१	५	२०	६	२०	५	४३	३	१	३२	४८	५	९	१०	३३	१०	२७	५८	२९	१०	२१	५३	२३
११	शु	६	२१	४८	१२	६	२१	२७	१४	३	१	३८	३४	५	१०	२४	२९	१०	२७	५४	४५	१०	२१	५०	१२
१२	श	६	२२	३१	४	६	२२	४८	४४	३	१	४४	१९	५	११	३८	२५	१०	२७	५२	८	१०	२१	४७	१
१३	र	६	२३	१३	५७	६	२४	१०	१४	३	१	५०	५	५	१२	५२	२१	१०	२७	४९	३३	१०	२१	४३	५०
१४	चं	६	२३	५६	४९	६	२५	२६	४०	३	१	५५	५१	५	१४	६	१७	१०	२७	४६	५८	१०	२१	४०	४०
३०	मं	६	२४	३९	४१	६	२६	३७	५४	३	२	१	३६	५	१५	२०	१३	१०	२७	४४	२३	१०	२१	३७	२९

ग्रहचार-मंगल-ति. ८ मंगल को विशाखा में सा. ५।४०।। बुध-ति. ९ बुध को विशाखा में रा.४।३५।। गुरु- पुनर्वसु ४ चरण में।। शुक्र- ति. १ बुध को कन्याराशि में रा.७।१३। ति. १० गुरु को हस्त में रा.१०।१९ ।। वक्रीशनि- पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में ।। राहु-पूर्वाभाद्रपद १ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी ३ चरण में ।। *कार्तिककृष्ण त्रयोदशी को रविवार हो तो जौ, गेहूँ महँगे होते हैं।*

२७ पं०कार्तिककृष्ण ८ मंगल

अहर्गण ३९२७

अयनांश २४।१२।५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	२	६	६	३	५	१०	१०	४
२६	२६	१९	१७	१	६	२८	२१	२१
६	४९	३९	१६	२१	४२	५	५९	५९
२६	४७	३६	१	१५	४१	५६	४४	४४
५९	८३४	४२	८८	५	७३	३	३	३
३५	३	५२	१२	४७	५६	४३	११	११
						व.		

विविधमुहूर्त्त-ति.१ बुध को अश्विनी में केतुवेध है। ति.३ गुरु को भद्रा (सा.४।१) से पूर्व भरणी में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति.४ शुक्र को कृत्तिका में रिक्तादोष है। ति. ५ शनि को रोहिणी में व्यतिपात है। ति. ६ रवि को मृगशिरा में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति.७ सोम को भद्रा (प्रा.६।४९) के बाद आर्द्रा में फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ८ मंगल को पुनर्वसु में सा.४।६ तक सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण मुहूर्त्त है। ति. ९ बुध को पुष्य में नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता (दि.२।४४) के बाद सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री **उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा** नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.) **ईंट निर्माण** विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। श्लेषा में वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है। ति.१० गुरु को भद्रा (दि.१।४६) के बाद श्लेषा में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति.११ शुक्र को मघा में दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति.१२ शनि को पू.फा. में केतुयुतिहै। सा. ५।३६ से उ.फा.में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.५ वा ६) का मुहूर्त्त है। **इसके बाद मासान्तदोष है।**

तिथि ल.अ.	१ बु घं.	मि.	३ गु घं.	मि.	४ शु घं.	मि.	५ श घं.	मि.	६ र घं.	मि.	७ चं घं.	मि.	८ मं घं.	मि.	९ बु घं.	मि.	१० गु घं.	मि.	११ शु घं.	मि.	तिथि ल.अ.	१२ श घं.	मि.	१३ र घं.	मि.	१४ चं घं.	मि.	३० मं घं.	मि.
कन्या	६	५३	६	४९	६	४५	६	४२	६	३८	६	३४	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	तुला	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०
तुला	९	९	९	५	९	१	८	५८	८	५४	८	५०	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	वृश्चिक	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७
वृश्चिक	११	२६	११	२२	११	१८	११	१५	११	११	११	७	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	धनु	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३
धनु	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१	१	१७	१	१३	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	मकर	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०
मकर	३	१९	३	१५	३	११	३	८	३	४	३	०	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	कुम्भ	४	१३	४	९	४	५	४	१
कुम्भ	४	५०	४	४६	४	४२	४	३९	४	३५	४	३१	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	मीन	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	६	१८	६	१४	६	१०	६	७	६	३	५	५९	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	मेष	७	१८	७	१४	७	१०	७	६
मेष	७	५५	७	५१	७	४७	७	४४	७	४०	७	३६	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	वृष	९	१४	९	१०	९	६	९	२
वृष	९	५१	९	४७	९	४३	९	४०	९	३६	९	३२	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	मिथुन	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६
मिथुन	१२	५	१२	१	११	५७	११	५४	११	५०	११	४६	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	कर्क	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४
कर्क	२	२३	२	१९	२	१५	२	१२	२	८	२	४	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	सिंह	४	०	३	५६	३	५२	३	४८
सिंह	४	३७	४	३३	४	२९	४	२६	४	२२	४	१८	४	१५	४	११	४	७	४	३	कन्या	६	१३	६	९	६	५	६	१

२८ पं० कार्तिककृष्ण ३०मंगल

अहर्गण ३९३४

अयनांश २४।१२।६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	५	६	६	३	५	१०	१०	४
३	२८	२४	२६	२	१५	२७	२१	२१
४	१९	३९	३७	१	२०	४४	३७	३७
२१	७	४१	५४	३६	१३	२३	२९	२९
५९	७३५	४२	७०	५	७३	२	३	३
५१	४	५३	२२	४६	५६	३६	११	११
						व.		

◐ चन्द्रोदय रा.४।४७। सायंकाल घर से बाहर चार बत्तियों वाला दीपक यमराज को दान करना चाहिए। **गोत्रिरात्र तथा यमपञ्चक का प्रारम्भ।** यायीजययोग दि.१।५५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। अमृतसिद्धियोग सा.६।५२ से। ●उस दिन गंगा स्नान करने से करोड़ो सूर्यग्रहण में स्नान करने के समान फल मिलता है। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है। **गोत्रिरात्र समाप्ति।**

मूलविचार-श्लेषा/मघा- ति. ९ बुध को सा. ४।५० से। ति. ११ शुक्र को सा. ४।५१ तक।

वायु पुराण के अनुसार हनुमज्जन्मोत्सव- आश्विन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि तथा स्वाती नक्षत्र के मेष लग्न में माता अञ्जनी के गर्भ से शिव रूपी हनुमान का जन्म हुआ। शुक्लादि मास गणना से कार्तिक कृष्ण पक्ष ही आश्विन कृष्ण पक्ष होगा अतः तुला के सूर्य में कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को सायं काल मेष लग्न में जन्मोत्सव तथा अगले दिन दर्शन पूजन आदि करना चाहिए। **अमावस्या में लक्ष्मी पूजन-** देशकाल-नाम-गोत्र-उच्चारण-पूर्वक “मम गृहेऽचललक्ष्मीनिवासाय लक्ष्मीपूजनं करिष्ये” से संकल्प कर विधि पूर्वक लक्ष्मी पूजन करके प्रार्थना करें। **प्रार्थना मन्त्र-** नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात् ।। **कार्तिक कृष्ण १४ को साभ्यङ्ग स्नान-** कार्तिक कृष्ण १४ को थोड़ी रात्रि शेष रहने पर चन्द्रोदय के समय शरीर में तेल का लेपन कर हल से निकाले हुए अपामार्ग को शाखाओं सहित तीन बार जल में घुमाकर उस जल से स्नान करें। **जल में अपामार्ग घुमाने का मन्त्र-** सितालोष्टसमायुक्तः संकटक दलान्वितः।। हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणं पुनःपुनः।। **तुला की संक्रान्ति में दीपदान-** तुला के सूर्य में जो मनुष्य सायंकाल एक मास तक आकाश में तिल के तेल का दीपक जलाता है उसे लक्ष्मी, सौन्दर्य, सौभाग्य, तथा सम्पत्ति आदि की प्राप्ती होती है। **आकाश में दीप जलाने का मन्त्र-** दामोदराय नभसि तुलायां लीलया सह। प्रदीपन्ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे। **गोवत्स द्वादशी-** कार्तिक कृष्ण द्वादशी 'गोवत्स' द्वादशी होती है। उस दिन दूध वाली सवत्सा गाय का अलंकरण कर विधवत् पूजन करके ताम्रपात्र से जल देना चाहिए। **मन्त्र-** क्षीरोदार्णवसंभूते सुरासुरनमस्कृते। सर्वदेवमयी मार्तगृहणार्घ्यं नमोनमः।। **कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी** सायंकाल असमय मृत्यु निवारण हेतु घर से बाहर यम के लिए दीप दान करना चाहिए (कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे, यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति)। **मन्त्र-** मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन यमया सह त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतां मम।। यहीं पर (घर के बाहर) नरक निवारण हेतु चतुर्मुख दीप का दान भी करना चाहिए। **मन्त्र-** ततो दीपश्चतुर्दश्यां नरकप्रीतये मया। चतुर्वर्तिसमायुक्तः सर्वपापप्रणुत्तये।।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल शरद् ऋतु।।

कार्तिकशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ३० आश्विन से १४ कार्तिक तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक २२ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक सन् २०२५ ई.।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.		रे.अं.	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२८	१६	१	बु	२९	५३	सा	६	१८	स्वाती	४६	५३	रा	१	६	प्रीति	५४	५७	रा	४	२०	बव	२९	५३	बा	६०	०	धूम्र	२२	१५	५	५	३०			६	२१	५	३९	६	४	४	१२	१०	५६	–	१७	–	–
२८	१२	२	गु	३५	२	रा	८	२३	विशाखा	५३	२२	रा	३	४३	आयुष्मान	५६	२१	रा	४	५४	बा	२	२८	कौ	३५	२	प्रवर्धमान	२३	१६	६	६	१	वृश्चिक	२६।४५	६	२२	५	३८	६	५	४	६	११	१७	–	१८	६	१७
२८	९	३	शु	४०	२०	रा	१०	३०	अनुराधा	५९	५०	रा	६	१८	सौभाग्य	५७	४५	रा	५	२८	तै	७	४१	गर	४०	२०	राक्षस	२४	१७	७	७	२			६	२२	५	३८	६	६	४	६	११	३८	–	१८	६	५७
२८	५	४	श	४५	२०	रा	१२	३१	ज्येष्ठा	६०	०	स	म	स्त	शोभन	५८	४७	रा	५	५४	व	१२	५०	भ	४५	२०	मुसल	२५	१८	८	८	३			६	२३	५	३७	६	७	३	५८	११	५९	–	१८	७	४३
२८	२	५	र	४९	३९	रा	२	१६	ज्येष्ठा	५	५३	दि	८	४५	अतिगण्ड	५९	१८	रा	६	७	बव	१७	३०	बा	४९	३९	काण	२६	१९	९	९	४	धनु	५।५३	६	२४	५	३६	६	८	३	५६	१२	२०	–	१८	८	३३
२७	५८	६	चं	५२	५८	रा	३	३५	मूल	११	१३	दि	१०	५३	सुकर्मा	५९	०	रा	६	०	कौ	२१	१९	तै	५२	५८	लुम्बक	२७	२०	१०	१०	५			६	२४	५	३६	६	९	३	५५	१२	४१	–	१८	९	२७
२७	५५	७	मं	५५	११	रा	४	२९	पू.षा.	१५	२९	दि	१२	३७	धृति	५७	५२	रा	५	३४	गर	२४	५	व	५५	११	मित्र	२८	२१	११	११	६	मकर	३१।१६	६	२५	५	३५	६	१०	३	५६	१३	२	–	१८	१०	२४
२७	५२	८	बु	५६	४	रा	४	५२	उ.षा.	१८	३८	दि	१	५३	शूल	५५	४२	रा	४	४३	भ	२५	३८	बव	५६	४	वज्र	२९	२२	१२	१२	७			६	२६	५	३४	६	११	४	०	१३	२२	–	१८	११	२२
२७	४८	९	गु	५५	३७	रा	४	४१	श्रवण	२०	३१	दि	२	३८	गण्ड	५२	३१	रा	३	२६	बा	२५	५१	कौ	५५	३७	ध्वज	३०	२३	१३	१३	८	कुम्भ	५०।४९	६	२६	५	३४	६	१२	४	१३	१३	४१	–	१८	१२	२२
२७	४५	१०	शु	५३	५८	रा	४	२	धनिष्ठा	२१	७	दि	२	५४	वृद्धि	४८	२१	रा	१	४७	तै	२४	४८	गर	५३	५८	धाता	३१	२४	१४	१४	९			६	२७	५	३३	६	१३	४	२७	१४	०	–	१८	१	२२
२७	४३	११	श	५१	११	रा	२	५६	शतभिष	२०	३३	दि	२	४१	ध्रुव	४३	१९	रा	११	४८	व	२२	३५	भ	५१	११	आनन्द	१	२५	१५	१५	१०			६	२७	५	३३	६	१४	४	४०	१४	१९	–	१८	२	२२
२७	३९	१२	र	४७	२६	रा	१	२६	पू.भा.	१८	५६	दि	२	२	व्याघात	३७	२९	रा	९	२८	बव	१९	१९	बा	४७	२६	चर	२	२६	१६	१६	११	मीन	४।२०	६	२८	५	३२	६	१५	४	५४	१४	३८	–	१८	३	२५
२७	३५	१३	चं	४२	५०	रा	११	३७	उ.भा.	१६	३०	दि	१	५	हर्षण	३०	५७	सा	६	५२	कौ	१५	८	तै	४२	५०	गद	३	२७	१७	१७	१२			६	२९	५	३१	६	१६	५	९	१४	५७	–	१८	४	२९
२७	३२	१४	मं	३७	३७	रा	९	३३	रेवती	१३	१८	दि	११	४९	वज्र	२३	४८	दि	४	१	गर	१०	१४	व	३७	३७	शुभ	४	२८	१८	१८	१३	मेष	१३।१८	६	३०	५	३०	६	१७	५	२८	१५	१६	–	१८	५	३८
२७	२९	१५	बु	३१	५४	रा	७	१६	अश्विनी	९	३४	दि	१०	२०	सिद्धि	१६	१६	दि	१	०	भ	४	४६	बव	३१ ५८	५४ ५७	मृत्यु	५	२९	१९	१९	१४			६	३०	५	३०	६	१८	५	४८	१५	३५	–	१८	–	–

अन्नकूट १। काशी से अन्यत्र गोवर्धनपूजा। बलिप्रतिपदा १। बलिपूजा। सायं गोक्रीडन। मार्गपालीबन्धन। यष्ट्याकर्षण। साभ्यङ्ग स्नान। द्यूतक्रीडा। प्रातः नारीकर्तृक नीराजन तथा ❶
वृश्चिकराशि रा. ९।४१। ☽चन्द्रदर्शन। मु. ४५ वृहती। फल सस्ती। उत्तरशृंग सस्तीकारक। काशी में गोवर्धनपूजा। यमद्वितीया २। भ्रातृद्वितीया (भइया दूज)।◆
मु. जमादिउल्लवल५ हिजरी सन् १४४७। ☉स्वाती नक्षत्र का सूर्य रा. ८।१८। स्त्री.नपुं.-सू.सू. योग मण्डूक वाहन चंडानाड़ी अधिपति शनि खण्डवृष्टियोग। स्थायीजययोग ☪
भ. दि. ११।३१ से रा. १२।३१ तक। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ (तीन दिनों तक)। रवियोग समस्त। ❶सायं मंगलमालिका।
धनुराशि दि. ८।४५। सूर्यषष्ठी व्रत का द्वितीय दिन। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।४५ से। ☪रा.शे. ६।१८ से। रवियोग रा. ८।४६ तक। ◪रवियोग दि. ११।४९ तक।
श्रीसूर्यषष्ठी ६ व्रत। सायं काल सूर्य को अर्घ्यदान। रात्रि शेष में अरुणोदयकाल में द्वितीय अर्घ्यदान। डालाछठ (बिहार)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत। रवियोग दि. १०।५३ से।
भ. रा. ४।२९ से। मकरराशि सा. ६।५५। श्रीसूर्यषष्ठी व्रत की पारणा। कल्पादि ७। त्रिपुष्करयोग दि. १२।३७ से रा. ४।२९ तक। रवियोग दि. १२।३७ तक।
भ. सा. ४।४१ तक। गोपाष्टमी ८। सायं गायों को अलंकृत करके पूजन। बुधाष्टमी ८ पर्व। ❷ भीष्मपञ्चकारम्भ। नवम्बर ११। त्रिपुष्करयोग रा. २।५६ से। रवियोग दि. २।४२ तक।
कुम्भराशि रा. २।४६। अक्षयनवमी ९। कुष्माण्ड में रत्नभरकर दान करना चाहिए। नवमी में उपवास पूर्वक अयोध्या-मथुरा परिक्रमा। श्रीविष्णुत्रिरात्रारम्भ। ☯
रवियोग समस्त। ❖श्रीनर्मदेश्वर को तुलसी समर्पण। पञ्चक समाप्ति दि. ११।४९। स्थायीजययोग दि. ११।४९ से रा. ९।३३ तक। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग दि. ११।४९ से। ◪
भ. दि. ३।१० से रा. २।५६ तक। प्रबोधिनी ११ एकादशी व्रत सबका। भद्रा से पूर्व गन्ना का रसपान। श्रीविष्णुप्रबोधनोत्सव। श्रीविष्णुत्रिरात्र की समाप्ति। ❷
मीनराशि दि. ८।१२। एकादशी व्रत की पारणा। चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति। दालदान। नारायण द्वादशी। गरुण द्वादशी (उड़ीसा)। मन्वादि १२। तुलसी विवाह। ❸
सोमप्रदोष १३ व्रत। पुत्र प्राप्ति के लिए /यायीजययोग रा. ११।३७ तक। रवियोग दि. १।५ से। ❸यायीजययोग रा. १।२६ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. २।२ से। त्रिपुष्करयोग दि. २।२ तक।
भ. रा. ९।३३ से। मेषराशि दि. ११।४९। श्रीवैकुण्ठ १४ चतुर्दशी। श्री महाविष्णुपूजा। अरुणोदयकाल में चतुर्दशी में मणिकर्णिका स्नान। श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिन। ❖
भ. दि. ८।२४ तक। स्नान-दान-व्रत की १५ कार्तिकी पूर्णिमा। गुरुनानक जयन्ती। कार्त्तिकेय दर्शन। भीष्मपञ्चक समाप्ति। त्रिपुरोत्सव। पुष्करक्षेत्र में त्रिपुरासुर को दीपदान। ●

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	बु	६	२५	२२	३४	६	२७	४८	१६	३	२	७	२२	५	१६	३४	९	१०	२७	४१	४७	१०	२१	३४	१८
२	गु	६	२६	५	२६	६	२८	५८	३९	३	२	१०	५२	५	१७	४८	५	१०	२७	३९	१२	१०	२१	३१	७
३	शु	६	२६	४८	१९	७	०	९	६	३	२	१३	४५	५	१९	२	१	१०	२७	३६	३७	१०	२१	२७	५६
४	श	६	२७	३१	१२	७	१	६	२८	३	२	१६	३७	५	२०	१५	५७	१०	२७	३४	१	१०	२१	२४	४६
५	र	६	२८	१४	१४	७	२	०	५२	३	२	१९	३०	५	२१	२९	५३	१०	२७	३१	२६	१०	२१	२१	३५
६	चं	६	२८	५७	२८	७	२	५५	१६	३	२	२२	२२	५	२२	४३	४९	१०	२७	२८	५१	१०	२१	१८	२४
७	मं	६	२९	४१	३०	७	३	४९	४१	३	२	२५	१५	५	२३	५७	४५	१०	२७	२६	१७	१०	२१	१५	१३
८	बु	७	०	२६	०	७	४	४१	५५	३	२	२८	७	५	२५	११	४१	१०	२७	२३	४३	१०	२१	१२	२
९	गु	७	१	१०	३३	७	५	१५	३६	३	२	३०	५९	५	२६	२५	३७	१०	२७	२१	८	१०	२१	८	५२
१०	शु	७	१	५५	७	७	५	४९	१६	३	२	३३	५२	५	२७	३९	३३	१०	२७	१८	३४	१०	२१	५	४१
११	श	७	२	३९	४१	७	६	२२	५८	३	२	३६	४४	५	२८	५३	२९	१०	२७	१६	०	१०	२१	२	३०
१२	र	७	३	२४	१५	७	६	५६	३९	३	२	३९	३६	६	०	७	२५	१०	२७	१३	४७	१०	२०	५९	१९
१३	चं	७	४	८	४८	७	७	१९	१	३	२	४२	२८	६	१	२१	२१	१०	२७	१२	४४	१०	२०	५६	८
१४	मं	७	४	५३	२२	७	७	२५	४७	३	२	४५	१९	६	२	३५	१७	१०	२७	११	४१	१०	२०	५२	५८
१५	बु	७	५	३७	५६	७	७	३१	४५	३	२	४८	१०	६	३	४९	१३	१०	२७	१०	३८	१०	२०	४९	४७

ग्रहचार- मंगल-ति. ७ मंगल को वृश्चिकराशि में दि. ४।२४। ति. ११शनि को अनुराधा में रा. ४।११।। बुध-ति. २ गुरु को वृश्चिकराशि में रा. ३।१६। ति.६ सोम को अनुराधा में सा. ५।१८।। गुरु-पुनर्वसु ४ चरण में।। शुक्र-ति. ६ सोम को चित्रा में सा. ६।८। ति. ११ शनि को तुलाराशि में रा. ४।४।। वक्रीशनि-पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में।। राहु-पूर्वाभाद्रपद १ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी ३ चरण में।।

२९ पं० कार्तिकशुक्ल ८ बुध

अहर्गण ३९४२

अयनांश २४।१२।७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	९	७	७	३	५	१०	१०	४
११	६	०	४	२	२५	२७	२१	२१
४	४	२६	४१	२८	११	२३	१२	१२
१०	०	०	५५	७	४१	४३	२	२
६०	७६०	४४	३३	२	७३	२	३	३
८	६	३३	४१	५४	५६	३५ व.	११	११

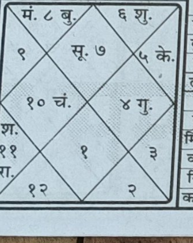

विविधमुहूर्त्त-ति. १ बुध को स्वाती में सूर्यभोग्य है। ति. २ गुरु को विशाखा में भौमयुति है। ति.३ शुक्र को अनुराधा में भौमभोग्य है। ति. ४ शनि को ज्येष्ठा में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ रवि को ज्येष्ठा में पशुओं की खरीद-बिक्री ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। मूल में पुंसवनसीमन्त वाटिकारोपण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ सोम को मूल में शिशुताम्बूलभक्षण दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन फसल काटने का मुहूर्त्त है। पू.षा. में शिल्पविद्या मुहूर्त्त है। ति. ७ मंगल को पू.षा. में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। दि. १२।३७ के बाद उ.षा. में सूतीस्नान सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण मुहूर्त्त है। ति. ८ बुध को भद्रा (सा. ४।४१) के बाद श्रवण में गर्भाधान दँवरी औषधसेवन वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ९ गुरु को श्रवण में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. १० शुक्र को धनिष्ठा में भौमवेध है। शतभिष में सूर्यवेध है। ति. ११ शनि को शतभिष में पूर्वदोष है। पू.भा. में शनियुति तथा भद्रा है। ति. १२ रवि को पू.भा. में पूर्वदोष है। दि. २।२ के बाद उ.भा. में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण औषधसेवन विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। रात्रिशेष में सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति. १३ सोम को उ.भा. में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.) फसल काटने का मुहूर्त्त है। दि. १।५से रा. ११।३७ तक रेवती में पश्चिम-उत्तर दिशा की यात्रा दँवरी नवान्नभक्षण औषधसेवन जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ११ वा ३) विपणि व्यापार वस्तुक्रय ☞

तिथि ल.अ.	१ बु घं.	मि.	२ गु घं.	मि.	३ शु घं.	मि.	४ श घं.	मि.	५ र घं.	मि.	६ चं घं.	मि.	७ मं घं.	मि.	८ बु घं.	मि.	९ गु घं.	मि.	१० शु घं.	मि.	११ श घं.	मि.	१२ र घं.	मि.	१३ चं घं.	मि.	१४ मं घं.	मि.	१५ बु घं.	मि.
तुला	८	१६	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२
वृश्चिक	१०	३३	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९
धनु	१२	३९	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५
मकर	२	२६	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२
कुम्भ	३	५७	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३
मीन	५	२५	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	७	२	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८
वृष	८	५८	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४
मिथुन	११	१२	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८
कर्क	१	३०	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६
सिंह	३	४४	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०
कन्या	५	५७	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३

३० पं० कार्तिकशुक्ल १५बुध

अहर्गण ३९४९

अयनांश २४।१२।८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	०	७	७	३	६	१०	१०	४
१८	११	५	७	२	३	२७	२०	२०
५	४	३७	३१	४८	४९	१०	४९	४९
४८	०	५६	४५	१०	१३	३८	४७	४७
६०	८५३	४४	५	२	७३	१	३	३
२१	५	३३	५७	५२	५७	३ व.	११	११

◆ बहन के घर भोजन। वस्त्रादि से भगिनी पूजा। दूत चित्रगुप्त सहित यमपूजन। अपराह्न में यमुना स्नान। दवातपूजा (बिहार)। यमपञ्चक समाप्ति। ☉सायन वृश्चिकराशि का सूर्य रा. ११।५४। राष्ट्रीयकार्तिकमास दि. ३०। यायीजययोग रा. ३।४३ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।४३ से। रवियोग रा. ३।४३ से। ☯सोने की श्रीविष्णु प्रतिमा का तुलसी के साथ पूजन कर द्वादशी में ब्राह्मण को दान करना चाहिए। ऑवला वृक्ष के नीचे भोजन। ऑवला वृक्ष की पूजा। कृत्तयुगादि ९। पञ्चक प्रारम्भ रा. २।४६। यायीजययोग दि. २।३८ से रा. ४।४१ तक। रवियोग दि. २।३८ से। ●सायं क्षीरसागर आदि का दान। काशी में देवदीपावलीमहोत्सव। मन्वादि १५।

मूलविचार-ज्येष्ठा/मूल- ति. ३ शुक्र को रा.शे. ६।१८ से। ति. ६ सोम को दि. १०।५३ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. १३ सोम को दि. १।५से। ति. १५ बुध को दि. १०।२० तक।
पञ्चक विचार- ति. ९ गुरु को रा. २।४६ से। ति. १४ मंगल को दि. ११।४९ तक।

प्रबोधनोत्सव- कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी अथवा द्वादशी तिथि को तुलसी एवं विष्णु का विधिवत् षोडशोपचार पूजन कर पुनः प्रबोधन करें। वाराहपुराणोक्त प्रबोधन मन्त्र -ब्रह्मेन्द्ररुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वन्दितवन्दनीय। बुध्यस्व देवेश जगन्निवास मन्त्र प्रभावेण सुखेन देव। इत्यन्तु द्वादशी देव प्रबोधार्थं विनिर्मिता। त्वयैव सर्वलोकानां हितार्थं शेषशायिना।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वयिसुप्ते जगन्नाथ जगत् सुप्तं भवेदिदम् ।। उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव। गता मेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मला दिशः।। शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव। इदं विष्णुरितिप्रोक्तो मन्त्र उत्थापने हरेः।। इति।। इसके बाद चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति करें। मन्त्र- इदं व्रतं मया देव कृतं प्राप्तं तव प्रभो। तेन मे पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ।।इति।। कार्तिक शुक्ल पक्ष में सूर्यषष्ठी व्रत का निर्णय- कला, काष्ठा, निमेष मात्र भी षष्ठी अगर द्वितीय दिन प्राप्त हो रही हो तो उसी षष्ठी में उपवास कर सप्तमी में प्रातः विहित पूजन द्रव्यों द्वारा सूर्य पूजन करने से अभीष्ट फल प्राप्त होता है। उपर कहे हुए सूर्य पूजन क्रम में अर्घ्यादि पूजन की ही प्रधानता है। अर्घ्यादि पूजन में प्रथम दिन सायं काल ६ या ७ तिथि के ग्रहण का नियम नहीं है। यह निर्णय राजनाथ कृत तिथि निर्णय में उल्लिखित है। यम द्वितीया निर्णय- प्रतिपदा युक्त यम द्वितीया ही ग्राह्य है, हेमाद्रि के अनुसार यम द्वितीया मध्याह्न व्यापिनी तथा पूर्व विद्ध ही ग्राह्य है। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को अपराह्न में यमुना में स्नान कर यम पूजन से दीर्घायु की प्राप्ति होती है। प्रतिपदा की विधि- गोवर्धन का पूजन कर व्रत करें। गोवर्धन की पूजा ही गोवर्धन पूजा है। भ्रातृ भोजन के पूर्व की भगिनीयों को गोवर्धन पूजा करनी चाहिए।

☞ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति.१४ मंगल को रेवती में रिक्तादोष है। ति.१५बुध को अश्विनी में केतुवेध तथा भद्रा है। भरणी में व्यतिपात (दि.१।०)से पूर्व वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है।

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि १५ कार्तिक से २९ तक शक १९४७ ।।
अंग्रेजी दिनांक ६ नवम्बर से २० तक सन् २०२५ ई.।।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल शरद् ऋतु।।

दि.मा. घ.	प.																										योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे.अं. -	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२७	२६	१	गु	२६	०	सा	४	५५	भरणी	५	२८	दि	८	४२	व्यतिपात	८	२९	दि	९	५५	कौ	२६	०	तै	५३	१	पद्म	६	१	२०	२०	१५	वृष	१९।२५	६	३१	५	२९	६	१९	६	९	१५	५३	-	१८	५	४३
२७	२३	२	शु	२०	१	दि	२	३१	कृत्तिका	१ ५५	१५ ५२	प्रा	७ ५	१ २२	वरीयान	० ५२	३३ ११	प्रा	६ ३	४४ ३७	गर	२०	१	व	४७	६	छत्र	७	२	२१	२१	१६			६	३१	५	२९	६	२०	६	३३	१६	११	-	१८	६	४०
२७	२०	३	श	१४	११	दि	१२	१२	मृगशिरा	५३	१५	रा	३	५०	शिव	४५	७	रा	१२	३५	भ	१४	११	वव	४१	२६	वज्र	८	३	२२	२२	१७	मिथुन	२५।११	६	३२	५	२८	६	२१	६	५९	१६	२८	-	१८	७	४५
२७	१७	४	र	८	४१	दि	१०	१	आर्द्रा	४९	५३	रा	२	३०	सिद्ध	३७	५१	रा	९	४१	वा	८	४१	कौ	३६	१२	ध्वांक्ष	९	४	२३	२३	१८			६	३३	५	२७	६	२२	७	२५	१६	४६	-	१८	८	५२
२७	१४	५	चं	३ ५५	४३ ४८	प्रा	८ ६	२ २१	पुनर्वसु	४७	१०	रा	१	२५	साध्य	३१	८	रा	७	०	तै	३	४३	गर	३१ ५१	३७ ३१	धूम्र	१०	५	२४	२४	१९	कर्क	३२।५१	६	३३	५	२७	६	२३	७	५६	१७	३	-	१८	९	५९
२७	११	७	मं	५६	१०	रा	५	२	पुष्य	४५	१९	रा	१२	४२	शुभ	२५	३	सा	४	३५	भ	२७	५१	वव	५६	१०	प्रवर्धमान	११	६	२५	२५	२०			६	३४	५	२६	६	२४	८	२८	१७	२०	-	१८	११	३
२७	८	८	बु	५३	५२	रा	४	७	श्लेषा	४४	२७	रा	१२	२१	शुक्ल	१९	४५	दि	२	२८	वा	२५	१	कौ	५३	५२	राक्षस	१२	७	२६	२६	२१	सिंह	४४।२७	६	३४	५	२६	६	२५	९	१	१७	३६	-	१८	१२	३
२७	५	९	गु	५२	४८	रा	३	४२	मघा	४४	४४	रा	१२	२९	ब्रह्म	१५	१७	दि	१२	४२	तै	२३	२०	गर	५२	४८	मुसल	१३	८	२७	२७	२२			६	३५	५	२५	६	२६	९	३५	१७	५२	-	१८	१२	५९
२७	२	१०	शु	५२	५८	रा	३	४७	पू.फा.	४६	१५	रा	१	६	ऐन्द्र	११	४९	दि	११	२०	व	२२	५३	भ	५२	५८	सिद्धि	१४	९	२८	२८	२३			६	३६	५	२४	६	२७	१०	१२	१८	८	-	१८	१	५२
२६	५९	११	श	५४	२९	रा	४	२४	उ.फा.	४९	२	रा	२	१३	वैधृति	९	१९	दि	१०	२०	वव	२३	४४	वा	५४	२९	उत्पात	१५	१०	२९	२९	२४	कन्या	१।५७	६	३६	५	२४	६	२८	१०	५०	१८	१४	-	१७	२	४३
२६	५७	१२	र	५७	१०	रा	५	२९	हस्त	५२	५९	रा	३	४९	विष्कुम्भ	७	५३	दि	९	४६	कौ	२५	५०	तै	५७	१०	मानस	१६	११	३०	३०	२५			६	३७	५	२३	६	२९	११	३०	१८	३९	-	१७	३	३५
२६	५४	१३	चं	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	५८	३	रा	५	५०	प्रीति	७	१७	दि	९	३२	गर	२९	५	व	६०	०	मुद्गर	१७	१२	१	१	२६	तुला	२५।३१	६	३७	५	२३	७	०	१२	११	१८	५४	-	१७	४	२७
२६	५१	१३	मं	१	०	प्रा	७	२	स्वाती	६०	०	स	म	स्त	आयुष्मान	७	३३	दि	९	३९	व	१	०	भ	३३	२१	ध्वज	१८	१३	२	२	२७			६	३८	५	२२	७	१	१२	५५	१९	९	-	१७	५	२१
२६	४९	१४	बु	५	४१	दि	८	५४	स्वाती	३	५५	प्रा	८	१२	सौभाग्य	८	२६	दि	१०	०	श	५	४१	च	३८	१८	धूम्र	१९	१४	३	३	२८	वृश्चिक	५३।४३	६	३८	५	२२	७	२	१३	४०	१९	२३	-	१७	६	१५
२६	४६	३०	गु	१०	५४	दि	११	१	विशाखा	१०	१९	दि	१०	४७	शोभन	९	४३	दि	१०	३२	नाग	१०	५४	किं	४३	३६	प्रवर्धमान	२०	१५	४	४	२९			६	३९	५	२१	७	३	१४	२७	१९	३७	-	१६	-	-

वृषराशि दि. २।१७। कार्तिक व्रत की पारणा। ⊙ विशाखा नक्षत्र का सूर्य रा. ३।५५। यायीजययोग सा.४।५५ तक। ☐
भ. रा. १।२१ से। पद्मकयोग प्रा. ७।१ तक। पुष्कर तीर्थ में स्नान। यमघंटयोग प्रा. ७।१ से रा. ५।२२ तक।
भ. दि. १२।१२ तक। मिथुनराशि सा. ४।३६। सौभाग्यसुन्दरी ३ व्रत। संकष्टीश्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ७।४५।
यायीजययोग रा. २।३० से। ☐यमघंटयोग दि. ८।४२ से।
भ. रा. शे. ६।२१ से। कर्कराशि रा. ७।४१। माताअन्नपूर्णा व्रतारम्भ (१७ दिनों तक)। यायीजययोग प्रा. ८।२ तक। ❖
भ. सा. ५।४२ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १२।४२ से। रवियोग रा. १२।४२ तक। ❶ (बंगाल)। चन्द्रोदय रा. १२।३। बुधाष्टमी ८ पर्व।
सिंहराशि रा. १२।२१। श्रीभैरवाष्टमी ८ व्रत। सायं भैरव उत्पत्ति। भैरवयात्रा तथा दर्शन-पूजन। अष्टकाश्राद्ध। कालाष्टमी ८। रुकमीणी अष्टमी ८ व्रत (चन्द्रोदय व्यापिनी) ❶
अन्वष्टका श्राद्ध। ☐सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा. ३।४९ तक। द्विपुष्करयोग रा. ३।४९ से रा. ५।२९ तक।
भ. दि. ३।४५ से रा. ३।४७ तक। श्रीत्रिदण्डी स्वामी पुण्यतिथि बक्सर (बिहार)। नेहरु जयन्ती (बाल दिवस)। ❖सर्वार्थसिद्धियोग रा. १।२५ से। रवियोग रा. १।२५ से।
कन्याराशि दि. ७।२३। उत्पन्ना ११ एकादशी व्रत सबका। यायीजययोग रा. ४।२४ तक। यमघंटयोग रा. २।१३ से।
⊙सं. वृश्चिकराशि का सूर्य रा. १।४८। मु. ३० समा। फल समता। पूर्व का ६ घण्टा २४ मिनट पुण्यकाल। दीपवस्त्रदान। नर्मदा में स्नान। हेमन्तऋतु प्रारम्भ। ☐
तुलाराशि सा. ४।४९। सोमप्रदोष १३ व्रत। *पुत्र प्राप्ति के लिए।* सौरमार्गशीर्षमासारम्भ। यायीजययोग रा. शे. ५।५० से।
भ. दि. ७।२ से रा. ७।५८ तक। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" ♍ दि. ११।१ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।४७ से।
वृश्चिकराशि रा. ४।७। श्राद्ध की ३० अमावस्या। *मार्गशीर्ष की सप्तमी को दिन-रात आकाश निर्मल रहे तो वैशाख में धान्य महँगा होता है।*
स्नान-दान की ३० अमावस्या। शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है। ⊙अनुराधा नक्षत्र का सूर्य दि. ८।५१। यायीजययोग ♍

मार्गशीर्षमास के कृत्य- मार्गशीर्ष मास में जो व्यक्ति स्वयं एक बार भोजन कर भक्ति पूर्वक ब्राह्मणों को भोजन कराता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर उत्तम कृषक तथा धन-धान्य से परिपूर्ण होता है। (महाभारत)

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				मार्गीबुध				गुरु				शुक्र				वक्रीशनि				राहु			
१	गु	७	६	२२	२९	७	७	३७	४२	३	२	५१	२	६	५	३	१०	१०	२७	९	३५	१०	२०	४६	३६
२	शु	७	७	७	३	व	७	४३	३९	३	२	५३	५३	६	६	१७	६	१०	२७	८	३२	१०	२०	४३	२५
३	श	७	७	५१	३७	७	७	३०	२०	३	२	५६	२३	६	७	३१	११	१०	२७	७	२९	१०	२०	४०	१४
४	र	७	८	३६	१०	७	७	५	२२	३	२	५६	४३	६	८	४५	२३	१०	२७	६	२७	१०	२०	३७	४
५	चं	७	९	२०	४४	७	६	४०	२३	३	२	५७	२	६	९	५९	३५	१०	२७	५	२४	१०	२०	३३	५३
७	मं	७	१०	५	१८	७	६	१५	२५	३	२	५७	२२	६	११	१३	४७	१०	२७	४	२१	१०	२०	३०	४२
८	बु	७	१०	४९	५२	७	५	५०	२७	३	२	५७	४२	६	१२	२८	१	१०	२७	३	१९	१०	२०	२७	३१
९	गु	७	११	३४	२५	७	५	२	५७	३	२	५८	२	६	१३	४२	१८	१०	२७	२	१७	१०	२०	२४	२०
१०	शु	७	१२	१८	५९	७	४	११	०	३	२	५८	२२	६	१४	५६	५८	१०	२७	१	१६	१०	२०	२१	९
११	श	७	१३	३	३३	७	३	१९	३	३	२	५८	४२	६	१६	११	५४	१०	२७	०	१४	१०	२०	१७	५९
१२	र	७	१३	४८	६	७	२	२७	६	३	२	५९	२	६	१७	२६	५०	१०	२६	५९	१२	१०	२०	१४	४८
१३	चं	७	१४	३२	४०	७	१	३७	५३	३	२	५९	२१	६	१८	४१	४६	१०	२६	५८	११	१०	२०	११	३७
१३	मं	७	१५	१७	१४	७	०	४३	१२	३	२	५९	४१	६	१९	५६	४२	मा	२६	५७	५३	१०	२०	८	२६
१४	बु	७	१६	१	४७	६	२९	५३	२	३	३	०	०	६	२१	११	३८	१०	२६	५८	२३	१०	२०	५	१५
३०	गु	७	१६	४६	२१	६	२८	५९	१७	३	३	०	१८	६	२२	२६	३४	१०	२६	५८	५३	१०	२०	२	५

ग्रहचार-मंगल- ति. १४ बुध को ज्येष्ठा में रा.३।१३।। मार्गीबुध- ति. २ शुक्र को वक्री दि.१।५६। ति.१० शुक्र को विशाखा में रा.शे.६।१०। ति. १३ मंगल को वक्री होकर तुलाराशि में रा.३।१८।। गुरु- पुनर्वसु ४ चरण में।। शुक्र- ति.२ शुक्र को स्वाती में दि.१।५६। ति.१३ मंगल को विशाखा में दि.७।४२।। वक्रीशनि-पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में। ति.१३ मंगल को मार्गी दि.३।३८।। राहु-ति.३० गुरु को शतभिष ४ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी २ चरण में रा.१०।२१।।

३१ पं० मार्गशीर्षकृष्ण ८ बुध

अहर्गण ३९५६

अयनांश २४।१२।९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	३	७	७	३	६	१०	१०	४
२५	१९	१०	५	२	१२	२७	२०	२०
९	५८	४९	५०	५७	२८	३	२७	२७
१	४०	५२	२७	४२	१	१९	३१	३१
६०	८११	४४	४७	०	७४	१	३	३
३४	४३	३३	३०	२०	१७	२	११	११
			व.			व.		

विविधमुहूर्त्त-ति. १ गुरु को व्यतिपात (दि. ९।५५) के बाद कृत्तिका में पशुओं की खरीद-बिक्री वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. २ शुक्र को प्रा. ७।१ के बाद रोहिणी में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन **अन्नप्राशन** गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या विपणि व्यापार मुहूर्त्त है। ति. ३ शनि को मृगशिरा में भद्रा के बाद रिक्तादोष है। ति. ४ रवि को आर्द्रा में चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता (दि. १०।१) के बाद फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ५ सोम को पुनर्वसु में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण **अन्नप्राशन** (पंचमी में) पशुओं की खरीद-बिक्री **पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा** (पंचमी में) शिल्पविद्या औषधसेवन वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. ७ मंगल को भद्रा (सा. ५।४२) के बाद पुष्य में सौभाग्यवती को छोड़कर लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण **उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा** ऑपरेशन मुहूर्त्त है। ति. ८ बुध को श्लेषा में भौमवेध है। ति. ९ गुरु को मघा में रिक्तादोष है। ति. १० शुक्र को पू.फा. में केतुयुति तथा वैधृति है। ति. ११ शनि को वैधृति (दि. १०।२०) के बाद उ.फा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण **जीर्णादिगृहप्रवेश** (ल. २ के.दा.) मुहूर्त्त है। ति. १२ रवि को हस्त में ☞

तिथि ल.अ.	१ गु घं.	मि.	२ शु घं.	मि.	३ श घं.	मि.	४ र घं.	मि.	५ चं घं.	मि.	७ मं घं.	मि.	८ बु घं.	मि.	९ गु घं.	मि.	१० शु घं.	मि.	११ श घं.	मि.	१२ र घं.	मि.	तिथि ल.अ.	१३ चं घं.	मि.	१३ मं घं.	मि.	१४ बु घं.	मि.	३० गु घं.	मि.
तुला	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	वृश्चिक	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९
वृश्चिक	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	धनु	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५
धनु	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	मकर	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२
मकर	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	कुम्भ	२	१५	२	११	२	७	२	३
कुम्भ	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	मीन	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१
मीन	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	मेष	५	२०	५	१६	५	१२	५	८
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मेष	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	वृष	७	१६	७	१२	७	८	७	४
वृष	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	मिथुन	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८
मिथुन	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	कर्क	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६
कर्क	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	सिंह	२	२	१	५८	१	५४	१	५०
सिंह	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	कन्या	४	१५	४	११	४	७	४	३
कन्या	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	तुला	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९

३२ पं० मार्गशीर्षकृष्ण ३० गुरु

अहर्गण ३९६४

अयनांश २४।१२।१०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	७	६	३	६	१०	१०	४
३	१	१६	२८	३	२२	२६	२०	२०
१४	१५	४६	५९	०	२६	५८	२	२
२७	४७	२१	१७	१८	३४	५३	५	५
६०	७२२	४४	५१	०	७४	०	३	३
४८	५३	३७	५७	१९	५६	३०	११	११
			व.			मा.		

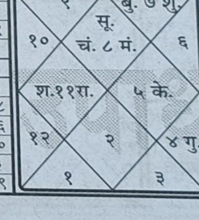

मूलविचार-श्लेषा/मघा- ति. ७ मंगल को रा. १२।४२ से। ति. ९ गुरु को रा. १२।२९ तक।

गुरु-शुक्र के अस्त में अपवाद- नित्य की यात्रा, जीर्णगृहप्रवेश, नूतन वस्त्रधारण, वधूप्रवेश आदि मांगलिक कार्यों तथा गोदावरी एवं गंगा स्नान, श्रीशैलयात्रा, सूर्य-चन्द्रग्रहण, अयन, चातुर्मास्य व्रत, सीमन्तोन्नयन, ऋतुक्रम एवं सभी प्रकार के उत्सवों में गुरु-शुक्र का अस्त दोष नहीं लगता है। **वधू प्रवेश तथा द्विरागमन आदि का निर्णय-** वधूप्रवेश (शब्दार्थ) नूतन विवाहिता के पितृ गृह से प्रथम बार पति गृह में प्रवेश को वधूप्रवेश कहा जाता है। द्विरागमन-(शब्दार्थ)-नववधूप्रवेश के बाद पिता के घर लौटकर कुछ दिन रही हुई वधू के पुनः द्वितीय बार पति गृह में प्रवेश को द्विरागमन कहते हैं। प्रथम प्रवेश अर्थात् वधूप्रवेश में शुक्रादि का दोष नहीं होता अपितु रात्रि काल में विवाह विहित नक्षत्रों, शुभ मुहूर्त्त एवं स्थिर लग्नों में वधूप्रवेश शुभ होता है। इसमें सम्मुख शुक्र का विचार भी नहीं होता। **ज्योतिर्निबन्ध के अनुसार प्रथमादि वर्षों में वधूप्रवेश का फल-** विवाह के प्रथमादि वर्षों में वधूप्रवेश से क्रमशः धनवृद्धि, हानि, सुख, नाश, भोग, वैर एवं इसके बाद के वर्षों में शुभ फल की प्राप्ति होती है। "स्त्री विवाहः कुलनिर्गमः कथ्यते" इत्यादि के अनुसार वशिष्ठ आदि ने जिस मत का प्रतिपादन किया है वह आर्ष वचन न होकर उनका अपना मत है। प्रतिपादित करते हैं कि वधूप्रवेश द्विरागमन से भिन्न है। प्रवेश एवं निर्गम (स्त्री विवाहः कुलनिर्गमः) दोनों मुहूर्त्तों के निर्णय में भी पदार्थ की एक रूपता है। अतः १६ दिन के भीतर उपर लिखित मुहूर्त्त शुभ है। परन्तु १६ दिन के बाद यात्रा समयों में वधू प्रवेश उचित है। "कृत ग्रन्थिबन्धन" इत्यादि वचनमूलक जो विलम्बित वधूप्रवेश है वह द्विरागमन न होकर १६ दिन के बाद का वधूप्रवेश ही है। **तृतीयवारागमन में राहु विचार-** सूर्य राशि के अनुसार राहु पूर्वादि दिशाओं में भ्रमण करता है, स्त्रीयों के तृतीयागमन में दक्षिण राहु का त्याग कर देना चाहिए। **अन्य मत-** गमोक्ततिथ्यादिषु कारयेद्बुधे बध्वास्तृतीयः पतिवेश्मनो गमः।।

☞ नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण पशुओं की खरीद-बिक्री नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन वाहन खरीदने ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। **इसके बाद मासान्तदोष है।**

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल हेमन्तऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे.अं. -मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२६	४४	१	शु	१६	१७	दि	१	१०	अनुराधा	१६	५०	दि	१	२३	अतिगण्ड	११	५	दि	११	५	वव	१६	१७	बा	४८	४९	राक्षस	२१	१६	५	५	३०			६	३९	५	२१	७	४	१५	१५	१९	५०	- १६	५	४०
२६	४१	२	श	२१	२०	दि	३	१२	ज्येष्ठा	२३	१	दि	३	५२	सुकर्मा	१२	१३	दि	११	३३	कौ	२१	२०	तै	५३	३१	मुसल	२२	१७	६	६	१	धनु	२३।१	६	४०	५	२०	७	५	१६	५	२०	४	- १६	६	२९
२६	३९	३	र	२५	४२	सा	४	५७	मूल	२८	३३	सा	६	५	धृति	१२	५३	दि	११	४९	गर	२५	४२	व	५७	२२	सिद्धि	२३	१८	७	७	२			६	४०	५	२०	७	६	१६	५६	२०	१६	- १६	७	२२
२६	३७	४	चं	२९	२	सा	६	१८	पू.षा.	३३	७	रा	७	५६	शूल	१२	५०	दि	११	४९	भ	२९	२	वव	६०	०	उत्पात	२४	१९	८	८	३	मकर	४८।५९	६	४१	५	१९	७	७	१७	४८	२०	२९	- १५	८	१८
२६	३५	५	मं	३१	१८	रा	७	१२	उ.षा.	३६	३५	रा	९	१९	गण्ड	११	५४	दि	११	२७	वव	०	१०	वा	३१	१८	मानस	२५	२०	९	९	४			६	४१	५	१९	७	८	१८	४१	२०	४१	- १५	९	१६
२६	३३	६	बु	३२	११	रा	७	३३	श्रवण	३८	४५	रा	१०	११	वृद्धि	१०	१	दि	१०	४१	कौ	१	४५	तै	३२	११	छत्र	२६	२१	१०	१०	५			६	४१	५	१९	७	९	१९	३५	२०	५३	- १५	१०	१३
२६	३०	७	गु	३१	४५	रा	७	२४	धनिष्ठा	३९	३९	रा	१०	३४	ध्रुव	७	८	दि	९	३३	गर	१	५८	व	३१	४५	श्रीवत्स	२७	२२	११	११	६	कुम्भ	९।१२	६	४२	५	१८	७	१०	२०	३१	२१	४	- १५	११	११
२६	२८	८	शु	३०	७	सा	६	४५	शतभिष	३९	२२	रा	१०	२७	व्याघात	३ ५५	१४ ११	प्रा	८ ६	० ४	भ	०	५६	वव	३० ५८	७ ४५	सौम्य	२८	२३	१२	१२	७			६	४२	५	१८	७	११	२१	२८	२१	१५	- १४	१२	९
२६	२६	९	श	२७	२२	सा	५	४०	पू.भा.	३७	५९	रा	९	५५	वज्र	५२	४४	रा	३	४९	कौ	२७	२२	तै	५५	३०	कालदण्ड	२९	२४	१३	१३	८	मीन	२३।२०	६	४३	५	१७	७	१२	२२	२७	२१	२५	- १४	१	८
२६	२५	१०	र	२३	३८	सा	४	१०	उ.भा.	३५	४७	रा	९	२	सिद्धि	४६	२४	रा	१	१७	गर	२३	३८	व	५१	२१	सुस्थिर	३०	२५	१४	१४	९			६	४३	५	१७	७	१३	२३	२७	२१	३५	- १४	२	८
२६	२३	११	चं	१९	४	दि	२	२१	रेवती	३२	४४	रा	७	४९	व्यतिपात	३९	२४	रा	१०	२९	भ	१९	४	वव	४६	२८	मातङ्ग	१	२६	१५	१५	१०	मेष	३२।४४	६	४३	५	१७	७	१४	२४	२८	२१	४५	- १३	३	१३
२६	२१	१२	मं	१३	५१	दि	१२	१६	अश्विनी	२९	७	सा	६	२३	वरीयान	३१	५६	रा	७	३०	वा	१३	५१	कौ	४१	३	अमृत	२	२७	१६	१६	११			६	४४	५	१६	७	१५	२५	२९	२१	५४	- १३	४	२१
२६	१९	१३	बु	८	१४	दि	१०	२	भरणी	२५	५	सा	४	४६	परिघ	२४	१०	सा	४	२४	तै	८	१४	गर	३५	१८	काण	३	२८	१७	१७	१२	वृष	३९।२	६	४४	५	१६	७	१६	२६	३३	२२	३	- १२	५	३४
२६	१८	१४	गु	२ ५४	२१ ३	प्रा	७ ५	४० १८	कृत्तिका	२०	५३	दि	३	५	शिव	१६	१७	दि	१	१५	व	२	२१	भ	२९ ५६	२३ २४	लुम्बक	४	२९	१८	१८	१३			६	४४	५	१६	७	१७	२७	३९	२२	११	- १२	-	-

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि ३० कार्तिक से १३ अग्रहायण तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक २१ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक सन् २०२५ ई.।।

चन्द्रदर्शन। मु. १५जघन्या। फल महँगी। उत्तरशृंग सस्तीकारक। रुद्रव्रत (पीड़िया)। ❶अग्रहायणमास दि. ३०। धनुराशि दि. ३।५२। मु. जमादिउस्सानी ६ हिजरी सन् १४४७। ⊙सायन धनुराशि का सूर्य रा. ७।११। राष्ट्रीय❶ भ.रा. ५।३७ से। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ६।५ तक। रवियोग सा. ६।५ से। ♍ यायीजययोग रा. ७।२४ तक। भ.सा. ६।१८ तक। मकरराशि रा. २।१७। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। यायीजययोग रा. ७।५६ से। रवियोग रा. ७।५६ तक। श्रीरामविवाह उत्सव ५। द्वितीयानागपञ्चमी ५। रवियोग रा. ९।१९ से। मृत्युबाणारम्भ रा. १०।३६। रवियोग रा. १०।११ तक। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रत। चम्पाषष्ठी ६ व्रत (महाराष्ट्र में प्रसिद्ध)। माताअन्नपूर्णा व्रत समाप्त। सायं काल में अन्नपूर्णोत्सव। भ.रा. ७।२४ से। कुम्भराशि दि. १०।२३। मित्रसप्तमी ७। पञ्चक प्रारम्भ दि. १०।२३। मृत्युबाणसमाप्ति रा. १०।१५। ♍ भ. प्रा. ७।४ तक। रवियोग रा. १०।२७ से। ◆दिसम्बर १२। यायीजययोग दि. २।२१ तक। मीनराशि सा. ४।३। श्रीनन्दानवमी ९। आज देवी पूजन से श्री विष्णुलोकप्राप्ति। कल्यादि ९। रवियोग समस्त। भ. रा. ३।१५ से। यायीजययोग सा. ४।१० से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ९।२ तक। रवियोग रा. ९।२ तक। भ.दि. २।२१ तक। मेषराशि रा. ७।४९। मोक्षदा ११ एकादशी व्रत सबका। गीताजयन्ती ११। पञ्चक समाप्ति रा. ७।४९। ◆ मत्स्य द्वादशी १२। धरणी व्रत। भौमप्रदोष १३ व्रत। *ऋण मुक्ति के लिए* । स्थायीजययोग दि. १२।१६ तक। सर्वार्थ तथा ◐ वृषराशि रा. १०।२१। काशी में पिशाचमोचनयात्रा तथा दर्शन। पिशाच मुक्ति के लिए श्राद्ध तथा तर्पण। पार्वणश्राद्ध। ◯ भ.दि. ७।४० से सा. ६।२९ तक। स्नान-दान- व्रत की १५अनुदया पूर्णिमा। नगरपरिक्रमा। दत्तात्रेय अवतार १५ (प्रदोष में)। ❷

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श।।

ति. १ शुक्र को अनुराधा में सूर्ययुति है।

ति. २ शनि को दि.३।५२ के बाद मूल में रे.१० ल. गोधूलि वा ल. ३ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३।। (चं.दा.) वा ल.४ इष्ट५ ग्र.व.वि.१० (षष्ठस्थ चन्द्र शुभ नहीं है) वा ल. ६ इष्ट७ग्र.व.वि.१५ वा ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३।।

ति. ३ रवि को मूल में रे. १० दिन में ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०।। (गु.दा.) वा ल.गोधूलि।

ति. ४ सोम को रा. ७।५६ के बाद उ.षा. में रे. ७ ल. ३ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।। (चं.दा.) वा ल.४ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (षष्ठस्थ चन्द्र शुभ नहीं है) वा ल. ६ इष्ट ७ ग्र.व.वि. १५

ति. ५ मंगल को उ.षा. में रे. ७ दिन में ल. ९ इष्ट ५ग्र.व.वि.१२ वा ल. १० इष्ट ५ ग्र.व. वि. १०।। (गु.दा.) वा ल.गोधूलि वा ल. ३ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १३।। (अष्टमस्थ चन्द्र शुभ नहीं है) वा ल. ४ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (चं.दा.)

ति. ९ शनि को रा.९।५५ के बाद उ.भा. में रे. ७ ल. ४ इष्ट५ ग्र.व.वि.१० वा ल. ६ इष्ट ६ ग्र.व. वि.१३ (तृतीयस्थ शुक्र शुभ नहीं है)

ति. १० रवि को उ.भा.में रे.७ दिन में ल.१० इष्ट ६ ग्र.व. वि.१५।। (गु.दा.) वा ल.गोधूलि वा ल.३ इष्ट ५ग्र.व.वि.११।। (षष्ठस्थ शुक्र शुभ नहीं है)। रा. ९।२ के बाद व्यतिपात (रा.१।१७) से पूर्व रेवती में रे.१० ल. ४ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० वा ल. ६ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३ (तृतीयस्थ शुक्र शुभ नहीं है)

ति. ११ सोम को रेवती में भद्रादोष तथा व्यतिपात है।

ti. १४ गुरु को भद्रा (सा.६।२९) के बाद रोहिणी में रे.८ ल. ३ इष्ट ५ ग्र.व.वि.११।। (षष्ठस्थ शुक्र शुभ नहीं है) वा ल. ४ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५ वा ल. ६ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१३ (तृतीयस्थ शुक्र शुभ नहीं है)

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				वक्रीबुध				मार्गीगुरु				शुक्र				मार्गीशनि				राहु			
१	शु	७	१७	३०	५८	६	२८	७	२०	३	३	०	३७	६	२३	४१	३०	१०	२६	५९	२३	१०	१९	५८	५४
२	श	७	१८	१६	५२	६	२७	२०	३९	३	३	०	५५	६	२४	५६	२६	१०	२६	५९	५३	१०	१९	५५	४३
३	र	७	१९	२	४७	६	२६	५५	४१	३	३	१	१३	६	२६	११	२२	१०	२७	०	२२	१०	१९	५२	३२
४	चं	७	१९	४८	४२	६	२६	३०	५८	व	३	१	३१	६	२७	२६	१८	१०	२७	०	५२	१०	१९	४९	२१
५	मं	७	२०	३४	३७	६	२६	५	४५	३	२	५९	५८	६	२८	४१	१४	१०	२७	१	२२	१०	१९	४६	११
६	बु	७	२१	२०	३२	६	२५	४०	४५	३	२	५६	४०	६	२९	५६	१०	१०	२७	१	५१	१०	१९	४३	०
७	गु	७	२२	६	२७	मा	२५	२८	२१	३	२	५३	२२	७	१	११	६	१०	२७	२	२१	१०	१९	३९	४९
८	शु	७	२२	५२	२२	६	२५	३४	१८	३	२	५०	३	७	२	२६	२	१०	२७	२	५२	१०	१९	३६	३८
९	श	७	२३	३८	१७	६	२५	४०	१६	३	२	४६	४५	७	३	४०	५८	१०	२७	३	२३	१०	१९	३३	२७
१०	र	७	२४	२४	१२	६	२५	४६	१३	३	२	४३	२७	७	४	५५	५४	१०	२७	३	५४	१०	१९	३०	१७
११	चं	७	२५	१०	७	६	२५	५२	१०	३	२	४०	८	७	६	१०	४९	१०	२७	४	२५	१०	१९	२७	६
१२	मं	७	२५	५६	१	६	२६	१६	८	३	२	३६	५०	७	७	२५	४५	१०	२७	४	५६	१०	१९	२३	५५
१३	बु	७	२६	४१	५६	६	२६	४९	४९	३	२	३३	३२	७	८	४०	४१	१०	२७	५	२७	१०	१९	२०	४४
१४	गु	७	२७	२७	४२	६	२७	२३	३०	३	२	३०	१४	७	९	५५	३७	१०	२७	७	४	१०	१९	१७	३३

ग्रहचार- मंगल-ज्येष्ठा में ।। वक्रीबुध-ति. ७ गुरु को मार्गी रा.१०।५६।। मार्गीगुरु- पुनर्वसु ४ चरण में। ति. ४ सोम को वक्री दि.१०।३५।। शुक्र- ति. ६ बुध को वृश्चिकराशि में दि.७।५५। ति.८ शुक्र को अनुराधा में रा.११।५९।। मार्गीशनि- पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में ।। राहु- शतभिष ४ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी २ चरण में ।।

३३ पं.मार्गशीर्षशुक्ल ८ शुक्र

अहर्गण ३९७२

अयनांश २४।१२।११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	१०	७	६	३	७	१०	१०	४
११	११	२२	२५	२	२	२७	१९	१९
२१	१२	५२	३४	५०	२६	२	३६	३६
२८	४०	२२	१८	३	२	५२	३८	३८
६०	८०३	४५	५	३	७४	०	३	३
५९	४८	५५	५८	१८	५६	३१	११	११
			मा.	व.		मा.		

९ | सू. | ७ बु.
१० | मं. ८ शु. | ६
चं.
श. ११ रा. | ५ के.
१२ | २ | ४ गु.
१ | ३

विविधमुहूर्त्त–ति.१ शुक्र को अनुराधा में सूर्ययुति है। ज्येष्ठा में सूर्यभोग्य है। ति.२ शनि को ज्येष्ठा में पूर्वदोष है। दि.३।५२ के बाद मूल में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। ति. ३ रवि को मूल में सा.४।५७ तक पुंसवनसीमन्त वाटिकारोपण औषधसेवन शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ४ सोम को पू.षा. में भद्रादोष है। रा. ७।५६ के बाद उ.षा.में गर्भाधान वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल.७) मुहूर्त है। ति. ५ मंगल को उ.षा. में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान लालवस्त्रप्रवालरत्नधारण आभूषण निर्माण मुहूर्त है। रा.९।१९ के बाद श्रवण में ऑपरेशन मुहूर्त है। ति. ६ बुध को श्रवण में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा (सप्तमी में) दैवरी शिल्पविद्या ईंट निर्माण वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त है। रा.१०।११ के बाद धनिष्ठा में गर्भाधान नवीनवस्त्रधारण द्विरागमन (ल. ७) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ६) मुहूर्त है। ति. ७ गुरु को धनिष्ठा में भद्रा (रा. ७।२४) से पूर्व अन्नप्राशन नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री मकर के चन्द्रमा में पूर्व दिशा की यात्रा तथा कुम्भ के चन्द्रमा में पश्चिम दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण वधूप्रवेश (ल. ८ वा ११) द्विरागमन (ल. १२) गृहारम्भ (ल. ११ वा २) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ११ वा ३) वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ८ शुक्र को शतभिष में राहुयुति तथा भद्रा है। ति. ९ शनि को पू.भा. में शनियुति है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। रा. ९।५५ के बाद उ.भा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ६) मुहूर्त है। ति.१० रवि को उ.भा. में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण ☞

तिथि	१ शु		२ श		३ र		४ चं		५ मं		६ बु		७ गु		८ शु		९ श		१० र		११ चं		१२ मं		१३ बु		१४ गु	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
वृश्चिक	८	३५	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	५	८	१	७	५७	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०
धनु	१०	४१	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	११	१०	७	१०	३	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६
मकर	१२	२८	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४१	११	३७	११	३३
कुम्भ	१	५९	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	२९	१	२५	१	२१	१	१६	१	१२	१	८	१	४
मीन	३	२७	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५७	२	५३	२	४९	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२
मेष	५	४	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३४	४	३०	४	२६	४	२१	४	१७	४	१३	४	९
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
वृष	७	०	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३०	६	२६	६	२२	६	१७	६	१३	६	९	६	५
मिथुन	९	१४	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२७	८	२३	८	१९
कर्क	११	३२	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७
सिंह	१	४६	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१६	१	१२	१	८	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१
कन्या	३	५९	३	५५	३	५०	३	४६	३	४२	३	३९	३	३४	३	२९	३	२५	३	२१	३	१६	३	१२	३	८	३	४
तुला	६	१५	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४५	५	४१	५	३७	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०

३४ पं० मार्गशीर्षशुक्ल १४ गुरु

अहर्गण ३९७८

अयनांश २४।१२।१२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	१	७	६	३	७	१०	१०	४
१७	५	२७	२७	२	९	२७	१९	१९
२७	०	२७	२३	३०	५५	७	१७	१७
३९	४०	४२	३०	१४	३७	४	३३	३३
६१	८६०	४५	३३	३	७५	२	३	३
६	१३	४६	४१	१९	६	३	११	११
			मा.	व.		मा.		

९ | सू. | ७ बु.
१० | मं. ८ शु. | ६
श.११रा. | ५ के.
१२ | चं. २ | ४ गु.
१ | ३

◐अमृतसिद्धियोग सा. ६।२३ तक। रवियोग सा. ६।२३ से। ◯कपर्दीश्वर दर्शन। ⊙ज्येष्ठा नक्षत्र का सूर्य दि.१२।१। सर्वार्थसिद्धियोग सा.४।४६ से। रवियोग दि.१२।१ तक। पुनःरवियोग सा.४।४६ से। ❷दत्तात्रेयजयन्ती। यायीजययोग दि.३।५ से। यमघंटयोग दि.३।५ तक। रवियोग दि.३।५ तक।

प्रश्न लग्न से विवाह विचार- गुरु, सूर्य एवं बुध प्रश्न लग्न से ३,५,२,११,६ स्थानों में स्थित चन्द्रमा को देख रहे हों या एक भी शुभ ग्रह पूर्णबली होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो विवाह कारक होता है। अन्यमत- प्रश्न लग्न से १,४,७,१०,५,९ स्थानों में शुभग्रह तथा ३,५,६,११,७ स्थानों में चन्द्रमा, सूर्य, बुध तथा गुरु से दृष्ट हो तो विवाहकर्ता वर को मनोनुकूल कन्या की प्राप्ति होती है। पुनः- प्रश्न लग्न से ३,६,७,११ स्थानों में चन्द्र, सूर्य तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तथा केन्द्र, त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तो विवाह कारक होता है। पुत्र प्राप्ति प्रश्न विचार- पुरुष ग्रह स्व राशि में स्थित होकर बुध तथा शुक्र से दृष्ट हों तो पुत्र तथा स्त्री संज्ञक ग्रह स्वराशिस्थ होकर बुध-शुक्र से दृष्ट हो तो कन्या की प्राप्ति होती है। पुनः- पञ्चमभाव यदि पुरुष संज्ञक ग्रहों से युत-दृष्ट हों तो पुत्र तथा स्त्री ग्रहों से युत-दृष्ट हों तो कन्या की प्राप्ति होती है। पुत्र संख्या ज्ञान- जितने पुरुष संज्ञक ग्रह पञ्चम भाव को देखते हों उतने पुत्र तथा जितने स्त्री कारक ग्रह देखते हों उतनी कन्याएं प्राप्त होती हैं। गर्भ सम्भवासम्भव ज्ञान- पञ्चमेश लग्नस्थ अथवा चन्द्रमा से युत हो या शुक्र-मंगल, चन्द्रमा को देखते हों तो गर्भ सम्भव होता है। विवाह काल ज्ञान- (ज्योतिर्निबन्ध)- लग्नेश तथा सप्तमेश के योग से जो राशि प्राप्त हो उस राशि में बृहस्पति जाता है तो, अथवा चन्द्र नक्षत्र एवं सप्तमेश के योग तुल्य अंश में गुरु के होने पर विवाह होता है। यदि गुरु बलवान होकर मित्र ग्रह के नवमांश में हो तो एक स्त्री वाला, स्व नवमांश में हो तो दो-तीन स्त्रियों वाला तथा उच्चांश में हो तो अनेक स्त्रियों वाला होता है। सप्तमेश जिस राशि और नवमांश में हो उनके अधिपतियों या शुक्र और चन्द्रमा में जो अधिक बली हो उसकी दशा में तथा सप्तमेश युत राश्यंश से त्रिकोण में गुरु के होने पर विवाह होता है। मार्गशीर्षादि १२ मासों के रविवार व्रत में भक्ष्य- क्रमशः मार्गशीर्षादि मासों के रविवार व्रतों में तीन तुलसी पत्र, तीन पल घी, तीन मुट्ठी तिल, तीन पल दही, दूध, गोमय, तीन अंजली जल, तीन मरिच, तीन पल सत्तु, गो मूत्र, शर्करा एवं शुद्ध हविष्य का भक्षण करना चाहिए।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल-ति. १ शुक्र को दि. १।२३ से। ति. ३ रवि को सा. ६।५ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. १० रवि को रा. ९।२ से। ति. १२ मंगल को सा. ६।२३ तक।
पञ्चक विचार- ति. ७ गुरु को दि. १०।२३ से। ति. ११ सोम को रा. ७।४९ तक।

☞ नावनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। रा.९।२ के बाद व्यतिपात (रा. १।१७) से पूर्व रेवती में उत्तर दिशा की यात्रा औषधसेवन मुहूर्त है। ति. ११ सोम को रेवती में व्यतिपातदोष तथा भद्रा है। ति. १२ मंगल को अश्विनी में केतुवेध है। ति. १३ बुध को दि. १०।२ तक भरणी में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। चतुर्दशी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। ति.१४ गुरु को भद्रा (सा. ६।२९) के बाद रोहिणी में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण शिल्पविद्या वधूप्रवेश (ल.८) द्विरागमन (ल.७) गृहारम्भ (ल.३चं.दा.) विपणि ऑपरेशन का मुहूर्त्त है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल हेमन्तऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	समय	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	समय	घं.	मि.	योग	घ.	प.	समय	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश घं. मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे.अं. -	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२६	१६	१	शु	५०	३८	रा	३	०	रोहिणी	१६	४३	दि	१	२६	सिद्ध	८	२३	दि	१०	६	वा	२३	३१	कौ	५०	३८	मित्र	५	१	१९	१९	१४	मिथुन	४४।४५	६	४५	५	१५	७	१८	२८	४५	२२	१९	-	१२	५	२२
२६	१५	२	श	४५	१७	रा	१२	५२	मृगशिरा	१२	४६	दि	११	५१	साध्य	०/५२	३९/३४	प्रा	७/४	१/२	तै	१७	५८	गर	४५	१७	वज्र	६	२	२०	२०	१५			६	४५	५	१५	७	१९	२९	५२	२२	२७	-	११	६	२९
२६	१४	३	र	४०	२५	रा	१०	५५	आर्द्रा	९	१५	दि	१०	२७	शुक्ल	४६	१६	रा	१	१५	व	१२	५१	भ	४०	२५	ध्वांक्ष	७	३	२१	२१	१६	कर्क	५२।५	६	४५	५	१५	७	२०	३१	०	२२	३४	-	११	७	४०
२६	१२	४	चं	३६	२१	रा	९	१८	पुनर्वसु	६	२१	दि	९	१८	ब्रह्म	३९	५७	रा	१०	४५	वव	८	२३	बा	३६	२१	धूम्र	८	४	२२	२२	१७			६	४६	५	१४	७	२१	३२	९	२२	४१	-	१०	८	४८
२६	११	५	मं	३३	९	रा	८	२	पुष्य	४	२०	दि	८	३०	ऐन्द्र	३४	२०	रा	८	३०	कौ	४	४५	तै	३३	९	प्रवर्धमान	९	५	२३	२३	१८			६	४६	५	१४	७	२२	३३	१९	२२	४७	-	१०	९	५२
२६	१०	६	बु	३१	०	रा	७	१०	श्लेषा	३	११	दि	८	२	वैधृति	२९	३३	सा	६	३५	गर	२	५	व	३१	०	राक्षस	१०	६	२४	२४	१९	सिंह	३।११	६	४६	५	१४	७	२३	३४	३१	२२	५३	-	९	१०	५०
२६	९	७	गु	३०	५	सा	६	४८	मघा	३	१०	दि	८	२	विष्कुम्भ	२५	४२	सा	५	३	भ	०	३३	वव	३०	५	मुसल	११	७	२५	२५	२०			६	४६	५	१४	७	२४	३५	४३	२२	५८	-	९	११	४६
२६	८	८	शु	३०	२६	सा	६	५६	पू.फा.	४	२१	दि	८	३०	प्रीति	२२	५२	दि	३	५५	बा	०	१६	कौ	३०	२६	सिद्धि	१२	८	२६	२६	२१	कन्या	१९।५८	६	४६	५	१४	७	२५	३६	५६	२३	३	-	९	१२	३९
२६	७	९	श	३२	९	रा	७	३९	उ.फा.	६	५०	दि	९	३१	आयुष्मान	२१	०	दि	३	११	तै	१	१८	गर	३२	९	उत्पात	१३	९	२७	२७	२२			६	४७	५	१३	७	२६	३८	१०	२३	७	-	८	१	३१
२६	६	१०	र	३४	५८	रा	८	४६	हस्त	१०	३४	दि	११	१	सौभाग्य	२०	६	दि	२	४९	व	३	३४	भ	३४	५८	मानस	१४	१०	२८	२८	२३	तुला	४२।५८	६	४७	५	१३	७	२७	३९	२५	२३	११	-	८	२	२२
२६	६	११	चं	३९	०	रा	१०	२३	चित्रा	१५	२२	दि	१२	५६	शोभन	२०	६	दि	२	४९	वव	६	५९	बा	३९	०	मुद्गर	१५	११	२९	२९	२४			६	४७	५	१३	७	२८	४०	४१	२३	१५	-	७	३	१६
२६	५	१२	मं	४३	४८	रा	१२	१८	स्वाती	२१	५	दि	३	१३	अतिगण्ड	२०	४६	दि	३	५	कौ	११	२४	तै	४३	४८	ध्वज	१६	१२	३०	१	२५			६	४७	५	१३	७	२९	४१	५८	२३	१८	-	७	४	१०
२६	४	१३	बु	४९	८	रा	२	२६	विशाखा	२७	२६	सा	५	४५	सुकर्मा	२१	५४	दि	३	३३	गर	१६	२८	व	४९	८	धाता	१७	१३	१	२	२६	वृश्चिक	१०।५१	६	४७	५	१३	८	०	४३	१५	२३	२१	-	६	५	५
२६	४	१४	गु	५४	३३	रा	४	३६	अनुराधा	३३	५९	रा	८	२३	धृति	२३	१५	दि	४	५	भ	२१	५१	श	५४	३३	आनन्द	१८	१४	२	३	२७			६	४७	५	१३	८	१	४४	३३	२३	२३	-	६	६	०
२६	४	३०	शु	५९	३६	रा	६	३७	ज्येष्ठा	४०	२१	रा	१०	५५	शूल	२४	२९	सा	४	३५	च	२७	५	नाग	५९	३६	चर	१९	१५	३	४	२८	धनु	४०।२१	६	४७	५	१३	८	२	४५	५२	२३	२४	-	५	-	-

पौषकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि १४ अग्रहायण से २८ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक ५ दिसम्बर से १९ तक सन् २०२५ ई.।।

☞ति. ७ गुरु को शुक्र का अस्त पूर्व में।।

मिथुनराशि रा. १२।३९। मृत्युबाणारम्भ रा. ७।१। यमघंटयोग दि.१।२६ तक। ◐दि.१०।२७ से रा.१०।५५ तक।
मृत्युबाण समाप्ति सा.६।३५। द्विपुष्करयोग दि. ११।५१ तक।
भ. दि.११।५३ से रा.१०।५५ तक। **कर्कराशि** रा. ३।३५। यायीजययोग ◐
संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।४८। **शुक्रवार्द्धक्य आरम्भ** ❷
सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।३० से ❷रा.१२।८। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ९।१८ से।
भ. रा. ७।१० से। **सिंहराशि** दि. ८।२। रवियोग दि. ८।२ से।
भ. प्रा. ६।५९ तक। **शुक्र का अस्त पूर्व में** रा. १२।८। रवियोग दि. ८।२ तक।
कन्याराशि दि. २।४५। **अष्टकाश्राद्ध।** पार्वण विधि के अनुसार। स्थायीजययोग ◸
अन्वष्टका श्राद्ध। यायीजययोग रा. ७।३९ तक। यमघंटयोग दि. ९।३१ से। ◸दि. ८।३० तक।
भ. दि. ८।१३ से रा. ८।४६ तक। **तुलाराशि** रा. ११।५८। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग दि. ११।१ तक।
सफला ११ एकादशी व्रत सबका। यायीजययोग दि. १२।५६ से रा. १०।२३ तक।
⊙सं.मूल नक्षत्र तथा धनुराशि का सूर्य दि. १।५१। मु. १५ जघन्या। फल महँगी। बाद का ६ घण्टा २४ मिनट पुण्यकाल। नववस्त्रसुवर्णदान। गोदावरी में स्नान।●
भ. रा. २।२६ से। **वृश्चिकराशि** दि. ११।७। **प्रदोष १३ व्रत। सौरपौषमासारम्भ।** सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग सा. ५।४५ से। ◖रा. १२।१८ तक।
भ.दि. ३।३१ तक। **मासशिवरात्रि १४ व्रत।** सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।२३ तक। ●**खरमासारम्भ।** स्थायीजययोग दि. ३।१३ से रा. १२।१८ तक। त्रिपुष्करयोग दि. ३।१३ से ◖
धनुराशि रा. १०।५५। स्नान-दान-श्राद्ध की **३० अमावस्या।** शुभवार तथा अमावस्या की युति सुभिक्ष तथा प्रजा के लिए सुखकारक होती है।

पौषमास के कृत्य

जो मनुष्य पौष के माह में एक बार ही भोजन करता है, वह सुन्दर, दर्शनीय तथा यश का भागी होता है। (महाभारत)

पौष के माह में गृह, नगर, वाहन आदि का जो ब्राह्मण को दान करता है उससे भगवान विष्णु संतुष्ट रहते हैं। (वामन पुराण)

।।विवाहमुहूर्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श।।

ति. १ शुक्र को रोहिणी में रे. ८ दिन में ल.१० इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०।। (गु.दा.)। दि.१।२६ के बाद मृत्युबाण (रा.७।१) से पूर्व मृगशिरा में रे.६ **ल.गोधूलि** वा ल. ३ इष्ट५ ग्र.व.वि.११।।(षष्ठस्थ शुक्र शुभ नहीं है)

ति. २ शनि को मृगशिरा में मृत्युबाणव्याप्त है। **इसके बाद शुक्रवार्धक्य आदि दोष होने से विवाह मुहूर्त्त नहीं है।**

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.वा.	मंगल				मार्गीबुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१ शु	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
२ श	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
३ र	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
४ चं	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
५ मं	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
६ बु	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
७ गु	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
८ शु	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
९ श	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
१० र	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
११ चं	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
१२ मं	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
१३ बु	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
१४ गु	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			
३० शु	[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]				[illegible]			

ग्रहचार- मंगल- ति.३ रवि को मूल तथा धनुराशि में दि.२।३७।। मार्गीबुध- ति. ३ रवि को वृश्चिकराशि में रा.१०।४७। ति. ७ गुरु को अनुराधा में दि.११।५६।। वक्रीगुरु- पुनर्वसु ४ चरण में।। शुक्र- ति. ५ मंगल को ज्येष्ठा में दि.३।५२। ति. ३० शुक्र को मूल तथा धनुराशि में रा.शे.६।४२।। शनि- पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में।। राहु- शतभिष ४ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी २ चरण में।।

३५ पं० पौषकृष्ण ८ शुक्र

अहर्गण ३९८६

अयनांश २४।१२।१३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	१८	१८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	५२	५२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	७	७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	११

मा.व.

विविधमुहूर्त्त- ति. १ शुक्र को रोहिणी में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या विपणि मुहूर्त्त है। मृगशिरा में वृष के चन्द्रमा में पूर्व-दक्षिण तथा मिथुन के चन्द्रमा में दक्षिण दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. २ शनि को मृगशिरा में पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। आर्द्रा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ३ रवि को आर्द्रा में शस्त्रनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त्त है। पुनर्वसु में भौमवेध तथा भद्रा है। ति. ४ सोम को पुनर्वसु में भौमवेध है। पुष्य में मंगल का का वेध समाप्त है,किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। ति.५ मंगल को दि. ८।३० के बाद श्लेषा में वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ६ बुध को श्लेषा में वैधृतिदोष है। ति. ७ गुरु को भद्रा (प्रा. ६।५९) के बाद मघा में दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। पू.फा. में केतुयुति है। ति. ८ शुक्र को दि. ८।३० से सा. ६।५६ तक उ.फा. में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या नावनिर्माण ईंट निर्माण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ शनि को उ.फा. में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्ता (रा.७।३९) के बाद हस्त में कृष्णवस्त्रधारण पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा का मुहूर्त्त है। ति. १० रवि को भद्रा (दि.८।१३) से पूर्व हस्त में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग ☞

तिथि / ल.अ.	१ शु घं.मि.	२ श घं.मि.	३ र घं.मि.	४ चं घं.मि.	५ मं घं.मि.	६ बु घं.मि.	७ गु घं.मि.	८ शु घं.मि.	९ श घं.मि.	१० र घं.मि.	११ चं घं.मि.	१२ मं घं.मि.	तिथि / ल.अ.	१३ बु घं.मि.	१४ गु घं.मि.	३० शु घं.मि.
वृश्चिक	७ ३५	७ ३१	७ २७	७ २२	७ १८	७ १४	७ ९	७ ४	६ ५९	६ ५५	६ ५१	६ ४७	धनु	८ ४९	८ ४४	८ ४०
धनु	९ ४१	९ ३७	९ ३३	८ २८	९ २४	९ २०	९ १५	९ १०	९ ५	९ १	८ ५७	८ ५३	मकर	१० ३६	१० ३१	१० २७
मकर	११ २८	११ २४	११ २०	११ १५	११ ११	११ ७	११ २	१० ५७	१० ५२	१० ४८	१० ४४	१० ४०	कुम्भ	१२ ७	१२ २	११ ५८
कुम्भ	१२ ५९	१२ ५५	१२ ५१	१२ ४६	१२ ४२	१२ ३८	१२ ३३	१२ २८	१२ २३	१२ १९	१२ १५	१२ ११	मीन	१ ३५	१ ३०	१ २६
मीन	२ २७	२ २३	२ १९	२ १४	२ १०	२ ६	२ १	१ ५६	१ ५१	१ ४७	१ ४३	१ ३९	मेष	३ १२	३ ७	३ ३
मेष	४ ४	४ ०	३ ५६	३ ५१	३ ४७	३ ४३	३ ३८	३ ३३	३ २८	३ २४	३ २०	३ १६	वृष	५ ८	५ ३	४ ५९
ल.अ.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	ल.अ.	रात्रि	रात्रि	रात्रि
वृष	६ ०	५ ५६	५ ५२	५ ४७	५ ४३	५ ३९	५ ३४	५ २९	५ २४	५ २०	५ १६	५ १२	मिथुन	७ २२	७ १७	७ १३
मिथुन	८ १४	८ १०	८ ६	८ १	७ ५७	७ ५३	७ ४८	७ ४३	७ ३८	७ ३४	७ ३०	७ २६	कर्क	९ ४०	९ ३५	९ ३१
कर्क	१० ३२	१० २८	१० २४	१० १९	१० १५	१० ११	१० ६	१० १	९ ५६	९ ५२	९ ४८	९ ४४	सिंह	११ ५४	११ ४९	११ ४५
सिंह	१२ ४६	१२ ४२	१२ ३८	१२ ३३	१२ २९	१२ २५	१२ २०	१२ १५	१२ १०	१२ ६	१२ २	११ ५८	कन्या	२ ७	२ २	१ ५८
कन्या	२ ५९	२ ५५	२ ५१	२ ४६	२ ४२	२ ३८	२ ३३	२ २८	२ २३	२ १९	२ १५	२ ११	तुला	४ २३	४ १८	४ १४
तुला	५ १५	५ ११	५ ६	५ २	४ ५८	४ ५४	४ ४९	४ ४४	४ ३९	४ ३५	४ ३१	४ २७	वृश्चिक	६ ४०	६ ३५	६ ३१

३६ पं० पौषकृष्ण ३० शुक्र

अहर्गण ३९९३

अयनांश २४।१२।१४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७	१८	१८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७	२९	२९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४८	५१	५१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	११	११

मा.व.

मूलविचार- श्लेषा/मघा-ति. ५ मंगल को दि. ८।३० से। ति.७ गुरु को दि. ८।२ तक। ज्येष्ठा/मूल- ति. १४ गुरु को रा. ८।२३ से। (*शुक्रास्तमासफल-पौषमास में शुक्रास्त हो तो छत्रभंग होता है।*)

अनेक प्रकार के प्रश्नों का योग- प्रश्नाक्षर को द्विगुणित कर एक जोड़ दे तथा तीन का भाग दें, सम शेष से धातु, विषम शेष से जीव तथा शून्य शेष से मूल सम्बन्धी प्रश्न होता है। **दृष्टि द्वारा प्रश्न कथन-** प्रश्न कर्त्ता प्रश्नकाल में यदि ऊपर देखे तो जीव, नीचे देखे तो मूल एवं सम देखे तो धातु सम्बन्धि प्रश्न होता है। **राशि द्वारा प्रश्न ज्ञान-** बलवान मेषादि राशियों के प्रश्न लग्न से क्रमशः मनुष्य, चतुष्पाद, गर्भ, व्यवहार, भोग, स्त्री, व्यापार, दुष्टभय, धन, कलह, गर्भ एवं स्थान सम्बन्धी चिन्ता होती है। **कार्य सिद्धि सम्बन्धी प्रश्न ज्ञान-** गर्ग के अनुसार तत्कालिक लग्न में शीर्षोदय राशि पूर्ण चन्द्र से युक्त हो तो कार्य की सिद्धि होती है। पुनः शुभ ग्रह केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थित हों तथा पाप ग्रह ३,६,११ में हों तो भी कार्य सिद्धि तथा प्रेषित व्यक्ति का आगमन होता है। **प्रश्नाक्षर द्वारा कार्य सिद्धि ज्ञान-** प्रश्नाक्षर को द्विगुणित कर एक जोड़ दे तथा पुनः तीन का भाग दे एकादि शेष से क्रमशः सफलता, यथा स्थिति एवं असफलता प्राप्त होती है। **कार्य सिद्धि का काल ज्ञान-** प्रश्न काल में चन्द्रमा यदि चरराशि का हो तो शीघ्र, स्थिर का हो तो यथा स्थिति एवं द्विस्वभाव राशि का हो तो देर से कार्य सफल होता है। **प्रश्न द्वारा दूर एवं समीप का ज्ञान-** नष्ट एवं हृत वस्तु के लाभ सम्बंधी प्रश्न के ज्ञान में चर लग्न से दूर, स्थिर से स्वगृह में एवं द्विस्वभाव में घर के बाहर वस्तु लाभ होता है। इसके विचार में ग्रहयोग का विचार भी करना चाहिए। **लाभ प्रश्न में दिशा ज्ञान-** प्रश्न काल के बलवान क्रेन्द्रगत ग्रह की दिशा में नष्टधन को गया हुआ जानें। यदि बलवान ग्रह क्रेन्द्रस्थ न हो तो लग्न राशि की दिशा में ही नष्टधन को समझना चाहिए। अथवा चर राशि का होकर बलवान चन्द्रमा लग्न में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो उसकी दिशा में द्रव्यलाभ होता है। **धनुराशि के सूर्य में शुभकार्यों का निषेध-** धनु एवं मीन राशि के सूर्य, सिंह के गुरु, तथा सूर्य एवं गुरु के परस्पर एक दूसरे की राशि में स्थिति के समय कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

☞नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नावनिर्माण विपणि वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ११ सोम को चित्रा में शनिवेध है। स्वाती में राहुवेध है। ति.१२ मंगल को स्वाती में पूर्वदोष है। विशाखा में लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल हेमन्तऋतु।।

दि.मा.	घ.प.																										योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	−	रे.अं. ∓	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२६	३	१	श	६०	०	स	म	स्त	मूल	४६	५	रा	१	१३	गण्ड	२५	१७	सा	४	५४	किं	३१	४७	वव	६०	०	गद	२०	१६	४	५	२९			६	४७	५	१३	८	३	४७	१२	२३	२५	−	५	−	−
२६	३	१	र	३	५७	दि	८	२२	पू.षा.	५०	५६	रा	३	९	वृद्धि	२५	२९	सा	४	५९	वव	३	५७	वा	३५	३५	शुभ	२१	१७	५	६	३०			६	४७	५	१३	८	४	४८	३२	२३	२६	−	४	६	१३
२६	३	२	चं	७	१३	दि	९	४०	उ.षा.	५४	४४	रा	४	४१	ध्रुव	२४	४७	सा	४	४२	कौ	७	१३	तै	३८	२०	मृत्यु	२२	१८	६	७	१	मकर	६।५३	६	४७	५	१३	८	५	४९	५४	२३	२६	−	४	७	११
२६	३	३	मं	९	२७	दि	१०	३४	श्रवण	५७	१५	रा	५	४१	व्याघात	२३	१६	सा	४	५	गर	९	२७	व	३९	५१	लुम्बक	२३	१९	७	८	२			६	४७	५	१३	८	६	५१	१४	२३	२६	−	३	८	९
२६	३	४	बु	१०	१४	दि	१०	५३	धनिष्ठा	५८	२७	रा	६	१०	हर्षण	२०	४१	दि	३	३	भ	१०	१४	वव	४०	०	मित्र	२४	२०	८	९	३	कुम्भ	२७।५१	६	४७	५	१३	८	७	५२	३५	२३	२५	−	३	९	६
२६	४	५	गु	९	४६	दि	१०	४१	शतभिष	५८	३०	रा	६	११	वज्र	१७	९	दि	१	३९	वा	९	४६	कौ	३८	५५	वज्र	२५	२१	९	१०	४			६	४७	५	१३	८	८	५३	५७	२३	२४	−	२	१०	३
२६	४	६	शु	८	३	दि	१०	०	पू.भा.	५७	२२	रा	५	४४	सिद्धि	१२	३६	दि	११	४९	तै	८	३	गर	३६	४०	ध्वांक्ष	२६	२२	१०	११	५	मीन	४२।३९	६	४७	५	१३	८	९	५५	१८	२३	२३	−	२	११	०
२६	४	७	श	५	१६	दि	८	५३	उ.भा.	५५	२४	रा	४	५७	व्यतिपात	७	१४	दि	९	४१	व	५	१६	भ	३३	२४	धूम्र	२७	२३	११	१२	६			६	४७	५	१३	८	१०	५६	४१	२३	२०	−	१	११	५८
२६	५	८	र	१ ५५	३१ २३	प्रा	७ ५	२३ ३३	रेवती	५२	३४	रा	३	४९	वरीयान	१ ५३	५ २४	प्रा	७ ४	१३ ३१	वव	१	३१	वा	२९ ५६	१३ ५४	प्रवर्धमान	२८	२४	१२	१३	७	मेष	५२।३४	६	४७	५	१३	८	११	५८	५	२३	१८	−	१	१२	५८
२६	५	१०	चं	५१	४१	रा	३	२७	अश्विनी	४९	४	रा	२	२५	शिव	४७	०	रा	१	३५	तै	२४	१८	गर	५१	४१	राक्षस	२९	२५	१३	१४	८			६	४७	५	१३	८	१२	५९	२८	२३	१५	−	०	२	२
२६	६	११	मं	४६	४	रा	१	१३	भरणी	४५	९	रा	१२	५१	सिद्ध	३९	२०	रा	१०	३१	व	१८	५३	भ	४६	४	मुसल	३०	२६	१४	१५	९	वृष	५९।७	६	४७	५	१३	८	१४	०	५३	२३	११	+	०	३	१०
२६	७	१२	बु	४०	११	रा	१०	५१	कृत्तिका	४१	१	रा	११	११	साध्य	३१	३०	रा	७	२३	वव	१३	८	वा	४०	११	सिद्धि	३१	२७	१५	१६	१०			६	४७	५	१३	८	१५	२	१७	२३	७	+	१	४	२१
२६	८	१३	गु	३४	१७	रा	८	२९	रोहिणी	३६	५०	रा	९	३०	शुभ	२३	३३	सा	४	११	कौ	७	१४	तै	३४	१७	उत्पात	१	२८	१६	१७	११			६	४६	५	१४	८	१६	३	४२	२३	२	+	१	५	३२
२६	९	१४	शु	२८	३४	सा	६	१२	मृगशिरा	३२	५०	रा	७	५४	शुक्ल	१५	४५	दि	१	४	गर	१	२६	व	२८ ५५	३४ ५४	मानस	२	२९	१७	१८	१२	मिथुन	४।५०	६	४६	५	१४	८	१७	५	७	२२	५७	+	२	६	३८
२६	१०	१५	श	२३	१३	सा	४	३	आर्द्रा	२९	१५	सा	६	२८	ब्रह्म	८	१३	दि	१०	३	वव	२३	१३	वा	५०	५०	मुद्गर	३	३०	१८	१९	१३			६	४६	५	१४	८	१८	६	३३	२२	५२	+	२	−	−

पौषशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २९ अग्रहायण से १३ पौष तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक २० दिसम्बर से ३ जनवरी तक सन् २०२५-२६ ई.।।

इस पक्ष में शुक्र का अस्त है।।

पौषशुक्ल में मेघ वर्षे तो श्रावण में वर्षा होती है। ☯सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।९ से। त्रिपुष्करयोग रा. ३।९ से।

चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। ⊙सायन मकरराशि का सूर्य रा. ५।५७। ☯

मकरराशि दि. ९।३२। मु. रज्जब ७ हिजरी सन् १४४७। राष्ट्रीयपौषमास दि. ३०। यायीजययोग दि. ९।४० से ➊

भ. रा. १०।४३ से। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। स्थायीजययोग दि. १०।३४ से रा. ५।४१ तक। रवियोग रा. ५।४१ तक।

भ. दि. १०।५३ तक। कुम्भराशि सा. ५।५५। पञ्चक प्रारम्भ सा. ५।५५। रवियोग रा.शे. ६।२० से।

रवियोग रा.शे. ६।११ तक। एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।

मीनराशि रा. ११।५१। अन्नरूपाषष्ठी व्रत (बंगाल)। ➊रा. ४।४१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ४।४१ से। रवियोग रा. ४।४१ से।

भ. दि. ८।५३ से रा. ८।९ तक। श्रीगुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (प्राचीनतम)। यायीजययोग दि. ८।५३ तक। रवियोग रा. ४।५७ से।

मेषराशि रा. ३।४९। महाभद्राष्टमी ८। पञ्चक समाप्ति रा. ३।४९। यायीजययोग प्रा. ७।२३ से रा. ३।४९ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।४९ से। रवियोग समस्त।

साम्बदशमी (उड़ीसा)। ⊙पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य दि. २।४९। यायीजययोग रा. ३।२७ से। रवियोग समस्त। ◆त्रिपुष्करयोग रा. १।१३ से। रवियोग रा. १२।५१ तक।

भ. दि. २।२० से रा. १।१३ तक। वृषराशि रा.शे. ६।२६। पुत्रदा ११ एकादशी व्रत सबका। मन्वादि ११। स्थायीजययोग रा. १।१३ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १२।५१ से। ◆

कूर्मद्वादशी १२। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। ○स्नान करना चाहिए। प्रयागराज में माघमेला प्रारंभ। पुष्याभिषेक यात्रा। यायीजययोग सा. ६।२८ से।

प्रदोष १३ व्रत। जनवरी १ सन् २०२६ ई० प्रारम्भ। ईसाई नववर्षारम्भ। यायीजययोग रा. ८।२९ तक। रवियोग रा. ९।३० से।

भ. सा. ६।१२ से रा. ५।८ तक। मिथुनराशि दि. ८।४२। व्रत की १५ पूर्णिमा। स्थायीजययोग सा. ६।१२ तक। रवियोग रा. ७।५४ तक।

स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। शाकम्भरी जयन्ती। माघस्नान-व्रत-यम-नियम का आरम्भ। प्रतिदिन अरुणोदयकाल में समुद्र या काशी में दशाश्वमेध तथा प्रयाग में ○

ग्रह शान्ति के उपाय- देव ब्राह्मण का समादर, गुरु वचनों का पालन, साधुजनों की बात का अनुपालन, श्रेष्ठ कथाओं का श्रवण करने, तीर्थ यात्रा, देवता दर्शन, जप, दान, होम, पवित्रमन वालों को ग्रह पीड़ा नहीं होती है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	श	८	९	४२	४९	७	१४	३३	२३	३	१	१४	३५	८	०	०	१७	१०	२७	४०	५७	१०	१८	२६	४०
१	र	८	१०	२९	१२	७	१६	१	३६	३	१	८	४४	८	१	१६	१५	१०	२७	४४	९	१०	१८	२३	३०
२	चं	८	११	१५	३४	७	१७	३१	४८	३	१	२	५२	८	२	३२	१३	१०	२७	४७	२१	१०	१८	२०	१९
३	मं	८	१२	१	५६	७	१९	१	५९	३	०	५७	०	८	३	४८	११	१०	२७	५०	३३	१०	१८	१७	८
४	बु	८	१२	४८	१९	७	२०	३२	२०	३	०	५१	८	८	५	४	९	१०	२७	५३	४५	१०	१८	१३	५७
५	गु	८	१३	३४	४१	७	२२	३	३७	३	०	४५	१६	८	६	२०	७	१०	२७	५६	५७	१०	१८	१०	४६
६	शु	८	१४	२१	२	७	२३	४०	५६	३	०	३९	२४	८	७	३६	५	१०	२८	०	९	१०	१८	७	३६
७	श	८	१५	७	२४	७	२५	१८	११	३	०	३३	३२	८	८	५२	३	१०	२८	३	२१	१०	१८	४	२५
८	र	८	१५	५३	४६	७	२६	५५	२५	३	०	२७	४	८	१०	८	१	१०	२८	६	३३	१०	१८	१	१४
१०	चं	८	१६	४०	८	७	२८	३२	४०	३	०	१९	२	८	११	२३	५९	१०	२८	९	४६	१०	१७	५८	३
११	मं	८	१७	२६	३०	८	०	११	४	३	०	११	०	८	१२	३९	५७	१०	२८	१२	५९	१०	१७	५४	५२
१२	बु	८	१८	१२	५१	८	१	५२	५	३	०	२	५७	८	१३	५५	५५	१०	२८	१६	१२	१०	१७	५१	४२
१३	गु	८	१८	५९	१३	८	३	३३	४	२	२९	५४	५५	८	१५	१२	५	१०	२८	१९	२५	१०	१७	४८	३१
१४	शु	८	१९	४५	३५	८	५	१४	३	२	२९	४६	५३	८	१६	२८	१८	१०	२८	२२	३८	१०	१७	४५	२०
१५	श	८	२०	३१	५७	८	६	५५	२	२	२९	३८	५१	८	१७	४४	३२	१०	२८	२५	५१	१०	१७	४२	९

ग्रहचार-मंगल-ति. ४ बुध को पूर्वाषाढ़ा में रा. ११।११।। बुध- ति. १ रवि को ज्येष्ठा में सा. ५।०। ति. १० सोम को मूल तथा धनुराशि में रा. ४।५।। वक्रीगुरु- ति. १२ बुध को वक्री होकर पुनर्वसु ३ चरण तथा मिथुनराशि में दि. ३।३६।। शुक्र- ति. ११ मंगल को पूर्वाषाढ़ा में रा. ७।२६।। शनि- पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में।। राहु- शतभिष ४ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी २ चरण में।।

३७ पं० पौषशुक्ल ८ रवि

अहर्गण ४००२

अयनांश २४।१२।१५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	११	८	७	३	८	१०	१०	४
११	१७	१५	२६	०	१०	२८	१८	१८
५८	४४	५३	५५	२७	८	६	१	१
५	२७	४६	२५	४	१	३३	१४	१४
६१	८३९	४६	९७	८	७५	३	३	३
२३	३९	२२	१५	२ व.	५८	१३	११	११

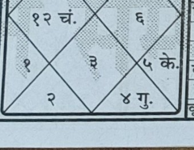

विविधमुहूर्त्त-ति. १ शनि को मूल में सूर्ययुति है। ति. १ रवि को पू.षा. में सूर्यभोग्य है। रात्रिशेष में उ.षा. में सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति. २ सोम को उ.षा. में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन **अन्नप्राशन** गर्भाधान शिल्पविद्या विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ मंगल को दि. १०।३४ तक श्रवण में पुंसवनसीमन्त आभूषण निर्माण **पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा** वस्तुक्रय ऑपरेशन मुहूर्त्त है। चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ४ बुध को धनिष्ठा में चतुर्थी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। रिक्ता (दि. १०।५३) के बाद जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण **अन्नप्राशन** गर्भाधान नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री मकर के चन्द्रमा में **पूर्व-दक्षिण** तथा कुम्भ के चन्द्रमा में **पश्चिम दिशा की यात्रा** औषधसेवन वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ५ गुरु को शतभिष में राहुयुति है। ति. ६ शुक्र को पू.भा. में शनियुति तथा व्यतिपात है। ति. ७ शनि को भद्रा (रा. ८।९) के बाद उ.भा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। ति. ८ रवि को प्रा. ७।२३ तक रेवती में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति. १० सोम को अश्विनी में केतुवेध है। ति. ११ मंगल को भरणी में भद्रा (दि. २।२०) से पूर्व वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण☞

तिथि ल.अ.	१ श घं.	मि.	१ र घं.	मि.	२ चं घं.	मि.	३ मं घं.	मि.	४ बु घं.	मि.	५ गु घं.	मि.	६ शु घं.	मि.	७ श घं.	मि.	८ र घं.	मि.	१० चं घं.	मि.	११ मं घं.	मि.	१२ बु घं.	मि.	१३ गु घं.	मि.	१४ शु घं.	मि.	१५ श घं.	मि.
धनु	८	३६	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५७	७	५२	७	४७	७	४३	७	३८	७	३४
मकर	१०	२३	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४४	९	३९	९	३४	९	३०	९	२५	९	२१
कुम्भ	११	५४	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१५	११	१०	११	५	११	१	१०	५६	१०	५२
मीन	१	२२	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४३	१२	३८	१२	३३	१२	२९	१२	२४	१२	२०
मेष	२	५९	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२०	२	१५	२	१०	२	६	२	१	१	५७
वृष	४	५५	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१६	४	११	४	६	४	३	३	५७	३	५३
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मिथुन	७	९	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४९	६	४३	६	३९	६	३५	६	३०	६	२५	६	२०	६	१६	६	११	६	७
कर्क	९	२७	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४८	८	४३	८	३८	८	३४	८	२९	८	२५
सिंह	११	४१	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	२	१०	५७	१०	५२	१०	४८	१०	४३	१०	३९
कन्या	१	५४	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१५	१	१०	१	५	१	१	१२	५६	१२	५२
तुला	४	१०	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३१	३	२६	३	२१	३	१७	३	१२	३	८
वृश्चिक	६	२७	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४८	५	४३	५	३८	५	३४	५	२९	५	२५

३८ पं० पौषशुक्ल १५ शनि

अहर्गण ४००८

अयनांश २४।१२।१६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	२	८	८	२	८	१०	१०	४
१८	१३	२०	६	२९	१७	२८	१७	१७
६	५	३१	५५	३८	४४	२५	४२	४२
३३	२०	५७	२	५१	३२	५१	९	९
६१	८५०	४६	१०३	८	७६	३	३	३
२५	४९	२१	५३	२ व.	१४	२६	११	११

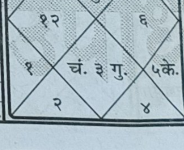

मूलविचार-ज्येष्ठा/मूल- ति. १ शनि को रा. १।१३ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. ७ शनि को रा. ४।५७ से। ति. १० सोम को रा. २।२५ तक।
पञ्चक विचार-ति. ४ बुध को सा. ५।५५ से। ति. ८ रवि को रा. ३।४९ तक।

अन्य भावों के कारक का विचार- जन्मलग्न को आत्म, धनभाव को स्त्री, एकादश को अग्रज, तृतीय को अनुज, पञ्चम को पुत्र एवं पञ्चम स्थान में जो ग्रह स्थित होता है वह भी उस भाव का कारक होता है। ११,३,८,६,२,१२ इन भावों से जिस भाव का सम्बन्ध होता है उसके फल का नाश हो जाता है। परन्तु ये चारों राशियाँ केन्द्र-त्रिकोण में हो तो शुभ कारक हो जाती है तथा इनके संयोग से अशुभ भी शुभ हो जाता है। **भूमिशयन विचार-** सूर्य नक्षत्र से ५,७,९,१२,१९ एवं २६ वें चन्द्र नक्षत्र में भूमि शयन करती है। **परिहार-**(वास्तुभूषण)- ऊपर कहे हुए भूशयन नक्षत्रों में क्रमशः १,४,१२,२७,१६ तथा ७ घटी तक भूशयन तथा शेष में आवश्यकता पड़ने पर जागृती समझनी चाहिए। अन्य-४,८,५,३,६,७ घटियों तक क्रमशः सूर्यनक्षत्र से ५,७,९,१२,१९,२६ चन्द्र नक्षत्रों में भूमि शयन करती है। **पौष पूर्णिमा से माघ स्नान का मन्त्र-** दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशने। मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युतमाधव स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। यह मन्त्र पढ़ते हुए स्नान करें तथा पुनः अर्घ्य दान दें- **मन्त्र-** सवित्रे प्रसवित्रे च परंधामजले मम। त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा।। इसके बाद तर्पण आदि करें। **निधि प्रश्न विचार-** गुरु एवं चन्द्रमा लग्न में तथा चतुर्थ स्थान में गुरु की राशि का शुक्र स्थित हो तो विचारणीय गृह में धन रहता है तथा यत्न करने से उसी वर्ष प्राप्त भी हो जाता है। चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्र में से एक भी ग्रह अगर चतुर्थभाव में विद्यमान हो तो भी निधि प्राप्त होती है।

☞ मुहूर्त्त है। ति. १२ बुध को कृत्तिका में पशुओं की खरीद-बिक्री वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १३ गुरु को रोहिणी में रा. ८।२९ तक पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन **अन्नप्राशन** सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण दँवरी विपणि ऑपरेशन मुहूर्त्त है। ति. १४ शुक्र को मृगशिरा में रिक्ता के बाद भद्रादोष है। ति. १५ शनि को आर्द्रा में सूर्यवेध है।

राष्ट्रीय तिथि १४ पौष से २८ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक ४ जनवरी से १८ तक सन् २०२६ ई.।।

☞ इस पक्ष में शुक्र का अस्त है।।

माघकृष्णपक्ष ।।

दि.मा.	घ.प.	श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ दक्षिणायन दक्षिणगोल हेमन्तऋतु।।																									योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	−	रे.अं. +	मि.	चन्द्रोदय स्टै.	टा.
२६	११	१	र	१८	२६	दि	२	८	पुनर्वसु	२६	१३	सा	५	१५	ऐन्द्र	१/५३	४/२७	प्रा	७/४	१२/३४	कौ	१८	२६	तै	४६	२७	ध्वज	४	१	१९	२०	१४	कर्क	११।५९	६	४६	५	१४	८	१९	७	५८	२२	४६	+	३	६	२४
२६	१२	२	चं	१४	२७	दि	१२	३३	पुष्य	२४	३	सा	४	२३	विष्कुम्भ	४८	३९	रा	२	१४	गर	१४	२७	व	४२	५५	धाता	५	२	२०	२१	१५			६	४६	५	१४	८	२०	९	२४	२२	४०	+	३	७	३२
२६	१३	३	मं	११	२२	दि	११	१८	श्लेषा	२२	४१	दि	३	४९	प्रीति	४३	३५	रा	१२	११	भ	११	२२	वव	४०	२१	आनन्द	६	३	२१	२२	१६	सिंह	२२।४१	६	४५	५	१५	८	२१	१०	४८	२२	३३	+	४	८	३५
२६	१४	४	बु	९	२०	दि	१०	२९	मघा	२२	२५	दि	३	४३	आयुष्मान	३९	२५	रा	१०	३१	वा	९	२०	कौ	३८	५६	चर	७	४	२२	२३	१७			६	४५	५	१५	८	२२	१२	१३	२२	२६	+	४	९	३४
२६	१६	५	गु	८	३२	दि	१०	१०	पू.फा.	२३	२१	सा	४	५	सौभाग्य	३६	१२	रा	९	१४	तै	८	३२	गर	३८	४७	गद	८	५	२३	२४	१८	कन्या	३८।५४	६	४५	५	१५	८	२३	१३	३७	२२	१८	+	५	१०	२९
२६	१७	६	शु	९	१	दि	१०	२१	उ.फा.	२५	३४	सा	४	५९	शोभन	३४	०	रा	८	२१	व	९	१	भ	३९	५७	शुभ	९	६	२४	२५	१९			६	४५	५	१५	८	२४	१५	१	२२	१०	+	५	११	२३
२६	१९	७	श	१०	५२	दि	११	५	हस्त	२९	३	सा	६	२१	अतिगण्ड	३२	५०	रा	७	५२	वव	१०	५२	वा	४२	२१	मृत्यु	१०	७	२५	२६	२०			६	४४	५	१६	८	२५	१६	२४	२२	२	+	५	१२	१५
२६	२१	८	र	१३	४९	दि	१२	१६	चित्रा	३३	३८	रा	८	११	सुकर्मा	३२	३१	रा	७	४४	कौ	१३	४९	तै	४५	५३	पद्म	११	८	२६	२७	२१	तुला	१।२१	६	४४	५	१६	८	२६	१७	४७	२१	५३	+	६	१	९
२६	२२	९	चं	१७	५६	दि	१	५४	स्वाती	३९	१३	रा	१०	२५	धृति	३३	०	रा	७	५६	गर	१७	५६	व	५०	२३	छत्र	१२	९	२७	२८	२२			६	४४	५	१६	८	२७	१९	९	२१	४४	+	६	२	३
२६	२४	१०	मं	२२	५०	दि	३	५१	विशाखा	४५	२७	रा	१२	५४	शूल	३३	५९	रा	८	१९	भ	२२	५०	वव	५५	३२	श्रीवत्स	१३	१०	२८	२९	२३	वृश्चिक	२८।५४	६	४३	५	१७	८	२८	२०	३०	२१	३४	+	७	२	५८
२६	२६	११	बु	२८	१३	सा	६	०	अनुराधा	५२	१	रा	३	३१	गण्ड	३५	१८	रा	८	५०	वा	२८	१३	कौ	६०	०	सौम्य	१४	११	२९	१	२४			६	४३	५	१७	८	२९	२१	५०	२१	२४	+	७	३	५३
२६	२८	१२	गु	३३	३८	रा	८	९	ज्येष्ठा	५८	२७	रा	६	५	वृद्धि	३६	३७	रा	९	२१	कौ	०	५६	तै	३३	३८	कालदण्ड	१५	१२	१	२	२५	धनु	५८।२७	६	४२	५	१८	९	०	२३	११	२१	१३	+	७	४	४७
२६	३०	१३	शु	३८	४०	रा	१०	१०	मूल	६०	०	स	म	स्त	ध्रुव	३७	३५	रा	९	४४	गर	६	९	व	३८	४०	सुस्थिर	१६	१३	२	३	२६			६	४२	५	१८	९	१	२४	३१	२१	२	+	८	५	३९
२६	३२	१४	श	४२	५८	रा	११	५३	मूल	४	२२	दि	८	२७	व्याघात	३८	२	रा	९	५५	भ	१०	४९	श	४२	५८	गद	१७	१४	३	४	२७			६	४२	५	१८	९	२	२५	५०	२०	५१	+	८	६	२६
२६	३४	३०	र	४६	९	रा	१	९	पू.षा.	९	२९	दि	१०	२९	हर्षण	३७	४१	रा	९	४५	च	१४	३४	नाग	४६	९	शुभ	१८	१५	४	५	२८	मकर	२५।२९	६	४१	५	१९	९	३	२७	९	२०	३९	+	८	–	–

कर्कराशि दि. ११।५९। माघमास में जो कहीं से भी प्रयाग का स्मरण करके स्नान करता है, उसे प्रयाग स्नान का फल मिलता है। माघमास में मूली नहीं खाना चाहिए।
भ. रा. ११।५६ से। श्रीगुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (नवीनतम)। यायीजययोग सा. ४।२३ से। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ४।२३ तक।
भ.दि. ११।१८ तक। सिंहराशि दि. ३।४९। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।३५। आज गणेश जन्मदिन। चन्द्रमा को अर्घ्यदान। गौरी चतुर्थी व्रत (प्रदोष में)।
☞ एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है। यायीजययोग दि. २।८ तक। सर्वार्थसिद्धियोग सा. ५।१५ से। त्रिपुष्करयोग दि. २।८ से सा. ५।१५ तक।
माघमास में संक्रान्ति के दिन वृष्टि हो तो सुभिक्ष,क्षेम,आरोग्य आदि उत्सव होता है।
कन्याराशि रा. १०।१९। रवियोग सा. ४।५ से।
भ.दि. १०।२१ से रा. १०।४४ तक। रवियोग सा. ४।५९ तक। यमघंटयोग रा. १०।२५ से। स्थायीजययोग दि. ३।४९ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।४९ तक।
अष्टकाश्राद्ध। श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती ७। यायीजययोग दि. ११।५ तक। यमघंटयोग सा. ६।२१ तक।
तुलाराशि दि. ७।१६। अन्वष्टका श्राद्ध। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य दि. ३।२५। यायीजययोग रा. ८।११ से। ❷सौरमाघमासारम्भ।
भ.रा. २।५३ से। यायीजययोग दि.१।५४ तक। दिन तथा दैत्यों की रात्रि। अयन संक्रान्ति के बाद तीन दिनों तक शुभ कार्य वर्जित है। खरमास समाप्ति।
भ. दि. ३।५१ तक। वृश्चिकराशि सा. ६।१७। शिशिरऋतु प्रारम्भ। संक्रान्ति का पुण्यकाल दूसरे दिन। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा. ३।३१ तक।
षट्तिला ११ एकादशी व्रत सबका। सं.मकरराशि का सूर्य रा. ९।३९। मु.३० समा। फल समता। बाद का ८ या १६ घण्टा पुण्यकाल। निरयन उत्तरायन। देवताओं का
धनुराशि रा.शे. ६।५। तिलद्वादशी १२। तिल उत्पत्ति। दिन में १।३९ तक मकरसंक्रान्ति का पुण्यकालः। चावल-तिल-लड्डू का दान। प्रयाग या गोदावरी में स्नान।
भ.रा. १०।१० से। प्रदोष १३ व्रत। मासशिवरात्रि १३ व्रत। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशि[illegible]" ❶यायीजययोग रा. १।९ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।२९ से।
भ. दि. ११।२ तक। द्वापर युगादि ३०। त्रिवेणी अमावस्या (उड़ीसा)। पापवार तथा अमावस्या की युति दुर्भिक्ष तथा प्रजा के लिए भयकारक होती है। ❶
मकरराशि सा. ४।५३। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। मौनी अमावस्या। काशी में दशाश्वमेध या प्रयाग में त्रिवेणी संगम या समुद्र में मौन व्रत रखकर स्नान करना चाहिए।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	र	८	२१	१८	१८	८	८	३८	५५	२	२९	३०	४९	८	१९	०	४६	१०	२८	२९	१७	१०	१७	३८	५८
२	चं	८	२२	४	४०	८	१०	२५	३९	२	२९	२२	४७	८	२०	१६	५९	१०	२८	३३	३८	१०	१७	३५	४८
३	मं	८	२२	५१	२	८	१२	१२	२७	२	२९	१४	४५	८	२१	३३	१३	१०	२८	३८	०	१०	१७	३२	३७
४	बु	८	२३	३७	२४	८	१३	५९	१४	२	२९	६	४३	८	२२	४९	२६	१०	२८	४२	२१	१०	१७	२९	२६
५	गु	८	२४	२३	४६	८	१५	४६	२	२	२८	५८	४०	८	२४	५	४०	१०	२८	४६	४३	१०	१७	२६	१५
६	शु	८	२५	१०	७	८	१७	३३	५१	२	२८	५०	३८	८	२५	२१	५३	१०	२८	५१	४	१०	१७	२३	४
७	श	८	२५	५६	२९	८	१९	२१	५३	२	२८	४२	३६	८	२६	३८	७	१०	२८	५५	२६	१०	१७	१९	५३
८	र	८	२६	४२	५१	८	२१	९	५६	२	२८	३४	३४	८	२७	५४	२१	१०	२८	५९	४७	१०	१७	१६	४२
९	चं	८	२७	२९	१३	८	२२	५७	५८	२	२८	२६	३२	८	२९	१०	३४	१०	२९	४	८	१०	१७	१३	३२
१०	मं	८	२८	१५	३५	८	२४	४६	२	२	२८	१८	३०	९	०	२६	४८	१०	२९	८	३०	१०	१७	१०	२१
११	बु	८	२९	१	५६	८	२६	३४	२	२	२८	१०	२८	९	१	४३	१	१०	२९	१२	५२	१०	१७	७	१०
१२	गु	८	२९	४८	१८	८	२८	२२	२२	२	२८	२	२६	९	२	५९	१५	१०	२९	१७	१४	१०	१७	३	५९
१३	शु	९	०	३४	४०	९	०	११	३८	२	२७	५४	२३	९	४	१५	२८	१०	२९	२१	३७	१०	१७	०	४८
१४	श	९	१	२१	२	९	२	०	५४	२	२७	४६	२१	९	५	३१	४२	१०	२९	२५	५९	१०	१६	५७	३८
३०	र	९	२	७	२४	९	३	४९	४९	२	२७	३८	१९	९	६	४७	५५	१०	२९	३०	२१	१०	१६	५४	२७

ग्रहचार-मंगल-ति.७ शनि को उत्तराषाढ़ा में रा.५।१६। ति.१२ गुरु को मकरराशि में दि.१२।४५।। बुध-ति. ३ मंगल को पूर्वाषाढ़ा में रा.९।५६। ति.११ बुध को उत्तराषाढ़ा में दि.८।२। ति.१२ गुरु को मकरराशि में रा.४।१९।। वक्रीगुरु-पुनर्वसु ३चरण में।। शुक्र- ति. ७ शनि को उत्तराषाढ़ा में दि.७।२०। ति. ९ सोम को मकरराशि में रा.१०।१८।। शनि-पूर्वाभाद्रपद ३ चरण में।। राहु- शतभिष ४ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी २ चरण में।।

३९ पं० माघकृष्ण ८ रवि

अहर्गण ४०१६

अयनांश २४।१२।१७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	६	८	८	२	८	१०	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७	१७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६	१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४३	४३
६१	७४३	४६	१०८	८	७६	४	३	३
२२	१४	२२	२	१	३	२२	११	११
				व.				

विविधमुहूर्त्त- ति. १ रवि को पुनर्वसु में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। वैधृति भी है। ति. २ सोम को पुष्य में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन पशुओं की खरीद-बिक्री पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ३ मंगल को श्लेषा में भद्रा के बाद रिक्तादोष है। ति. ४ बुध को मघा में रिक्ता (दि.१०।२९) के बाद दँवरी फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ५ गुरु को पू.फा. में केतुयुति है। सा. ४।५ के बाद उ.फा. में नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या नावनिर्माण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ शुक्र को भद्रा (दि. १०।२१) से पूर्व उ.फा. में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण दँवरी शिल्पविद्या नावनिर्माण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। भद्रा (रा. १०।४४) के बाद हस्त में गर्भाधान पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा औषधसेवन का मुहूर्त्त है। ति. ७ शनि को हस्त में कृष्णवस्त्रधारण पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (सप्तमी में) का मुहूर्त्त है। ति. ८ रवि को चित्रा में शनिवेध है। नवमी में रोगविमुक्तस्नान ☞

तिथि / ल.अ.	१ र घं.	मि.	२ चं घं.	मि.	३ मं घं.	मि.	४ बु घं.	मि.	५ गु घं.	मि.	६ शु घं.	मि.	७ श घं.	मि.	८ र घं.	मि.	९ चं घं.	मि.	१० मं घं.	मि.	११ बु घं.	मि.
धनु	७	२९	७	२५	७	२०	७	१६	७	११	७	७	७	२	६	५८	६	५४	६	४९	६	४४
मकर	९	१६	९	१२	९	७	९	३	८	५८	८	५४	८	४९	८	४५	८	४१	८	३६	८	३१
कुम्भ	१०	४७	१०	४३	१०	३८	१०	३४	१०	२९	१०	२५	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	७	१०	२
मीन	१२	१५	१२	११	१२	६	१२	२	११	५७	११	५३	११	४८	११	४४	११	४०	११	३५	११	३०
मेष	१	५२	१	४८	१	४३	१	३९	१	३४	१	३०	१	२५	१	२१	१	१७	१	१२	१	७
वृष	३	४८	३	४४	३	३९	३	३५	३	३०	३	२६	३	२१	३	१७	३	१३	३	८	३	३
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मिथुन	६	२	५	५८	५	५३	५	४९	५	४४	५	४०	५	३५	५	३१	५	२७	५	२२	५	१७
कर्क	८	२०	८	१६	८	११	८	७	८	२	७	५८	७	५३	७	४९	७	४५	७	४०	७	३५
सिंह	१०	३४	१०	३०	१०	२५	१०	२१	१०	१६	१०	१२	१०	७	१०	३	९	५९	९	५४	९	४९
कन्या	१२	४७	१२	४३	१२	३८	१२	३४	१२	२९	१२	२५	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	७	१२	२
तुला	३	३	२	५९	२	५४	२	५०	२	४५	२	४१	२	३६	२	३२	२	२८	२	२३	२	१८
वृश्चिक	५	२०	५	१६	५	११	५	७	५	२	४	५८	४	५३	४	४९	४	४५	४	४०	४	३५

तिथि / ल.अ.	१२ गु घं.	मि.	१३ शु घं.	मि.	१४ श घं.	मि.	३० र घं.	मि.
मकर	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४
कुम्भ	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५
मीन	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३
मेष	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०
वृष	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६
मिथुन	५	१२	५	८	५	४	५	०
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कर्क	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८
सिंह	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२
कन्या	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५
तुला	२	१३	२	९	२	५	२	१
वृश्चिक	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८
धनु	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४

४० पं० माघकृष्ण ३० रवि

अहर्गण ७

अयनांश २४।१२।१८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	८	९	९	२	९	१०	१०	४
३	२४	२	९	२७	६	२९	१६	१६
२७	४३	४९	३८	४७	३०	५४	५४	५४
९	३३	२४	४९	१९	५५	२१	२७	२७
६१	७३७	४६	१०८	८	७६	४	३	३
१७	८	२१	१	२	१४	२३	११	११
				व.				

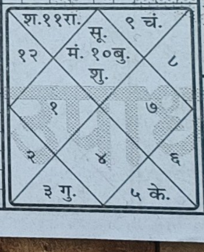

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति. २ सोम को सा. ४।२३ से। ति. ४ बुध को दि. ३।४३ तक। ज्येष्ठा/मूल- ति. ११ बुध को रा. ३।३१ से। ति. १४ शनि को दि. ८।२७ तक।

सम्पूर्ण माघ में तीर्थ स्नान न कर पाने की स्थिति में माघी पूर्णिमा से पूर्व तीन दिनों में विधि पूर्वक स्नान करें। माघ में प्रयाग स्नान का महात्म्य- पृथ्वी पर माघ मास में मात्र तीन दिन प्रयाग स्नान करने मात्र से भी १ हजार अश्वमेध यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है। मकर संक्रान्ति को दान-(स्कन्द पुराण)- गाय एवं तिल का उत्तरायण सूर्य अर्थात् मकर संक्रान्ति में दान करने से समस्त कार्यों की सिद्धि तथा परम सुख की प्राप्ति होती है। माघ मास में तीर्थ क्षेत्र में तैल एवं आँवले का नित्य दान, तथा ब्राह्मणों की सेवा के लिए अग्नि प्रज्ज्वलित करना चाहिए तथा स्नान के बाद जल रहित भोज्य पदार्थ का दान करना चाहिए। ब्राह्मण दम्पति को भोजन कराकर वस्त्र तथा आभूषणों का दान करें, दान में कम्बल, वस्त्र, काजल, कर्पूर, नीलवस्त्र, स्त्रियों का ललाटाभरण, उपानह एवं रत्नों का गुप्त रूप में दान करते हुए माघ स्नान से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। माघ मास के नियम- भूमि पर शयन करते हुए तीर्थ स्नान तथा आज्य सहित तिल का देवों के प्रीत्यर्थ हवन करने से समस्त कार्यों की सिद्धि तथा सुख की प्राप्ति होती है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार- मकर संक्रान्ति के दिन ब्राह्मणों को वस्त्र दान से महत्फल तथा तिल सहित वृष दान से रोगों से मुक्ति मिलती है। शिव रहस्य के अनुसार- मकर संक्रान्ति को कृष्ण तिल युक्त जल से स्नान कर उद्वर्तन तथा ब्राह्मणों के लिए तिल का दान करें। साथ ही तिल के तेल से शिव मन्दिर में दीप जलावें इससे शुभ फल की प्राप्ति होती है। (काशीखण्ड) माघ मास में काशी में दशाश्वमेध घाट पर गंगा स्नान करने से दस अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है। गणेशोत्पत्ति- माघकृष्ण चतुर्थी तिथि को सभी देवों में अग्रगण्य भगवान गणेश का प्रादुर्भाव हुआ।

☞ मुहूर्त्त है। ति. ९ सोम को स्वाती में राहुवेध तथा रिक्तादोष है। ति.१० मंगल को विशाखा में भद्रा (दि. ३।५१) के बाद लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ११ बुध को अनुराधा में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान नवीनवस्त्रधारण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा (एकादशी में) दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। ति.१२ गुरु को ज्येष्ठा में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन पशुओं की खरीद-बिक्री दँवरी ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	-	रे.अं. +	मि.	चन्द्रास्त स्टै.	टा.
२६	३६	१	चं	४८	१६	रा	१	५९	उ.षा.	१३	२९	दि	१२	५	वज्र	३६	३१	रा	९	१७	किं	१७	१३	बव	४८	१६	मृत्यु	१९	१६	५	६	२९			६	४१	५	१९	९	४	२८	२६	२०	२७	+	९	-	-
२६	३९	२	मं	४८	५९	रा	२	१६	श्रवण	१६	१९	दि	१	१२	सिद्धि	३४	२०	रा	८	२४	वा	१८	३८	कौ	४८	५९	लुम्बक	२०	१७	६	७	३०	कुम्भ	४७।६	६	४०	५	२०	९	५	२९	४३	२०	१४	+	९	७	१
२६	४१	३	बु	४८	२४	रा	२	२	धनिष्ठा	१७	५२	दि	१	४९	व्यतिपात	३१	७	रा	७	७	तै	१८	४२	गर	४८	२४	मित्र	२१	१८	७	८	१			६	४०	५	२०	९	६	३०	५८	२०	१	+	९	७	५८
२६	४३	४	गु	४६	३६	रा	१	१७	शतभिष	१८	१२	दि	१	५६	वरीयान	२६	५७	सा	५	२६	व	१७	३०	भ	४६	३६	वज्र	२२	१९	८	९	२			६	३९	५	२१	९	७	३२	१३	१९	४८	+	१०	८	५५
२६	४६	५	शु	४३	४४	रा	१२	९	पू.भा.	१७	२२	दि	१	३६	परिघ	२१	५४	दि	३	२५	बव	१५	१०	वा	४३	४४	ध्वांक्ष	२३	२०	९	१०	३	मीन	२।३५	६	३९	५	२१	९	८	३३	२६	१९	३४	+	१०	९	५३
२६	४८	६	श	३९	५५	रा	१०	३६	उ.भा.	१५	३३	दि	१२	५१	शिव	१६	३	दि	१	३	कौ	११	५०	तै	३९	५५	धूम्र	२४	२१	१०	११	४			६	३८	५	२२	९	९	३४	३९	१९	२०	+	१०	१०	५२
२६	५१	७	र	३५	१४	रा	८	४४	रेवती	१२	५३	दि	११	४७	सिद्ध	९	२९	दि	१०	२६	गर	७	३५	व	३५	१४	प्रवर्धमान	२५	२२	११	१२	५	मेष	१२।५३	६	३८	५	२२	९	१०	३५	५०	१९	५	+	१०	११	५३
२६	५४	८	चं	३०	०	सा	६	३७	अश्विनी	९	३३	दि	१०	२६	साध्य	२ ५२	२२ २९	प्रा	७ ४	३४ ३३	भ	२	३७	बव	३० ५७	० ११	राक्षस	२६	२३	१२	१३	६			६	३७	५	२३	९	११	३७	१	१८	५१	+	११	१२	५८
२६	५६	९	मं	२४	२१	सा	४	२१	भरणी	५	४३	दि	८	५४	शुक्ल	४७	५	रा	१	२७	कौ	२४	२१	तै	५१	२६	मुसल	२७	२४	१३	१४	७	वृष	१९।४२	६	३७	५	२३	९	१२	३८	११	१८	३६	+	११	२	५
२६	५९	१०	बु	१८	३०	दि	२	०	कृत्तिका	१ ५५	३८ ४९	प्रा	७ ५	१५ ३५	ब्रह्म	३९	१०	रा	१०	१६	गर	१८	३०	व	४५	३४	सिद्धि	२८	२५	१४	१५	८			६	३६	५	२४	९	१३	३९	२०	१८	२०	+	११	३	१४
२७	२	११	गु	१२	३७	दि	११	३९	मृगशिरा	५३	२४	रा	३	५८	ऐन्द्र	३१	२२	रा	७	९	भ	१२	३७	बव	३९	४६	मृत्यु	२९	२६	१५	१६	९	मिथुन	२५।२६	६	३६	५	२४	९	१४	४०	२८	१८	४	+	११	४	२०
२७	५	१२	शु	६	५५	दि	९	२१	आर्द्रा	४९	४३	रा	२	२८	वैधृति	२३	४५	सा	४	५	वा	६	५५	कौ	३४	१७	पद्म	३०	२७	१६	१७	१०			६	३५	५	२५	९	१५	४१	३५	१७	४८	+	११	५	२०
२७	८	१३	श	१ ५५	३८ १५	प्रा	७ ५	१३ १९	पुनर्वसु	४६	३२	रा	१	११	विष्कुम्भ	१६	२९	दि	१	१०	तै	१	३८	गर	२९ ५६	१६ ५३	छत्र	३१	२८	१७	१८	११	कर्क	३२।२०	६	३४	५	२६	९	१६	४२	४१	१७	३२	+	१२	६	१२
२७	१०	१५	र	५२	५९	रा	३	४६	पुष्य	४४	११	रा	१२	१४	प्रीति	९	४५	दि	१०	२८	भ	२४	५६	बव	५२	५९	श्रीवत्स	१	२९	१८	१९	१२			६	३४	५	२६	९	१७	४३	४५	१७	१५	+	१२	-	-

माघशुक्लपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि २१ पौष से १२ माघ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक १९ जनवरी से १ फरवरी तक सन् २०२६ ई.।।

☞ति. १५ रवि को शुक्र का उदय पश्चिम में।।

वल्लभाचार्य जयन्ती १। गुप्तनवरात्रप्रारम्भ। यायीजययोग दि. १२।५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १२।५ से। ❶ द्विपुष्करयोग दि. १।१२ से रा. २।१६ तक।
कुम्भराशि रा. १।३०। ◡ चन्द्रदर्शन। मु. ३० समा। फल समता। उत्तरशृंग सस्तीकारक। ⊙सायन कुम्भराशि का सूर्य दि. १।४२। पञ्चक प्रारम्भ रा. १।३०। ❶
मु. सावान ८ हिजरी सन् १४४७। ⊙अभिजित का सूर्य दि. १०।१२। राष्ट्रीयमाघमास दि.३०। रवियोग दि. १।४९ से।
भ. दि. १।३९ से रा. १।१७ तक। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। तिल ४। कुन्द ४ चतुर्थी "माघशुक्ल चतुर्थी को कुन्द पुष्पों से शिव का पूजन कर रात्रि में भोजन करना ◆
मीनराशि दि. ७।४१। श्रीवसन्तपञ्चमी ५। तक्षक पूजा ५। वागीश्वरी जयन्ती तथा यात्रा। रतिकाम महोत्सव। सरस्वती पूजन। श्रीनेताजी जयन्ती। रवियोग दि. १।३६ से।
श्रीशीतलाषष्ठी (बंगाल)। ⊙श्रवण नक्षत्र का सूर्य सा. ४।३५। यायीजययोग रा. १०।३६ से। रवियोग दि. १२।५१ तक। पुनःरवियोग सा. ४।३५ से।
भ. रा. ८।४४ से। मेषराशि दि. ११।४७। रथसप्तमी ७। अचलासप्तमी ७ व्रत। *षष्ठी को एकबार भोजन करके सप्तमी में अरुणोदयकाल में स्नान करना चाहिए।* भानुसप्तमी ७। ◑
भ. दि. ७।४० तक। भीष्माष्टमी ८। भीष्म के निमित्त श्राद्ध तथा तर्पण। भारतीय ७६वाँ गणतन्त्र दिवस। ध्वजोत्तोलन-राष्ट्रगान-राजधानीमें विविध उत्सव तथा आयोजन। ❸
वृषराशि दि. २।३०। श्रीहरसूब्रह्मजयन्ती ९ (चैनपुर-भभुआ)। महानन्दानवमी ९। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।५४ से। रवियोग दि. ८।५४ से। ❸यायीजययोग सा. ६।३७ से।
भ. रा. १२।५० से। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। रवियोग रा. ५।३५ तक। काशी में सीरगोवर्धनग्राम यात्रा तथा दर्शन। शुक्र का उदय पश्चिम में सा. ६।५। फरवरी २। ❷
भ. दि. ११।३९ तक। मिथुनराशि सा. ४।४६। जया ११ एकादशी व्रत सबका। भैमी एकादशी (बंगाल)। ❷यायीजययोग रा. १२।१४ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. १२।१४ तक।
प्रदोष १३ व्रत। भीष्मद्वादशी १२। भीष्म के निमित्त श्राद्ध तथा तर्पण। तिलद्वादशी १२। *सम्पूर्ण माघस्नान करने में असमर्थ हों तो अंतिम तीन दिनों में स्नान करने* ☐
भ. रा. ५।१९ से। कर्कराशि रा. ७।३०। यायीजययोग प्रा. ७।१३ तक। रवियोग रा. १।११ तक। *शुक्रोदयमासफल-माघमास में शुक्रोदय हो तो छत्रभंग तथा अग्रिम वर्ष भी वृष्टि का अभाव होता है।*
भ. सा. ४।३२ तक। स्नान-दान-व्रत की १५ माघी पूर्णिमा। तिल पात्र-ऊनीवस्त्र-कम्बल आदि का दान। माघस्नान-व्रत-यम-नियम आदि की समाप्ति। सन्तरविदासजयन्ती १५। ◑

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	चं	९	२	५३	४५	९	५	३७	५०	२	२७	३०	१७	९	८	४	९	१०	२९	३४	४४	१०	१६	५१	१६
२	मं	९	३	४०	७	९	७	२५	५२	२	२७	२२	१५	९	९	२०	२३	१०	२९	३९	३४	१०	१६	४८	५
३	बु	९	४	२६	२९	९	९	१३	५३	२	२७	१४	१३	९	१०	३६	३६	१०	२९	४५	५	१०	१६	४४	५५
४	गु	९	५	१२	५१	९	११	१	५४	२	२७	६	११	९	११	५२	५०	१०	२९	५०	३६	१०	१६	४१	४४
५	शु	९	५	५९	१२	९	१२	४७	३२	२	२६	५८	९	९	१३	९	३	१०	२९	५६	७	१०	१६	३८	३३
६	श	९	६	४५	३४	९	१४	३०	३३	२	२६	५०	७	९	१४	२५	१७	११	०	१	३७	१०	१६	३५	२२
७	र	९	७	३१	५६	९	१६	१३	३६	२	२६	४२	६	९	१५	४१	३०	११	०	७	८	१०	१६	३२	११
८	चं	९	८	१८	१८	९	१७	५६	५१	२	२६	३४	५	९	१६	५७	४४	११	०	१२	३९	१०	१६	२९	१
९	मं	९	९	४	४०	९	१९	४०	१९	२	२६	२६	४	९	१८	१३	५८	११	०	१८	१०	१०	१६	२५	५०
१०	बु	९	९	५१	१	९	२१	२१	१५	२	२६	१८	२	९	१९	२९	५८	११	०	२३	४१	१०	१६	२२	३९
११	गु	९	१०	३४	२३	९	२३	०	५९	२	२६	१०	१	९	२०	४५	५६	११	०	२९	११	१०	१६	१९	२८
१२	शु	९	११	२३	४५	९	२४	४०	४३	२	२६	२	६	९	२२	१	५४	११	०	३४	४३	१०	१६	१६	१७
१३	श	९	१२	१०	७	९	२६	२०	२७	२	२५	५६	१५	९	२३	१७	५२	११	०	४०	१५	१०	१६	१३	७
१५	र	९	१२	५६	२९	९	२८	०	१०	२	२५	५०	२४	९	२४	३३	५०	११	०	४५	४६	१०	१६	९	५६

ग्रहचार- मंगल-ति. १० बुध को श्रवण में दि.११।३४ ।। बुध- ति. ३ बुध को श्रवण में सा. ४।५५। ति. ११ गुरु को धनिष्ठा में दि.११।१०।। वक्रीगुरु-ति. ७ रवि को पुनर्वसु २ चरण में दि.१२।५५।। शुक्र- ति. २ मंगल को श्रवण में रा.७।८। ति. १३ शनि को धनिष्ठा में दि.७।१४।। शनि- ति. ५ शुक्र को पूर्वाभाद्रपद ४ चरण तथा मीनराशि में रा.११।३६।। राहु-ति. ४ गुरु को शतभिष ३ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी १ चरण में रा.७।४३।।

☞एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।

४१ पं.माघशुक्ल ८ सोम

अहर्गण १५

अयनांश २४।१२।१९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	०	९	९	२	९	११	१०	४
११	११	८	१७	२६	१६	०	१६	१६
३७	५	१८	५६	३४	५७	१२	२९	२९
१	७	१८	५१	५	४४	३९	१	१
६१	८४७	४६	१०३	८	७६	५	३	३
१०	४	२२	२८	१	१४	३१	११	११
				व.				

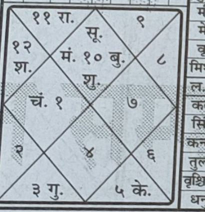

विविधमुहूर्त्त- ति. १ सोम को उ.षा. में सूर्ययुति है। ति. २ मंगल को श्रवण में सूर्यभोग्य है। दि.१।१२ के बाद व्यतिपात (रा. ८।२४) से पूर्व धनिष्ठा में लालवस्त्रधारण आभूषण निर्माण **पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा** का मुहूर्त्त है। ति. ३ बुध को धनिष्ठा में व्यतिपात है। ति. ४ गुरु को शतभिष में राहुयुति है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। ति. ५ शुक्र को पू.भा. में शनियुति है। दि.१।३६ के बाद उ.भा. में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान (पंचमी में) नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण नावनिर्माण विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ६ शनि को उ.भा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त है। दि.१२।५१ के बाद रेवती में **पश्चिम-उत्तर दिशा की यात्रा** (सप्तमी में) का मुहूर्त्त है। ति. ७ रवि को रेवती में पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण **उत्तर दिशा की यात्रा** नवान्नभक्षण औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। अश्विनी में केतुवेध तथा भद्रा है। ति. ८ सोम को दि. १०।२६ के बाद भरणी में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ९ मंगल को भरणी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त है। कृत्तिका में सूर्यवेध तथा रिक्तादोष है। ति. १० बुध को प्रा. ७।१५ के बाद रोहिणी में सूर्य का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से मुक्त न होने से अशुभ है। ति. ११ गुरु को मृगशिरा में मंगल का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से मुक्त न होने से अशुभ है। वैधृति भी है। ति. १२ शुक्र को वैधृति (सा. ४।५) के बाद आर्द्रा में फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. १३ शनि को प्रा. ७।१३ तक पुनर्वसु में सौभाग्यवती को छोड़कर ☞

तिथि	१ चं		२ मं		३ बु		४ गु		५ शु		६ श		७ र		८ चं		९ मं		१० बु		११ गु		१२ शु		१३ श		१५ र	
ल.अ.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
मकर	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३३	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६
कुम्भ	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	४	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७
मीन	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३२	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५
मेष	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	९	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२
वृष	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	५	२	०	१	५६	१	५२	१	४८
मिथुन	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	१९	४	१४	४	१०	४	६	४	२
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कर्क	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३७	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०
सिंह	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५१	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४
कन्या	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	४	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७
तुला	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२०	१	१५	१	११	१	७	१	३
वृश्चिक	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३७	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०
धनु	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४३	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६

४२ पं० माघशुक्ल १५ रवि

अहर्गण २१

अयनांश २४।१२।२०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	३	९	९	२	९	११	१०	४
१७	६	१२	२८	२५	२४	०	१६	१६
४३	२६	५६	०	५०	३३	४५	९	९
४५	५३	२९	१०	२४	५०	४६	५६	५६
६१	८३२	४६	९४	५	७५	५	३	३
४	३७	२१	२३	५१	५८	३२	११	११
				व.				

◆चाहिए।" ढुण्ढिराज ४। प्रदोष में ढुण्ढिराजपूजा। सोपपदा ४ वेदारम्भ वर्जित है। रवियोग दि. १।५६ तक। ◑सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है। मन्वादि ७ ।⊙अभिजित का सूर्य समाप्त दि.१२।१२। पञ्चक समाप्ति दि.११।४७। यायीजययोग दि. ११।४७ तक। सर्वार्थसिद्धि योग दि.११।४७ से। रवियोग दि. ११।४७ तक। ☐ *से पूरे माघ मास का सम्पूर्ण फल मिलता है।* सोपपदा १२ वेदारम्भ वर्जित है। कल्पादि १३ (पूर्वाह्न में)। महात्मागाँधी स्मृति दिवस। शहीद दिवस। सर्वार्थसिद्धियोग रा.२।२८ से। रवियोग रा.२।२८ से।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. ६ शनि को दि. १२।५१ से। ति. ८ सोम को दि. १०।२६ तक। श्लेषा/मघा- ति. १५ रवि को रा. १२।१४ से।
पञ्चक विचार- ति. २ मंगल को रा. १।३० से। ति. ७ रवि को दि. ११।४७ तक।

माघ शुक्ल सप्तमी तिथि में सप्तविध पापों के विनाश के लिए- भगवान सूर्य के प्रीत्यर्थ अरुणोदय काल में तीर्थ स्नान का मन्त्र- यद्यदाचरितं पापं मया जन्मसु-जन्मसु। तन्मे रोगञ्चशोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। यद्यत्रकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोंजकायजंवापिज्ञाताज्ञाते चये पुनः। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याधि समायुक्ते हरमाकरिसप्तमी। स्नान के बाद सूर्य को अर्घ्य देवें। मन्त्र- जननी सर्वलोकानां सप्तमीसप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्त्तये।। भीष्माष्टमी में तर्पण से सन्तति लाभ होता है- तर्पण मन्त्र- वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्यप्रवराय च। गंगापुत्राय भीष्माय सर्वदाब्रह्मचारिणे। अपुत्राय जलं दद्मि नमो भीष्माय वर्मणे। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रान्वितां क्रियाम्।। अपसव्य होकर तर्पण तथा सव्य होकर अर्घ्य देवें। अर्घ्यदान मन्त्र-वसुनामवताराणां शान्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे।।इति।। पुत्र गोद लेने का मुहूर्त्त-हस्त,चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा,अश्विनी एवं पुष्य नक्षत्रों, सूर्य, मंगल,गुरु एवं शुक्रवारों १(कृ) तथा २,३,५,७,१०,११,१३ शुक्ल पक्ष की तिथियों एवं वृष तथा मिथुन लग्नों में पुत्र गोद लेना प्रशस्त होता है। दत्तकपुत्र में विशेष-(कालिकापुराण)-जिस पुत्र का मुण्डन संस्कार नहीं हुआ है,उस पुत्र की पुत्रता अपने पिता के गोत्र से होती है।।१।। अपने गोत्र में मुण्डन,उपनयन आदि(पाँच वर्ष के भीतर होने वाले) संस्कार करके ही दूसरे को पुत्र दत्तक रूप में देना चाहिए अन्यथा वह दास कहलाता है।।२।। पाँच वर्ष के इस दत्तक पुत्र को ग्रहण करने पर सर्वप्रथम पुत्रेष्टि यज्ञ करना चाहिए।।३।। दत्तकपुत्र ग्रहण करने का मुहूर्त्त-हस्त,चित्रा,स्वाती,विशाखा,अनुराधा,अश्विनी,धनिष्ठा,पुष्य इन नक्षत्रों में,सूर्य,मंगल,गुरु,शुक्रवारों में, रिक्ता रहित तिथियों में तथा २,५,८,११ लग्नों में दत्तकपुत्र ग्रहण करना चाहिए।

☞ कृष्णवस्त्रधारण **पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा** का मुहूर्त्त है। ति. १५ रवि को पुष्य में भद्रा (सा.४।३२) के बाद नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण पशुओं की खरीद-बिक्री शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण विपणि वाहन खरीदने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त्त है।

राष्ट्रीय तिथि १३ माघ से २८ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक २ फरवरी से १७ तक सन् २०२६ ई.।।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	नक्षत्र	घ. प.		घं. मि.	योग	घ. प.		घं. मि.	करण	घ. प.	करण	घ. प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	क्रान्ति द. -	रे.अं. + मि.	चन्द्रोदय स्टै. टा.
२७ १३	१	चं	४९ ५८	रा	२ ३२	श्लेषा	४२ ३७	रा	११ ३६	आयुष्मान	३/५४ ४१/४२	प्रा	८/५ १/५४	वा	२१ २९	कौ	४९ ५८	सौम्य	२	१	१९	२०	१३	सिंह	४२।३७	६ ३३	५ २७	९ १८ ४४ ४९	१६ ५८	+ १२	६ १५
२७ १६	२	मं	४८ १	रा	१ ४५	मघा	४२ ६	रा	११ २३	शोभन	५३ ५५	रा	४ ७	तै	१९ ०	गर	४८ १	कालदण्ड	३	२	२०	२१	१४			६ ३३	५ २७	९ १९ ४५ ५२	१६ ४१	+ १२	७ १७
२७ १९	३	बु	४७ १९	रा	१ २८	पू.फा.	४२ ४७	रा	११ ३९	अतिगण्ड	५० २६	रा	२ ४२	व	१७ ४०	भ	४७ १९	सुस्थिर	४	३	२१	२२	१५	कन्या	५८।१६	६ ३२	५ २८	९ २० ४६ ५३	१६ २३	+ १२	८ १४
२७ २३	४	गु	४७ ५३	रा	१ ४०	उ.फा.	४४ ४३	रा	१२ २४	सुकर्मा	४७ ५७	रा	१ ४२	वव	१७ ३६	वा	४७ ५३	मातङ्ग	५	४	२२	२३	१६			६ ३१	५ २९	९ २१ ४७ ५३	१६ ५	+ १२	९ १०
२७ २६	५	शु	४९ ५०	रा	२ २७	हस्त	४७ ५७	रा	१ ४२	धृति	४६ ३१	रा	१ ७	कौ	१८ ५२	तै	४९ ५०	अमृत	६	५	२३	२४	१७			६ ३१	५ २९	९ २२ ४८ ५१	१५ ४७	+ १२	१० ४
२७ २९	६	श	५२ ५२	रा	३ ३९	चित्रा	५२ १७	रा	३ २५	शूल	४५ ५४	रा	१२ ५२	गर	२१ २१	व	५२ ५२	काण	७	६	२४	२५	१८	तुला	२०।७	६ ३०	५ ३०	९ २३ ४९ ४९	१५ २८	+ १२	१० ५८
२७ ३२	७	र	५७ ३	रा	५ १९	स्वाती	५७ ४१	रा	५ ३४	गण्ड	४६ ११	रा	१२ ५८	भ	२४ ५८	वव	५७ ३	लुम्बक	८	७	२५	२६	१९			६ ३०	५ ३०	९ २४ ५० ४५	१५ १०	+ १२	११ ५३
२७ ३५	८	चं	६० ०	स	म स्त	विशाखा	६० ०	स	म स्त	वृद्धि	४७ ४	रा	१ १९	वा	२९ ३१	कौ	६० ०	मित्र	९	८	२६	२७	२०	वृश्चिक	४७।१६	६ २९	५ ३१	९ २५ ५१ ४०	१४ ५१	+ १२	१२ ४८
२७ ३९	८	मं	१ ५८	प्रा	७ १५	विशाखा	३ ४८	प्रा	७ ५९	ध्रुव	४८ २१	रा	१ ४८	कौ	१ ५८	तै	३४ ४०	श्रीवत्स	१०	९	२७	२८	२१			६ २८	५ ३२	९ २६ ५२ ३३	१४ ३१	+ १२	१ ४४
२७ ४२	९	बु	७ २१	दि	९ २४	अनुराधा	१० २१	दि	१० ३६	व्याघात	४९ ४५	रा	२ २२	गर	७ २१	व	४० ३	सौम्य	११	१०	२८	२९	२२			६ २८	५ ३२	९ २७ ५३ २५	१४ १२	+ १२	२ ३८
२७ ४५	१०	गु	१२ ४४	दि	११ ३३	ज्येष्ठा	१६ ५२	दि	१ १२	हर्षण	५० ५४	रा	२ ४९	भ	१२ ४४	वव	४५ १३	कालदण्ड	१२	११	२९	३०	२३	धनु	१६।५२	६ २७	५ ३३	९ २८ ५४ १६	१३ ५२	+ १२	३ ३१
२७ ४९	११	शु	१७ ४१	दि	१ ३०	मूल	२२ ५७	दि	३ ३७	वज्र	५१ ३९	रा	३ ६	वा	१७ ४१	कौ	४९ ४७	सुस्थिर	१३	१२	३०	१	२४			६ २६	५ ३४	९ २९ ५५ ५	१३ ३२	+ १२	४ २०
२७ ५२	१२	श	२१ ५२	दि	३ ११	पू.षा.	२८ १८	सा	५ ४५	सिद्धि	५१ ४१	रा	३ ६	तै	२१ ५२	गर	५३ २४	मातङ्ग	१४	१३	१	२	२५	मकर	४४।२२	६ २६	५ ३४	१० ० ५५ ५३	१३ १२	+ १२	५ ५
२७ ५५	१३	र	२४ ५५	सा	४ २३	उ.षा.	३२ ३२	रा	७ २६	व्यतिपात	५० ५०	रा	२ ४५	व	२४ ५५	भ	५५ ५५	अमृत	१५	१४	२	३	२६			६ २५	५ ३५	१० १ ५६ ४०	१२ ५२	+ १२	५ ४६
२७ ५९	१४	चं	२६ ५४	सा	५ १०	श्रवण	३५ ४१	रा	८ ४०	वरीयान	४९ १	रा	२ ०	श	२६ ५४	च	५७ १२	सिद्धि	१६	१५	३	४	२७			६ २४	५ ३६	१० २ ५७ २५	१२ ३१	+ १२	६ २२
२८ २	३०	मं	२७ २९	सा	५ २४	धनिष्ठा	३७ ३२	रा	९ २५	परिघ	४६ १३	रा	१२ ५३	नाग	२७ २९	किं	५७ ८	उत्पात	१७	१६	४	५	२८	कुम्भ	६।३७	६ २४	५ ३६	१० ३ ५८ ८	१२ १०	+ १२	- -

फाल्गुनकृष्णपक्ष।।

☞ एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।

सिंहराशि रा. ११।३६। यायीजययोग रा. ११।३६ तक।
☯ पुण्यकाल। गो-अन्न-तिल आदि का दान। गोदावरी में स्नान। स्थायीजययोग दि. ३।३७ से।
भ. दि. १।३६ से रा. १।२८ तक। कन्याराशि रा.शे. ५।५०। आवश्यक होने पर शुक्रबालत्व की समाप्ति सा. ६।५।
संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ९।१०। यायीजययोग रा. १।४० से। ○ सर्वार्थसिद्धियोग रा. ७।२६ तक।
⊙ धनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य सा. ६।४७। ❷ मृत्युबाण समाप्ति दि. ७।४४। यायीजययोग सा. ४।२३ तक। ○
भ.रा. ३।३९ से। तुलाराशि दि. २।३३। यायीजययोग रा. ३।३९ से। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ३।२५ से। रवियोग रा. ३।२५ से।
भ.सा. ४।२९ तक। भानुसप्तमी ७। सूर्यग्रहण के समान फल मिलता है। यायीजययोग रा. ५।१९ तक। रवियोग रा. ५।३४ तक।
वृश्चिकराशि रा. १।२३। जानकी जयन्ती। अष्टका श्राद्ध। अन्य अष्टका में श्राद्ध सम्भव न हो, किन्तु आज श्राद्ध करना ◆
अन्वष्टका श्राद्ध। स्थायीजययोग प्रा. ७।१५ तक। ◆ आवश्यक होता है। यमघंटयोग समस्त।
भ.रा. १०।२९ से। मृत्युबाणारम्भ दि. ९।४। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग दि. १०।३६ तक।
भ. दि. ११।३३ तक। धनुराशि दि. १।१२। मृत्युबाण समाप्ति दि. ८।४३। ❶ यायीजययोग सा. ५।४५ से।
विजया ११ एकादशीव्रत सबका। ⊙ सं.कुम्भराशि का सूर्य दि. ८।२२। मु. ३० समा। फल समता। बाद का ६ घण्टा २४ मिनट ☯
मकरराशि रा. १२।११। शनिप्रदोष १३ व्रत। *पुत्र प्राप्ति के लिए।* मृत्युबाणारम्भ दि. ८।४। सौरफाल्गुनमासारम्भ। ❶
भ. सा. ४।२३ से रा. ४।४७ तक। श्रीमहाशिवरात्रि व्रत। चतुर्दशलिंग पूजा। श्रीवैद्यनाथ जयन्ती। कृत्तिवासेश्वर दर्शन। ❷
शिवरात्रि व्रत की पारणा। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ८।४० तक।
कुम्भराशि दि. ९।३। स्नान-दान-श्राद्ध की ३० अमावस्या। भौमवती अमावस्या। यदि अमावस्या के दिन मंगलवार ❖

❖ पड़े तो उस दिन गंगा स्नान करने से करोड़ों सूर्यग्रहण में स्नान करने के समान फल मिलता है। पञ्चक प्रारम्भ दि. ९।३।

।।विवाहमुहूर्तप्रवेशलग्नविमर्शः।।

ति. ३ बुध को भद्रा (रा. १।२८) के बाद उ.फा. में रे.७ ल.१० इष्ट ५ ग्र.व.वि.१० (अष्टमस्थ चन्द्र शुभ नहीं है)।

ति. ४ गुरु को उ.फा. में रे.७ दिन में ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०वा ल. १२ इष्ट ५ ग्र.व.वि. ११। (चं.दा.) वा ल.गोधूलि वा ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०। रा. १२।२४ के बाद हस्त में रे. ८ ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १४ वा ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०

ति. ५ शुक्र को हस्त में रे. ८ दिन में ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०वा ल.गोधूलि वा ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०वा ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १४

ति. ६ शनि को रा. ३।२५ के बाद स्वाती में राहुवेध तथा भद्रा है।

ति. ७ रवि को स्वाती में पूर्ववेध है।

ति. ८ मंगल को प्रा. ७।५९ के बाद अनुराधा में रे.८ ल.गोधूलि वा ल. ७ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५वा ल.१० इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५

ति. ९ बुध को अनुराधा में रे.८ मृत्युबाण (दि.९।४) से पूर्व दिन में ल. १० इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५

ति. १० गुरु को दि.१।१२ के बाद मूल में रे. ६ ल.गोधूलि वा ल. ७ इष्ट ६ ग्र.व.वि.१५ वा ल. ८ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १४ वा ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०

ति. ११ शुक्र मूल में रे. ६ दिन में शुभ लग्न नहीं है।

ति. १२ शनि को सा.५।४५ के बाद उ.षा. में व्यतिपात दोष तथा मृत्युबाण है। इसके बाद मासान्त दोष है।

मूलविचार-
श्लेषा/मघा-
ति. २ मंगल को रा. ११।२३ तक।
ज्येष्ठा/मूल-
ति. ९ बुध को दि. १०।३६ से।
ति. ११ शुक्र को दि. ३।३७ तक।
पञ्चक विचार-
ति. ३० मंगल को दि. ९।३ से।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				बुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	चं	९	१३	४२	५०	९	२१	३४	३३	२	२५	४४	३३	९	२५	४९	४८	११	०	५१	१८	१०	१६	६	४५
२	मं	९	१४	२९	११	१०	१	८	३	२	२५	३८	४२	९	२७	५	४७	११	०	५६	५०	१०	१६	३	३४
३	बु	९	१५	१५	५०	१०	२	४१	३६	२	२५	३२	५१	९	२८	२१	४५	११	१	२	२२	१०	१६	०	२३
४	गु	९	१६	२	१०	१०	४	१५	५	२	२५	२७	०	९	२९	३७	४३	११	१	८	०	१०	१५	५७	१३
५	शु	९	१६	४८	५१	१०	५	४८	१९	२	२५	२१	९	१०	०	५३	४१	११	१	१३	३९	१०	१५	५४	२
६	श	९	१७	३५	२१	१०	७	१४	०	२	२५	१५	१८	१०	२	९	३९	११	१	२०	५६	१०	१५	५०	५१
७	र	९	१८	२१	५३	१०	८	३९	३९	२	२५	९	२७	१०	३	२५	३७	११	१	२६	३४	१०	१५	४७	४०
८	चं	९	१९	८	२४	१०	१०	५	१७	२	२५	३	३६	१०	४	४१	३५	११	१	३३	३१	१०	१५	४४	२९
८	मं	९	१९	५४	५५	१०	११	३०	५६	२	२४	५७	४५	१०	५	५७	३४	११	१	३९	४८	१०	१५	४१	१८
९	बु	९	२०	४१	२५	१०	१२	५४	३४	२	२४	५१	५६	१०	७	१३	३२	११	१	४६	६	१०	१५	३८	८
१०	गु	९	२१	२७	५६	१०	१४	१८	०	२	२४	४६	६	१०	८	२९	३१	११	१	५२	२३	१०	१५	३४	५७
११	शु	९	२२	१४	२७	१०	१५	४१	१५	२	२४	४०	१६	१०	९	४५	३०	११	१	५८	४०	१०	१५	३१	४६
१२	श	९	२३	०	५८	१०	१६	५४	१२	२	२४	३४	२६	१०	११	१	२९	११	२	४	५७	१०	१५	२८	३५
१३	र	९	२३	४७	२९	१०	१८	५७	४२	२	२४	२८	३६	१०	१२	१७	२८	११	२	११	१५	१०	१५	२५	२४
१४	चं	९	२४	३४	०	१०	१९	७	१४	२	२४	२२	४७	१०	१३	३३	२७	११	२	१७	३३	१०	१५	२२	१४
३०	मं	९	२५	२०	३०	१०	२०	६	४८	२	२४	१६	५७	१०	१४	४९	२६	११	२	२३	५१	१०	१५	१९	३

ग्रहचार-मंगल-ति.१२ शनि को धनिष्ठा में दि.४।१५।। बुध- ति. १ सोम को कुम्भराशि में दि.१।५।। ति. ५ शुक्र को शतभिष में रा.८।५९। ति. १४ सोम को पूर्वाभाद्रपद में रा.३।३९।। वक्रीगुरु-पुनर्वसु २ चरण में।। शुक्र-ति. ४ गुरु को कुम्भराशि में दि.१।३३। ति. ८ मंगल को शतभिष में रा.८।७।। शनि- पूर्वाभाद्रपद ४ चरण में।। राहु- शतभिष ३ चरणे में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी १ चरण में।।

४३ पं० फाल्गुनकृष्ण ८ सोम

अहर्गण २९

अयनांश २४।१२।२१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	६	९	१०	२	१०	११	१०	४
२५	२०	१९	१०	२५	४	१	१५	१५
५१	२८	८	५	३	४१	३३	४४	४४
४०	०	२४	१७	३६	३५	३१	२९	२९
६०	७२५	४६	८५	५	७५	६	३	३
५३	५९	३१	३९	५१	४०	१७	११	११
				व.				

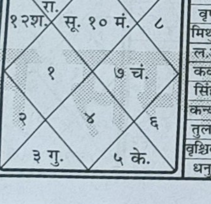

विविधमुहूर्त- ति. १ सोम को श्लेषा में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त है। ति. २ मंगल को मघा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। ति.३ बुध को पू.फा.में केतुयुति तथा भद्रा है। ति. ४ गुरु को उ.फा.में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। हस्त में रात्रिशेष में दक्षिण को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा सूतीस्नान मुहूर्त है। ति. ५ शुक्र को हस्त में अन्नप्राशन गर्भाधान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग नवीनवस्त्रधारण पशुओं की खरीद-बिक्री पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा नवान्नभक्षण औषधसेवन नावनिर्माण चौलमुण्डन (ल. १२) कर्णवेध (ल. १२) विद्यारम्भ (ल. १२) उपनयन (ल. २) ईंट निर्माण विपणि व्यापार वाहन खरीदने फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ६ शनि को चित्रा में शनिवेध है। ति. ७ रवि को स्वाती में राहुवेध तथा भद्रा है। ति. ८ सोम को विशाखा में सूर्यवेध है। ति. ८ मंगल को नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। ति. ९ बुध को अनुराधा में नवमी में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। रिक्ता (दि. ९।२४) के बाद जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन नवीनवस्त्रधारण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा दँवरी कर्णवेध (ल.१२) गृहप्रवेश (च.शु.) विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त है। ज्येष्ठा में पशुओं की खरीद-बिक्री चौलमुण्डन (ल. २) ईंट का भट्ठा लगाने फसल काटने का मुहूर्त है। ति. १० गुरु को भद्रा (दि. ११।३३) के बाद ज्येष्ठा में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन पशुओं की खरीद-बिक्री दँवरी चौलमुण्डन (ल. २) ईंट का भट्ठा लगाने ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त है। मूल में वाटिकारोपण शिल्पविद्या मुहूर्त है। ति. ११ शुक्र को मूल में पुंसवनसीमन्त ☞

तिथि / ल.अ.	१ चं घं.मि.		२ मं घं.मि.		३ बु घं.मि.		४ गु घं.मि.		५ शु घं.मि.		६ श घं.मि.		७ र घं.मि.		८ चं घं.मि.		८ मं घं.मि.		९ बु घं.मि.		१० गु घं.मि.		११ शु घं.मि.	
मकर	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६
कुम्भ	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५६
मीन	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२४
मेष	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	१
वृष	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५७
मिथुन	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	११
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कर्क	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	२९
सिंह	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४३
कन्या	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५६
तुला	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१२
वृश्चिक	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	२९
धनु	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३५

तिथि / ल.अ.	१२ श घं.मि.		१३ र घं.मि.		१४ चं घं.मि.		३० मं घं.मि.	
कुम्भ	७	५२	७	४९	७	४४	७	४१
मीन	९	२०	९	१६	९	१२	९	९
मेष	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४६
वृष	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४२
मिथुन	३	७	३	३	२	५९	२	५६
कर्क	५	२५	५	२१	५	१७	५	१४
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
सिंह	७	३९	७	३५	७	३१	७	२८
कन्या	९	५२	९	४८	९	४४	९	४१
तुला	१२	८	१२	४	१२	०	११	५७
वृश्चिक	२	२५	२	२१	२	१७	२	१४
धनु	४	३१	४	२७	४	२३	४	२०
मकर	६	१८	६	१४	६	१०	६	७

४४पं० फाल्गुनकृष्ण ३० मंगल

अहर्गण ३७

अयनांश २४।१२।२२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	९	९	१०	२	१०	११	१०	४
३	२८	२५	२०	२४	१४	२	१५	१५
५८	३४	२०	६	२०	४३	२३	१९	१९
८	२७	३०	४९	३३	३६	५१	३	३
६०	७७६	४६	५९	३	७५	६	३	३
४२	४	३१	३१	१९	११	१८	११	११
				व.				

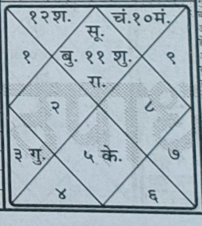

शिवरात्रि व्रत का माहात्म्य- शिवरात्रि से बढ़ा कोई परमतत्व नहीं अतः इस दिन जो मनुष्य शिव पूजन नहीं करता वह सहस्र जन्मों तक अनेक योनियों में भ्रमण करता रहता है। शिवरात्रि व्रत एवं शिव पूजन के प्रभाव से असम्भव भी सम्भव हो जाते है, तथा मनुष्य पृथ्वी के समस्त सुखों को प्राप्त करता हुआ अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। षोडशोपचार शिव पूजन विधि- संकल्प- देशकालपूर्वक नाम गोत्र का उच्चारण कर "ममेहजन्मनि जन्मान्तरे वार्जितसकल पापक्षयार्थं मायुरारोग्यैश्वर्यपुत्रपौत्रादिसकलकामनासिद्धिपूर्वकान्तेशिवसायुज्यप्राप्तये शिवरात्रिदिनोत्सवपूजनं करिष्ये।" से संकल्प करें पुनः स्थिर पार्थिव अथवा मिट्टी से निर्मित पार्थिव प्रतिमा पर प्राणप्रतिष्ठा पूर्वक पूजन करें। सर्व प्रथम आगच्छ देव देवेश मर्त्यलोक हितेच्छया। पूजयामिविधानेन प्रसन्नः सुमुखो भव।। नमस्तेरुद्र०, सहस्रशीर्षा० इत्यादि से अवाहन, सदासनं कुरुप्रज्ञनिर्मलं स्वर्णनिर्मितम्। भूषितंविविधै [illegible] कुरु त्वं पादुकासनम्।। एतावानस्येतिपाद्यं। गन्धोदकेन पुष्पेण चन्दनेन सुगन्धिना। गृहाण देवदेवेशभक्तिं मे ह्याचर्ला कुरु। शिवेनवचं० त्रिपादूर्ध्व० [illegible] कर्पूरोशीरसुरभिशीतलं निर्मलं जलम्। गङ्गायास्तु समानीतं गृहाणाचमनीयकम्। अद्भ्यवोचदधि०। ततोविं० आचमनीयम्।५। मन्दाकिन्याः समानीतं हेमाम्भोरुहवासितम्। स्नानीयं तु मया भक्त्यां तीर्थं स्वीक्रियतां विभो। असौयस्ताम्र तसमाद्यज्ञानत्स० स्नानम्।६। वस्त्रं सूक्ष्मंदुकूलञ्च देवानामपि दुर्लभम्। गृहाणत्वमुमाकांत प्रसन्नो भव सर्वदा। असौयोव० तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचः० वस्त्रं।७। यज्ञोपवीतं सहजं ब्राह्मणा निर्मितं पुरा। आयुष्यं ब्रह्मवर्चस्वमुपवीतं गृहाण मे। नमोस्तुनील०। तस्मादश्वा यज्ञोपवीतं।८। श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं असौयोव्व तं यज्ञं गन्धम्।९। माल्यादीनि विधानि पुष्पाणि।१०। वनस्पति रसोद्भूतो धूपम्।११। साज्यं च वर्तिसंयुक्तं दीपम्।१२। नैवेद्यं अवतत्य नैवेद्यम्।१३। पूगीफलं महद्दिव्यं नमस्तेऽस्तु पुष्पाञ्जलिः। प्रदक्षिणां। मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे। मानस्तोके तनये पुष्पाञ्जलिः।

☞ वाटिकारोपण दँवरी नावनिर्माण मुहूर्त है। पू.षा. में दोलारोहण मुहूर्त है। ति. १२ शनि को पू.षा. में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। सा. ५।४५ के बाद व्यतिपात (रा. ३।६) से पूर्व उ.षा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण गृहप्रवेश (च.शु.) मुहूर्त है। इसके बाद मासान्तदोष है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

फाल्गुनशुक्लपक्ष।।

राष्ट्रीय तिथि २९ माघ से १२ फाल्गुन तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक १८ फरवरी से ३ मार्च तक सन् २०२६ ई.।।

☞शुक्र पश्चिम में- अतः पश्चिम-दक्षिण दिशा तथा अग्नि नैर्ऋत्यकोण से द्विरागमन शुभ होगा।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.		घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.		घं.	मि.	योग	घ.	प.		घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य				क्रान्ति द.	–	रे.अं. +मि.		चन्द्रास्त स्टै. टा.	
२८	६	१	बु	२६	४६	सा	५	५	शतभिष	३८	९	रा	९	३९	शिव	४२	२४	रा	११	२१	वव	२६	४६	वा	५५	४८	मानस	१८	१७	५	६	२९			६	२३	५	३७	१०	४	५८	५०	११	४९	+	१२	६	४७
२८	९	२	गु	२४	४९	सा	४	१८	पू.भा.	३७	३४	रा	९	२४	सिद्ध	३७	३९	रा	९	२६	कौ	२४	४९	तै	५३	१९	मुद्गर	१९	१८	६	७	३०	मीन	२२।४३	६	२२	५	३८	१०	५	५९	३०	११	२८	+	१२	७	४६
२८	१३	३	शु	२१	४८	दि	३	४	उ.भा.	३५	५६	रा	८	४३	साध्य	३२	४	रा	७	११	गर	२१	४८	व	४९	५१	ध्वज	२०	१९	७	८	१			६	२१	५	३९	१०	७	०	७	११	७	+	१२	८	४५
२८	१६	४	श	१७	५३	दि	१	३०	रेवती	३३	३०	रा	७	४५	शुभ	२५	५०	सा	४	४१	भ	१७	५३	वव	४५	३०	धाता	२१	२०	८	९	२	मेष	३३।३०	६	२१	५	३९	१०	८	०	४४	१०	४५	+	१२	९	४७
२८	२०	५	र	१३	६	दि	११	३४	अश्विनी	३०	१८	सा	६	२७	शुक्ल	१८	५५	दि	१	५४	वा	१३	६	कौ	४०	२७	आनन्द	२२	२१	९	१०	३			६	२०	५	४०	१०	९	१	१८	१०	२४	+	१२	१०	५१
२८	२३	६	चं	७	४७	दि	९	२६	भरणी	२६	३६	सा	४	५७	ब्रह्म	११	३३	दि	१०	५६	तै	७	४७	गर	३४	५६	चर	२३	२२	१०	११	४	वृष	४०।३५	६	१९	५	४१	१०	१०	१	५१	१०	२	+	१२	११	५८
२८	२७	७	मं	२/५४	५/४	प्रा	७/४	९/४७	कृत्तिका	२२	३३	दि	३	२०	ऐन्द्र	३/५२	५२/१२	प्रा	७/४	५२/४५	व	२	५	भ	२१/५६	७/९	गद	२४	२३	११	१२	५			६	१९	५	४१	१०	११	२	२२	९	४०	+	११	१	५
२८	३१	९	बु	५०	१४	रा	२	२४	रोहिणी	१८	२२	दि	१	३९	विष्कुम्भ	४८	१६	रा	१	३६	वा	२३	१२	कौ	५०	१४	शुभ	२५	२४	१२	१३	६	मिथुन	४६।२०	६	१८	५	४२	१०	१२	२	५१	९	१८	+	११	२	१०
२८	३४	१०	गु	४४	३३	रा	१२	६	मृगशिरा	१४	१८	दि	१२	०	प्रीति	४०	३८	रा	१०	३२	तै	१७	२४	गर	४४	३३	मृत्यु	२६	२५	१३	१४	७			६	१७	५	४३	१०	१३	३	१९	८	५५	+	११	३	११
२८	३८	११	शु	३९	१५	रा	९	५८	आर्द्रा	१०	३२	दि	१०	२९	आयुष्मान	३३	१६	रा	७	३४	व	११	५४	भ	३९	१५	पद्म	२७	२६	१४	१५	८	कर्क	५३।५	६	१६	५	४४	१०	१४	३	४६	८	३३	+	११	४	४
२८	४१	१२	श	३४	३१	रा	८	४	पुनर्वसु	७	१६	दि	९	१०	सौभाग्य	२६	२५	सा	४	५०	वव	६	५३	वा	३४	३१	छत्र	२८	२७	१५	१६	९			६	१६	५	४४	१०	१५	४	९	८	१०	+	११	४	५१
२८	४५	१३	र	३०	३९	सा	६	३१	पुष्य	४	४१	दि	८	७	शोभन	२०	१२	दि	२	२०	कौ	२	३५	तै	३०/५९	३१/१०	श्रीवत्स	१	२८	१६	१७	१०			६	१५	५	४५	१०	१६	४	३१	७	४८	+	११	५	३१
२८	४९	१४	चं	२७	४१	सा	५	१८	श्लेषा	२	५६	दि	७	२४	अतिगण्ड	१४	४१	दि	१२	६	व	२७	४१	भ	५६	४५	सौम्य	२	२९	१७	१८	११	सिंह	२।५६	६	१४	५	४६	१०	१७	४	५१	७	२५	+	११	६	६
२८	५२	१५	मं	२५	४८	सा	४	३३	मघा	२	१३	दि	७	७	सुकर्मा	१०	०	दि	१०	१४	वव	२५	४८	वा	५५	२७	कालदण्ड	३	३०	१८	१९	१२			६	१४	५	४६	१०	१८	५	९	७	२	+	१०	–	–

☽चन्द्रदर्शन। मु.१५जघन्या। फल महँगी। समश्रृंग समताकारक। ⊙सायन मीनराशि का सूर्य रा.१।४१। यायी-स्थायी दुर्लभ ◆
मीनराशि दि. ३।२७। मु. रमजान ९ हिजरी सन् १४४७। श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती। छत्रपतिशिवाजी जयन्ती (नवीनतम)। ❶
भ. रा. २।१७ से। राष्ट्रीयफाल्गुनमास दि. ३०। सर्वार्थ तथा अमृतसिद्धियोग रा.८।४३ से। रवियोग रा.८।४३ से।
भ.दि. १।३० तक। मेषराशि रा.७।४५। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत। पञ्चक समाप्ति रा.७।४५। यायीजययोग दि.१।३० से ♍
मृत्युबाणारम्भ रा.शे.५।३६। सर्वार्थसिद्धियोग सा.६।२७ तक। रवियोग सा.६।२७ से। ♍रा.७।४५ तक। रवियोग रा.७।४५ तक।
वृषराशि रा.१०।३३। गोरूपिणीषष्ठी (बंगाल)। होलाष्टक आरम्भ। व्यास, रावी और त्रिपुष्कर क्षेत्र में होलाष्टक का दोष ☯
भ.दि.७।९ से सा.५।५८ तक। कामदा सप्तमी ७ व्रत। स्थायीजययोग प्रा.७।९ से दि. ३।२० तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।२० तक। ❸
मिथुनराशि रा.१२।५०। सर्वार्थसिद्धियोग समस्त। रवियोग दि. १।३९ से। ◆सन्धिकरयोग सा.५।५ से रा.९।३९ तक।
फगुदशमी (उड़ीसा)। रवियोग समस्त। ❖विश्वनाथ श्रृंगार दिन। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।२९ से। रवियोग दि. १०।२९ तक।
भ.दि. ११।२ से रा.९।५८ तक। कर्कराशि रा. ३।३०। आमलकी ११ एकादशी व्रत सबका। रंगभरी एकादशी। श्रीकाशी ❖
द्वादशी तथा पुष्य योग में गोविन्द द्वादशी १२। त्रिपुष्करयोग दि. ९।१० तक। ❷चौमासी चौदस (जैन)। रवियोग दि. ७।२४ तक।
प्रदोष १३ व्रत। मार्च ३। यायीजययोग दि. ८।७ से सा. ६।३१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ८।७ तक। रवियोग दि. ८।७ से।
भ.सा.५।१८ से रा. ४।५६ तक। सिंहराशि दि.७।२४। व्रत की १५ पूर्णिमा। *भद्रा पुच्छ (रा.१२।५० से रा.२।२ तक) में होलिकादाह।* ❷
स्नान-दान की १५ पूर्णिमा। दोलयात्रा १५। मन्वादि १५। श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयन्ती। ग्रहण के उपरान्त प्रदोषकाल में ☪

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श।।

ति. २	गुरु को रा.९।२४ के बाद उ.भा. में रे.७ ल.७ इष्ट ५ग्र.व.वि.१०(षष्ठस्थ चन्द्र शुभ नहीं है) वा ल.१० इष्ट ६ग्र.व.वि. १५
ति. ३	शुक्र को उ.भा. में रे.८ दिन में ल.२ इष्ट ५ ग्र.व.वि.१३। वा ल. गोधूलि। रा.९।४३ के बाद रेवती में रे.९ भद्रा(रा.२।१७) से पूर्व ल.७ इष्ट ५ग्र.व.वि.१०(षष्ठस्थ चन्द्र शुभ नहीं है)
ति. ४	शनि को भद्रा (दि.१।३०) के बाद रेवती में रे.९ ल.गोधूलि।
ति. ७	मंगल को वैधृति (रा.शे.४।४५) के बाद रोहिणी में रे.८ ल.१० इष्ट ५ ग्र.व.वि.१०
ति. ९	बुध को रोहिणी में रे.८ दिन में ल. १ इष्ट ७ ग्र.व.वि.१८।।(द्वादशस्थ शनि शुभ नहीं है)। दि.१।३९ के बाद मृगशिरा में रे.९ ल.गोधूलि वा ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १० वा ल. १० इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०(षष्ठस्थ चन्द्र शुभ नहीं है)
ति. १०	गुरु को मृगशिरा में रे. ९ दिन में ल.१ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१८।।(द्वादशस्थ शनि शुभ नहीं है)।
ति. १४	सोम को चन्द्रग्रहणदोष है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.	वा.	मंगल				मार्गीबुध				वक्रीगुरु				शुक्र				शनि				राहु			
१	बु	९	२६	७	१	१०	२१	६	२०	२	२४	१७	१४	१०	१५	५८	४७	११	२	३०	९	१०	१५	१५	५२
२	गु	९	२६	५३	३२	१०	२२	५	५२	२	२४	१३	५६	१०	१७	१३	५९	११	२	३६	२७	१०	१५	१२	४१
३	शु	९	२७	४०	३	१०	२३	५	४८	२	२४	१०	३८	१०	१८	२९	१०	११	२	४२	४५	१०	१५	९	३०
४	श	९	२८	२६	३४	१०	२३	५४	४५	२	२४	७	१९	१०	१९	४४	२१	११	२	४९	४१	१०	१५	६	२०
५	र	९	२९	१३	४	१०	२४	३३	३४	२	२४	४	१	१०	२०	५९	३३	११	२	५६	४५	१०	१५	३	९
६	चं	९	२९	५९	३५	१०	२५	१२	१८	२	२४	०	४३	१०	२२	१४	४३	११	३	३	४८	१०	१४	५९	५८
७	मं	१०	०	४६	६	१०	२५	५१	२	२	२३	५७	२५	१०	२३	२८	५६	११	३	१०	५२	१०	१४	५६	४७
९	बु	१०	१	३२	३७	१०	२६	२९	४६	२	२३	५४	६	१०	२४	४३	८	११	३	१७	५५	१०	१४	५३	३६
१०	गु	१०	२	१९	८	१०	२६	४९	१६	२	२३	५०	४८	१०	२५	५७	२०	११	३	२४	५९	१०	१४	५०	२६
११	शु	१०	३	५	३८	१०	२६	५९	२२	२	२३	४७	३१	१०	२७	११	३२	११	३	३२	२	१०	१४	४७	१५
१२	श	१०	३	५२	१८	१०	२७	९	२३	२	२३	४४	१५	१०	२८	२५	४४	११	३	३९	५	१०	१४	४४	४
१३	र	१०	४	३८	५७	१०	२७	१८	२२	२	२३	४०	५८	१०	२९	३९	५६	११	३	४६	९	१०	१४	४०	५३
१४	चं	१०	५	२५	३७	व	२७	२९	२४	२	२३	३७	४२	११	०	५४	८	११	३	५३	१३	१०	१४	३७	४२
१५	मं	१०	६	१२	१७	१०	२७	१२	३१	२	२३	३४	२५	११	२	८	२०	११	४	०	१७	१०	१४	३४	३२

ग्रहचार-मंगल-ति. ६ सोम को कुम्भराशि में प्रा.६।३२। ति.१५ मंगल को शतभिष में रा.८।३०।। मार्गीबुध-ति. १४ सोम को वक्री दि.३।४३।। ***वक्रीगुरु-पुनर्वसु २ चरण में।। शुक्र-ति. ४ शनि को पूर्वाभाद्रपद में दि.११।२१। ति.१३ रवि को मीनराशि में दि.१२।४५। ति.१५ मंगल को उत्तराभाद्रपद में रा.५।२५।। शनि-ति. ९ बुध को उत्तराभाद्रपद १ चरण में दि.१।२२।। राहु-शतभिष ३ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी १ चरण में ।।***

☞किसी पक्ष में पाँच ग्रहों का योग-भौमान्तरिक्षउपद्रवकारक होता है।

४५ पं. फाल्गुनशुक्ल ७ मंगल

अहर्गण ४४

अयनांश २४।१२।२३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१	१०	१०	२	१०	११	१०	४
११	४	०	२५	२३	२३	३	१४	१४
२	३७	४६	५१	५७	२८	१०	५६	५६
२२	३३	६	२	२५	५६	५२	४७	४७
६०	८५७	४६	३८	३	७४	७	३	३
२९	५५	३१	४४	१९	१२	३	११	११
			मा.	व.				

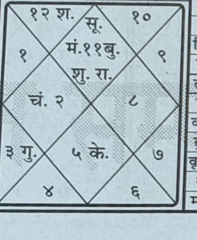

विविधमुहूर्त्त- ति. १ बुध को शतभिष में राहुयुति है। ति. २ गुरु को पू.भा. में शनियुति है। रात्रिशेष में उ.भा. में **वधूप्रवेश-द्विरागमन** (ल.११) सूतीस्नान मुहूर्त्त है। ति. ३ शुक्र को दि. ३।४ तक उ.भा. में पुंसवनसीमन्त **अन्नप्राशन** नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग वाटिकारोपण नावनिर्माण **उपनयन** (ल.२) **जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा** (ल.१२) **वधूप्रवेश** (ल.११वा २) **द्विरागमन** (ल.१२ वा ३) विपणि फसल काटने का मुहूर्त्त है। **ति.** ४ शनि को रिक्ता (दि.१।३०) के बाद रेवती में कृष्णवस्त्रधारण **पश्चिम-उत्तर दिशा की यात्रा** वस्तुक्रय वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। **ति.** ५ रवि को अश्विनी में केतुवेध है। **ति.** ६ सोम को भरणी में वस्तुविक्रय फसल काटने का मुहूर्त्त है। कृत्तिका में पशुओं की खरीद-बिक्री का मुहूर्त्त है। ति. ७ मंगल को प्रा.७।९ तक कृत्तिका में आभूषण निर्माण वस्तुविक्रय शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. ९ बुध को रोहिणी में रिक्तादोष है। रिक्ता (रा.२।२४) के बाद मृगशिरा में **पश्चिम-दक्षिण दिशा की यात्रा गृहप्रवेश** (ल.११) का मुहूर्त्त है। ति.१० गुरु को मृगशिरा में **अन्नप्राशन** सूतीस्नान वाटिकारोपण **पश्चिम दिशा की यात्रा** नवान्नभक्षण शिल्पविद्या औषधसेवन नावनिर्माण **चौलमुण्डन** (ल.१२ वा २) **कर्णवेध** (ल.१२ वा २) **उपनयन** (ल. २) **जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा** (ल.१२वा २) **वधूप्रवेश** (ल.११) **द्विरागमन** (ल.१२वा २) **गृहारम्भ** (ल.११वा २) (भूषयनदोष का परिहार है) **गृहप्रवेश** (ल.११) विपणि ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। आर्द्रा में **उपनयन** (ल.३) फसल काटने का मुहूर्त्त है। ति. ११शुक्र को आर्द्रा में **अक्षरारम्भ** (ल. १२) उपनयन (ल.१ के.दा.) का मुहूर्त्त है। दि. १०।२९ से दि. ११।२ तक पुनर्वसु में जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण सौभाग्यवती ☞

तिथि / ल.अ.	१ बु घं.	मि.	२ गु घं.	मि.	३ शु घं.	मि.	४ श घं.	मि.	५ र घं.	मि.	६ चं घं.	मि.	७ मं घं.	मि.	९ बु घं.	मि.	१० गु घं.	मि.	११ शु घं.	मि.	१२ श घं.	मि.	१३ र घं.	मि.	१४ चं घं.	मि.	१५ मं घं.	मि.
कुम्भ	७	३७	७	३३	७	३०	७	२६	७	२२	७	१९	७	१५	७	११	७	८	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४८
मीन	९	५	९	१	८	५८	८	५४	८	५०	८	४७	८	४३	८	३९	८	३६	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१६
मेष	१०	४२	१०	३८	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१३	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५३
वृष	१२	३८	१२	३४	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	९	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४९
मिथुन	२	५२	२	४८	२	४५	२	४१	२	३७	२	३४	२	३०	२	२६	२	२३	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	३
कर्क	५	१०	५	६	५	३	४	५९	४	५५	४	५२	४	४८	४	४४	४	४१	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२१
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
सिंह	७	२४	७	२०	७	१७	७	१३	७	९	७	६	७	२	६	५८	६	५५	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३५
कन्या	९	३७	९	३३	९	३०	९	२६	९	२२	९	१९	९	१५	९	११	९	८	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४८
तुला	११	५३	११	४९	११	४६	११	४२	११	३८	११	३५	११	३१	११	२७	११	२४	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	४
वृश्चिक	२	१०	२	६	२	३	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४४	१	४१	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१
धनु	४	१६	४	१२	४	९	४	५	४	१	३	५८	३	५४	३	५०	३	४७	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२७
मकर	६	२	५	५९	५	५६	५	५२	५	४८	५	४५	५	४१	५	३७	५	३४	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१४

४६ पं० फाल्गुनशुक्ल १५ मंगल

अहर्गण ५१

अयनांश २४।१२।२४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	४	१०	१०	२	११	११	१०	४
१८	१२	६	२७	२३	२	४	१४	१४
५	५०	१२	१२	३४	८	०	३४	३४
९	०	१७	३१	२५	२०	१७	३२	३२
६०	८०९	४६	२२	३	७४	७	३	३
१६	४०	३९	२७	१७	१२	४	११	११
			व.	व.				

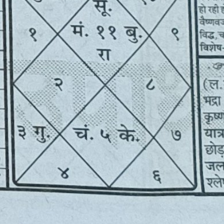

❶ ⊙शतभिष नक्षत्र का सूर्य रा.१०।२४। यायीजययोग रा.९।२४ से। ☯होता है, अन्य स्थानों में इसका दोष नहीं लगता है। मृत्युबाण समाप्ति रा.शे.५।२३। यायीजययोग दि.९।२६ से सा. ४।५७ तक। रवियोग सा.४।५७ तक। ❸ त्रिपुष्करयोग प्रा. ७।९ तक। ☪काशी में चतुः षष्टि यात्रा तथा दर्शन-पूजन। काशी में ग्रस्तोदित खण्डचन्द्रग्रहण (विवरण पृष्ठ २ पर)।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. ३ शुक्र को रा. ८।४३ से। ति. ५ रवि को सा. ६।२७ तक।
श्लेषा/मघा- ति. १३ रवि को दि. ८।७ से। ति. १५ मंगल को दि. ७।७ तक।
पञ्चक विचार-ति.४ शनि को रा.७।४५ तक।

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा में होलिकादाह- पूजाविधि- देश काल एवं नाम-गोत्र उच्चारण पूर्वक "मम सकुटुम्बस्य दुण्ढा राक्षसीपीडापरिहारार्थहोलिकापूजनमहं करिष्ये"।। से संकल्प करें। ध्यान- असृक्याभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वं होलिबालिशैः। तस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदाभव।। इससे ध्यान कर "होलिकायै नमः" से यथा विधि पूजन करें। दीपमन्त्र- दीपयाम्यद्यतेघोरे चिति राक्षसि सप्तमे। हिताय सर्वजगता प्रीतये पार्वतीपतेः।। इत्यादि से पूजन कर "अनेनार्चनेन होलिकाधिष्ठातृदेवता प्रीयतां न मम्" से समर्पित करें। तथा प्रज्वलित होलिका का तीन बार परिक्रमा करें। द्वितीय दिन होलिकाभस्मधारण मन्त्र- वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शङ्करेण च। अतस्त्वं पाहि नो देवि विभूतिर्भूतिदा भव।। होलिका में वायु परीक्षण- होलिका दहन काल में पूर्वादि दिशाओं के वायुचलन से क्रमशः राजा एवं प्रजा को सुख, अग्निभय, दुर्भिक्ष, दुर्भिक्ष, महावृष्टि, वायुवृद्धि, सुभिक्ष तथा प्रजासुख होता है। संक्षिप्त रूप में सकल तिथियों का निर्णय- क्रमशः कृष्णपक्ष में पूर्व तथा शुक्ल पक्ष में पर विद्ध प्रतिपदा तिथि का ग्रहण करना चाहिए। माधव के अनुसार परदिन अगर उदयोपरान्त तीन मुहूर्त्त द्वितीया तिथि प्राप्त हो रही हो तो व्रत में उसी का ग्रहण करना चाहिए। तृतीया लक्ष्मी व्रत को छोड़कर शेष में परविद्ध, चतुर्थी गणेश व्रत में सदा पूर्वा अन्यत्र परविद्ध, पञ्चमी नागपूजा में पर युक्त तथा अन्यत्र पूर्व युक्त, षष्ठी स्कन्द व्रत को छोड़कर सदा पर युक्त, सप्तमी सदा पूर्व विद्ध, अष्टमी कृष्णपक्ष में पूर्व विद्ध तथा शुक्ल पक्ष में पर विद्ध, परन्तु शिव एवं देवी सम्बन्ध में कृष्णपक्ष में भी पर विद्ध, नवमी सर्वत्र पूर्व विद्ध, दशमी नवमी युक्त एवं नहीं प्राप्त होने पर औदयिक, एकादशी स्मार्त्त जनों को उदयव्यापिनी ५९ घटी तक, पारण में द्वादशी प्राप्त हो रही हो तो दशमी विद्ध भी व्रत योग्य होती है। परन्तु वैष्णवजनों को ५३ दण्ड से अधिक द्वादशी में व्रत करना चाहिए परन्तु दशमी विद्ध नहीं, सामान्य वैष्णवजनों को ५५ दण्डात्मिका व्रत करना चाहिए अन्यकार्यों में समस्त पूर्व विद्ध एकादशी ही ग्राह्य है। त्रयोदशी शुक्ल पक्ष में पूर्व तथा कृष्णपक्ष में पर विद्ध, चतुर्दशी कृष्णपक्ष में पूर्व तथा शुक्ल में पर विद्ध, पूर्णिमा तथा अमावस्या व्रत में तारकोदय व्यापिनी तथा अन्य में उदय व्यापिनी, ग्रहण करना चाहिए। विशेष- जहाँ कार्य विशेष से कालविशेष में तिथि अनुग्रह हो वहा उसी काल में व्याप्त तिथि का ग्रहण करें।

☞को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण **दक्षिण दिशा की यात्रा** शिल्पविद्या **चौलमुण्डन** (ल.२) **अक्षरारम्भ** (ल.२) **उपनयन** (ल.२) **जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा** (ल.२) **द्विरागमन** (ल.२) वाहन खरीदने का मुहूर्त्त है। भद्रा (रा.९।५८) के बाद **द्विरागमन** (ल.७) मुहूर्त्त है। ति.१२ शनि को पुनर्वसु में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण **जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा** (ल.१२) मुहूर्त्त है। पुष्य में **पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा** (त्रयोदशी में) **गृहारम्भ** में भूषयनदोष का मुहूर्त्त है। ति.१३ रवि को पुष्य में पुंसवनसीमन्त सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण आभूषण निर्माण वाटिकारोपण **पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा** नावनिर्माण **जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा** (ल.१२) विपणि ऑपरेशन मुहूर्त्त है। श्लेषा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। ति. १४ सोम को श्लेषा में रिक्तादोष तथा भद्रा है। ति.१५मंगल को मघा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। पू.फ़ा. में केतुयुति है।

श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिरऋतु।।

दि.मा. घ.प.	ति.	वा.	घ.प.	घं.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घं.मि.	योग	घ.प.	घं.मि.	करण	घ.प.	करण	घ.प.	योग	अं.	फ.	सौ.	ने.	रा.	चन्द्र राशि	प्रवेश	सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.	औदयिक स्पष्ट सूर्य	क्रान्ति द.	रे.अं. + मि.	चन्द्रोदय स्टै.टा.
२८।५६	१	बु	२५।६	सा ४।१५	पू.फा.	२।३९	दि ७।१७	धृति	६।१६	दि ८।४३	कौ	२५।६	तै	५५।२४	सुस्थिर	४	१	१९	२०	१३	कन्या	१८।१५	६।१३	५।४७	१०।१९।५।२५	६।३९	+१०	६।५६
२९।०	२	गु	२५।४२	सा ४।२९	उ.फा.	४।२१	दि ७।५६	शूल	३।३२	दि ७।३७	गर	२५।४२	व	५६।४२	मातङ्ग	५	२	२०	२२	१४			६।१२	५।४८	१०।२०।५।४०	६।२९	+१०	७।५२
२९।४	३	शु	२७।४२	सा ५।१६	हस्त	७।१८	दि ९।६	गण्ड	१।४७	प्रा ६।५४	भ	२७।४२	बव	५९।१३	अमृत	६	३	२१	२२	१५	तुला	३९।२१	६।११	५।४९	१०।२१।५।५२	६।१७	+८	८।४६
२९।७	४	श	३०।४४	सा ६।२९	चित्रा	११।२३	दि १०।४४	वृद्धि	०।१०	प्रा ६।३५	बा	३०।४४	कौ	६०।०	काण	७	४	२२	२३	१६			६।११	५।४९	१०।२२।६।२	५।३०	+८	९।४१
२९।११	५	र	३४।५४	रा ८।८	स्वाती	१६।३६	दि १२।४८	ध्रुव	१।६	प्रा ६।३६	कौ	२।४९	तै	३४।५४	लुम्बक	८	५	२३	२४	१७			६।१०	५।५०	१०।२३।६।११	५।६	+९	१०।३६
२९।१५	६	चं	३९।४८	रा १०।४	विशाखा	२२।३६	दि ३।११	व्याघात	१।५३	प्रा ६।५४	गर	७।२१	व	३९।४८	मित्र	९	६	२४	२५	१८	वृश्चिक	६।६	६।९	५।५१	१०।२४।६।२६	४।४३	+९	११।३३
२९।१८	७	मं	४५।८	रा १२।११	अनुराधा	२९।५	सा ५।४६	हर्षण	३।८	प्रा ७।२३	भ	१२।२८	बव	४५।८	वज्र	१०	७	२५	२६	१९			६।८	५।५२	१०।२५।६।२०	४।१९	+९	१२।२८
२९।२२	८	बु	५०।२५	रा २।१८	ज्येष्ठा	३५।४०	रा ८।२४	वज्र	४।३९	दि ८।०	बा	१७।४७	कौ	५०।२५	ध्वांक्ष	११	८	२६	२७	२०	धनु	३५।४०	६।७	५।५२	१०।२६।६।२३	३।५६	+८	१।२२
२९।२६	९	गु	५५।१४	रा ४।१३	मूल	४१।५२	रा १०।५२	सिद्धि	६।२	दि ८।३२	तै	२२।५०	गर	५५।१४	धूम्र	१२	९	२७	२८	२१			६।७	५।५३	१०।२७।६।२४	३।३३	+८	२।१२
२९।२९	१०	शु	५९।१८	रा ५।४९	पू.षा.	४७।२४	रा १।४	व्यतिपात	७।०	दि ८।५४	व	२७।१६	भ	५९।१८	प्रवर्धमान	१३	१०	२८	२९	२२			६।६	५।५४	१०।२८।६।२३	३।९	+८	२।५८
२९।३३	११	श	६०।०	स म स्त	उ.षा.	५१।५६	रा २।५१	वरीयान	७।२१	दि ९।१	बव	३०।४५	बा	६०।०	राक्षस	१४	११	२९	३०	२३	मकर	३१।३२	६।५	५।५५	१०।२९।६।१७	२।४५	+८	३।४०
२९।३७	११	र	२।१२	प्रा ६।५८	श्रवण	५५।५३	रा ४।१३	परिघ	६।४८	दि ८।४८	बा	२।१२	कौ	३२।३७	गद	१५	१२	१	१	२४			६।४	५।५५	११।०।६।११	२।२१	+७	४।१८
२९।४१	१२	चं	४।२	दि ७।४१	धनिष्ठा	५७।२८	रा ५।३	शिव	५।२४	दि ८।१४	तै	४।२	गर	३४।१६	शुभ	१६	१३	२	२	२५	कुम्भ	२६।२५	६।४	५।५६	११।१।६।२	१।५८	+७	४।५३
२९।४४	१३	मं	४।२९	दि ७।५१	शतभिष	५८।१९	रा ५।२३	सिद्ध	५।५१	प्रा ७।५	व	४।२९	भ	३४।४	मृत्यु	१७	१४	३	३	२६			६।३	५।५७	११।२।५।५२	१।३४	+७	५।२७
२९।४८	१४	बु	३।३९	दि ७।३०	पू.भा.	५८।१	रा ५।१४	शुभ	५५।४	रा ४।४	श	३।३९	च	३२।३८	पद्म	१८	१५	४	४	२७	मीन	४३।१६	६।२	५।५८	११।३।५।३८	१।१०	+६	६।०
२९।५२	३०	गु	१।५८	प्रा ६।५०	उ.भा.	५६।३४	रा ४।४०	शुक्ल	४९।४८	रा १।५७	नाग	१।५८	किं	३०।५८	छत्र	१९	१६	५	५	२८			६।२	५।५८	११।४।५।२३	०।४७	+६	–

चैत्रकृष्णपक्ष ।।

राष्ट्रीय तिथि १३ फाल्गुन से २८ तक शक १९४७।।
अंग्रेजी दिनांक ४ मार्च से १९ तक सन् २०२६ ई.।।

कन्याराशि दि. १।२७। होली-वसन्तोत्सव। साभ्यंगस्नान। श्वपचस्पर्श-होलिकाविभूतिधारण। सायं चूतकुसुमप्राशन।❖ ♍(प्राचीनतम)। कल्पादि ३। स्थायीजययोग सा. ५।१६ से।
भ. रा. ४।५३ से। यायीजययोग सा. ४।२९ से।
भ. सा. ५।१६ तक। तुलाराशि रा. ९।५५। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत। चन्द्रोदय रा. ८।४६। छत्रपतिशिवाजी जयन्ती ♍
यायीजययोग सा. ६।२९ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. १०।४४ से। ❖ रतिकाम महोत्सव। ⊙पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य रा. ३।५७।
रंगपञ्चमी ५। विजयगोविन्द हलंकर दिवस (मणिपुर)। यायीजययोग दि. १२।४८ तक। ❶ रवियोग दि. ३।११ से।
भ. रा. १०।४ से। वृश्चिकराशि दि. ८।३५। यायीजययोग रा. १०।४ से। सर्वार्थसिद्धियोग दि. ३।११ से। यमघंटयोग दि. ३।११ तक। ❶
भ. दि. ११।७ तक। स्थायीजययोग रा. १२।११ से। रवियोग सा. ५।४६ तक।
धनूराशि रा. ८।२४। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रत। आज बासी भोजन शास्त्र विहित है। बुधाष्टमी ८ पर्व। यमघंटयोग रा. ८।२४ से।
मृत्युबाणारम्भ रा. ३।३४। ○पञ्चक प्रारम्भ सा. ४।३८। यायीजययोग दि. ७।४१ से रा. ५।३ तक।
भ. सा. ५।० से रा.शे. ५।४९ तक। मृत्युबाण समाप्ति रा. ३।३५।
मकरराशि दि. ७।३०। ⊙सं.मीनराशि का सूर्य रा. ३।३६। मु. ३० समा। फल समता। बाद का ६ घण्टा २४ मिनट पुण्यकाल। ☪
पापमोचनी ११ एकादशी व्रत सबका। सौरचैत्रमासारम्भ। द्विपुष्करयोग रा. ४।१३ से। ❷स्थायीजययोग रा.शे. ५।२३ से।
कुम्भराशि सा. ४।३८। दिन में ७।४१ तक एकादशी व्रत की पारणा। सोमप्रदोष १३ व्रत। *पुत्र प्राप्ति के लिए।* ○
भ. दि. ७।५१ से रा. ७।४१ तक। मासशिवरात्रि १३ व्रत। दिन में ७।५१ तक वारुणीपर्वका योग। काशी में बुढ़वा मंगल पर्व। ❷
मीनराशि रा. ११।१६। श्राद्ध की ३० अमावस्या। ⊙उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य दि. ११।४८।
स्नान-दान की ३० अमावस्या। आज ही प्रा. ६।४० के बाद चान्द्रसंवत्सर तथा वासन्तनवरात्र का प्रारम्भ। कलशस्थापन ☎

।। विवाहमुहूर्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श।।

ति. २ — गुरु को दि. ७।५६ के बाद हस्त में शनिवेध तथा भद्रा है।
ति. ३ — शुक्र को हस्त में पूर्वदोष है।
ति. ४ — शनि को दि. १०।४४ के बाद स्वाती में भौमवेध है।
ति. ५ — रवि को स्वाती में पूर्वदोष है।
ति. ६ — सोम को दि. ३।११ के बाद भद्रा (रा. १०।४) से पूर्व अनुराधा में रे. ९ ल. गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १६।। (षष्ठस्थ लग्नेश शुभ नहीं है) वा ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३ (षष्ठस्थ शुक्र शुभ नहीं है)
ति. ७ — मंगल को अनुराधा में भद्रा (दि. ११।७) के बाद रे. ९ दिन में पञ्चेष्टलग्न नहीं है।
ति. ८ — बुध को रा. ८।२४ के बाद मूल में रे. ८ ल. ७ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १३ (षष्ठस्थ शुक्र शुभ नहीं है) वा ल. ९ इष्ट ५ ग्र.व.वि. १०।। (गु.दा.)
ति. ९ — गुरु को व्यतिपात (दि. ८।३२) से पूर्व मूल में रे. ८ दिन में ल. १ इष्ट ५ ग्र.व.वि. ११।। (द्वादशस्थ शनि शुभ नहीं है)
ति. १० — शुक्र को रा. १।४ के बाद उ.षा. में भद्रादोष तथा मृत्युबाण है।
ति. ११ — शनि को उ.षा. में रे. ७ दिन में ल. १ इष्ट ५ ग्र.व.वि. ११।। (द्वादशस्थ शनि शुभ नहीं है) वा ल. गोधूलि वा ल. ६ इष्ट ५ ग्र.व.वि. ११।। (षष्ठस्थ लग्नेश शुभ नहीं है) वा ल. ९ इष्ट ६ ग्र.व.वि. १५।। (गु.दा.)

इसके बाद मीनसंक्रान्ति होने से विवाह मुहूर्त नहीं है।

वारुणी पर्व योग- चैत्रकृष्ण पक्ष की त्रयोदशी यदि शतभिषा नक्षत्र से युक्त प्राप्त हो तो उसमें गंगा स्नान करने से करोड़ों सूर्य ग्रहण स्नान का फल प्राप्त होता है। वही शतभिषा युक्त त्रयोदशी यदि शनिवार से भी युक्त हो तो उसे महावारुणी तथा पुनः शनिवार एवं शुभ योग से युक्त हो तो उसे महामहावारुणी के नाम से जाना जाता है। इस पर्व में गङ्गा स्नान तीन करोड़ कुलों का उद्धार करने वाला होता है। चैत्रकृष्ण चतुर्दशी को जो मनुष्य शिव सानिध्य में गङ्गा स्नान करता है उसे कभी भी प्रेतयोनि नहीं प्राप्त होती है।

ॐ सूर्योदयकालीन दैनिकस्पष्टभौमादिग्रह ॐ

ति.वा.	मंगल	वक्रीबुध	वक्रीगुरु	शुक्र	शनि	राहु
१ बु	१०।६।५८।५६	१०।२६।५०।४	२।२३।३१।८	११।३।२२।३२	११।४।७।२१	१०।१४।३१।२१
२ गु	१०।७।४५।३६	१०।२६।२७।३२	मा २।२३।३०।५५	११।४।३६।४४	११।४।१४।२५	१०।१४।२८।१०
३ शु	१०।८।३२।१६	१०।२६।५।०	२।२३।३१।५	११।५।५०।५६	११।४।२१।२९	१०।१४।२४।५९
४ श	१०।९।१८।५६	१०।२५।४२।२८	२।२३।३१।२५	११।७।५।८	११।४।२८।३३	१०।१४।२१।४८
५ र	१०।१०।५।३५	१०।२५।२०।५१	२।२३।३१।४५	११।८।१९।२०	११।४।३५।४०	१०।१४।१८।३७
६ चं	१०।१०।५२।१५	१०।२४।०।४	२।२३।३२।४	११।९।३३।३२	११।४।४३।२९	१०।१४।१५।२७
७ मं	१०।११।३८।५५	१०।२३।८।४१	२।२३।३२।२४	११।१०।४७।४४	११।४।५१।१९	१०।१४।१२।१६
८ बु	१०।१२।२५।३५	१०।२२।१७।१९	२।२३।३२।४४	११।१२।१।५६	११।४।५९।९	१०।१४।९।५
९ गु	१०।१३।१२।१४	१०।२१।२५।५६	२।२३।३३।४	११।१३।१६।८	११।५।६।५८	१०।१४।५।५४
१० शु	१०।१३।५८।५४	१०।२०।३४।३३	२।२३।३३।२४	११।१४।३०।२०	११।५।१४।४८	१०।१४।२।४३
११ श	१०।१४।४५।३३	१०।१९।४३।९	२।२३।३३।४५	११।१५।४४।३२	११।५।२२।३७	१०।१३।५९।३३
११ र	१०।१५।३२।१३	१०।१८।५१।४७	२।२३।३४।४	११।१६।५८।४४	११।५।३०।२७	१०।१३।५६।२२
१२ चं	१०।१६।१८।५३	१०।१८।०।२४	२।२३।३४।२५	११।१८।१२।५६	११।५।३८।१७	१०।१३।५३।११
१३ मं	१०।१७।५।३३	[illegible]	२।२३।३४।४६	११।१९।२७।८	११।५।४६।७	१०।१३।५०।०
१४ बु	१०।१७।५२।१२	१०।१६।५५।४७	२।२३।३५।७	११।२०।४१।२१	११।५।५३।५७	१०।१३।४६।४९
३० गु	१०।१८।३८।५२	१०।१६।३३।२५	२।२३।३५।२८	११।२१।५५।३३	११।६।१।४७	१०।१३।४३।३९

ग्रहचार-मंगल- शतभिष में।। वक्रीबुध-ति.१० शुक्र को शतभिष में रा. १०।१४ ।। वक्रीगुरु-पुनर्वसु २ चरण में। ति.२ गुरु को मार्गी रा. ७।२१। शुक्र-ति.११ शनि को रेवती में रा. १२।१।। शनि- उत्तराभाद्रपद १ चरण में।। राहु-शतभिष ३ चरण में तथा केतु पूर्वाफाल्गुनी १ चरण में ।। (एक राशि पर चार या पाँच ग्रहों का योग उत्पात कारक होता है।)

४७ पं० चैत्रकृष्ण ८ बुध

अहर्गण ५९

अयनांश २४।१२।२५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	७	१०	१०	२	११	११	१०	४
२६	२२	१२	२२	२३	१२	४	१४	१४
६	५१	२५	१७	३२	१	५९	९	९
२३	३३	३४	१९	४४	५६	९	५	५
६०	७२०	४६	५१	०	७४	७	३	३
१	५४	४०	२३	२०	१२	४९	११	११
			व.	मा.				

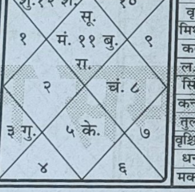

विविधमुहूर्त- ति. १ बुध को पू.फा. में केतुयुति है। उ.फा. में पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान (द्वितीया में) दँवरी शिल्पविद्या विपणि फसल काटने का मुहूर्त है। ति. २ गुरु को उ.फा. में अन्नप्राशन सूतीस्नान नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनवस्त्रधारण वाटिकारोपण दँवरी नावनिर्माण फसल काटने का मुहूर्त है। हस्त में शनिवेध है। ति. ३ शुक्र को हस्त में भद्रा के बाद रिक्तादोष है। ति. ४ शनि को चित्रा में सूर्यवेध है। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। ति. ५ रवि को स्वाती में राहुवेध है। विशाखा में मंगल का वेध समाप्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। ति. ६ सोम को विशाखा में पूर्वदोष है। अनुराधा में भद्रा (रा. १०।४) से पूर्व दँवरी शिल्पविद्या औषधसेवन विपणि वाहन खरीदने का मुहूर्त है। ति. ७ मंगल को भद्रा (दि. ११।७) के बाद अनुराधा में सूतीस्नान लालवस्त्रधारण उत्तर को छोड़कर अन्य दिशा की यात्रा ऑपरेशन का मुहूर्त है। ज्येष्ठा में शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है। ति. ८ बुध को ज्येष्ठा में शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन पशुओं की खरीद-बिक्री दँवरी ईंट निर्माण फसल काटने का मुहूर्त है। ति. ९ गुरु को मूल में रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है। ति. १० शुक्र को व्यतिपात (दि. ८।५४) के बाद भद्रा (सा. ५।०) से पूर्व पू.षा. में दोलारोहण शिल्पविद्या नावनिर्माण मुहूर्त है। ति. ११ शनि को उ.षा. में सौभाग्यवती को छोड़कर कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त है। ति. ११ रवि को श्रवण में पुंसवनसीमन्त नवीन खटिया-चौकी आदि का उपभोग आभूषण निर्माण पूर्व-दक्षिण दिशा की यात्रा (एकादशी में) औषधसेवन वस्तुक्रय ऑपरेशन फसल काटने का मुहूर्त है। ति. १२ सोम को धनिष्ठा में मंगल से भुक्त है, किन्तु चन्द्रमा से भुक्त न होने से अशुभ है। इसके बाद मासान्तदोष है।

तिथि ल.अ.	१ बु घं.मि.		२ गु घं.मि.		३ शु घं.मि.		४ श घं.मि.		५ र घं.मि.		६ चं घं.मि.		७ मं घं.मि.		८ बु घं.मि.		९ गु घं.मि.		१० शु घं.मि.		११ श घं.मि.	
कुम्भ	६	४४	६	४०	६	३७	६	३३	६	२९	६	२६	६	२२	६	१८	६	१५	६	११	६	७
मीन	८	१२	८	८	८	५	८	१	७	५७	७	५४	७	५०	७	४६	७	४३	७	३९	७	३५
मेष	९	४९	९	४५	९	४२	९	३८	९	३४	९	३१	९	२७	९	२३	९	२०	९	१६	९	१२
वृष	११	४५	११	४१	११	३८	११	३४	११	३०	११	२७	११	२३	११	१९	११	१६	११	१२	११	८
मिथुन	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४४	१	४१	१	३७	१	३३	१	३०	१	२६	१	२२
कर्क	४	१७	४	१३	४	१०	४	६	४	२	३	५९	३	५५	३	५१	३	४८	३	४४	३	४०
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
सिंह	६	३१	६	२७	६	२४	६	२०	६	१६	६	१३	६	९	६	५	६	२	५	५८	५	५४
कन्या	८	४४	८	४०	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६	८	२२	८	१८	८	१५	८	११	८	७
तुला	११	०	१०	५६	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३१	१०	२७	१०	२३
वृश्चिक	१	१७	१	१३	१	१०	१	६	१	२	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४८	१२	४४	१२	४०
धनु	३	२३	३	१९	३	१६	३	१२	३	८	३	५	३	१	२	५७	२	५४	२	५०	२	४६
मकर	५	१०	५	६	५	३	४	५९	४	५५	४	५२	४	४८	४	४४	४	४१	४	३७	४	३३

तिथि घं.मि.	११ र घं.मि.		१२ चं घं.मि.		१३ मं घं.मि.		१४ बु घं.मि.		३० गु घं.मि.	
मीन	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१	७	१७
मेष	९	९	९	५	९	१	८	५८	८	५४
वृष	११	५	११	१	१०	५७	१०	५४	१०	५०
मिथुन	१	१९	१	१५	१	११	१	८	१	४
कर्क	३	३७	३	३३	३	२९	३	२६	३	२२
सिंह	५	५१	५	४७	५	४३	५	४०	५	३६
ल.अ.	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
कन्या	८	४	८	०	७	५६	७	५३	७	४९
तुला	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	९	१०	५
वृश्चिक	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२६	१२	२२
धनु	२	४३	२	३९	२	३५	२	३२	२	२८
मकर	४	३०	४	२६	४	२२	४	१९	४	१५
कुम्भ	६	१	५	५७	५	५३	५	५०	५	४६

४८ पं० चैत्रकृष्ण ३० गुरु

अहर्गण ६७

अयनांश २४।१२।२६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	११	१०	१०	२	११	११	१०	४
४	३	१८	१६	२३	२१	६	१३	१३
५	४७	३८	३३	३५	५५	१	४३	४३
२३	७	५२	२५	२८	३३	४७	३९	३९
५९	८१९	४६	२२	०	७४	७	३	३
४३	४९	४०	३२	२१	१२	५०	११	११
			व.	मा.				

☪ गो-अन्नदान। गोदावरी में स्नान। खरमास प्रारम्भ। वसन्तऋतुप्रारम्भ। यायीजययोग रा. २।५१ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. २।५१ से। ☎ ध्वजारोपण-वर्षपतिपूजा-साभ्यङ्गस्नान तथा पञ्चाङ्ग फल श्रवण। प्रपा (पौसरा) का दान। असमर्थता में धर्मघटादिदान। आरोग्य विद्यातिलक व्रत। आज से वर्षान्त तक 'सिद्धार्थ' संवत्सर का संकल्प आदि में विनियोग करना चाहिए। गुडीपडवा (दक्षिण भारत)। कल्पादि १। यायीजययोग प्रा. ६।४० से रा.शे. ५।२५ तक। सर्वार्थसिद्धियोग रा. ४।४० से।

मूलादि गण्डान्त नक्षत्रों के फल तथा शान्ति आदि का निर्णय- अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, अश्लेषा, मघा तथा रेवती ये गणान्त नक्षत्र हैं, अतः इनमें उत्पन्न जातकों का गोमुख प्रसव पूर्वक शान्ति करें। मूलोत्पन्न जातकों के विशेष फल- मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न जातक पिता, द्वितीय में माता, तृतीय में उत्पन्न जातक धन नाशक तथा चतुर्थ चरण में उत्पन्न जातक शुभ दायक होता है। मूल नक्षत्र के समान ही चरणों के विपरीत क्रम से अश्लेषा नक्षत्र जनित फल होता है। अभुक्तमूल प्रमाण- (वसिष्ठ)- ज्येष्ठा के अन्त की एक तथा मूल के आदि की दो घटी अभुक्त मूल होता है, अतः इसमें उत्पन्न बालकों का त्याग कर देना चाहिए। (मनु) ज्येष्ठा के अन्त की आधी तथा मूल के आदि की आधी घटी अभुक्त मूल होता है। विशेष- मूल जनित शुभाशुभ फल के ज्ञान के लिए मूल रूपी वृक्ष की कल्पना की गयी है जिसमें ... शाखा, पत्र, पुष्प, फल एवं शिखा की कल्पना कर फल का निर्धारण किया गया है। फल- मूल रूपी वृक्ष के मूल घटी में जन्म से मूल विनाश, स्तम्भ घटी में जन्म से हानि एवं धनक्षय, त्वचा में भ्रातृ विनाश, शाखा में मातृ विनाश, पत्र में परिवार विनाश, पुष्प में राजप्रिय, फल में राज्य की सफलता तथा शिखा भाग में जन्म से अल्पायु की प्राप्ति होती है। मूल एवं अश्लेषा में उत्पन्न जातकों के शान्ति हेतु काल निर्णय- [illegible] अग्नि चक्र विलोकन काल- अग्नि स्थापन एवं पूर्णाहुति के समय 'आहुतिर्होमवस्तु विलोकया। शान्ति कर्मणि' के अनुसार शान्ति कार्य में अग्नि वास तथा अग्नि चक्र दोनों देखना चाहिए।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ७ मंगल को सा. ५।४६ से। ति. ९ गुरु को रा. १०।५२ तक।
रेवती/अश्विनी- ति. ३० गुरु को रा. ४।४० से।
पञ्चक विचार- ति. १२ सोम को सा. ४।३८ से।

जन्मांग चक्र द्वारा चरादि राशिवश दीर्घ, मध्य एवं अल्पायु बोधक चक्र

होरा लग्न साधन- इष्टकाल (घटी) को द्विगुणित कर पाँच से भाग दें, शेष को पल बनाकर पुनः दश से भाग देकर लब्धि को सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होता है।

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चर राशि १ में लग्नेश	चरराशि में १ लग्नेश	चरराशि में १ लग्नेश
चर राशि १ में अष्टमेश	स्थिरराशि में २ अष्टमेश	द्विस्वभाव में ३ अष्टमेश
स्थिरराशि में २ लग्नेश	स्थिरराशि में २ लग्नेश	स्थिरराशि में १ लग्नेश
द्विस्वभाव में ३ अष्टमेश	चरराशि में २ अष्टमेश	स्थिरराशि में १ अष्टमेश
द्विस्वभाव में ३ लग्नेश	द्विस्वभाव में ३ लग्नेश	द्विस्वभाव में ३ लग्नेश
स्थिरराशि में २ अष्टमेश	द्विस्वभाव में ३ अष्टमेश	चरराशि में १ अष्टमेश

रोग ज्ञानार्थ त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पुनवसु	पुष्य
पू.फा.	मघा	श्लेषा
उ.फा.	हस्त	चित्रा
अनुरा.	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.
घनिष्ठा	श्रवण	उ.षा.
शतभिष	पू.भा.	उ.भा.
भरणी	अश्विनी	रेवती
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चक्र द्वारा आयु निर्णय- जन्म लग्नेश एवं अष्टमेश, शनि एवं चन्द्र तथा लग्न एवं होरा लग्न, इन तीन प्रकार से आयु का निर्णय करें। तीनों अथवा जिन दो प्रकारों में एक रूपता हो उसी आयु का ग्रहण करना चाहिए। साधित तीनों प्रकारों में भिन्नता होने पर होरा लग्न एवं जन्म लग्न द्वारा साधित आयुर्दाय का ही ग्रहण करना चाहिए। अथवा लग्न एवं सप्तम से अन्यत्र चन्द्रमा की स्थिति होने पर लग्न एवं चन्द्रमा द्वारा आयु साधन कर उसका ग्रहण करना चाहिए। शनि द्वारा साधित दीर्घायु में मध्यम आयु, मध्यमायु में अल्पायु एवं अल्पायु में किञ्चिदायु का ग्रहण करना चाहिए। शनि के स्वराशि एवं उच्च में स्थिति से आयु कक्षा का परिवर्तन नहीं होगा। लग्न-सप्तम एवं अष्टम के अधिपतियों में जो बली हो उसके केन्द्र स्थिति से दीर्घायु पणफर से मध्यायु तथा आपोक्लिम में स्थिति से अल्पायु होता है। इसके अतिरिक्त आयु के कारक ग्रहस्थान से सप्तमेश एवं अष्टमेश द्वारा भी आयु का निर्णय किया जाता है।

सारणी का उदाहरण- जन्मकालिक इष्टकाल-५।३।४ जन्मलग्न ९।१५।४७।२५, होरालग्न ९।१९।४७।२२, लग्नेश शनि ११।२१।४८।३२, अष्टमेश सूर्य १०।४।८।१२, चन्द्र ७।६।३४।१६, यहाँ लग्नेश एवं अष्टमेश की स्थिति से दीर्घायु है परन्तु यहाँ शनि के दीर्घायु कारक होने से मध्यमायु का ग्रहण होगा। लग्न एवं चन्द्रमा द्वारा मध्यमायु तथा होरालग्न एवं लग्न द्वारा दीर्घायु प्राप्त हो रहा है।

मारक एवंआयु स्थानों का निर्धारण- लग्न से अष्टम एवं तृतीय भाव को आयु स्थान तथा द्वितीय एवं सप्तम को मारक स्थान कहा जाता है। कभी-कभी षष्ठेश, व्ययेश एवं अष्टमेश की दशान्तर्दशाऐ भी मारक हो जाती हैं। परस्पर षष्ठेश एवं अष्टमेश की दशान्तर्दशायें तथा मारक की महादशा में मारक की अन्तर्दशा शुभ नहीं होती है। व्ययेश एवं द्वितीयेश सम्बन्धवश फलदायक होते है। लग्नेश की दशा अनिष्ट सम्बन्ध से रहित रहने पर मारक नहीं होती, पाप ग्रहों की दशाएं भी अनिष्टकारक ही होती है।

चरकारक- समस्त स्पष्टग्रहों की राशियों को छोड़कर अंशादि मान से अधिक ग्रह क्रमशः आत्म, अमात्य, भ्रातृ, मातृ, पितृ, पुत्र एवं जाति एवं दारा कारक होते हैं।

तीन प्रकार की आयु- अल्प, मध्य एवं उत्तम भेद से तीन प्रकार की आयु होती है। अल्पायु ३२ से कम, तदनन्तर ६४ वर्ष तक मध्यायु तथा उसके बाद १०० वर्ष तक दीर्घायु एवं सौ वर्ष के बाद उत्तमायु होती है। अल्पादि तीन आयु प्रमाणों के भी क्रमशः अल्प, मध्य तथा दीर्घ मिलकर ९ प्रकार के आयु प्रमाण सिद्ध होते हैं। अल्पायु योग में उत्पन्न जातक का विपत्, मध्यायु में उत्पन्न जातक का प्रत्यरि तथा दीर्घायु योग उत्पन्न जातक का वधतारा के नक्षत्रों में मृत्यु होती है।

जातक पारिजात में वर्णित रीति द्वारा आयुविचार

अष्टमेश यदि पापग्रह से युक्त होकर षष्ठ या द्वादश में स्थित हो अथवा निर्बल लग्नेश से युक्त होकर उक्त स्थानों में स्थित हो तो जातक अल्पायु होता है। यदि शनि से योग रहित कर्मेश, अष्टमेश एवं लग्नेश बलवान हो तो जातक दीर्घायु होता है। इन तीनों में यदि दो अतिव बलवान हो तो मध्यामायु एवं एक बलवान हो तो अल्पायु होता है। पापयुक्त अष्टमेश पापग्रहों की राशि में स्थित होकर ६,१२ में स्थित हो तो अल्पायु तथा शुभग्रहों से दृष्ट होकर अष्टम में स्थित हो तो दीर्घायु होता है। लग्नेश या अष्टमेश पापग्रहों से युक्त एवं दृष्ट होकर अष्टमस्थ हों या अस्त अथवा शत्रुगृह गत हों तो अल्पायु होता है। लग्नेश या अष्टमेश अपनी उच्चराशि में शुभग्रहों से युक्त होकर केन्द्र, त्रिकोण अथवा क्रमशः लग्न एवं अष्टम में स्थित हों तो दीर्घायु, बलवान द्वादशेश स्वगृही हो अथवा लग्नेश एवं अष्टमेश बलवान होकर केन्द्रवर्ती हों तो सुखी एवं दीर्घायु होता है। यदि आधान लग्न से अष्टम में दशम में जन्मराशि, शुक्र, बुध एवं गुरु से युक्त एवं दृष्ट हो तो जातक आयुष्मान एवं आरोग्यवान होता है। अष्टमेश यदि लग्नेश के साथ पापग्रहों से युक्त हो तो अल्पायु करता है। लग्नेश के साथ षष्ठेश ६,८ अथवा शत्रुगृही होकर द्वादश, लग्न या अष्टम में स्थित हो तो दीर्घायु होता है। अष्टमेश तथा लग्नेश यदि स्वगृही, स्वनवमांशगत या परगृही, परनवमांशगत हों तो दीर्घायु करते हैं। अष्टमेश नीचराशि में स्थित हो अष्टम में पापग्रह तथा लग्नेश बलहीन हो तो निश्चित ही अल्पायु होता है। लग्नेश, अष्टमेश, कर्मेश एवं शनि यदि केन्द्र, त्रिकोण अथवा लाभ स्थानगत हों अथवा लग्नेश स्वोच्चराशिगत एवं चन्द्रमा लाभस्थानगत या गुरु अष्टमस्थ हों तो जातक दीर्घायु होता है।

।। जैमिनी सूत्र द्वारा आयु साधन में अंशफल ज्ञानार्थ सारिणी ।।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

।। जैमिनी सूत्रोक्त आयु साधन में कला फल ज्ञानार्थ सारिणी ।।

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

।। जैमिनी सूत्रोक्त आयु साधन में विकला फल ज्ञानार्थ सारिणी ।।

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

।। प्रत्येक ग्रहों के रेखाष्टक ज्ञान के लिए सारणी ।।

सूर्य के अष्टक वर्गाङ्क ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चन्द्रमा के अष्टक वर्गाङ्क ४९

चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
११	१०	८	११	१०		११	
	११	१०	१२	११			
		११					

मंगल के अष्टक वर्गाङ्क ३९

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
१०				१०			
११				११			

बुध के अष्टक वर्गाङ्क ५४

बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
१०		८	९		११	९	१०
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

गुरु के अष्टक वर्गाङ्क ५६

बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	३	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	९	७
१०			९		११	१०	९
११			१०			११	१०
			११				११

शुक्र के अष्टक वर्गाङ्क ५२

शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	ल.
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	११	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	९	३
४	८		४	९	९	१०	४
५	९		५	११	११	११	५
८	१०		८	१२			८
९	११		९				९
१०			११				११
११			१२				

शनि के अष्टक वर्गाङ्क ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	ल.
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

लग्न के अष्टक वर्गाङ्क ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	११	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

अष्टक वर्ग राशि गुणक- मे.७, वृ.१०, मि.८, क.४, सिं. १०, कं.५, तु.७, वृ.८, धन.९, मं.५, कु. ११, मी. १२। ग्रहगुणक- सू.५, चं.५, मं.८, बु.५, बृ.१०, शु.७, श.५,। रेखाफल- १ क्लेश, २ अर्थहानि, ३ प्रवास-कष्ट, ४ समलाभ, ५ सुख, ६ धनाप्ति, ७ परमानन्द, ८ कार्यसिद्धि।

योगिनीयों की दशा एवं अन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मङ्गला१ आर्द्रा चित्रा श्रवण			पिङ्गला२ पुन. स्वा. धनि.			धान्या ३ पुष्य विशा. शत.			भ्रामरी ४ अश्वि.श्ले.अ. पूभा		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	वृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	उ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	उ.	३	१०	सि.	६	०	सि.	९	१०
उ.	१	२०	सि.	४	०	म.	७	०	सं.	१०	२०
सि.	२	०	म.	४	२०	स.	८	०	मं.	१	१०
म.	२	१०	स.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
स.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०

भद्रिका ५ भर.मघा.ज्ये. उ.भा.			उल्का ६ कृत्ति.पू.फा. मू.रेव.			सिद्धा ७ रोहि. उ.फा. पू.षा.			सङ्कटा ८ मृग. हस्त उ.षा.		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

योगिनी दशा साधन- जन्मनक्षत्र की संख्या में तीन जोड़कर आठ से भाग दें। एकादि शेष से मङ्गलादि योगिनीयों की दशाए एक वर्ष के वृद्धि क्रम से होती है। दशा प्रमाण से भयात को गुणाकर भभोग से भाग दें लब्धि तुल्य योगिनी की भुक्तदशा तथा भुक्त को पूर्ण वर्ष प्रमाण में घटाने से भोग्य दशा होती है।

केवल जन्मलग्न द्वारा आयु सहित अरिष्टवर्ष ज्ञानार्थ चक्र

जन्म लग्न	अरिष्टवर्ष					आयु
१ मेष	४	११	१६	४४	५८	१००
२ वृष	१	२८	३३	४४	६१	९०
३ मिथुन	४	१०	१४	३८	५८	८६
४ कर्क	५	२५	४०	४८	६२	१००
५ सिंह	५	१३	२८	३६	४८	६३
६ कन्या	४	१६	२३	३६	४५	१००
७ तुला	१५	३१	३५	६२	६४	७५
८ वृश्चिक	११	२८	३८	५२	६२	१००
९ धनु	२	१०	१८,३१,३८		४२,६७	८१
१० मकर	५	१३	२७	३६	५७,६२	९५
११ कुम्भ	२	२८	३३	४८	६४	९०
१२ मीन	१	८	१३	३६	४८	८३

कुण्डली के द्वादश भावों से विचारणीय विषय- लग्न (तनु) द्वारा शरीर, वर्ण, आकृति, लक्षण, यश, स्थान, गुण, सुख-दुःख, प्रकाश, तेज, बल तथा दुर्बलता। **धनभाव से-** वित्त, नेत्र, सुख, विद्या, वचन, कुटुम्ब और भोजन। **तृतीय भाव से-** ज्येष्ठ तथा कनिष्ट भ्राता, पराक्रम, साहस, कण्ठस्वर, कान, आभरण, वस्त्र, धैर्य, वीर्यबल, मूल, फल तथा भोजन। **चतुर्थ भाव से-** विद्या, माता, सुख, सुगन्ध, गौ, बन्धु, मनोगुण, राज्य, यान (सवारी), भूमि तथा गृह का विचार। **पंचम भाव से-** देवता, राजा, पुत्र, पिता, बुद्धि तथा पुण्य का विचार। **षष्ठ भाव से-** रोग, शत्रु, व्यसन तथा चोट, घाव आदि का विचार। **सप्तम भाव से-** सम्पूर्णयात्रा, पुत्र, स्त्री, सुख का विचार तथा जो कुछ पहले पुत्रादि के सुख-असुख के आगमफल कथित है उन सबका भी विचार। **अष्टम भाव से-** आयुर्दाय तथा अनिष्ट के कारणों का विचार। **नवम से-** भाग्य, प्रभाव गुरु, धर्म, तप और सुख का विचार। **दशम से-** आज्ञा, मान, भूषण, वस्त्र, व्यापार, निद्रा, कृषि, प्रवज्या, आगम, कर्म, जीवन, यश, विज्ञान तथा विद्या। **एकादश से-** धन प्राप्ति का विचार। तथा **द्वादश भाव द्वारा-** दूर की यात्रा, दुर्गति, दान, शयनादि सुख, वैभव तथा धन क्षय का विचार करते हैं।।

।। बृहज्जातक के अनुसार जन्मकालिक लग्न एवं चन्द्रमा पर भौमादि ६, ग्रहों के दृष्टि का फल ।।

ल.द.चं.	द्र.मं.	द्र.बु.	द्र.गु.	द्र.शु.	द्र.श.	द्र.सू.
मेष १	भूप	पण्डित	राजातुल्य	गुणाग्रणि	चौर	दरिद्र
वृष २	निर्धन	चौर	सर्वजनमान्य	पृथ्वीपति	धनवान्	नौकर
मिथुन ३	शस्त्रव्यापार	पार्थिव	पण्डित	निर्भय	तंतुवाय	दरिद्र
कर्क ४	युद्धकुशल	काव्यकर्त्ता	पण्डित	भूमिपति	शास्त्रोपजीवी	नेत्ररोगी
सिंह ५	भूपति	ज्योतिर्ज्ञ	धनवान्	भूपति	नापित	भूमिपति
कन्या ६	स्त्रीवृत्तिक	भूपति	सेनापति	निपुण	स्त्रीवृत्तिक	स्त्रीवृतिक
तुला ७	निकृत	भूपति	सुवर्णकार	वणिक	पक्षिघातक	प्राणिघातक
वृश्चिक ८	भूपति	युग्मजनक	नतःसह	रजक	अंगहीन	दरिद्र
धनु ९	शठ	बन्धुश्रेष्ठ	पृथ्वीश	जनाश्रय	पाखण्डी	दम्भी
मकर १०	भूपति	राजाधिरा.	नरेन्द्र	पण्डित	वित्तवान्	दरिद्र
कुम्भ ११	परस्त्रीरत	भूपति	राज्यतुल्य	परस्त्रीरत	परस्त्रीरत	परस्त्रीरत
मीन १२	पापयुक्त	हास्यदक्ष	अवनीश	पण्डित	पापरत	पापकर्मी

प्रश्न समय द्वारा नष्ट वस्तु के लाभालाभ विचार- प्रश्न लग्न से केन्द्र या उपचय में शुभग्रह स्थित हों तो वित्तलाभ एवं पापग्रह स्थित हों तो हानि होती है। यदि शुभग्रहों में से एक भी लग्नस्थ हो तो लाभ, चन्द्र जिस स्थान में स्थित हो वह यदि अपने स्वामी से दृष्ट हो तो लाभ, लग्नेश के सप्तम एवं सप्तमेश के लग्न में स्थित होने से लाभ, लग्नेश एवं सप्तमेश सप्तम में इत्थशाल कर रहे हों तो राज्यलाभ, दानों यदि लग्नस्थ होकर इत्यशाली हों तो चोर आकर अपहृत धन लौटाता है। सूर्य लग्न एवं चन्द्र सप्तम में हो तो लाभ नहीं, कर्मेश एवं लग्नेश का इत्थशाल होने पर चोर भाग जाते हैं। सपतमेश केन्द्रस्थ हो तो चोर अन्यत्र गया, परन्तु भाग्येश के साथ इत्थशाली हो तो नहीं गया जाने, लग्नेश एवं सप्तमेश के परस्पर तथा लग्न पर दृष्ट्याभाव एवं लग्न के निर्बल होने पर चोर राजा को धन समर्पित कर देता है। सप्तमेश एवं दशमेश के इत्थशाल होने पर राज्य में बन्धन का भय, तथा लग्नेश एवं दशमेश के इत्थशाल से स्वल्प लाभ, लग्न एवं चन्द्रमा के शुभ योग एवं दृष्टि से लाभ तथा धर्मेश एवं अष्टमेश के इत्थशाल में भी लाभ होता है।

दिशा ज्ञान- चन्द्रमा यदि लग्न में हो तो पूर्व, दशम में हों तो दक्षिण, सप्तम में हों तो पश्चिम एवं चतुर्थ में हों तो उत्तर दिशा में चोरी हुआ धन होता है।

सर्वघात चक्र। (रोग, कष्ट, गमन एवं युद्ध में शुभ नहीं होता)

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
सू.घा.	४	८	१२	७	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं.घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं.घा.	५	९	१	६	१०	२	७	१	८	१२	३	४
बु.घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
गु.घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु.घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श.घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा.घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के.घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा.घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
ति.घा.	१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५
वा.घा.	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.
न.घा.	मं.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.
यो.घा.	वि.	शू.	प.	धृ.	प्र.	शु.	शु.	ब्र.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल.घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
ग्र.घा.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.
धा.घा.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.
व.घा.	क्ष.	वे.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि
सं.घा.	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
सं.घा.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
सं.घा.	च.	स्थि	द्वि.	च	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.
व.घा.	रक्त	श्वे	हरि	पा.	धूम्र	चि.	कृ.	लक	पी.	कृ.	धू.	श्वे.
स्त्री.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
चं.घा.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

वर्षा ज्ञानार्थ सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र- अश्विन्यादि नक्षत्रों के द्वारा त्रिनाड़ी सर्प चक्र लिखना चाहिए। इस चक्र में स्वर्ग, पाताल एवं भूमि के नव-नव नक्षत्र होते हैं। फल- समस्त शुभ एवं क्रूर ग्रह यदि एक नाड़ी में स्थित हों तो शीघ्र ही अधिक जल देने वाली वृष्टि होती है। यदि क्रूर ग्रह स्वर्ग तथा शुभ ग्रह पाताल नाड़ी के नक्षत्रों में स्थित हों तो वृष्टिजल समुद्र में चला जाता है। नपुंसक एवं स्त्रीग्रहों के योग से वायु तथा पुरुष एवं स्त्री संयोग हो एवं ग्रह निर्बल हों तो वृष्टि होती है, नपुंसक एवं स्त्री योग से जल तथा क्लीब एवं पुरुष योग से वायु से भय होता है। वातनाड़ी के आदि गत ग्रह नाड़ी से उत्पन्न फल करते हैं। एक भी ग्रह शुभ नाड़ी में स्थित हों तो उस नाड़ी जन्य शुभ फल को देता है। मंगल सभी नाड़ियों में उनके फलों को देता है। बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु यदि एक नाड़ी में स्थित हों तो निश्चित ही उस काल में वृष्टि होती है। लग्नस्थ मंगल एवं गुरु से चल वृष्टि, शुक्र से सामान्य वृष्टि तथा शनि से तीनों प्रकार की वृष्टि होती है।।

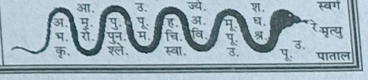

।। पुरुष की जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

भाव	तनु १	धन २	भ्राता३	सुख ४	पुत्र५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	शूर, निरोगी	वक्ता,रोगी,धनी	सुखी, विक्रमी	दुःखी, व्याकुल	निर्धन, असुत	बलवान,शत्रुजित	स्त्रीजित, खल	नेत्ररोगी,अल्पायु	सुतार्थ,सुखभाक्	सुखशौर्यभाक्	बहुधनवान्	विकलांग,पतित
चन्द्र	सुरूप, अन्य	कुटुम्बी, धनी	हिंसक,सात्विक	समुखी, सुशील	धनी, पुत्रवान	अल्पायु,बहुशत्रु	ईर्ष्यु,स्त्रीमदं	व्याधिग्रस्त, सुखी	सौभाग्य,धनी	धर्मार्थ शौर्ययुक्त	प्रसिद्ध, सलाभ	अङ्गहीन, हिंस
भौम	क्रूर, व्रणी	कोपी, कुटिल	विक्रमी, सुखी	दुःखी, पीडित	असुत, दरिद्र	अरिजित, सुखी	दारजित्,युद्धप्रिय	अल्पपुत्र, रोगी	पापरत, दुर्मनोरथ	सुखशौर्यवान्	बहुधनी, सुखी	जातिभ्रष्ट, दारहा
बुध	विद्वान्, सुखी	धनी, गुणी	दुर्जन,शत्रुनाशक	पंडित, सुखी	मंत्री, असुत	अशत्रु, विशील	धर्मज्ञ, सुकीर्ति	सद्गुणी, धनी	पुत्रार्थसुखभाक्	सुखी, पराक्रमी	यशस्वी, धनी	अज्ञ, पतित
गुरु	चिरायु, विद्वान्	सुवाक्, धनी	कृपण, पापी	सुखी, धनी	बुद्धिमान्, प्रतापी	अशत्रु, कामी	पिता से श्रेष्ठ	नीच, अनायु	तपस्वी, पुत्रवान्	सधन, सुकृत	सलाभ, पुत्राप्ति	खल, दरिद्र
शुक्र	सकामी, सुखी	धनी, सुवाक्य	पापी, कृपण	सुखी, सुधी	सुखी, बुद्धिमान्	रोगी, अशत्रु	कलहप्रिय	नीच, दीर्घायु	प्रतापी, तपस्वी	सुधनी, मानवान्	सुमति, सलाभ	खल, बंधुनाशक
शनि	निर्धन, रोगी	वक्ता,रोगी,धनी	मति, विक्रमवान्	विसुख, दुःखी	दरिद्र, विपुत्र	शत्रुजित, सुखी	स्त्रीजित, दुःखी	नेत्ररोगी,अल्पपुत्र	सुतार्थ, सुखभाक्	सुखी, पराक्रमी	प्रभूत, धनवान्	दुःखी, पतित
राहु	सुकामी, रोगी	अधर्मी, विरोधी	सुधी, विक्रमी	असुखी,मातृहन्ता	कुमति,दुर्भग	सबल, श्रीयुत	सप्रेमह, अपवित्र	रोगी, गतायु	विकल, दैन्ययुक्त	मानी, सुखी	धनी,अपुत्र,ख्यात	कष्ट, पतित
केतु	अल्पायु, सकाम	खल, धनहानि	शूर, पराक्रमी	मातृहन्ता,दुःखी	असुत, मूर्ख	धनी, सबीर्य	प्रमेहरोगी,क्षीणता	क्लेशयुक्त, व्रणी	पापी, दुर्भग	श्रेष्ठ, पितृहानि	सधन	दुर्जन, पतित
गुलिक	रोगार्त, मन्दबुद्धि	क्रोधी, विषयी	विचेदर, सुखी	रोगी, पापकृत	स्वल्पपुत्र,अनायु	रिपुहन्ता,विनोदी	कुदार,कृतघ्न	निर्धन, दुःखार्त्त	पापकृत, निर्दयी	सुखी, विमानी	सौभाग्यवान,विपुत्र	हीनाङ्ग,नीचरत

।। स्त्रीयों की कुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

श्री	तनु १	धन २	भ्राता३	सुख ४	पुत्र५	शत्रु ६	पति ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	विधवा,सक्रोधा	दरिद्रा,दुःखार्त्ता	सुतधनान्विता	दरिद्रा, सुखेड़ा	नष्टात्मजा	सुखधनाढ्या	सर्वसुखविमुक्ता	विधवा,दुःखार्त्ता	धनधर्मान्विता	सुकर्मरता	सुलाभा,बहुपुत्रा	सरोगा,विधवा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधनपुत्रान्विता	सुखार्थयुक्ता	सुभगार्थयुक्ता	सुपुत्रा, सुरूपा	सरोगा,विधवा	पतिप्रिया,सुदेहा	रोगार्दिता,कुनेत्रा	सुखपुत्रान्विता	धनधर्मयुक्ता	भव्या,विधिज्ञा	हीनाङ्गी,व्ययाढ्या
भौम	विधवा,दुःखार्त्ता	वन्ध्या,सरोगा	भ्रातृहीना	दुःखार्त्ता,विधवा	अपुत्रा,कुसंमता	रोगादिरहिता	विधवा,कुलटा	विधर्मा,रोगार्ता	विपर्मा,दुःखिनी	कुकर्मरता,कुपुत्रा	सुलाभा,पतिव्रता	खला,रुगार्ता
बुध	सौभाग्यवती	धनाढ्या,सती	धनवृद्धा,पुत्रवती	सुखगृहान्विता	धीकान्तियुक्ता	गतायुषा,सकोपा	विद्रधा,पतिव्रता	कृतघ्ना,भीतियुक्ता	सुभोगा,सुधर्मा	सत्कर्मबुद्धियुता	सुलाभा,पतिव्रता	कृशाङ्गी,सुपुत्रा
गुरु	सती, सुभगा	वित्तसौभाग्युता	सहजान्विता	सौख्यार्थयुक्ता	साध्वी, सगुणा	बहापदासत्यहन्त्री	सौभाग्यकीर्तियुक्ता	सरोगा,विशीला	कृतज्ञा,पुत्राढ्या	साध्वी,सुभगा	सुपुत्रा,सुरूपा	सरजा,सुव्यया
शुक्र	सुसुखा,पतिव्रता	सधनामुदान्विता	धनाढ्या,प्रहंत्री	सतसुखाकीर्तियुक्ता	सुखसुतान्विता	विसुखा,दरिद्रा	पतिप्रियाशास्त्ररत	विसुखा,प्रमत्ता	धर्मपरा,सुभगा	सुकर्मार्थयुक्ता	पुत्रार्थ,लाभयुता	सुव्यया,दुःखार्त्ता
शनि	वन्ध्या, दरिद्रा	निर्धना,दुःखार्त्ता	सुभगा, सुदक्षा	हृद्रोगार्त, वन्ध्या	विपुत्रा,विसुखा	सगुण, सुभगा	विधवा,सरोगा	विधवा,दुःखार्त्ता	वन्ध्या,शोकार्ता	पापरता,सधना	सुलाभा,विपुत्रा	रोगार्ता,मूढा
राहु केतु	पुत्रनाश,दुःखार्त्ता	दरिद्रा,दुःखार्त्ता	सवित्ता, रोगाढ्या	रोगार्ता,मातृहन्ता	सुतार्थरहिता	निरोगार्थयुक्ता	सदुःखा,विधवा	सदुःखा,विधवा	वन्ध्या,शोकार्ता	कुकर्मरता	निरोगी,सुभगा	खला,सरोगी

।। बृहज्जातक के अनुसार जन्मकाल में स्वगृहादि स्थित ग्रहों के फल ।।

ग्र.सं.	१	२	३	४	५	६	७	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्यादिग्रह
स्वराशि	कुलसम	कुलमुख्य	बन्धुपूज्य	धनी	सुखान्वित	भोगी	नृपति	३।१०	३।१०	७	३।१०	४।८	३।१०	५।९	एकपाददृष्टि
स्वमित्रराशि	परविभवपोष्य	सुहृदपोष्य	स्वज्ञातिपोष्य	बन्धुपोष्य	गणस्वामी	सेनापति	भूमिपति	५।९	५।९	३।१०	५।९	७	५।९	४।८	द्विपाददृष्टि
स्वशत्रु एवं नीचराशि	धनरहित	दुखान्वित	मूढ़	व्याधिपीड़ित	बन्धनतप्त	बहुदुःखाढ्य	बहुदुःखाढ्य	४।८	४।८	५।९	४।८	३।१०	४।८	७	त्रिपाददृष्टि
स्वउच्चराशि	सुखिन	धनी,सामन्त	सामन्त,भूपति	भूपाल	लोकेश्वर	राजाधिराज	राजाधिराज	७	७	४।८	८	५।९	७	३।१०	सम्पूर्णदृष्टि

।। ग्रहों का अन्तर्दशा काल।।

सूर्यदशावर्ष ६ कृ.,उ.फा.,उ.षा. अन्तर्दशा १८				चन्द्रदशावर्ष १० रोहि.,हस्त,श्रवण अन्तर्दशा ३०				भौमदशावर्ष ७ मृ.,चित्रा,ध. अन्तर्दशा २१			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	वृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	वृ.	१	४	०	श.	१	१	९
वृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८ आर्द्रा,स्वा.,शत. अन्तर्दशा ५४				गुरुदशावर्ष १६ पुन.,वि.,पू.भा. अन्तर्दशा ४८				शनिदशावर्ष १९ पुष्य,अनु.,उ.भा. अन्तर्दशा ५७			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	वृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
वृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	वृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७ श्ले.,ज्ये.,रेवती अन्तर्दशा ५१				केतुदशावर्ष ७ मघा.,मू.,अश्वि. अन्तर्दशा २१				शुक्रदशावर्ष २० पू.फा.,पू.षा.,भर. अन्तर्दशा ६०			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	वृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	वृ.	०	११	६	श.	३	२	०
वृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

छिपकली पतन में प्रशस्त तिथि,वार,नक्षत्र

शुभवार	चं.बु.गु.शु.
तिथियाँ	१ २ ३ ५ ६ १० ११ १२
शुभ नक्षत्र	पुष्य अश्विरो.मृ.उ.फा.पुन.हस्त स्वा. अनु. ध.रे. श. एषु शुभः।

पुरुषों के समस्त दक्षिण तथा स्त्रियों के वाम भागों में छिपकली पतन शुभ होता है। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग भद्रा, दग्धादियोग से दूषित दिन, लग्न में पाप ग्रहों की स्थिति तथा चन्द्रमा के अष्टमस्थ होने पर अशुभ फल होता है।

स्वप्न विचार- स्वप्न दो प्रकार के होते हैं। १. इष्ट फल, २. अनिष्ट फल- नदी एवं समुद्रतरण, आकाशगमन, ग्रह, नक्षत्र, सूर्य एवं चन्द्रमण्डल का दर्शन, अट्टालिका आरोहण, प्रसाद, मदिरापान, वसा एवं मांसभक्षण, कृमि एवं विष्ठालेपन, रूधिर से सिंचन, दधि-भात का भोजन, श्वेतवस्त्र धारण, रस, आभूषण आदि का स्वप्न में दर्शन प्रसन्नता दायक होता है। देवता, ब्राह्मण, राजा, अन्नप्राशन, कन्या, बैल, हाथी, पर्वत, दूध, फल, वृक्षारोपण एवं दर्पण, श्वेतपुष्प एवं वस्त्र के स्वप्न दर्शन से अर्थलाभ तथा व्याधियों से मुक्ति मिलती है।

।। सामान्यतया दशान्र्दशादि फल के लिए सूत्र।।

ग्रह अपने भाव, राशि एवं दृष्टि जनित फलों को अपनी दशा एवं अन्तर्दशा में देता है।१। बलवान तथा परम उच्चस्थ ग्रह की दशा सम्पूर्णा तथा धन एवं आरोग्यता को बढ़ाने वाली तथा निर्बल एवं नीचगत ग्रहों की दशा अनिष्टकारक धन एवं आरोग्यता की नाशक होती है। किञ्चिद् बलवान होकर उच्चगत ग्रह की दशा पूर्णा एवं धनदात्री होती है। परमनीच, नीचांश, या शत्रु नवमांश गत ग्रहों की दशा अनिष्टा एवं धन तथा आरोग्यनाशिनी होती है। नीच से विगत सुप्त ग्रह की अवरोहिणी दशा कष्ट देने वाली परन्तु मित्र एवं उच्च राशिगत होने पर मध्यम होती है। उच्च की ओर अग्रसर ग्रह की दशा शुभ परन्तु नीच एवं शत्रुराशि नवमांश गत ग्रह होने पर अल्प शुभ होती है। उच्च एवं मित्र राशिगत होने पर भी शत्रु एवं नीच नवमांशगत ग्रहों की दशा पूर्वार्द्ध में शुभ तथा परार्ध में मिश्रित फलों को देती है। मित्र, उच्च, मूल त्रिकोण स्ववर्ग एवं वर्गोत्तम नवमांश गत ग्रहों की दशा शुभ तथा अस्त-शत्रु एवं नीच राशि नवमांशगत ग्रहों की दशा अशुभ होती है। अवरोहीणी ग्रह अधम हो तो उसकी दशा कष्ट देने वाली तथा मध्यम हो तो सम्पूर्ण फल देने वाली होती है। शुभ दृष्ट-युत केन्द्र तथा त्रिकोणस्थ ग्रह की दशा शुभ अन्यथा अशुभ होती है। चर राशि का लग्न हो तो द्रेष्टकोण क्रम से श्रेष्ठ, मध्यम, अधम, द्विस्वभाव हो तो अधम, मध्य, श्रेष्ठ तथा स्थिर में नेष्ट होती है। वक्री ग्रह की दशा में स्थान, मान एवं सुख आदि का क्षय होता है। ८,६,१२ से अतिरिक्त स्थानगत ग्रहों की दशा अभीष्ट फल देने वाली, भाग्येश के शत्रु ग्रह की दशा मतिमन्दता तथा राजभय कारक, राहुयुत ग्रह की दशा अरिष्टकारक, अष्टमेश एवं षष्ठेश की दशा अतिपीड़ा कारक, परस्पर पाप ग्रहों की दशान्तर्दशा शत्रुता, धन हानि एवं महाभयकारक, इष्टाधिक ग्रह की श्रेष्ठ, कष्टाधिक की नेष्ट एवं सम की मध्यम, लग्नेश की बल एवं धनदात्री, धनेश की कष्ट एवं धनदात्री, तृतीयेश की अनिष्ट देने वाली, सुखेश की गृहादि सुखों की दात्री, पंचमेश की धनदात्री, षष्ठेश की शत्रुभय कारक, सप्तमेश की शोकदात्री, अष्टमेश की मृत्युदात्री, भाग्येश की धर्माचरणदात्री, दशमेश की राज्य एवं अर्थदात्री, लाभेश की लाभ एवं व्ययेश की अर्थ हानि तथा कष्ट देने वाली होती है। अन्योन्य षष्टाष्टम गत ग्रहों की दशान्र्दशा महाभयदात्री, पापग्रहों की दशा स्थानच्युति एवं हानिकारक होती है। पापग्रह की दशा में शुभ की अन्तर्दशा प्रारम्भ में कष्ट बाद में सुख तथा शुभ की दशान्तर्दशा सुख एवं शुभ की दशा में पाप की अन्तर्दशा प्रारम्भ में सुख तथा अनन्तर भय देने वाली होती है।

।। यात्रा में शुभाशुभ ज्ञान के लिए चक्र ।।

अश्विनी	पुनर्वसु	अनुराधा	मृगशिर	पुष्य	रेवती	हस्त	श्रवण	धनिष्ठा	इन नक्षत्रों में शुभ
रोहिणी	उत्तरा ३		पूर्वा ३		मूल	शतभिष		ज्येष्ठा	इनमें मध्य
भरणी	कृतिका	आर्द्रा	अश्लेषा	मघा	चित्रा	स्वाती		विशाखा	इनमें निन्दा
श्रवण	हस्त	मृगशिर	पुनर्वसु	पुष्य	अश्विनी	अनुराधा	रिक्ता एवं दिक्शूल छोड़ इन नक्षत्रों में सर्वदा सभी दिशाओं की यात्रा		
पू.३	कृतिका	मघा	भरणी	स्वाती	ज्येष्ठा	विशाखा	श्लेषा	चित्रा	अति आवश्यक होने पर
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	३०	यात्रा में त्याज्य घटी

अत्यावश्यक होने पर दिक्शूल दोष निवारणार्थ वार क्रम से वस्तु नाम।

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
घी	पय	गुड़	तिलान्न	दधि	यावान्न	माषान्न	धारण
ताम्बूल	चन्दन	मिट्टी	पुष्प	दधि	घी	तिल	भक्षण

अथवा दोष शान्ति हेतु दान करना चाहिए।

।। यात्रा में वार दोहद ज्ञानार्थ चक्र ।।

रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रसाल	पायस	कांजी	पक्वदूध	दधि	पयोधि	तिल

।। दोहद में भक्ष्याभक्ष्य विचार।।

ऊपर कथित दोहद का शास्त्रोक्त भक्ष्याभक्ष्य विचार कर ही भक्षण करना चाहिए। अभक्ष्य होने पर दोहद का दर्शन कर तथा अप्राप्य होने पर उसका ध्यान कर यात्रा आरम्भ करनी चाहिए।

।। दिग् लग्न।।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।१०।६	३।७।११	४।८।१२	शुभ
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्य
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	नेष्ट
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	नेष्ट

।। चन्द्रवास।।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

समय शूल चक्र

यात्रा में सम्मुख चन्द्रमा लाभप्रद, दक्षिण भाग में सुख-सम्पत्ति कारक, पृष्ठभाग में मरणप्रद तथा वाम भाग में धननाशक होता है। चन्द्रमा को सम्मुख कर यात्रा करने से समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं।

।। पूर्वादौ लालाटिका।।

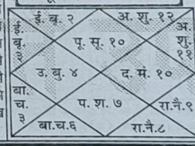

अथ समय शूल चक्र।

पूर्व में	प्रातःकाल
दक्षिण में	मध्याह्न
पश्चिम में	संध्या
उत्तर में	अर्धरात्री

उत्सव के आदि एवं समाप्ति के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए- प्रतिष्ठोद्वाहमुत्साहं व्रतं चौलश्च सूतकम्। असमाप्य न गन्तव्यमार्तवं योषितामपि।।

यात्रा में शकुनादि का प्राशस्त्य- यात्रायां शकुनं जीव ऊषो गर्गः प्रशंसति। अङ्गिरा मनोत्साहं विष्णुर्वाचं द्विजन्मनाम्।।

यात्रा में चित्त के उत्साहादि का प्राशस्त्य- प्रसादश्चेतसः श्रेष्ठैर्निमित्तैः शकुनैः शुभैः। प्राप्तलग्नबलं राज्ञो गच्छतो विजयो ध्रुवम्।। चेतोविशुद्धिः प्रबला निमित्ताच्छकुनादिभिः। सत्यामस्यामतो यापानैव यायात्तु तां विना।।

आवश्यक तीर्थ यात्रा में दोष नहीं लगता- अर्धोदयोपरागादौ पुण्ययोगे सुदुर्लभे। तीर्थार्थि च सुखं यायात् कालेऽप्यस्तादिकेष्वपि।।

यात्रा समाप्ति पर गृह प्रवेश विचार- यात्रा से निवृत होकर षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी एवं रिक्ता तिथियों, चित्रा उ.३, रोहिणी, मृग, रेवती, अनुराधा नक्षत्रों तथा शनि, बुध, शुक्र एवं गुरु वारों में गृहप्रवेश शुभकर होता है। लग्नशुद्धि- ४,८ के शुद्ध १,४,७,१०,५,९ में शुभग्रह तथा ३,६,११ में पापग्रहों के रहने पर स्थिरलग्नों में प्रवेश शुभ होता है। १ योजन से कम दूरी की यात्रा लघु, २५ योजन तक मध्यम तथा उससे अधिक की दीर्घ संज्ञक होती है।

यात्रा समय विचार- जन्मेश एवं जन्मदशेश के अस्त होने पर यात्रा नहीं करनी चाहिए। प्रथम तीर्थयात्रा में गुरु-शुक्र का बालत्व, बृद्धत्व, अस्तकाल तथा सिंहस्थ एवं नीचराशिगत शुरु का त्याग कर देना चाहिए।

यात्रा में लग्नशुद्धि- जन्मलग्न एवं जन्मराशि से अष्टमराशि, कुम्भलग्न तथा नवमांश, मीन एवं पृष्ठोदयी राशियां त्याज्य है। लग्न से १,४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह ३,६,११ में पापग्रहों के रहने पर शुभ है। दशमस्थ शनि तथा सप्तमस्थ शुक्र नेष्ट होते हैं। लग्न से १,६,७,८ स्थानों चन्द्रमातथा ६,७,८,१२ में लग्नेश शुभ होता है। अष्टमभवन शुद्ध रहने पर शुभ है।

कुलगण- पूर्वा३, अश्विन, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, ज्येष्ठा, चित्रा, विशाखा, मंगल, शुक्रवार। ४,८,१२, १४ तिथियाँ, इसमें स्थायी का विजय होता है।

अकुलगण- भरणी, पुर्नवसु, अश्लेषा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रोहिणी, उत्तरा३, धनिष्ठा, रेवती नक्षत्र, विषम तिथियाँ तथा सूर्य, चन्द्र, गुरु, शनि वार। इसमें यायी का जय होता है।

कुलाकुलगण- आर्द्रा, मूल, अभिजित शतभिष २।६।१० तिथियाँ। बुधवार। इसमें सन्धि हो जाती है।

पुष्य प्रशंसा- पापग्रहों से युत-विद्ध अथवा तारा एवं चन्द्रबल से हीन रहने पर भी पुष्य नक्षत्र में समस्त मंगलकार्य सिद्ध होते हैं। पापग्रह से विद्ध- युत या वियोग गतिक होने पर भी पुष्य नक्षत्र विवाह को छोड़कर अन्य समस्त मंगलकार्यो की सिद्धि दिलाता है। "क्रूरैर्विद्धोयुतो वापि पुष्यो यदि बलान्वितः। विना पाणिग्रहं सर्वमङ्गलेष्विष्टदः सदा।" जिस प्रकार मृग समूह में सिंह बलवान होता है, उसी प्रकार नक्षत्र समूह में पुष्य नक्षत्र भी बलवान होने पर अन्य दोषों को नष्ट कर देता है।

द्वादशस्थचन्द्रकाशुभत्व- आधान सम्प्रदान, विवाह, राजविग्रह, पाणिग्रहण प्रयाण (यात्रा) में द्वादशस्थ चन्द्रमा शुभ होता है। अन्य आचार्य- अभिषेक, निषेक, गृह, पुंसवनादि संसकार, यात्रा, युद्ध तथा विवाह में द्वादशस्थ चन्द्रमा शुभ होता है। उदित, स्वगृही, मित्रगृही तथा मित्रवर्ग स्थित, मित्रदृष्ट ग्रह बलवान होता है।

- यात्रा में प्रस्थान स्थापन काल- राजा को दश, सामन्त को सात तथा सामान्य जनों को पाँच दिन पूर्व प्रस्थान स्थापन करना चाहिए।

दिशा भेद में प्रस्थान स्थापन काल- पूर्व दिशा की यात्रा में सात, दक्षिण में पाँच दिन, पश्चिम में तीन तथा उत्तर की यात्रा में दो दिन पूर्व प्रस्थान रखना चाहिए।

प्रस्थान की वस्तु- ब्राह्मणादि वर्ण के जनों को क्रमशः यज्ञोपवीत, शस्त्र तथा फल का प्रस्थान रखना वृद्धि कारक होता है।

पथिक राहु चक्र द्वारा शुभाशुभ फल ज्ञान- पथिक राहु चक्र में सूर्य, धर्म, मार्ग एवं चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष मार्ग में हो तो यात्रा शुभ होती है। अथवा सूर्य, अर्थ, मार्ग एवं चन्द्रमा धर्म या मोक्ष मार्ग गत हो तो भी यात्रा शुभ होती है। अथवा काम मार्गगामी सूर्य, धर्म या मोक्ष मार्गगामी चन्द्रमा से भी यात्रा शुभ होती है। अथवा मोक्षमार्ग गत सूर्य तथा धर्म मार्गगत चन्द्र हो तो भी यात्रा प्रशस्त होती है। इसके विपरीत सूर्य एवं चन्द्र की स्थितियों की यात्रा शुभ नहीं होती है।

दिशा एवं विदिशा सहित वार शूल ज्ञानार्थ चक्र

यात्रा काल में चन्द्रमा यदि प्रथम, द्वितीयादि द्वादश स्थानों में स्थित हो तो क्रमशः लक्ष्मी, धन-धान्य, राजसम्मान, कलह, ज्ञानवृद्धि, उत्तमसम्पत्ति, सुख, कष्ट, भाग्यवर्धक, सुख-सम्पत्ति, सर्वलाभ तथा शुभता को देने वाला होता है। आवश्यकता पड़ने पर चन्द्र के अशुभता की स्थिति में भी यथाशक्ति, दधि, चावल, चाँदी तथा मोती दान कर यात्रा की जा सकती है।

वारों के दिक्शूल ज्ञानार्थ चक्र

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा८
चं.श.	चं. बृ.	गुरु	सू. शु.	सू. शु.	भौम	मं. बु.	बु. श.	वार

नक्षत्र शूल चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्ये.	पू.भा.	रोहिणी	उ.फा.	नक्षत्र

यात्रा के दिशा क्रम से वाहन चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
गज	रथ	अश्व	शिविका	वाहन

।। वारक्रम से कालचक्र ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा८
शनि	शुक्र	गुरु	बुध	भौम	चन्द्र	सूर्य	०	वार

।। वारक्रम से पाशचक्र ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा८
भौम	चन्द्र	सूर्य	०	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	वार

।। यात्रा में दिशादोष निवारक वस्तु ज्ञानार्थ चक्र ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक् ८
घी	चावल	तिल	सत्तू	मछली	गेहूँ	दुध	खीर	वस्तु

परिघदण्ड चक्र

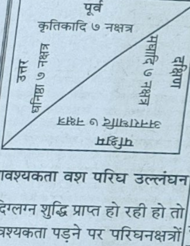

आवश्यकता वश परिघ उल्लंघन दिग्लग्न शुद्धि प्राप्त हो रही हो तो आवश्यकता पड़ने पर परिघनक्षत्रों का उलंघन करके भी यात्रा हो सकती है।

यात्रा में तिथि जनित दोष निवारक वस्तु ज्ञानार्थ चक्र

तिथि	१	२	३	४	५	६	७
वस्तु	अर्क पत्र	तंडुलोदक	घी	हल्वा	हविष्य	स्वर्णजल	पूआ
तिथि	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वस्तु	बीजपूरकफल	जल	गोमूत्र	यव	पायस	गुड़	रक्त	मुँग

।। योगिनी वास चक्र।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

एक दिन में भी आवश्यकतावश योगिनी भोग बोधक चक्र

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०	घटी
४२	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल
३३	३७	४१	४५	४८	५२	५६	६०	घटी
५५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल

योगिनी फल

द्युतक्रिया, गमन एवं युद्ध में सम्मुख योगिनी मृत्युकारक तथा वाम भागों में अशुभ तथा पृष्ठ एवं दक्षिण में जय प्रदान करने वाली होती है।

।। यात्रा में छिक्काफल ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य
अशुभ	दुःख	अनिष्ट	शुभ	सुभोज्य	धनाप्ति	कलह	शुभ	भय

।। पथिक राहु चक्र ।।

अश्विनी	पुष्य	श्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शतभिष	धर्मनक्षत्र
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू.भा.	अर्थनक्षत्र
कृतिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.	कामनक्षत्र
रोहिणी	मृगशिर	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षनक्षत्र

यात्रा में दिन-रात मान के अष्टमांश से वेला का फल

घं.	सू.दि.	सू.रा.	चं.दि.	चं.रा.	भौ.दि.	भौ.रा.	बु.दि.	बु.रा.	बृ.दि.	बृ.रा.	शु.दि.	शु.रा.	श.दि.	श.रा.
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	रोग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ
४	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	उद्वेग	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग
४	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	चर	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग
४	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	लाभ	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर
४	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	अमृत	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ
४	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	काल	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	शुभ	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	रोग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ

यात्रा में विशेष विचार- यात्रा में दक्षिण राहु, वायें योगिनी, पीछे ये दानों तथा सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है। **उत्सवादि में गमनागमन विचार-** आरम्भ होने के बाद विवाह, यज्ञोपवीत, देवप्रतिष्ठा, महोत्सव तथा मरणा शौच की समाप्ति के विना यात्रा नहीं करनी चाहिए। **अभिजित मुहूर्त का प्राशस्त्य-** पञ्चाङ्ग शुद्धि नहीं रहने पर भी अभिजित् मुहूर्त्त का काल अभीष्ट फल को देने वाला होता है। **गर्गादि ऋषियों के मत से प्रयाण मुहूर्त विचार-** यात्रा में उषा काल को गर्ग, शकुन को बृहस्पति, मन के उत्साह को अंगिरा तथा ब्राह्मण की आज्ञा को जनार्दन प्रशस्त मानते हैं। **घात चन्द्र दोष-** यात्रा, युद्ध कृषिकार्य, व्यापार संग्रह, वाद-विवाद, तथा गृहारम्भ में घात चन्द्रमा का त्याग कर देना चाहिए। **विजययोग-** युद्ध सम्बन्धि यात्रा काल में गुरु एवं चन्द्रमा लग्न में तथा मंगल एवं शनि षष्ठ स्थान में गये हो तो जय प्राप्त होता है। उसी प्रकार लाभ स्थान में बुध, शुक्र एवं बृहस्पति तथा दशम स्थान में सूर्य स्थित हो तो अभीष्ट सिद्धि होती है।

सूर्यनक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र पर्यन्त गणना से प्राप्त तड़ाग चक्र

पूर्व में	२	वारिशेष
अग्नि में	३	बहुजल
दक्षिण में	२	जलनाश
नैऋत्य में	२	अमृतजल
पश्चिम में	३	स्वादुजल
वायव्य में	२	जलशेष
उत्तर में	३	स्थिरजल
ईशान में	२	नष्टजल
मध्य में	५	पूर्णजल
वायव्य में	३	अमृतजल

रोहिणी से गणना द्वारा वापी चक्र

कोष्ठ में	४	शुभ
नाभी में	४	बुद्धिनाश
हृदय में	४	स्थिरता
मध्य में	४	कलह
नेत्र में	४	धनप्राप्ति
पैर में	४	अनर्थ

ग्राम नक्षत्र से वासकर्त्ता के नक्षत्र पर्यन्त गणना से प्राप्त ग्रामवास चक्र

मस्तक	७	धनमान,लाभ
पृष्ठ	७	हानि,निर्धनता
हृदय	७	सुख,लाभ
पाद	७	पर्यटन

सूर्य नक्षत्र से चुल्ही चक्र

पृष्ठ	६	लक्ष्मीलाभ
शीर्ष	४	मृत्युभय
बाहु	८	सुख
गर्भ	५	विनाश
हस्त	२	सुभुक्ति
पाद	२	पत्नी की मृत्यु

सूर्यनक्षत्र से हलचक्र

३	अशुभ	३	अशुभ
३	शुभ	५	शुभ
३	अशुभ	३	अशुभ
५	शुभ	३	शुभ

सूर्य के भुक्त नक्षत्र से हलचक्र

२	हानि अशुभ
८	समृद्धि
९	कर्त्ता का नाश
८	द्रव्यलाभ

सूर्यनक्षत्र से द्वारशाखा चक्र

स्थान	न.	फल
शिर में	४	श्रीप्राप्ति
कोण में	८	उद्वास
शाखा	८	सुख
देहली में	३	गृहपतिनाश
मध्य में	४	सुख

सूर्य नक्षत्र से अभिजित सहित गणना से प्राप्त गृहारम्भ में प्रयुक्त वत्स चक्र

स्थान	न.	फल
शीर्ष	३	अग्निभय
अग्रपाद	४	शून्यता
पृष्ठपाद	४	स्थिरता
पृष्ठ	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द.कुक्ष	४	लाभ
पुच्छ	३	स्वामिनाश
वाकुक्ष	४	दरिद्रता
मुख	३	पीड़ा

गृहप्रवेश में प्रयुक्त कुम्भ चक्र सूर्य नक्षत्र से गणना

स्थान	न.	फल
मुख	१	अग्निदाह
पूर्व	४	उद्वसन
दक्षिण	४	लाभ
पश्चिम	४	लक्ष्मीप्राप्ति
उत्तर	४	कलह
गर्भ	४	विनाश
नीचे	३	स्थिरताशुभ
कण्ठ	३	स्थिर, शुभ

रोहिणी नक्षत्र से कूप चक्र

स्थान	न.	फल
मध्य में	३	शीघ्रस्वाद
पूर्व में	३	निर्जल
अग्नि में	३	आशुजल
दक्षिण में	३	निर्जल
नैऋत्य में	३	अमृतजल
पश्चिम में	३	निर्मलजल
वायव्य में	३	जलहानि
उत्तर में	३	मधुरजल
ईशान में	३	क्षारजल

कूप चक्र सूर्य नक्षत्र से

स्थान	न.	फल
मध्य	३	स्वादिष्टजल
पूर्व	३	खण्डितजल
अग्नि	३	स्वादिष्टजल
दक्षिण	३	जलहानि
नैऋत्य	३	स्वादिष्टजल
पश्चिम	३	क्षारजल
वायव्य	३	मिश्रितजल
उत्तर	३	मिष्टजल
ईशान	३	क्षारजल

द्वार चक्र सूर्य नक्षत्र से

४	राज्यलाभ	२	मृत्यु
२	हानि	४	द्रव्यप्राप्ति
४	धनप्राप्ति	२	शोकभय
२	भय	३	धनलाभ
४	मृत्युभय	३	धनलाभ

इष्ट नक्षत्र कल्पना तथा इससे गणना विचार

आर्द्रा,पुन.पुष्य.अश्ले.मघा., पू.फा. श. पू.भा. तथा उ.भा. ये नव गृह के इष्ट नक्षत्र होते हैं। इन नक्षत्रों के द्वारा विवाह मेलापक की तरह राशि, कूट आदि का विचार करना चाहिए। सेव्य-सेवक तथा गृह और स्वामी की परस्पर मैत्री एवं एक नाड़ी प्रशस्त होती है। यहाँ केवल नाड़ी मेलापक में विषमता है। शेष विवाह की तरह ही होता है। एक नाड़ी जन्य दोष यहाँ नहीं लगता।

आयों के नाम तथा उपयोग स्थान

१	२	३	४	५	६	७	८
ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	गर्दभ	हस्ती	काक

वापी कूप, एवं तालाब आदि के निर्माण में गज आय, आसन निर्माण में सिंह तथा शयन निर्माण में काक एवं गज आय शुभ होता है। शलाओं में ध्वज, भोजन अग्निशाला एवं पशुशाला निर्माण में वृष आय, श्वान एवं चाण्डलों के गृह के लिए धूम्र, वेश्या गृह के लिए खर, पक्षिपति के गृह के लिए ध्वांक्ष, नगर एवं मंदिर स्थापन में वृष, सिंह एवं गज आय शुभ होते हैं।

शल्यानयन

अ.	क.	च.	द.	त.	प.	य.	श.	ह.प.य.	वर्णा
पूर्व.	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	दिशा
मनुष्य	ऊँट	मनुष्य	शुभ	बालक	भूसी,राख	विप्रश.	गोश.	नृकपा.	शल्य
१।।	२	२	१।।	१।।	४	२	१	३	हस्ता
मृत्यु	राजभ.	स्वा मृ.	वा.भू.	गृ.वि.	दु.स्व.	दरिद्रता	गो.ना.	कु.ना.	फल

प्रश्न कर्त्ता को देवताओं का स्मरण कर प्रश्न करना चाहिए। प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न के आदि अक्षर के द्वारा शल्याशल्य का विचार करना चाहिए।

देवालय, गृह तथा जलाशय के आरम्भ हेतु राहु मुख ज्ञान- जहाँ राहु का मुख हो उसके विपरीत दिशा में पुच्छ होता है, वही भूमि पूजन हेतु खात खोदना शुभ होता है।

०	ईशानकोण	वायव्य में	नैऋत्य में	आग्नेय में
देवालयारम्भ में	मी.मे.वृ.के. सूर्य में राहु मुख	मि.क.सि.के सूर्य में राहु मुख	क.तु.वृ.के सूर्य में राहु मुख	ध.म.कु.के सूर्य में राहु मुख
जलाशयारम्भ में	मं.कुं.मी. के सूर्य में राहु मुख	मं.वृ.मि. के सूर्य में राहु मुख	क.सि.कं. के सूर्य में राहु मुख	तु.वृ.ध. के सूर्य में राहु मुख
गृहारम्भ में	सिं.क.तु. के सूर्य में राहु मुख	क.ध.म. के सूर्य में राहु मुख	कु.मी.मे. के सूर्य में राहु मुख	वृ.मि.क. के सूर्य में राहु मुख

कश्यप के अनुसार- क्षेत्र, भित्ति शिलान्यास एवं स्तम्भ रोपण सर्वदा आग्नेय कोंण में ही करना चाहिए

चैत्रादि मासों में गृहनिर्माण का फल

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद
शोक	धन-धान्य	मृत्यु	पशुहानि	द्रव्यवृद्धि	नाश
आश्विन	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
युद्ध	भृत्यक्षय	धनलाभ	लक्ष्मीप्राप्ति	अग्निभय	लक्ष्मीप्राप्ति

।। गृहारम्भ मुहूर्त्त विचार ।।

शुभनक्षत्र	उत्तरा३,मृग,पुष्य,अनु.ध.श्रव.चि.ह.स्वा.रो.रे. (चक्रशुद्ध)
शुभमास	वै.श्रा.मार्ग.फा., तथा मे.क.सिं.वृ.,म.,कुम्भ के सूर्य में श्रेष्ठ होता है।
वारा	चं.बु.बृ.शु. एवं शनिवार शुभ है।
तिथियाँ	१।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ एवं १५ शुभ है।
शुभ लग्न	२।३।५।६।९।८।११।१२ अपने सवामि एवं शुभ ग्रह से दृष्ट।
लग्नशुद्धि	लग्न से १।४।७।१०।५।९ में शुभ ग्रह, ३।६।११ में पाप ग्रह हो तथा ८।१२ के ग्रहवर्जित रहने पर शुभ है।
त्याज्य	भद्रा, कुयोग, अष्टमगतचन्द्र।

इन्हीं गृहारम्भ के नक्षत्र-वार एवं तिथि आदि शुभ समयों में मठ, देवालय आदि का आरम्भ भी शुभकर होता है। सूर्य एवं मंगल, रिक्ता तिथि तथा चर लग्नों में कभी भी गृहारम्भ नहीं करना चाहिए।

वास्तुभूमि के शुभा-शुभत्व का ज्ञान

सायंकाल गृहेश के हाथ से १ हाथ लम्बा, चौड़ा एवं गहरा गड्ढा खोदकर पानी से भर देवें। पुनः प्रातः काल उठकर देखें खात में यदि जल दिखाई दे तो वृद्धि, केवल कीचड़ बचे तो मध्यम एवं दरार फट जाय तो अशुभ समझना चाहिए।

गृह निर्माण में प्रयुक्त शिलाओं के प्रमाण का विचार

ब्राह्मणादि वर्ण के लोगों को क्रमशः २१अंगुल लंबी १०½ अंगुल चौड़ी तथा ५¼ अंगुल मोटी, १७ अंगुल लम्बी, ८½ अंगुल चौड़ी तथा ८½ अंगुल मोटी, १३ अंगुल लम्बी, ६½ अंगुल चौड़ी तथा ३¼ अंगुल मोटी शिला (ईंट) का प्रयोग करना चाहिए। इससे कम या अधिक मान की शिला अशुभफलदायक होती हैं। शिलपूजन में प्रयुक्त पाँच मुख्य शिलाओं का नाम क्रमशः नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा तथा पाँच कलशों का नाम पद्म, महापद्म, शंख, मकर एवं समुद्र होता है। प्रधान पञ्चशिलाओं के साथ छोटी-छोटी पाँच आधारशिलाएं (गिट्टी) भी होती हैं।

गृह की ऊँचाई का परिमाण

गृह विस्तार के १६वें हिस्से में ४ हाथ जोड़ने से जितना हो उतने के बराबर गृह की ऊँचाई होनी चाहिए। पुनः दूसरी एवं तीसरी आदि मंजिल बनवाने पर आधार तल में क्रमशः १२वां अंश कम करते जाना चाहिए। जैसे प्रथम से द्वादशांश कम दूसरा, दूसरे से द्वादशांश कम तीसरा आदि। **गृहभित्ति प्रमाण-** चौड़ाई के १६वें भाग के बराबर भित्ति की मोटाई होनी चाहिए। परन्तु यदि पकी हुई ईंट या लकड़ी की भित्ति हो तो कोई विकल्प नहीं होता अर्थात उसका प्रमाण कुछ भी हो सकता है।

गृह में सूर्य एवं चन्द्र वेध का निर्णय

पूर्वापर दैर्घ्य होने पर रविवेध तथा याम्योत्तर लम्बाई होने पर चन्द्रवेध होता है। चन्द्रविद्ध गृह, सूर्यविद्ध जलाशय तथा सूर्य एवं चन्द्र दोनों से विद्ध वाटिका प्रशस्त होती है। अन्यमत मन्दिर देवताओं का घर होता है। इसलिए उसमें पिण्ड विचार नहीं करना चाहिए।

।। जलाशयारम्भ मुहूर्त्त।।

गुरु-शुक्र के अस्तादिदोष से रहित काल, ह.अनु.उ.३.ध.,श.,म.रो., पुष्य, मृ.,पू.षा., नक्षत्रों, चं.बु.बृ. तथा शुक्र वासरों तथा रिक्ता एवं अमावस्या रहित तिथियों में बुध एवं गुरु के लग्नस्थ, क्रूर ग्रहों के दुर्बल, शुक्र के दशमस्थ, तथा चन्द्रमा के लग्न में रहने पर जलाशयारम्भ शुभ होता है।

गृहप्रवेश मुहूर्त्त विचार

शुभमास	वै.ज्ये,माघ, तथा फा. महीनें में नये घर तथा इनके सहित श्रा.मार्ग. कार्त्ति. मासों में जीर्णगृह, आअग्निभय से निर्मित नूतनगृह में भी प्रवेश शुभ होता है।।
नक्षत्र	कुम्भचक्र शुद्ध रहने पर उ.३,अनु.रो.मृ.चि.रे. नक्षत्र में शुभ
शुभवार	चं.बु.बृ.शु.श.
तिथि	१,२,३,४,५,६,७,८,१०,११,१२,१३।।
लग्न	२,५,८,११ शुभ तथा ३,६,९,१२ मध्य
लग्नशुद्धि	जन्मलग्न तथा राशिलग्न से उपचय स्थान की स्थिर राशि में, लग्न से १,२,३,५,७,९,१०,११ स्थानों में शुभ ग्रह, ३,६,११ में पापग्रह तथा ४,८ शुद्ध रहने पर वाम रवि में गृहप्रवेश शुभ होता है।

।। जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त विचार ।।

समय	मीन संक्रान्ति को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में गु.शु. के उदित एवं बलवान तथा चन्द्रमा के बलवान रहने पर शुभ।
नक्षत्र	मृ.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.स्वा.पुन.श्र.ध. शुभ।
लग्नशुद्धि	लग्न से १,२,४,७,१०,५,९ स्थानों में शुभ ग्रह तथा ३,६,११ में पापग्रह हों एवं पञ्चेष्ट शुद्धि हों तो गृह स्वामी के जन्म लग्न से अष्टम को छोड़कर अन्य लग्नों में जलाशयारामसुर प्रतिष्ठा करनी चाहिए

गृहाभ्यन्तर व्यवस्था।

गृह निर्माण में प्रयोग होने वाली लकड़ियाँ- श्रीपर्णी (कायफल), रोहिणी (कुटकी), शाक (सागोन), सर्ज, पतङ्ग, लोध, शाल (सखुआ), ताल, अर्जुन, शीशम, चन्द्रन, अशो, वैर, महुआ एवं कदम्ब, वृक्षों को घर के कामों में लगाना शुभ होता है। तथा पाकड़, गुलर, आम, नीम, सेहुड़, विभीतक (बहेड़ा), जला हुआ, काँटेवाला, वट, पीपल, कैथ, अगस्त, सहिजन, ताल, तिन्तिणी (इमली) के लकड़ियों को घर में नहीं लगाना चाहिए। **गृहपिण्ड-** प्राच्यां स्नानगृहं च पाकसदनं वह्नौ तु सुप्तालयो, याम्यायामथ शस्त्रसद्मदनुजे भत्त्यालयः पश्चिमें। वायव्यां पशुमन्दिरं शुभकरं भंडारवेश्मोत्तरे, शैवे देवगृहं प्रशस्तमखिलं स्वस्वास्थ्य कार्यं सदा।। इन्द्राग्न्योरथ मन्थनस्य सदनं त्याज्यं यमाग्न्योर्गृहं, दैत्यान्तकयोः पुरीषसदनं विद्यागृहं मध्यमे। रक्षोवारुणयोश्च रोदनगृहं तोयेशवायव्ययोः, मध्ये कामगृहं कुबेरमरुतोः कुर्यात्सदा भूपतिः।। भाण्डागारं तूत्तरे स्याद्वायव्यां पशुमन्दिरम्।। उत्तरस्यां जलस्थानं पूर्वस्यां श्रीगृहं तथा। पुरन्दरेशयोर्मध्ये सर्ववस्तु संग्रहम्।। कौबेरीश्वरयोश्चा वैद्यभवनं शाक्रेशयोः सौतिकं, ज्येष्ठभ्रातृ पितृव्य मातृभवनं स्वस्माद्यमे पश्चिमे। शालानामुपरिस्थितेषु भवनेष्वेवं विचिन्त्यं बुधैः, अत्युच्चं न हि नातिनीचमथवा साम्यं गृहं कारयेत्।। इसका अर्थ निम्न चक्र द्वारा स्पष्ट करें-

पूर्व

देवगृह पूजास्थान	प्रसूति गृह	सर्व वस्तुस्थान	स्नान गृह	गोरस कक्ष	पाकशाला रसोई
चिकित्सा, रोगी कक्ष					घृत स्थान
कोषागार					शयनकक्ष
पेयजल					
मनोरंजन स्थान					शौचालय
पशुशाला वाहन,भण्डार	कोप भवन	भोजन कक्ष		अध्ययन कक्ष	शस्त्रागार

(बायें: उत्तर; दायें: दक्षिण)

पश्चिम

आय विचार- गृहपिण्ड को ९ से गुणा कर ८ से भाग देने पर प्राप्त शेष के अनुसार क्रमशः ध्वज, धूम, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज एवं उष्ट्र आय होते हैं। इनमें गृह निर्माण से क्रमशः कीर्ति, शोक, जय, शत्रुता, धन, दरिद्रता, सुख एवं रोग की प्राप्ति होती है। **गृहारम्भ लग्न द्वारा राजयोग-** गुरुवार के दिन कर्क लग्न में गृहनिर्माण हो अथवा कर्क लग्न में गुरु एवं चन्द्रमा के युति के समय गृहनिर्माण हो तो निर्माणकर्त्ता को राजयोग का फल प्राप्त होता है। गुरुवार के दिन धनु या मीन लग्न में शुक्र एवं गुरु की स्थिति के समय गृहनिर्माण से निर्माता राजा के तुल्य होता है। **द्वार निर्धारण-** मकान की लम्बाई (जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई) का बराबर-बराबर नव हिस्सा करके ५ भाग दाहिने और ३ भाग वायीं ओर छोड़कर शेष (अर्थात वायें से चौथे) भाग में द्वार बनाना चाहिए। **द्वारस्थापने वैकल्पिक विचार-** सर्वेषामथवा यथारुचिगृहद्वाराणि कुर्युः रवेराचार्यस्य बुधस्य वा प्रतिदिशं भागे समस्तालये। अष्टस्वष्टसु वा त्रिषु त्रिषु गृहे कार्येषु भागेषु तत्, मध्ये वाधिकधामभागसहितं वामे कपाटान्वितम्।। **राशि के अनुसार द्वार दिशा-** कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि वालों को पूर्व, कन्या, मकर तथा मिथुनराशि वालों को दक्षिण, तुला, कुम्भ तथा वृषराशि वालों को पश्चिम एवं मेष, सिंह तथा धनुराशि वालों को उत्तर दिशा में द्वार (मुख्य द्वार) रखना चाहिए।

सहमसारिणी।। दिनरात्रिवश जिन सहमों के शोध्य शोधक में भेद होता है।

दिन में	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	दिन में	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
पुण्य	सूर्य	चन्द्र में	तनु	प्रसूति	बुध	गुरु में	तनु
गुरु	चन्द्र	रवि में	तनु	जाड्य	शनि	भौम में	बुध
यश	पुण्य	गुरु में	तनु	जल	चन्द्र	शनि में	लग्न
मित्र	गुरु	पुण्य में	तनु	शत्रु	शनि	भौम में	लग्न
माहात्म्य	भौम	पुण्य में	तनु	दरिद्र	बुध	पुण्य में	बुध
आशा	शुक्र	शनि में	तनु	शास्त्र	शनि	गुरु में	बुध
राज.	सूर्य	शनि में	तनु	वंदक	बुध	चन्द्र में	तनु
भ्राता	शुक्र	चन्द्र में	तनु	बन्धन	शनि	पुण्य में	तनु
जीविका	गुरु	शनि में	तनु	अश्व	सूर्य	पुण्य में	लाभ
कर्म	बुध	भौम में	तनु	अन्यक	शनि	चन्द्र में	तनु
कलि.	भौम	गुरु में	तनु	वृद्धि	सूर्य	गुरु में	तनु
चेत	भाव	१२भा	तनु	अरि	शनि	भौम में	तनु
रात्रि में	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं	रात्रि में	अस्मिन्	एषऊन्	युक्तं

विद्या १ ज्ञान २ ज्ञाति ३ सहम गुरु ही होता है। पिता सहम राजा सहम समान है। बल १ देह २ यश के सदृश है। विवाह सहम से स्त्री का विचार होता है। सामर्थ्य सहम के साधन में लग्नेश यदि भौम हो तो भौम को गुरु में घटायें। गौरव सहम के लिये दिन में बृ.-चं.-सू.+रात्रि में बृ.-र.+चं. कार्य सहम दिन में चं.-लग्न प+ ल. रात्रि में लग्न प-चं.+ल. कार्यसिद्धि- श. सू. रा. प. रात्रि में- श.-चं.+चन्द्र रा. प. गुरु दिन में सूर्योच्च- सू.+ल. रात्रि में चन्द्रोच्च- चं.+ल.।।

दिन रात्रि मे समान साधनयुक्त 'सहम'

सहमा	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	सहमाः	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
मातृ	शनि	गुरु से	लग्न	श्रद्धा	भौम	शुक्र से	तनु
पुत्र	चन्द्र	गुरु से	लग्न	प्रभात	पुण्य	शुक्र से	तनु
रोग	चन्द्र	तनु से	तनु	व्यापार	बुध	ज्ञान से	तनु
बंधु	चन्द्र	बुध से	तनु	कन्या	चन्द्र	भौम से	तनु
मृत्यु	चन्द्र	८भावा से	शनि	संताप	चन्द्र	शनि से	६भाव
यात्रा	धर्मेशः	धर्म से	तनु	गर्भ	शनि	ज्ञान से	तनु
धन	लग्नेश	धन से	तनु	जलाध्व	शनि	शतश	आयभाव
परस्त्री	सूर्य	शुक्र से	तनु	गज	गुरु	कर्काद्धत	मतभ
वणिक	बुध	भौम से	तनु	घातक	पुण्य	चन्द्र से	तनु
विवाह	शनि	शुक्र से	तनु	घातक	पुण्य	गुरु से	तनु

उदाहरण- दिन में पूर्ण सहम बनाने के लिये चन्द्र से सूर्य को घटाकर लग्न जोड़ना चाहिये। रात्रि में सूर्य में चन्द्र घटाकर लग्न जोड़े दें अतः दिन में जो घटता है उस पर *'एषऊन'* जिसमें घटता है उसपर *'अस्मिन्'* लिखा है। कुछ सहम दिनरात्रि में समान ही रहते हैं। *'एषऊन' 'अस्मिन्'* यह संकेत दिन के लिये ऊपर तथा रात्रि के लिये नीचे लिखा है। जिसमें से जो घटता है उन दोनों के बीच में लग्न न आये तो स्पष्ट सहम राशि में १ राशि जोड़ना चाहिये।

दीर्घ विस्तारशुद्ध्यादियुता सिद्ध पिण्डसारिणी।।

दीर्घ	विस्ता	आय	वार	अंश	द्रव्य	ऋण	ऋक्ष	तिथि	योग	आयु	दीर्घ	विस्ता	आय	वार	अंश	द्रव्य	ऋण	ऋक्ष	तिथि	योग	आयु
१७	१५	७	६	९	१२	५	१५	१५	२१	१२०	४९	४५	५	७	९	१२	७	९	१५	१८	१२०
१९	१५	५	३	९	१२	३	१२	१२	६	१२०	५१	३५	१	७	९	१२	३	२४	१५	१२	१२०
२१	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२१	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२१	१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३३	२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३३	२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३५	२९	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३५	३३	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३७	३१	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३७	३३	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३९	३१	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३९	३३	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३९	३५	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३९	२३	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४१	३५	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४१	३९	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४१	३३	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४३	३९	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४३	४१	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४३	३५	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४५	३७	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४५	३९	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४५	४१	५	१	९	१२	७	१८	१५	९	१२०	७५	६३	५	७	९	१२	७	२७	१५	२७	१२०
४५	२५	७	४	९	१२	५	२४	१५	१२	१२०	७५	६५	३	६	९	१२	१	१२	१५	६	१२०
४५	४३	७	६	९	१२	५	९	१५	१८	१२०	७५	६७	१	५	९	१२	३	२४	१५	१२	१२०
४७	४१	७	४	६	८	५	२६	११	१३	५६	७५	६९	७	४	९	१२	५	९	१५	१८	१२०
४७	४५	३	२	९	१२	१	१८	१५	९	१२०	७५	७३	३	२	९	१२	१	६	१५	३	१२०
४९	३७	५	७	६	८	७	५	१४	१६	१०४	७७	६५	५	७	६	८	७	२६	५	१३	८०
४९	४१	१	७	३	४	३	७	७	१७	११२	७७	७१	३	७	६	८	१	२१	११	२५	५६
४९	४३	३	७	६	८	१	८	११	४	५६	७७	७५	७	७	३	१२	५	३	१५	२५	१२०

लग्नानयन- स्पष्ट सूर्य के राशिअंश द्वारा कोष्टक से फल लेकर उसमें इष्टकाल जोड़ दे अब योगफल कोष्टक में जितने राशि अंश पर दिखाई दे वही राश्यादिक लग्न होता है। यह लग्नसारणी गाजीपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, झाँसी, बलिया, बाँदा, इलाहाबाद, छपरा, पटना, मुंगेर, भागलपुर, हाजीपुर, बिहार, हैदराबाद, (सि), चित्रकूट, बूँदी, पूर्णिया, शाहाबाद, सहसराम, कुदरा, जहाँनाबाद, डुमराँव, मालदह के लिए है।

काशी में चैत्रपक्षीय २४।०।० अयनांश सम्बन्धि सायन स्फुट्लग्न सारिणी

म.	श्री	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	श्री
०	मे.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	मेष
७		४९	५६	३	११	१८	२६	३३	४०	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४८	५६	५	१३	२१	३०	३८	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४६	
२२	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०
[illegible]	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृष १
[illegible]	मि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मिथुन २
[illegible]	क.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कर्क ३
[illegible]	सिं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिंह ४
[illegible]	क.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कन्या ५
[illegible]	तु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तुला ६
[illegible]	वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृश्चिक ७
[illegible]	ध.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धनु ८
[illegible]	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मकर ९
[illegible]	कु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कुम्भ १०
[illegible]	मी.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मीन ११

चैत्र में अयनांश साधनार्थ एकादि गुणक १ गुणोत्तर १० गुणोत्तर

१	०	५०	१०	८	२२
२	१	४०	२०	१६	४४
३	२	३१	३०	२५	७
४	३	२१	४०	३३	२९
५	४	११	५०	४१	५२
६	५	१	६०	५०	१४
७	५	५१	७०	५८	३६
८	६	४२	८०	६६	५९
९	७	३२	९०	७५	२२
०	क.	वि.	१००	८३	४३

इस वर्ष के अयनांश में वार्षिक अयनांश गति जोड़ने से अग्रिम वर्ष के आदि का होगा। शाके १८०० में अयनांश- २२।८।३३ था। उससे आगे या पीछे का अयनांश जानने के लिए उतने वर्ष के फल का योग अन्तर कर लेने से अभीष्ट अयनांश होगा।

काशि का सायन, निरयण तथा पलात्मक लग्नमान एवं लंकोदयमान

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सा.घ.	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
	४१	१३	४	४२	४५	३५	३५	४५	४२	४	१३	४१
नि.घ.	४	४	५	५	५	५	५	५	५	४	३	३
	५	५९।	३१।	४४।।	३७।।	३५	४२।।	४२	१३।।	२४।।	३९	४१
पलात्म	२२१	२५३	३०४	३४२	३४५	३३५	३३५	३४५	३४२	३०४	२५३	२२१
लंकोदय	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	२९९	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८

नत काल के विना दशम लग्न ज्ञानार्थ सारिणी। स्पष्ट लग्न के राशि-अंश को

(बगल में राशि तथा उपर अंश) कोष्ठक में देखें, दानों पंक्तियों को मिलाने से राश्यादिक दशम लग्न प्राप्त होता है।

श्री	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
	२३	२४	२५	२६	२६	२७	२८	२९	०	१	१	२	२	३	३	४	५	६	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	[illegible]
०	५६	३८	१९	०	४१	२२	३	४४	२५	६	४७	२८	३६	३	५	५७	२४	११	५८	४५	३२	१९	६	७	४७	३३	४५	१५	६	२०
वृष १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या ५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृश्चिक ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
धनु ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मकर ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुम्भ १०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन ११	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२१	२२	२५
	२५	६	४०	२९	९	५०	१५	१२	४३	३३	१५	०	३७	१६	५६	४०	२१	४३	४०	५५	१८	४७	२८	९	५०	३१	२२	५३	३४	१६

पिण्ड द्वारा आय आदि का आनयन- गृहपिण्ड को नव स्थानों में रखकर क्रम से १।९।६।८।३।८।६।४।८ इन अंकों से अलग-अलग गुणाकर गुणनफल में क्रमशः ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० का भाग देने पर प्राप्त शेष क्रमशः आय १ वार २ अंश ३ द्रव्य ४ ऋण ५ नक्षत्र ६ तिथि ७ योग ८ तथा आयु ९ होता है। पिण्ड में ऋण अधिक तथा द्रव्य अल्प हो एवं गृह तथा गृहेश के एक ही नक्षत्र हो तो अशुभ होता है। इन सबका विचार गृहारम्भ के पूर्व कर लेना चाहिए। आय ध्वजादि, वार सूर्यादि तथा अंशक मेषादि होता है। **भूमि के लक्षण एवं फल-** आयताकार भूमि में गृह निर्माण से सिद्धि, वर्गाकार से धनागम, वृत्ताकार में निर्माण से वृद्धि की वृद्धि एवं कल्याण, चक्राकार में दरिद्रता, विषम में शोक, त्रिकोण में राजभय, शकटाकार में धनक्षय, दण्डाकार में पशुक्षय, शूर्पाकार में गौ क्षय, कूर्माकार में बन्धन एवं पीड़ा, धन्वाकार में भय तथा कुम्भाकार क्षेत्र में गृहनिर्माण से कुष्ठ रोग होता है। **भूमिदोष एवं उसका फल-** कटी हुई, सशल्य (हड्डीयुक्त), दीमकवाली, तथा ऊँची-नीची भूमि को दूर से ही त्याग देना चाहिए। क्योंकि ऐसी भूमि गृह निर्माण कर्त्ता की आयु, एवं धन का नाश करने वाली होती है। फटी हुई भूमि मृत्युदायक, उपर भूमि धन नाशक, सशल्या क्लेश कारक तथा विषमा भूमि शत्रुओं को बढ़ाने वाली होती है। **भूमि के पूर्वादि आठो दिशाओं में प्लवत्व का फल-** भूमि के पूर्वादि दिशाओं में प्लवत्व से क्रमशः लक्ष्मी प्राप्ति, दाह, मृत्यु, धनहानि, पुत्रक्षय, प्रवास, धनलाभ एवं विद्या लाभ होता है। मध्य प्लवा भूमि नेष्ट तथा चतुर्दिक प्लवा अशुभ होती है। एवं सुखदायिनी, पूर्वप्लवा वृद्धिकरी, उत्तरप्लवा धनदात्री, दक्षिणप्लवा मृत्यु एवं शोकदात्री, नैऋत्यपलवा गृहक्षयकरी, वरुणप्लवा धनहानिकरी एवं वायव्य प्लवा भूमि उद्वेश कारिणी होती है। **गृहभूमि साधनार्थ सूत्र नियम-** गृहभूमि साधन हेतु ब्राह्मण को कुशा क्षत्रिय को मौञ्जि, वैष्य को कपास तथा शुद्र को स्पर्ण कल्पित सूत्र का प्रयोग करना चाहिए। **शल्यज्ञान-** षडवर्गशुद्ध सूत्र से सूत्रित भूमि पर, सूत्र फैलाते समय मनुष्य, कुत्ता सियार आदि कोई भी जीव उस सूत्र का लंघन कर दे तो उस स्थल पर पुरुष प्रमाण नीचे उसी जीव की अस्थि जाननी चाहिए। सूत्र प्रसारण के समय ही सकाशात कोई आकर सूत्र लँघन कर दे तो भी उस स्थान पर शल्यादेश करना चाहिए। आधी भीत उठ जाने पर या गृह में पैठते समय कारीगर यह देखे कि गृहपति किस अंग का स्पर्श करता है, उसी समय यदि सूर्य किरण से सन्तप्त पक्षी कठोर शब्द से चिल्ला उठे या गृहेश जिस अंग का स्पर्श करे उस अंग की हड्डी जाननी चाहिए। शल्य विचार के समय शंख, नगाड़ा, मृदङ्ग के शब्द, दधि, अक्षत, फूल एवं फल आदि का दर्शन होने पर स्पर्श किए हुए अंग के सदृश शल्य कहना चाहिए। भूमि खोदते समय जो अंग फरक उठे उतने ही नीचे शल्य जानें। तथा प्रश्न काल में हाथी, घोड़ा, गधा, इत्यादि जो जीव बोल उठे उसका शल्य जानना चाहिए। शुभाशुभ लक्षणों का विधिवत विचार करके ही शल्य का आदेश करना चाहिए।

काशी से अन्य देशों के देशान्तर ज्ञानार्थ सारिणी। ग्रीनह्विच (GREENWHICH) नगर से काशी का घट्यात्मक देशान्तर १३।५०

उत्तरप्रदेश	अक्षांश		दि.	घ.	प.	वि.
अमरोहा	२९	०४	प	०	४५	०
अयोध्या	२६	४८	प	०	७	४०
अल्मोड़ा	२९	३७	प	०	३३	२०
अलीगढ़	२७	५५	प	०	४९	०
अहरौरा	२४	५९	पू	०	०	२०
आगरा	२७	१०	प	०	४९	१०
आज़मगढ़	२६	३	पू	०	२	१०
इटावा	२६	४७	प	०	३९	४०
इलाहाबाद	२५	२८	प	०	११	०
उन्नाव	२६	३२	प	०	२५	५०
एटा	२७	३५	प	०	४४	१०
कानपुर	२६	२८	प	०	२६	४०
काशी	२५	१८	प	०	०	०
गढ़वाल	३०	१५	प	०	३५	०
गाज़ीपुर	२५	३४	पू	०	५	५०
गोंडा	२७	२८	प	०	९	५०
गोरखपुर	२६	४५	पू	०	४	०
चुनार	२५	०८	प	०	०	४०
चित्रकूट	२५	२२	प	०	२०	०
जालौन	२६	०८	प	०	३६	१०
जौनपुर	२५	४६	प	०	२	४०
झाँसी	२५	२७	प	०	४३	५०
देहरादून	३०	१९	प	०	४९	२०
देवरिया	२६	२३	पू	०	७	०
नैनीताल	२९	२३	प	०	३५	०
पडरौना	२६	५४	पू	०	१०	१०
प्रतापगढ़	२५	५४	प	०	१०	१०
पीलीभीत	२८	४०	प	०	३१	३०
फर्रूख़ाबाद	२७	२४	प	०	३३	५०
बरेली	२८	२२	प	०	३५	३०
बलिया	२५	४४	पू	०	११	५०
बस्ती	२६	४८	प	०	९	२०
बहराइच	२७	३४	प	०	१५	०
बाँदा	२५	२८	प	०	२७	४०
बाराबंकी	२६	५६	प	०	१७	५०
बिजनौर	२९	२३	प	०	४८	३०
मथुरा	२७	२८	प	०	५३	१०
मिर्ज़ापुर	२५	१०	प	०	३	५०
मुजफ्फरनगर	२९	२८	प	०	५२	४०
मुरादाबाद	२८	५०	प	०	४१	५०
मेरठ	२९	१	प	०	५२	३०
मैनपुरी	२७	१४	प	०	३९	४०
रामपुर	२८	४९	प	०	३९	५०
रायबरेली	२६	१४	प	०	१७	२०
राबर्ट्सगंज	२४	४९	प	०	०	५०
रुड़की	२९	५२	प	०	५१	१०
लख़नऊ	२६	५५	प	०	२०	१०
ललितपुर	२४	२२	प	०	४५	२०
शाहजहाँपुर	२७	५४	प	०	३०	३०
सहारनपुर	२९	५८	प	०	५६	१०
सुल्तानपुर	२६	१६	प	०	८	५०
हमीरपुर	२५	५८	प	०	२८	०
हरदोई	२७	२३	प	०	२८	२०
हरिद्वार	२९	५८	प	०	४७	५०
हाथरस	२७	३६	प	०	४९	०
हल्द्वानी	२९	२३	प	०	३४	०
बिहार झारखण्ड उड़ीसा के प्रमुख नगर						
आरा	२५	३२	पू	०	१५	२०
औरंगाबाद	२४	४५	पू	०	१४	१०
कटक	२०	२८	पू	०	२९	०
कालाहाँडी	१९	४०	पू	०	०	०
किसनगंज	२६	१०	पू	०	५०	०
कोटापाद	१९	०४	पू	०	२	४०
गया	२४	४९	पू	०	२०	४०
गंजाम	१९	२२	पू	०	२०	१०
गिद्धौर	२४	५१	पू	०	३३	०
चाइबासा	२२	३४	पू	०	३१	४०
छपरा	२५	४७	पू	०	१७	०
छोटानागपुर	२३	०	पू	०	२०	०
जमशेदपुर	२२	५०	पू	०	३१	४०
जोगवनी	२६	२५	पू	०	२६	२५
झरिया	२३	५०	पू	०	३५	३०
डाल्टेनगंज	२४	२	पू	०	१०	४०
डुमराँव	२५	३३	पू	०	१३	३०
तालचर	२०	५७	पू	०	२२	४०
दरभंगा	२६	१०	पू	०	२९	३०
देवघर	२४	३०	पू	०	३७	३०
धमरा	२०	४८	पू	०	३९	२०
पचगछिया	२५	५५	पू	०	३५	४०
पटना	२५	२५	पू	०	२२	१०
पुर्णिया	२५	२५	पू	०	४५	१०
पुरूलिया	२३	२०	पू	०	४६	१०
पुरी(जगन्नाथ)	१९	५१	पू	०	२८	४०
बक्सर	२५	३४	पू	०	११	४०
बराम्बा	२०	२५	पू	०	२३	५०
बलासोर	२१	३०	पू	०	३९	०
बेतिया	२६	४८	पू	०	१५	३०
भागलपुर	२५	१५	पू	०	४०	२०
भुवनेश्वर	२०	१७	पू	०	२८	४०
मधुबनी	२६	२१	पू	०	३१	१०
मयूरभंज	२१	५६	पू	०	३७	४०
मानभूमि	२३	२४	पू	०	३९	०
मुँगेर	२५	२३	पू	०	३५	०
मुज़फ्फरपुर	२६	७	पू	०	२४	३०
मोतिहारी	२६	४०	पू	०	१९	३०
रक्सौल	२७	०	पू	०	२०	०
रोहतासगढ़	२४	४०	पू	०	९	५०
राँची	२३	२३	पू	०	२३	५०
राउरकेला	२२	१२	पू	०	१९	०
संभलपुर	२१	२८	पू	०	१०	०
समस्तीपुर	२५	५५	पू	०	२८	२०
सासाराम	२४	५७	पू	०	१०	३०
सिवान	२६	१२	पू	०	१२	१०
सीतामढ़ी	२६	३५	पू	०	२५	२०
सोनपुर	२५	४२	पू	०	२२	१०
हज़ारीबाग	२४	०	पू	०	२४	१०
हथुआ	२६	२५	पू	०	१४	०
हासडीह	२४	३७	पू	०	४१	२०
हाजीपुर	२५	४१	पू	०	२२	२०
भारतवर्ष के प्रमुख नगर						
अकोला	२०	२०	प	०	५६	४०
अट्टूर(सेलम)	११	११	प	०	४३	३०
अनन्तनाग	३३	३३	प	१	१८	२०
अजमेर	२६	२६	प	१	२३	०
अमरावती	२०	२०	प	०	५२	०
अम्बाला	३०	३०	प	१	१	२०
अम्बिकापुर	२३	२३	प	०	८	२०
अलवर	२७	३४	प	१	३	४०
अहमदाबाद	२३	१	प	१	४३	४०
इन्दौर	२२	४४	प	१	११	०
उज्जैन	२३	९	प	१	११	४०
उदयपुर	२४	३२	पू	१	३२	३०
एकलिंगजी	२४	४३	प	१	३१	४०
ॐकारेश्वर	२२	१३	पू	१	९	३०
कच्छ	२३	२०	प	१	४५	५०
कलकत्ता	२२	३५	पू	०	५४	०
करनाल	२९	४२	प	१	०	०
कलिमपोंग	२७	५	पू	०	५५	०
कांगड़ा	३२	५	प	१	५	२०
कोचीन	९	५८	प	१	७	१०
कोयम्बटूर	११	०	प	१	०	०
कोल्हापुर	१६	४२	पू	१	२७	२०
कोहिमा	२५	४०	पू	१	५०	५०
खैरागढ़	२१	२६	प	०	२०	१०
गंगटोक	२७	१०	पू	०	५५	०
ग्वालियर	२६	१४	प	०	४८	२०
गिलगिट	३५	५५	प	१	२८	२०
गोधरा	२२	४५	प	१	३३	२०
गोलकुण्डा	१७	४१	प	०	४	५०
गोवा	१५	३०	प	१	३०	३०
चम्बा	३२	३९	पू	१	८	२०
चेन्नई	१३	७	प	०	२७	१०
जबलपुर	२३	१०	प	०	३०	०
जम्मू	३२	४४	प	१	२१	०
जयपुर	२६	५५	प	१	११	२०
जोधपुर	२६	२०	प	१	३९	२०
टीकमगढ़	२४	४५	पू	०	४०	३०
तिरुपति	१३	४०	प	०	३६	४०
थाणे	१९	२२	प	०	४०	०
दार्जलिंग	२७	३	प	०	५३	०
दिल्ली	२८	३८	प	०	५८	०
दतिया	२५	३९	प	०	४५	३०
दुर्ग	२१	११	प	१	१६	३०
धवलपुर	२६	४१	प	१	५१	२०
धारवाड़	१५	२७	प	१	२०	०
नागपुर	२१	९	प	२	३९	०
पटियाला	३०	२०	प	१	४	१०
पुणे	१८	३०	प	१	३०	२०
बंगलौर	१२	५८	प	०	५३	४०
बड़ौदा	२२	१५	प	१	३८	१०
बर्दवान	२३	१६	पू	०	४९	०
बूँदी	२५	२७	प	१	१२	२०
भरतपुर	२७	१५	प	०	५५	०
भोपाल	२३	१६	प	०	५७	०
मालदह	२५	३	पू	०	५१	३०
मुम्बई	१८	५५	प	१	३१	०
रायपुर	२३	१५	प	०	१३	१०
रीवाँ	२४	३१	प	०	१५	१०
विजयनगर	१८	७	पू	०	४	३०
विलासपुर	२२	२	प	०	७	५०
शिमला	३१	६	प	०	५७	५०
सागर	२३	५०	प	०	४१	१०
हैदराबाद	१७	२४	प	०	४५	०
त्रिचनापल्ली	१०	५०	प	०	४२	२०
त्रिचूर	१०	३०	प	१	७	३०
त्रिवेन्द्रम्	८	२९	प	०	५५	०
विश्व के प्रमुख नगर						
कराँची	२४	५१	प	२	३९	२०
कसूर	३१	७	प	१	२४	५०
कोलम्बो	६	५६	प	०	३०	३०
काठमाण्डो	२७	४२	पू	०	२२	०
काबुल	३४	३०	प	२	१७	०
टोक्यो	३५	४०	पू	९	१७	३०
ढाका	२३	४३	प	१	५	४०
न्यूयार्क	४०	४३	प	२९	११	१०
पेरिस	४८	५०	प	१३	२५	०
पेशावर	३४	२	प	१	५३	५०
पेरू	२७	२४	पू	१	२	२०
बर्लिन	५२	३२	प	१६	३५	५०
मास्को	५५	४५	प	७	३३	५०
रंगून	१६	४५	पू	२	१२	१०
लाहौर	३१	३७	प	९	२५	४०
लन्दन	५१	३०	प	१३	५०	५०
सिंगापुर	१	१७	पू	३	२७	५०
हैदराबाद(सिंध)	२५	२५	प	२	२३	४०

पलभाज्ञान सारिणी

१	०	१२	३४	३३	७	४७	३१
२	०	२५	९	३४	८	५	३८
३	०	३७	४४	३५	८	२४	७
४	०	५०	२१	३६	८	४३	५
५	१	३	०	३७	९	२	३५
६	१	१५	४०	३८	९	२२	३०
७	१	२८	२३	३९	९	४३	१
८	१	४१	१०	४०	१०	४	९
९	१	५४	०	४१	१०	२५	५३
१०	२	६	५०	४२	१०	४८	१८
११	२	१९	५५	४३	११	११	२४
१२	२	३३	०	४४	११	३५	१८
१३	२	४६	१२	४५	१२	०	०
१४	२	५९	२८	४६	१२	२५	३४
१५	३	१२	५४	४७	१२	५२	७
१६	३	२६	२४	४८	१३	१९	३७
१७	३	४०	५	४९	१३	४८	१७
१८	३	५३	५६	५०	१४	१८	५
१९	४	७	५५	५१	१४	४९	८
२०	४	२२	१	५२	१५	२१	३२
२१	४	३६	२२	५३	१५	५५	३
२२	४	५०	५३	५४	१६	३१	१
२३	५	५	३८	५५	१७	८	१४
२४	५	२०	३१	५६	१७	४७	२८
२५	५	३५	४२	५७	१८	२८	४४
२६	५	५१	७	५८	१९	१२	१३
२७	६	६	५२	५९	१९	५८	१८
२८	६	२२	४८	६०	२०	४७	७
२९	६	३९	४	६१	२१	३८	५३
३०	६	५५	४१	६२	२२	३४	६
३१	७	१२	४८	६३	२३	३३	४
३२	७	२९	५३	६४	२४	३६	१३

पलभा साधन- अयोध्या का अक्षांश २६।४८। पलभा चक्र में २६ अंश का फल = ५।५१।७ तथा अग्रिम २७ अंश का फल = ६।६।२५२। दोनों फलों का अन्तर = ०।१५।४५। x शेष (अंक्षाश का कलामान) ४८ = ७२०।२१६०, ६० से भाग देने पर १२।३६। अतः इस फल को २६ अंश के जोड़ देने से ३६।४८ अंक्षाश की स्फुट पलभा ६।३।४३ होगी। इसी तरह सभी स्थानों की पलभा सिद्ध हो जाएगी।

अवयव सहित पलात्मिका चर सारिणी। बगल में अक्षांश/ऊपर क्रान्त्यंश

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१३	२	४	७	९	१२	१४	१७	१९	२१	२४	२७	२९	३२	३४	३७	३९	४२	४५	४८	५०	५३	५६	५९	६२
	२५	५०	१६	४२	८	३५	२	३०	५९	३०	१	३३	७	४२	१९	५८	३९	२२	६	५४	४९	३७	३४	३२
१४	२	४	६	८	११	१३	१५	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३२	३४	३६	३९	४१	४४	४७	४९	५२	५५	५७
	१४	२८	४३	५७	१२	२८	४४	१	१९	३८	५७	१८	४०	४	२९	५६	२४	५५	२७	२	३९	१९	२	४८
१५	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२५	२७	२९	३१	३३	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०	५३
	३	६	९	१३	१६	२१	२६	३१	३८	४५	५३	२	१२	२४	३७	५१	८	२६	४६	८	३२	५९	२९	१
१६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३७	३९	४१	४३	४५	४८
	५२	४३	३५	२७	२०	१३	६	०	५५	५०	४७	४४	४३	४२	४३	४६	४९	५५	२	११	२३	३६	५२	११
१७	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४०	२१	१	४२	२३	४	४६	२९	१२	५५	४०	२५	१२	५९	४८	३८	२९	२२	१६	१३	११	१२	१३	१८
१८	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३२	३४	३६	३८
	२९	५८	२६	५६	२५	५५	२५	५६	२७	५९	३१	५	३९	१४	५०	२८	६	४६	२८	११	५६	४२	३१	२१
१९	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१७	३४	५२	९	२७	४५	३	२२	४१	१	२१	४२	४	२७	५१	१६	४१	८	३७	६	३७	१०	४४	२१
२०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	११	११	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८
	५	११	१६	२२	२८	३४	४०	४७	५४	२	१०	१९	२८	३८	४९	१	१४	२७	४२	५८	१६	३४	५४	१६
२१	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२३
	५३	४७	४०	३४	२८	२२	१६	११	६	१	५७	५३	५०	४७	४५	४४	४३	४४	४५	४८	५०	५५	१	८
२२	०	१	२	२	३	४	४	५	६	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१७
	४१	२३	४	४५	२७	९	५१	३३	१६	५८	४१	२५	९	५३	३८	२३	१०	५७	४४	३३	२१	११	२	५४
२३	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५८	२७	५६	२५	५५	२४	५४	२४	५४	२४	५५	२६	५७	२९	१	३३	६	३९	१३	४८	२३	५९	३६
२४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१६	३३	५०	६	२३	४०	५७	१४	३१	४८	५	२३	४०	५८	१६	३५	५३	१२	३१	५०	१०	३०	५१	१२
२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	१	५	९	१४	१८	२३	२८	३२	३७	४२
२६	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३१	४०	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३
२७	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९
	२२	४४	६	२८	५०	१३	३५	५८	२०	४३	६	२९	५३	१७	४१	५	३०	५५	२०	४७	१३	४०	८	३५
२८	०	१	१	२	२	३	४	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५
	३५	११	४६	२२	५७	३३	९	४५	२१	५८	३५	१२	५०	२८	७	४६	२६	६	४७	२९	११	५५	३९	२४
२९	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
	४९	३८	२७	१६	५	५४	४४	३५	२५	१६	७	५९	५१	४४	३७	३२	२७	२३	२०	१८	१६	१७	१८	२१
३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२६	२७
	३	५	८	११	१४	१८	२२	२६	३१	३६	४२	४८	५५	३	२२	२२	३३	४५	५८	१२	२८	४५	४	२५
३१	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१२	१४	१५	१७	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१७	३४	५१	८	२५	४३	१	२०	३९	५९	२०	४१	४	२७	५२	१७	४४	१२	४२	१३	४६	२२	५९	३८
३२	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
	३१	२	३४	६	३८	१०	४३	१७	५१	२६	२	३८	१६	५५	३६	१८	१	४६	३३	२२	१२	६	२	०
३३	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४४	४६
	४६	३२	१८	५	५३	३९	२७	१६	५	५६	४७	३९	३३	२८	२५	२४	२४	२६	३०	३७	४६	५९	१४	३२
३४	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५३
	१	२	४	५	७	१०	१३	१८	२३	२९	३६	४५	५५	७	२०	३६	५४	१३	३६	१	२९	२	३५	१४
३५	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२३	२३	२५	२७	३०	३२	३५	३७	४०	४३	४५	४८	५१	५४	५७	६०
	१६	३३	५०	७	२५	४३	२	२२	४३	६	२९	५४	२१	५०	२१	५४	३०	८	४९	३३	२१	१२	७	०

इस पञ्चाङ्ग द्वारा किसी इष्टस्थान के शुद्ध इष्टकाल, ग्रहगणित, दिनमान तथा तिथ्यादि के आनयन का संक्षेप में प्रकार।

१. **देशान्तर-** इष्टस्थान का काशी से देशान्तर देखकर यदि पूर्व हो तो धन (+) और पश्चिम हो तो ऋण (−) चिह्न कर एक स्थान पर लिखें।

२. **चरान्तर-** क्रान्ति तथा इष्टदेश के अक्षांश से चरान्तर ज्ञात करें। क्रान्ति के अंश और कला का फल, इष्ट देशीय अक्षांश के अंश तथा इसके अग्रिम अंश कला द्वारा अलग-अलग ग्रहण करें इन दोनों फलों के इष्ट अक्षांश से प्राप्त कलातुल्य फल के अनुमान का इष्टदेशीय अक्षांश से प्राप्त पूर्णफल में स्थिति वश योगान्तर ही चरान्तर है। यह फल केवल दो अवस्था में धन होगा। १. यदि इष्ट स्थान का आक्षांश काशी के अक्षांश (२५।१८) से अधिक हो तथा क्रान्ति उत्तरा हो। २. इष्टस्थान का अक्षांश काशी के अक्षांश (२५।१८) से कम तथा क्रान्ति दक्षिणा हो तो फल धन (+) होगा अन्यथा फल ऋण (−) होगा। देशान्तर की तरह इस चरफल को भी + या − संकेत कर देशान्तर के पास लिख लें।

३. **इष्टफल-** देशान्तर तथा चरान्तर दोनों के धन (+) होने पर योग फल धन (+), दोनों के ऋण (−) होने पर योगफल ऋण (−), दोनों में धन (+) अधिक होने पर अंतर धन (+), ऋण (−) अधिक होने पर अंतर ऋण (−) होगा। इस इष्टफल का भी (+) या (−) जैसा हो तीसरे स्थान पर लिखें और इसकी संज्ञा 'इष्टफल' समझे। *चरान्तर तथा इष्टफल दिनमानादि का साधन निम्नलिखित प्रकार से होगा।*

१. **इष्टदेशीय दिनमान-** काशी के दिनमान में द्विगुण चरान्तर का संस्कार करने से इष्टदेशीय शुद्ध दिनमान होगा।

२. **इष्टदेशीय तिथि नक्षत्रादि-** पूर्वागत धन + या ऋण − 'इष्टफल' आदि धन (+) हो तो काशी के तिथ्यादि घटी पल में योग करें। यदि ऋण (−) हो तो घटा देने से इष्टदेशीय तिथ्यादि का मान होगा।

३. **इष्टदेशीय जन्मेष्टकाल-** यदि जन्म समय रेलवे घड़ी के अनुसार मालूम हो तो उसमें पञ्चाङ्गस्थ रेलवे अन्तर धन (+) का ऋण (−) और ऋण (−) का धन (+) करने से काशी का इष्टकाल घं.मि. में होगा। इस घं.मि. का घटीपल बना लें। पुनः पूर्वागत + या − 'इष्टफल' का संस्कार करने पर इष्टदेशीय स्पष्ट इष्टकाल होगा।

४. **ग्रहगणित-** तद्देशीय इष्टकालवश ग्रहों के दिनादि चालन में 'इष्टकाल' का विलोम संस्कार धन (+) हो तो ऋण (−) ऋण (−) हो तो धन (+) करने पर इष्टदेशीय ग्रहगणित के लिए शुद्ध चालन होगा।

संदिग्धव्रतोपवास तथा पर्व निर्णय

१–श्रीकृष्णजन्माष्टमी– भाद्रपदकृष्ण अष्टमी निशीथ व्यापिनी ग्राह्य है। अतः जिस दिन निशीथ व्यापिनी अष्टमी मिले उसी दिन जन्माष्टमी व्रतोत्सव करना चाहिए। इस वर्ष संवत् २०८२ भाद्रपदकृष्ण अष्टमी तिथि निशीथ व्यापिनी नहीं मिल रही है। ''दिनद्वये निशीथव्याप्त्यभावे परैवाष्टमी ग्राह्या''– धर्मसिन्धु। अतः भाद्रपदकृष्ण अष्टमी शनिवार (१६ अगस्त २०२५) को स्मार्त्त, वैष्णव दोनों की जन्माष्टमी होगी।

२–जीवत्पुत्रिका व्रतम्– आश्विनकृष्ण अष्टमी को जीवत्पुत्रिका व्रत होता है। प्रदोषकाल व्यापिनी अष्टमी को जीमूतवाहन पूजन होता है। इस वर्ष दिनांक १४–९–२०२५ रविवार को सप्तमी घट्यादि ७।१ (दि.८।४१) पर समाप्त हो रही है तथा अष्टमी लग रही है। दूसरे दिन १५ सितम्बर को उदया अष्टमी घट्यादि १।२१ (प्रा.६।२६) तक रहती है। ''पूर्वेद्युरपरेद्युर्वा प्रदोषे यत्र चाष्टमी। तत्र पूज्यःस नारीभिः राजाजीमूतवाहनः।।'' इस वचनानुसार प्रदोष व्यापिनी अष्टमी पूर्व दिन मिल रही है। अतःदिनांक १४–९–२०२५ रविवार को ही जीवत्पुत्रिका व्रत होगा। दिनांक १५–९–२०२५ सोमवार को अष्टमी प्रातः ६।२६ के बाद जीवत्पुत्रिका व्रत का पारण होगा।

३–विजयादशमी– आश्विनशुक्ल दशमी को विजयादशमी होती है। जिसमें अपराह्णकाल की प्रधानता है। इस वर्ष ति. ९ बुधवार (१–१०–२०२५) को घट्यादि २१।१७ (दि.२।३७) तक नवमी है, इसके बाद दशमी तिथि आयी है जो अपराह्णकाल में व्याप्त है द्वितीय दिन तिथि १० गुरुवार को घट्यादि २२।१६ (दि.२।५६) तक दशमी तिथि है तथा अपराह्णकाल में है। इसी दिन श्रवण नक्षत्र भी दशमी के साथ संयोग कर रहा है। अतः ''दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्त्य-व्याप्त्योरेकतरदिने श्रवणयोगे यद्दिने श्रवणयोगःसैव ग्राह्या'' (धर्मसिन्धुः)। धर्मसिन्धु के इस वचनानुसार दोनों दिन अपराह्णकाल में दशमी होने पर श्रवणनक्षत्र से युक्त दशमी ही ग्राह्य है। अतः ति. १० गुरुवार (२ अक्टूबर २०२५) को ही विजयादशमी मनानी चाहिए।

४–दीपावली– कार्तिककृष्ण अमावस्या को प्रदोषकाल में दीपावली का पर्व होता है। इस दिन प्रदोषकाल में दीपदान,लक्ष्मीपूजनादि कृत्य विहित है। इस वर्ष कार्तिककृष्ण चतुर्दशी (२०–१०–२०२५) सोमवार को घट्यादि २१।३३ (दि.२।५६) से अमावस्या लग रही है और द्वितीय दिन दिनांक (२१–१०–२०२५) मंगलवार को घट्यादि २५।१६ (सा. ४।२६) तक है। पूर्व दिन ही प्रदोषकाल में अमावस्या है। अतः ''पूर्वत्रैव प्रदोषव्याप्तौ लक्ष्मीपूजनादौ पूर्वा''। धर्मसिन्धु के इस वचनानुसार दिनांक (२०अक्टूबर २०२५) सोमवार को ही दीपावली मनाई जायेगी।

५–होलिकादाह व होली– इस वर्ष फाल्गुनशुक्ल १४ सोमवार (दिनांक २ मार्च २०२६ ई.) को रात्रिपर्यन्त भद्रा होने से भद्रापुच्छ में रात्रि १२।५० से रात्रि २।२ के मध्य होलिकादाह होगा। इसके दूसरे दिन ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण लग रहा है। इसी दिन ग्रहण के उपरान्त प्रदोषकाल में प्रतिपदा के होने से काशी में चतुःषष्टियात्रा तथा दर्शन होगा। तथा चैत्रकृष्ण १ बुधवार (दिनांक ४ मार्च २०२६) को होली–वसन्तोत्सव आदि होली के सभी कृत्य होंगे।

६–वत्सराम्भ संवत् २०८३– इस वर्ष चैत्रकृष्ण अमावस्या १।३६ घट्यादि (प्रा.६।४०) तक है इसके बाद प्रतिपदा आ जाती है। दूसरे दिन सूर्योदय में द्वितीया है। सूर्योदय में प्रतिपदा किसी भी दिन नहीं है। ''*दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा*''– धर्मसिन्धुः। अतः इस वचनानुसार अमावस्या के दिन ही प्रातः ६।४० के बाद ही वत्सरारम्भ तथा नवरात्र से सम्बन्धित कृत्य करने चाहिए।

(पृष्ठ ३ का शेष)

रोग से जनसामान्य को कष्ट होगा। पश्चिमी राष्ट्रों में आतंकी घटनाओं से हानि व भय रहेगा। कन्या के सूर्य से सर्राफा बाजार में मंदी आ सकती है। चार ग्रहों का योग उत्पातकारक रहेगा। भाद्रपदशुक्ल १,३,१०,१५ तथा आश्विनकृष्ण ३,७ तथा ३० उपद्रवकारी रहेंगे।

आश्विनशुक्ल से कार्तिककृष्ण तक–चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। साग–तरकारी के मूल्यों में घटबढ़ी बनी रहेगी। खाद्य तेल,चीनी,गुड़,चना आदि में महँगी का रुख रहेगा। इनका संग्रह करना लाभप्रद होगा। कहीं–कहीं अतिवृष्टि से जन–धन की हानि होगी। उच्च का गुरु सीमा प्रान्तों पर शान्ति भंग करने वाला होगा। गायों में रोग बढ़ने से गोपालक चिन्तित रहेंगे। कहीं–कहीं मौसम में परिवर्तन से तापमान में गिरावट आयेगी। नीचस्थ शुक्र–सूर्य का द्विद्वादश योग प्राकृतिक प्रकोप से धन हानि कराने वाला होगा। आश्विनशुक्ल १,३,९,१५ तथा कार्तिककृष्ण ३,५,९ तथा ३० उपद्रवकारी रहेंगे।

कार्तिकशुक्ल से मार्गशीर्षकृष्ण तक–चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में सस्ती का रुख रहेगा। तेलहन तथा दलहन में भी सस्ती का रुख रहेगा। चीनी–गुड़–चावल में भी घटबढ़ी होकर मंदी आयेगी।पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात तथा ओलावृष्टि से तापमान में कुछ गिरावट आयेगी। पक्षान्त में सर्राफा बाजार में तेजी आयेगी। पश्चिमी राष्ट्रों में युद्ध से धन हानि होगी। जनउपद्रव से शासकों में भय की वृद्धि होगी। सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य गतिरोध एवं देश के रक्षकों को विशेष जागृत रहना होगा। मनुष्यों में रोग की वृद्धि होगी। कार्तिकशुक्ल २,४,७,१० तथा मार्गशीर्षकृष्ण २,४,११ तथा ३० उपद्रवकारी रहेंगे।

मार्गशीर्षशुक्ल से पौषकृष्ण तक–चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में महँगी का रुख रहेगा। तेलहन तथा दलहन में भी महँगी आयेगी। सोने–चाँदी के मूल्यों में भी तेजी का रुख रहेगा। धान का उत्पादन संतोषजनक रहेगा। दुर्घटनायें अधिक होंगी। रेशमी वस्त्र महँगे होंगे। डीजल–पेट्रोल आदि में तेजी का रुख रहेगा। शेयर बाजार में गिरावट आयेगी। वाहनादि और मशीनरी सामानों में तेजी आयेगी। फलों में सस्ती का रुख रहेगा। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा आ सकती है। शनि–गुरु एवं मंगल–गुरु का नवम पंचम योग देश में जटिलता उत्पन्न करेगा। कुछ राज्यों में हल्की वर्षा की भी सम्भावना बनी रहेगी,जिससे कुछ ठंडक बढ़ेगी। मार्गशीर्ष शुक्ल ३,४,७,१० तथा पौषकृष्ण ३,४,११ उपद्रवकारी रहेंगे।

पौषशुक्ल से माघकृष्ण तक–चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। फल तथा तरकारी के मूल्यों में सस्ती का रुख रहेगा। चाँदी में गिरावट तथा सोने में तेजी का रुख रहेगा। पक्षान्त में शेयर बाजार में अस्थिरता होकर गिरावट आयेगी। लोहा और ताँबा में मंदी का रुख रहेगा। इमारती सामान महँगे होंगे। चीनी–गुड़–चावल में तेजी आयेगी। इस पक्ष में चार ग्रहों का योग उत्पात कारक होगा। विश्व के कुछ देशों में रोग एवं महामारी से जनजीवन अस्त–व्यस्त रहेगा। पश्चिमी देशों में युद्ध की आशंका बनी रहेगी। अग्निकाण्ड या वाहन दुर्घटना से जन–धन की हानि होगी। पहाड़ों पर हिमपात से ठंडक बढ़ेगी। ऊनी वस्त्र सस्ते होंगे। शीतलहर के कारण यत्र–तत्र जन–धन की हानि होगी। ईंधन के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। पौषशुक्ल २,५,७,९ तथा माघकृष्ण २,३,१०,१४ उपद्रवकारी रहेंगे।

माघशुक्ल से फाल्गुनकृष्ण तक–चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। सर्राफा बाजार में सामान्य महँगी दीख पड़ेगी। चौपायों को रोग होंगे। चार ग्रहों का योग उत्पात कारक होने से कहीं–कहीं यान–वाहन दुर्घटना तथा भौमान्तरिक्ष उपद्रव की आशंका बनी रहेगी। भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भी हानि की आशंका रहेगी। मकर के मंगल में सोने के भाव में वृद्धि हो सकती है। शेयर बाजार में तेजी का रुख रहेगा। कहीं–कहीं वर्षा से शीत में वृद्धि सम्भव है।ऊनी वस्त्र महँगे होंगे। आकाशीय बिजली से नुकसान हो सकता है। माघशुक्ल २,३,१०, तथा १५ तथा फाल्गुनकृष्ण ३,४,९ उपद्रवकारी रहेंगे।

फाल्गुनशुक्ल से चैत्रकृष्ण तक–चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में महँगी का रुख रहेगा। सर्राफा बाजार में महँगी दीख पड़ेगी। काले तथा लाल पदार्थ महँगे होंगे। तेलहन का भाव सस्ता होगा। मासान्त में श्वेत पदार्थ तथा तरकारी के मूल्यों में वृद्धि होगी। आँधी–बवंडर तथा अग्निकाण्ड की घटनायें घटित होंगी। पेट्रोल–डीजल आदि में महँगी का रुख रहेगा। लोहे इत्यादि के सामान महँगे होंगे। सीमा क्षेत्रों में तनाव की स्थिति दीख पड़ेगी। शेयर बाजार अस्थिर होंगे। यातायात दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी। इस मास में पंचग्रही योग से कहीं–कहीं प्राकृतिक प्रकोप तथा शत्रुकृत गतिविधि से भारी जनधन हानि हो सकती है। फाल्गुनशुक्ल १,३,९,१५ तथा चैत्रकृष्ण २,७,१४ तथा ३० उपद्रवकारी रहेंगे।

दीपावली पूजन का शुभ मुहूर्त्त

कार्तिककृष्ण १४ सोमवार (२०।१०।२०२५) को दीपावली का शुभ पर्व होगा। दीपावली पूजन का मुख्यकाल **प्रदोषकाल** होता है। जिसमें स्थिर लग्न की प्रधानता होती है। अतः वृष, सिंह या कुम्भ लग्न में दीपावली पूजन करना चाहिये। इस दिन वृषलग्न सायं ७।१० से रात्रि ९.१६ तक है। जो **दीपावली** पूजन के लिए उत्तम समय है। इसके पश्चात् अर्धरात्रि में **सिंहलग्न** में रात्रि १।३८ से रात्रि ३।५२ तक में तथा **कुम्भलग्न** दिन में २।५६ से दिन में ४।५ के मध्य तक में भी गणेश (कुबेरादि देवताओं) का पूजन किया जायेगा।

कन्या के विवाह में अवरोध होने पर सिद्धिप्रद अनुष्ठान

आजकल कन्या के विवाह की समस्या प्रायः प्रत्येक गृहस्थ के समक्ष उपस्थित होती है। इसके लिये माता–पिता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शास्त्रों में वर्णित **'कात्यायनी देवी'** का अनुष्ठान बड़ा ही अनुभूत व सिद्धिप्रद है। जनसाधारण की जानकारी व जनहित में इस मंत्र के अनुष्ठान की विधि दी जा रही है। इसे नियम व श्रद्धापूर्वक करने या कराने से कन्या के विवाह में आने वाले विघ्न दूर होते हैं व विवाह सकुशल सम्पन्न हो जाता है।

जप की विधि– यह जप केले के सूखे पत्ते की आसनी पर बैठ कर कमलगट्टे की माला से किया जाता है। जप के समय कडुआ तेल का दीपक जलते रहना चाहिए। जिस व्यक्ति को यह अनुष्ठान करना हो उसे लाल या पीला वस्त्र पहनकर २१ दिन (जप काल) तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। इस मन्त्र का जप जपकर्त्ता को पान खाते हुए करना चाहिये। इस जप का ४१००० पुनश्चरण है, प्रथम दिन मन्त्र का १००० जाप करें व उसके बाद २० दिनों तक प्रतिदिन २००० मन्त्र का जाप करें। जपकाल में प्रतिदिन केले के वृक्ष का पूजन पंचोपचार विधि से करें। भोग व प्रसाद के रूप में पीले पेड़े का प्रयोग करना चाहिये।

मन्त्र– *कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।*
नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः।।

अनुष्ठान के अन्त में दशांश हवन, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। भोजन में पीला मिष्ठान्न अवश्य परोसें।

शनि की साढ़ेसाती तथा ढैया संवत् २०८२

इस वर्ष के प्रारम्भ में शनिदेव कुम्भराशि पर रहेंगे। अतः मकर,कुम्भ तथा मीनराशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती रहेगी। मकर के लिए पैर पर,कुम्भराशि वालों के लिए हृदय पर तथा मीनराशि वालों के लिए सिर पर शनि की साढ़ेसाती रहेगी। कर्क तथा वृश्चिक राशि वालों के लिए शनि की ढैया रहेगी। **वैशाखशुक्ल ७ रविवार**(४ मई २०२५)को शनिदेव मीनराशि में जायेंगे। इस दिन से कुम्भ,मीन तथा मेषराशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती होगी। मेषराशि के लिए सिर पर,मीन के लिए हृदय पर तथा कुम्भ वालों के पैर पर शनि की साढ़ेसाती रहेगी। सिंह तथा धनुराशि वालों के लिए शनि की ढैया लगेगी। **आश्विनकृष्ण ११ बुधवार**(१७ सितम्बर २०२५) को शनि वक्री होकर कुम्भराशि पर जायेंगे। इस दिन से मकर,कुम्भ तथा मीनराशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती लगेगी। **माघशुक्ल ५ शुक्रवार**(२३ जनवरी २०२६) को पुनः शनि मार्गी होकर मीनराशि में जायेंगे। इस दिन से कुम्भ,मीन तथा मेषराशि वालों के लिए साढ़ेसाती क्रमशः पैर,हृदय तथा सिर पर रहेगी। जिन राशि वालों के लिए शनि की ढैया, साढ़ेसाती चल रही हो उन्हें सुन्दरकाण्ड, रामायण या हनुमान चालीसा का नित्य पाठ तथा शनि का व्रत करना चाहिये। शनिवार को प्रातः काल पीपल वृक्ष में जल दान तथा सायंकाल दीपदान करना चाहिये। काले घोड़े की नाल की अँगूठी शनिवार को मध्यमा अँगुली में धारण करना चाहिये। शनिवार का व्रत तथा शनि का दान करना चाहिये।

कुण्डली मिलाने की रीति

फलित ग्रन्थों के द्वारा स्त्री नाशक या पति नाशक जो योग है उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है।

कुण्डली में लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह का होना प्रायः पति नाशक या पत्नी नाशक है, इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। यह पण्डितों का अनुभव है कि सबसे अधिक दोषकारक मंगल उससे कम बाकी पापग्रह होते हैं।

इस योग को चन्द्रमा शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय सप्तम भावों में भी पापयोग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम, अष्टम स्थान में पापयोग होना भी अधिक अनिष्ट है। द्वितीय तथा अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश, अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तम में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धकयोग भी वैधव्य सूचक प्रायः होते हैं। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्ययोग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्नलग्न या जन्मलग्न से स्त्री की कुण्डली में छठे या आठवें चन्द्रमा हो, लग्न या सातवें पापग्रह हो, लग्न में चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो वैधव्यकारक योग होता है।

यदि कन्या को प्रबल वैधव्ययोग हो तो अश्वत्थ विवाह, कुम्भ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता, परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम् अष्टम्, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिये अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता। ज्योतिष फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है– लग्न और चन्द्रमा। लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्मराशि के वश मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्मनाम से देखी जाती है। विवाह यात्रा उपनयन, चूड़ा गोचर विचार मंगल कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्मनाम ही प्रधान है। जन्म नाम न मिलने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हो तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म और प्रसिद्ध और सूर्य–गुरु–चन्द्रमा के बल जन्मनाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे के जन्मनाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

COPYRIGHT NOTICE

No article or any other matter can be reproduced from **HRISHIKESH PANCHANG** without written permission of the Chief editor. This copy is sold on the condition that it will not be exported out of india without express permission of the publishers.

प्रधान सम्पादक एवं सत्वाधिकारी

(हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग)

पं० शिवमूर्ति उपाध्याय *(एम. ए. ज्योतिष)*

मोबाइल- ०७३९०९९३३९७

कार्यालय

विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन

बी- २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी।

E-mail : shivmurtiupadhyay@gmail.com

सूचित किया जाता है कि हमारे यहाँ कुण्डली बनाने की दक्षिणा निम्नलिखित है :–

कुण्डली सर्वोत्तम ५१०० रू०

भुगतान 'विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन' के नाम ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा रू० २५०/- डाक व पैकिङ्ग व्यय प्रति कुण्डली अलग से जोड़कर उपरोक्त पते पर ही भेजें। कुण्डली बनवाने हेतु जन्मसमय, जन्मस्थान, दिनांक मास एवं ई० सन् तथा पिता का नाम स्पष्ट लिख कर भेजना आवश्यक है।

विशेष–अग्रिम भुगतान के बिना पत्र पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

हमारे यहाँ के अन्य प्रकाशन

श्रीकाशीविश्वनाथ पञ्चाङ्ग (हृषीकेश पञ्चाङ्ग)
श्रीकाशीविश्वनाथ पञ्चाङ्ग (हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग)
श्रीकाशीविश्वनाथ पञ्चाङ्ग (हृषीकेश दसवर्षीय पञ्चाङ्ग)
(संवत् २००१ से २०८० तक)
हृषीकेश जंत्री (कलैण्डर)
हृषीकेश जंत्री (बड़ी)
हृषीकेश जंत्री (पॉकेट)
अथ संवत्सरावली पद्धति

हमारे सभी प्रकाशनों का एकमात्र प्राप्ति स्थान
विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन
बी- २/९५ सी. भदैनी वाराणसी
मोबाइल- ०७३९०९९३३९७

समस्त विवाद वाराणसी न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगा।

पञ्चाङ्गस्थ विषयों की संक्षिप्त सूची

पृ.१ चतुर्विधमण्डल आयव्यय चक्र, समयशुद्धि।
पृ.२ पञ्चाङ्ग फल तथा ग्रहण विवरण।
पृ.३ वर्षफल, मासफल तथा वार्षिक राशिफल।
पृ.४ सूतिकाविषय, सामान्यमुहूर्त व रोगविचार, समर्घादि, मन्वादि, युगादितिथि, शून्यानयन, वर्ष-शुभाशुभज्ञानादि, अङ्गस्फुरण।
पृ.५ समस्त संस्कारों के मुहूर्त देखने का चक्र। जगल्लग्न विचार।
पृ.६ गणनाविचार, नक्षत्रमेलापक। गोचरफल। विवाह में गोत्रप्रवर।
पृ.७ वधूप्रवेश, द्विरागमन मुहूर्त चक्र। कन्यावैधव्य दोष विचार।
पृ.८ गुरु सूर्य बल विचार। संक्रान्ति वाहनादि नक्षत्रों की शुभाशुभ संज्ञा। ग्रहराशि समस्तविचार। भद्राविचार।
पृ.९ ग्रहों के शान्त्यर्थ महामृत्युञ्जयजपविधि। वारकर्म। नवग्रह वैदिक मन्त्र।
पृ.१० वर्षप्रवेशसारिणी, नवांशदिचक्र, वर्षपत्रविचार।
पृ.३५ आयुसम्बन्धी निर्णय कारक अष्टकवर्ग। विंशोत्तरी, योगिनीदशाचक्र। सर्वघात चक्र। वर्षज्ञानाय सर्पकारत्रिनाड़ी चक्र।
पृ.३६ कुण्डलीविचार, यात्राविचार, पल्लीपतन, कन्यादानादि अधिकारी। यात्रा विशेष विचार।
पृ.३७ यात्रायां दिशाशूल, गृहारम्भ-गृहप्रवेश, जलाशयारम्भादि मुहूर्त। गृहाभ्यन्तर व्यवस्था।
पृ.३८ पिण्डसारिणी। लग्नसारिणी; दशमलग्न सारिणी सहमसारिणी।
पृ.३९ देशान्तरचरान्तर सारिणी, इष्टकाल बनाने की विधि।
पृ.४० संदिग्ध व्रतोपवासनिर्णयादि।

चैत्रशुक्ल	वायुपरीक्षा, रामनवमीव्रतविधि।
वैशाखकृष्ण	नित्यस्मरणीयपाठ, हलप्रवहणचक्र।
वैशाखशुक्ल	मासतिथिशुद्धिफलम्, यात्रानिषेधयुगादितिथि दानफलम्।
ज्येष्ठकृष्ण	एकादशीव्रत के अधिकारी, उपवासादिषट्कम।
ज्येष्ठशुक्ल	ज्येष्ठशुक्लैकादश्यां दशाश्वमेघ फलम्।
आषाढ़कृष्ण	वृष्टिविचार, एकादशी माहात्म्य।
आषाढ़शुक्ल	शुभाशुभनिर्णय, वायुपरीक्षाकरग्रहण, आखेट मुहूर्त, सस्यारोपण।
श्रावणकृष्ण	समस्त प्रदोषनिर्णय, सप्तनाड़ीविचार शनि सुवर्णादि पाद विचार।
श्रावणशुक्ल	कालोत्थान, नागपञ्चमी, स्नानक्षौरक्रिया विचार।
भाद्रकृष्ण	व्रतनाशकारक, पारणसमय-चन्द्रादिअर्घ्यदान।
भाद्रशुक्ल	हरितालिका, अनन्तव्रतनिर्णय।
आश्विनकृष्ण	श्राद्धकालनिर्णय, जीवत्पुत्रिकानिर्णय।
आश्विनशुक्ल	कलशस्थापन, कन्यापूजनविधि।
कार्तिकृष्ण	हनुमज्जन्मनिर्णय, तुलार्कमेंदीपदानमाहात्म्य।
कार्तिकशुक्ल	सूर्यषष्ठीनिर्णय, यमद्वितीयानिर्णय।
मार्गशीर्षकृष्ण	अस्तापवाद, गर्भसम्बन्धीप्रश्न तथा मार्गशीर्षादि मासों में रविवार व्रत में भोज्य पदार्थ।
पौषकृष्ण	विविधप्रश्नोत्तरी।
पौषशुक्ल	गुलिकाप्राणपदसाधन तथा भावकारक निधन चन्द्रज्ञान भूमिशयन परिहार।
माघकृष्ण	माघमासनियम, माघ में दानवस्तु।
फाल्गुनकृष्ण	शिवरात्रिव्रत माहात्म्य।
फाल्गुनशुक्ल	सकलतिथिनिर्णय, होलिकादहनादि निर्णय।
चैत्रकृष्ण	गण्डान्तनिर्णयशान्ति तिथिनिर्णय।

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

काशी से प्रकाशित ग्रह पञ्चाङ्ग सर्वप्राचीन है, अतः इसके देखने की विधि पुनः लिखने की आवश्यकता न होने पर भी सुविधार्थ दिया जाता है। इस पञ्चाङ्ग के मुख्यतः दो खण्ड है *(१) स्थिर विषय:*- जिसमें पृष्ठ ४ से १० तक तथा ३४ से ३९ है। प्रत्येक पक्ष में भी कुछ स्थिर विषय है, जिनकी सूची पूर्व स्तम्भ में दी गयी है। **(२) परिवर्तनीय विषय:**- १-३, ११-३४ तथा ४० से ४२ पृष्ठों में दिये गये हैं।

चैत्रादि पक्ष- पृष्ठ ११ से ३४ तक चैत्रादि पक्ष दिये गये हैं। प्रत्येक पृष्ठ के चार भाग है (१) बीच की काली लाइन के ऊपर का (२) सूर्योदय कालीन ग्रह (३) विविध मुहूर्त तथा लग्नसारिणी, (४) स्थिर विषय।

भाग १- बीच की काली लाइन के ऊपर के भाग (१) में पञ्चाङ्ग जिसमें क्रम से दिनमान, तिथि, वार, घटी, घं.मि. में रात्रि (रा.) दिन (**दि.**) प्रातः (**प्रा.**) सायं (सा.) के संकेत से समाप्ति का काल दिया गया है। इसी प्रकार नक्षत्र तथा योग का भी सूर्योदय से घटी पल तथा घं.मि. से पूर्वोक्त तिथि की तरह मान दिया गया है। बव-बालव इत्यादि करणों का मान केवल घटी में दिया गया है। 'योग' कोष्ठ के अन्तर्गत आनन्दादि योग दिये गये है। **अ.फ.सौ. ने.रा.** सांकेतिक चिह्नों का अर्थ क्रमशः अंग्रेजी, फसली, सौर तथा नेपाली राष्ट्रीय सायन दिनांक है। **चं.रा. प्र.** के कोष्ठ के अन्तर्गत चन्द्रमा का राशि परिवर्तन काल घटी पल में दिया जाता है। तथा उसका घं.मि. उसी के सामने संस्कृत की पंक्ति में रा.दि.प्रा. के संकेत से दिया गया है। पञ्चाङ्गस्थ सूर्योदय सूर्यास्त तथा सभी घं.मि. काशी के स्पष्ट मान से दिया जाता है। इसी तरह तिथि नक्षत्र आदि का मान घं.मि. में स्पष्ट मान से दिया जाता है। 'औ स्प. सू.' स्तम्भ में सूर्योदय काल में स्पष्ट सूर्य काशी का दिया जाता है। उसके बगल में सूर्यक्रान्ति दी जाती है यह दक्षिणा (द.) उत्तरा (उ.) के संकेत से दी जाती है।

रेलवे टाइम संस्कार- 'रे.अं.' की पञ्चाङ्गस्थ सभी घं.मि. में संक्रेतानुसार संस्कार करने पर काशी का स्टैण्डर्ड टाइम होगा। भारतीय (रे.घ.) स्टैण्डर्ड टाइम की सूर्य घड़ी के मान में परिणीत करने के लिये आवश्यक है, कि पञ्चाङ्गस्थ रे.अं. का विलोम संस्कार करें। रेल अं. यदि धन (+) चिह्न का हो तो स्टै. टाइम में घटावें तथा ऋण (−) चिह्न का हो तो जोड़ देने से घं.मि. होगा, उसका घटी पल काशी का स्पष्ट मान हो जायेगा। रेलवे अन्तर के बाद की संस्कृत लाइनों में सर्वप्रथम भ. (भद्रा) और उसके बाद चन्द्रमा जिस राशि पर रहते हैं उसका निर्देश किया जाता है। इन्हीं पंक्तियों में सूर्य का नक्षत्रचार भी दिया जाता है। तथा सभी शुद्ध व्रतोपवास पर्व दिये जाते हैं। **व्रतोपवास में संदेह होने पर निर्णय ४० पृष्ठ पर दिया जाता है।** पंक्ति में सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, यमघंट, द्विपुष्कर, रवियोग तथा यायी स्थायी, संधिकर योग दिया जाता है। इस पञ्चाङ्ग में उ. (**उपरान्त**) या. (**यावत्**) समझना चाहिये। योगादि का लिखित घटी पल सभी नक्षत्र या तिथि के घटी पल के बराबर होता है। अतः तिथि नक्षत्र के घ. प. को मिलाकर उसका घं.मि. समझना चाहिये।

भाग २- सूर्योदयकाल के मंगल से राहु तक ग्रह दिये जाते हैं। किसी दिन के ग्रह का द्वितीय दिन के ग्रह से अन्तर करने पर उस दिन की ग्रह की गति होगी। उसका इष्टकाल से गुणा करके ६० से भाग देने पर चालन होगा। उसको इष्ट तिथि के औदयिक ग्रह में जोड़ देने से इष्टकाल का ग्रह होगा। मार्गी ग्रहों का गणित सूर्य की तरह वक्री या राहु की तरह सदैव जानना चाहिये। राहु की राशि में ६ राशि जोड़ देने से केतु का मान हो जायेगा। सूर्योदयकालीन भौमादिग्रहों के नीचे उनका राशि नक्षत्रचार भी दिया गया है।

।। विविध मुहूर्त ।।

।। चौलकेशान्त (मुण्डन) मुहूर्त ।।

वैशाख कृ. ति. १ सोम को स्वाती में (ल. ३)
ज्येष्ठशु. ति. १० गुरु को प्रा. ५।४५ से व्यतिपात पूर्व हस्त में (ल. ३)
फाल्गुन कृ. ति. ५ शुक्र हस्त में (ल. १२)
ति. ९ बुध को दि.१०।३६ के बाद ज्येष्ठा में (ल. २)
ति. १० गुरु को भद्रा (दि.११।३३) बाद ज्येष्ठा में (ल. २)
फाल्गुन शु. ति. १० गुरु को मृगशिरा में (ल.१२वा २)
ति. ११ शुक्र को दि.१०।२९ से भद्रा पूर्व पुनर्वसु में (ल.२)

।। वधूप्रवेश/द्विरागमन मुहूर्त ।।

वैशाख कृ. ति. १ सोम को स्वाती में वधूप्रवेश (ल.५) द्विरागमन (ल.६)
ति. ८ सोम को उ.षा. में वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. २)। दि.७।५६ के बाद अष्टमी में श्रवण में वधूप्रवेश (ल.५)
ति.१० बुध को भद्रा (दि.११।३२) बाद शतभिष में द्विरागमन (ल.६वा७)
ति.१२ शुक्र को वैधृति (दि.९।३५) से पूर्व उ.भा. में वधूप्रवेश (ल.२) द्विरागमन (ल.३)
वैशाख शु. ति. ३ बुध को सा.५।५८ तक रोहिणी में द्विरागमन (ल.२वा३)
ति. ४ गुरु को रिक्ता बाद मृगशिरा में द्विरागमन (ल.६वा७)
ति. ५ शुक्र को सा.६।१५ के बाद पुनर्वसु में द्विरागमन (ल.७)
ति. १२ शुक्र को हस्त में वधूप्रवेश (ल.२) द्विरागमन (ल.३)
मार्गशीर्ष शु. ति. ४ सोम को रा.७।५६ के बाद उ.षा. में वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल.७)
ति. ६ बुध को रा. १०।११ से धनिष्ठा में द्विरागमन (ल. ७)
ति. ७ गुरु को धनिष्ठा में भद्रा (रा. ७।२४) पूर्व वधूप्रवेश (ल. ८ वा ११) द्विरागमन (ल.१२)
ति. १४ गुरु को भद्रा (सा.६।२९) के बाद रोहिणी में वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल. ७)
फाल्गुनशु. ति.३ शुक्र को दि. ३।४ तक उ.भा. में वधूप्रवेश (ल.११वा २) द्विरागमन (ल.१२ वा ३)
ति.१० गुरु को मृगशिरा में वधूप्रवेश (ल.११) द्विरागमन (ल.१२वा२)
ति. ११ शुक्र को दि. १०।२९ से दि.११।२ तक पुनर्वसु में द्विरागमन (ल.२)। भद्रा (रा.९।५८) के बाद द्विरागमन (ल. ७)

।। गृहारम्भ / गृहप्रवेश मुहूर्त ।।

वैशाख कृ. ति. १ सोम को स्वाती में गृहारम्भ (च.शु.)
ति. १२ शुक्र को वैधृति (दि. ९।३५) से पूर्व उ.भा में गृहप्रवेश (ल.३)
वैशाख शु. ति. १२ शुक्र हस्त में गृहारम्भ (ल.८ गु.दा.) (भूषयनदोष का परिहार है)
ज्येष्ठकृ. ति. १० गुरु को भद्रा (रा.८।२४) के बाद उ.भा. में गृहप्रवेश (च.शु.)
ति. ११ शुक्र को उ.भा. में गृहप्रवेश (ल.३)
श्रावण कृ. ति. ११ सोम को रोहिणी में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.६)। रा.८।४१ के बाद मृगशिरा में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ३)
श्रावण शु. ति. ८ शुक्र को भद्रा (सा.४।५७) के बाद स्वाती में जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.)
कार्तिककृ. ति. ९ बुध रिक्ता बाद पुष्य में जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.)
ति. १२ शनि सा.५।३६ से उ.फा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.५ वा ६)
कार्तिकशु. ति. १३ सोम उ.भा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.)। दि. १।५ से रा. ११।३७ तक रेवती में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.११ वा ३)
मार्गशीर्ष कृ. ति. ११ शनि वैधृति बाद (दि. १०।२०) उ.फा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.२ के.दा.)
मार्गशीर्ष शु. ति. ६ बुध को रा.१०।११ के बाद धनिष्ठा में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.६)
ति. ७ गुरु को धनिष्ठा में भद्रा (रा. ७।२४) से पूर्व गृहारम्भ (ल.११ वा २) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.११ वा ३)
ति. ९ शनि को रा.९।५५ के बाद उ.भा. में जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.६)
ति. १४ गुरु को भद्रा (सा.६।२९) बाद रोहिणी में गृहारम्भ (ल.३ चं.दा.)
फाल्गुनकृ. ति. ९ बुध को रिक्ता (दि.९।२४) बाद अनुराधा में गृहप्रवेश (च.शु.)
ति. १२ शनि को सा.५।४५ के बाद व्यतिपात से पूर्व उ.षा. में गृहप्रवेश (च.शु.)
फाल्गुनशु. ति. ९ बुध को रिक्ता (रा.२।२४) के बाद मृगशिरा में गृहप्रवेश (ल. ११)
ति. १० गुरु को मृगशिरा में गृहारम्भ (ल. ११वा २) (भूषयनदोष का परिहार है) गृहप्रवेश (ल. ११)
ति. १२ शनि को पुष्य में गृहारम्भ में भूषयनदोष है।

।। अक्षरारम्भ/विद्यारम्भ मुहूर्त ।।

वैशाखशु. ति. ५ शुक्र को आर्द्रा में अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल.३)
ति. १२ शुक्र को हस्त में अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. ३)
ज्येष्ठकृ. ति. २ बुध को अनुराधा में विद्यारम्भ (ल.२वा ३)
ज्येष्ठशु. ति. ३ गुरु को आर्द्रा में अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. ३)
ति. १० गुरु को प्रा.५।४५ के बाद व्यतिपात से पूर्व हस्त में अक्षरारम्भ विद्यारम्भ (ल. ३)
ति. १२ रवि को स्वाती में द्वादशी में विद्यारम्भ (ल.३)
फाल्गुनकृ. ति. ५ शुक्र को हस्त में विद्यारम्भ (ल.१२)
फाल्गुनशु. ति. ११ शुक्र को आर्द्रा में अक्षरारम्भ (ल.१२)। दि.१०।२९ से दि.११।२ तक पुनर्वसु में अक्षरारम्भ (ल.२)

।। उपनयन (जनेऊ) मुहूर्त ।।

चैत्रशु. ति. १० सोम को पुष्य में विप्रकुमारों का उपनयन (ल.१)। दि.९।४५ के बाद श्लेषा में विप्रकुमारों का उपनयन (ल.३ मौ.दा.)
ति. १२ बुध को दि.११।२२ के बाद पू.फा. में विप्रकुमारों का उपनयन (ल.३)
वैशाखकृ. ति. १ सोम को स्वाती में उपनयन (ल.३)
वैशाखशु. ति. ३ बुध को रोहिणी में उपनयन (ल.२ के.दा.)
ति.५ शुक्र को आर्द्रा में उपनयन में रोगबाणव्याप्ति है।
ति. १२ शुक्र को हस्त में उपनयन (ल.३)
ज्येष्ठकृ. ति. २ बुध को अनुराधा में उपनयन (ल.२ के.दा.)
ज्येष्ठशु. ति. ३ गुरु को आर्द्रा में उपनयन (ल.३ वा ६)
ति. १० गुरु को प्रा.५।४५ के बाद व्यतिपात से पूर्व हस्त में उपनयन (ल.३)
ति. १२ रवि को स्वाती में द्वादशी में उपनयन (ल.३)
फाल्गुनकृ. ति. ५ शुक्र को हस्त में उपनयन (ल.२)
फाल्गुनशु. ति. ३ शुक्र को उ.भा. में उपनयन (ल.२)
ति. १० गुरु को मृगशिरा में उपनयन (ल.२)। आर्द्रा में उपनयन ल.३)
ति. ११ शुक्र को आर्द्रा में उपनयन (ल.१ के.दा.)। दि.१०।२९ से दि.११।२ तक पुनर्वसु में उपनयन (ल.२)

।। जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त ।।

वैशाखशु. ति. ६ शनि को पुनर्वसु में (ल.३)
ति. १२ शुक्र को हस्त में (ल.३)
ज्येष्ठ शु. ति. ५ शनि को पुष्य में (ल. ३)
ति. १० गुरु को प्रा. ५।४५ से व्यतिपात पूर्व हस्त में (ल. ३)
ति. १२ रवि को स्वाती में (ल. ३)
फाल्गुनशु. ति. ३ शुक्र को उ.भा. में (ल.१२)
ति. १० गुरु को मृगशिरा में (ल.१२वा २)
ति. ११ शुक्र को दि.१०।२९ से दि.११।२ तक पुनर्वसु में (ल. २)
ति. १२ शनि को पुनर्वसु में (ल.१२)
ति. १३ रवि को पुष्य में (ल.१२)

।। हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त ।।

वैशाख कृ. ति. १ सोम को स्वाती में बीजोप्ति मुहूर्त।
ति. ८ सोम को उ.षा. में हलप्रवहण मुहूर्त। दि.७।५६ के बाद श्रवण में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति. ९ मंगल को रिक्ता बाद धनिष्ठा में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति.१० बुध को भद्रा बाद शतभिष में हलप्रवहण मुहूर्त।
वैशाख शु. ति. ३ बुध को रोहिणी में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति. ४ गुरु को रिक्ता बाद मृगशिरा में हलप्रवहण मुहूर्त।
ज्येष्ठ कृ. ति. ३ गुरु को दि.१२।३४ से भद्रा पूर्व मूल में बीजोप्ति मुहूर्त।
ति. ७ सोम को दि.३।४८ से धनिष्ठा में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति. ८ मंगल को धनिष्ठा में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति. ११ शुक्र को उ.भा. में हलप्रवहण मुहूर्त।
ज्येष्ठ शु. ति. ७ सोम को मघा में हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त।
ति. १० गुरु को प्रा.५।४५ के बाद हस्त में हलप्रवहण मुहूर्त।
आषाढ़कृ. ति. १ गुरु को मूल में बीजोप्ति मुहूर्त।
ति. ५ सोम को वैधृति बाद धनिष्ठा में हलप्रवहण (पंचमी में) मुहूर्त।
ति. ८ गुरु को दि.८।१८ तक उ.भा. में हलप्रवहण मुहूर्त।
आषाढ़शु. ति. २ शुक्र को दि.९।३१ से पुष्य में हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त।
ति. ८ गुरु को दि.२।४२ तक हस्त में हलप्रवहण मुहूर्त।
ति. १० शनि को स्वाती में बीजोप्ति मुहूर्त।

।। विपणि (व्यापार) मुहूर्त ।।

चैत्रशु. ति. ४ बुध को दि.१।२१ से रोहिणी में।
ति. ६ गुरु को रोहिणी में।
ति. ७ शुक्र को मृगशिरा में।
ति. १० सोम को पुष्य में।
वैशाखकृ. ति. ७ रवि को दि.७।३० से उ.षा. में।
ति. ८ सोम को उ.षा. में।
ति. १२ शुक्र को वैधृति से पूर्व उ.भा. में।
वैशाख शु. ति. ३ बुध को सा. ५।५८ तक रोहिणी में।
ति. ४ गुरु को रिक्ता बाद मृगशिरा में।
ति. १२ शुक्र को हस्त में।
ज्येष्ठ कृ. ति. २ बुध को अनुराधा में।
ति. ६ रवि को उ.षा. में।
ति. ११ शुक्र को उ.भा. में।
ज्येष्ठ शु. ति. १० गुरु को प्रा.५।४५ से हस्त में।
आषा.कृ. ति. ८ गुरु को दि.८।१८ तक उ.भा. में।
आषा.शु. ति. २ शुक्र को दि.९।३१ से पुष्य में।
ति. ८ गुरु को दि.२।४२ तक हस्त में।
ति. १२ सोम को अनुराधा में।
श्रावणकृ. ति. ११ सोम को रोहिणी में।
श्रावणशु. ति. ६ बुध को हस्त में।
ति. ९ रवि को रिक्ता बाद अनुराधा में।
भाद्रपद कृ. ति. ४ बुध को रिक्ता बाद उ.षा. में। दि.१२।४९ के बाद रेवती में।
ति. ५ गुरु को रेवती में।
ति. ९ रवि को रिक्ता बाद रोहिणी में।
ति. १० सोम को भद्रा बाद मृगशिरा में।
आश्विनकृ. ति. ३ बुध को भद्रा पूर्व रेवती में।
ति. ७ रवि को रोहिणी में।
ति. ८ सोम को प्रा.६।२६ तक मृगशिरा में।
ति. ११ बुध को पुष्य में।
ति. १२ गुरु को पुष्य में।
आश्विन शु. ति. ९ बुध को रिक्ता बाद उ.षा. में।
कार्तिक कृ. ति. ६ रवि को मृगशिरा में।
ति. ९ बुध को रिक्ता बाद पुष्य में।
कार्तिक शु. ति. १२ रवि को दि.२।२ से उ.भा. में।
ति. १३ सोम को उ.भा. में। दि.१।५ से रेवती में।
मार्गशीर्ष कृ. ति. २ शुक्र को प्रा.७।१ से रोहिणी में।
मार्गशीर्षशु. ति. १४ गुरु को भद्रा बाद रोहिणी में।
पौष कृ. ति. १ शुक्र को रोहिणी में।
ति. २ शनि को मृगशिरा में।
ति. ८ शुक्र को दि.८।३० से उ.फा. में।
ति. १० रवि को भद्रा पूर्व हस्त में।
पौष शु. ति. २ सोम को उ.षा. में।
ति. ८ रवि को प्रा.७।२३ तक रेवती में।
ति. १३ गुरु को रोहिणी में।
माघ कृ. ति. २ सोम को पुष्य में।
ति. ५ गुरु को सा.४।५ से उ.फा. में।
ति. ६ शुक्र को भद्रा पूर्व उ.फा. में।
ति. ११ बुध को अनुराधा में।
माघ शु. ति. ५ शुक्र को दि.१।३६ से उ.भा. में।
ति. ७ रवि को रेवती में।
ति. १५ रवि को भद्रा बाद पुष्य में।
फाल्गुन कृ. ति. ५ शुक्र को हस्त में।
ति. ९ बुध को रिक्ता बाद अनुराधा में।
फाल्गुन शु. ति. ३ शुक्र को दि.३।४ तक उ.भा. में।
ति. १० गुरु को मृगशिरा में।
ति. १३ रवि को पुष्य में।
चैत्र कृ. ति. १ बुध को उ.फा. में।

बिना माटो का पञ्चाङ्ग चोरी का माना जायेगा।

चैत्र
१५ मार्चसे १२ अप्रैल तक २०२५ ई०

रवि		२ / १६मा.	९ / २३मा.	१ / ३०मा.	९ / ६ अ.
चन्द्र		३ / १७मा.	१० / २४मा.	२ / ३१मा.	१० / ७ अ.
भौम		४ / १८मा.	११ / २५मा.	३ / १ अ.	११ / ८ अ.
बुध		५ / १९मा.	१२ / २६मा.	४ / २ अ.	१२ / ९ अ.
गुरु		६ / २०मा.	१३ / २७मा.	६ / ३ अ.	१३ / १०अ.
शुक्र		७ / २१मा.	१४ / २८मा.	७ / ४ अ.	१४ / ११अ.
शनि	१ / १५मा.	८ / २२मा.	३० / २९मा.	८ / ५ अ.	१५ / १२अ.

वैशाख
१३ अप्रैल से १२ मई तक २०२५ ई०

रवि	१ / १३अ.	७ / २०अ.	३० / २७अ.	७ / ४म.	१४ / ११ म.
चन्द्र	१ / १४अ.	८ / २१अ.	१ / २८अ.	८ / ५म.	१५ / १२ म.
भौम	२ / १५अ.	९ / २२अ.	२ / २९ अ.	९ / ६ म.	
बुध	३ / १६अ.	१० / २३ अ.	३ / ३० अ.	१० / ७ म.	
गुरु	४ / १७अ.	११ / २४अ.	४ / १ म.	११ / ८ म.	
शुक्र	५ / १८ अ.	१२ / २५अ.	५ / २म.	१२ / ९ म.	
शनि	६ / १९अ.	१३ / २६ अ.	६ / ३ म.	१३ / १०म.	

ज्येष्ठ
१३ मई से ११ जून तक २०२५ ई०

रवि		६ / १८ म.	१३ / २५ म.	६ / १ जू.	१२ / ८ जू.
चन्द्र		७ / १९ म.	१४ / २६ म.	७ / २ जू.	१३ / ९ जू.
भौम	१ / १३ म.	८ / २० म.	३० / २७म.	८ / ३ जू.	१४ / १० जू.
बुध	२ / १४ म.	९ / २१ म.	१ / २८ म.	९ / ४ जू.	१५ / ११ जू.
गुरु	३ / १५ म.	१० / २२ म.	३ / २९ म.	१० / ५ जू.	
शुक्र	४ / १६ म.	११ / २३ म.	४ / ३० म.	११ / ६ जू.	
शनि	५ / १७ म.	१२ / २४ म.	५ / ३१ म.	१२ / ७ जू.	

आषाढ़
१२ जून से १० जुलाई तक २०२५ ई०

रवि		४ / १५ जू.	१२ / २२जू.	४ / २९ जू.	११ / ६ जु.
चन्द्र		५ / १६ जू.	१३ / २३जू.	५ / ३० जू.	१२ / ७ जु.
भौम		६ / १७जू.	१४ / २४जू.	६ / १ जु.	१३ / ८ जु.
बुध		७ / १८जू.	३० / २५ जू.	७ / २ जु.	१४ / ९ जु.
गुरु	१ / १२ जू.	८ / १९जू.	१ / २६जू.	८ / ३ जु.	१५ / १० जु.
शुक्र	२ / १३जू.	९ / २०जू.	२ / २७जू.	९ / ४ जु.	
शनि	३ / १४जू.	११ / २१जू.	३ / २८जू.	१० / ५ जु.	

श्रावण
११ जुलाई से ९ अगस्त तक २०२५ ई०

रवि		३ / १३जु.	१० / २०जु.	३ / २७जु.	९ / ३ अ.
चन्द्र		४ / १४जु.	११ / २१जु.	४ / २८जु.	१० / ४ अ.
भौम		५ / १५ जु.	१२ / २२जु.	५ / २९जु.	११ / ५ अ.
बुध		६ / १६ जु.	१४ / २३जु.	६ / ३०जु.	१२ / ६ अ.
गुरु		७ / १७जु.	३० / २४जु.	७ / ३१जु.	१३ / ७ अ.
शुक्र	१ / ११ जु.	८ / १८ जु.	१ / २५जु.	८ / १ अ.	१४ / ८ अ.
शनि	२ / १२ जु.	९ / १९ जु.	२ / २६जु.	८ / २ अ.	१५ / ९ अ.

भाद्रपद
१० अगस्त से ७ सितम्बर तक २०२५ ई०

रवि	१ / १०अ.	९ / १७अ.	१ / २४अ.	८ / ३१अ.	१५ / ७ सि.
चन्द्र	२ / ११अ.	१० / १८ अ.	२ / २५अ.	९ / १ सि.	
भौम	३ / १२अ.	११ / १९ अ.	३ / २६अ.	१० / २ सि.	
बुध	४ / १३अ.	१२ / २० अ.	४ / २७अ.	११ / ३ सि.	
गुरु	५ / १४अ.	१३ / २१ अ.	५ / २८अ.	१२ / ४ सि.	
शुक्र	७ / १५ अ.	१४ / २२अ.	६ / २९अ.	१३ / ५ सि.	
शनि	८ / १६अ.	३० / २३अ.	७ / ३०अ.	१४ / ६ सि.	

प्रमुख भारतीय पर्व तथा व्रतोपवास
श्रीसंवत् २०८२ शक १९४७ (सन् २०२५-२०२६ ई०)।

मार्च ३० र. - चान्द्रसंवत्सर तथा वासन्तनवरात्रारम्भ।
अप्रैल ३ गु. - श्रीसूर्यषष्ठी व्रत।
अप्रैल ५ श. - महानिशापूजा।महाष्टमी व्रत।
अप्रैल ६ र. - श्री रामनवमी व्रत सबका।
अप्रैल १० गु. - श्री महावीर जयन्ती।
अप्रैल १२ श. - श्रीहनुमज्जयन्ती।
अप्रैल १३ र. - मेषसंक्रान्ति। खरमास समाप्ति।
अप्रैल १४ सो. - मेषसंक्रान्ति पुण्यकाल। वैशाखी।डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती।
अप्रैल २४ गु. - श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।
अप्रैल २९ मं. - श्री परशुराम जयन्ती।
अप्रैल ३० बु. - अक्षयतृतीया।
मई २ शु. - आद्यजगद्गुरुशंकराचार्य जयन्ती।
मई ११ र. - श्री नृसिंह चतुर्दशी।
मई १२ सो. - बुद्धपूर्णिमा।
मई २६ सो. - वटसावित्री व्रत।
जून ५ गु. - श्रीगंगादशहरा।
जून ६ शु. - निर्जलाएकादशीव्रत स्मार्त। भीमसेनी एकादशी व्रत।
जून १० मं. - दाक्षिणात्यवटसावित्रीव्रत।
जून ११ बु. - सन्त कबीर जयन्ती।
जून २७ शु. - रथयात्रा।
जुलाई १० गु. - गुरुपूर्णिमा।
जुलाई २६ श. - स्वामी करपात्री जयन्ती।
जुलाई २९ मं. - श्रीनागपंचमी।
जुलाई ३१ गु. - गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती।
अगस्त ९ श - रक्षाबन्धन। ऋग्वेदि एवं समस्त यजुर्वेदियों का उपाकर्म (श्रावणी)।
अगस्त १२ मं. - कज्जली (कजरी)। सं. (बहुला) श्रीगणेश ४ व्रत। च.उ.रा. ८।३७।
अगस्त १४ गु. - हलषष्ठी व्रत (ललही छठ)।
अगस्त १५ शु. - भारतीय स्वतन्त्रता दिवस।
अगस्त १६ श. - श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत सबका।
अगस्त २६ मं. - हरितालिका (तीज) व्रत।
अगस्त २८ गु. - ऋषिपंचमी।
अगस्त २९ शु. - लोलार्कषष्ठी। श्रीसूर्यषष्ठी व्रत।
सितम्बर ६ श. - अनन्तचतुर्दशी व्रत।
सितम्बर ७ र. - खग्रास चन्द्रग्रहण (विवरण पृष्ठ २ पर)।
सितम्बर ८ सो. - महालयारम्भ। प्रतिपदा श्राद्ध। तर्पण आदि प्रारम्भ।
सितम्बर १४ र. - जीवत्पुत्रिका व्रत। महालक्ष्मी व्रत। चं.उ.रा. ११।५।
सितम्बर १५ सो. - प्रातः ६।२६ के बाद जीवत्पुत्रिका व्रत की पारणा। मातृनवमी।
सितम्बर १७ बु. - श्रीविश्वकर्मापूजा।
सितम्बर २१ र. - पितृविसर्जन।महालयसमाप्ति।
सितम्बर २२ सो. - शारदनवरात्रारम्भ।
सितम्बर २९ सो. - महानिशा पूजा।
सितम्बर ३० मं. - महाष्टमी व्रत। महानवमी व्रत।
अक्टूबर १ बु. - दशमी में नवरात्र व्रत की पारणा।
अक्टूबर २ गु. - श्रीविजयादशमी। श्री दुर्गाविसर्जन।महात्मागाँधी-शास्त्री जयन्ती।
अक्टूबर ३ शु. - काशी में नाटी ईमली भरत मिलाप।
अक्टूबर ६ सो. - शरत्पूर्णिमा। कोजागरी।
अक्टूबर ७ मं. - महर्षि वाल्मीकी जयन्ती। पराशर जयन्ती।
अक्टूबर १० शु. - संकष्टी करक (करवा) श्रीगणेश ४ व्रत। च.उ.रा. ७।५८।
अक्टूबर १३ सो. - अहोई ८ व्रत। च.ठ.रा. ११।५।
अक्टूबर १८ श. - धनत्रयोदशी (धनतेरस)।
अक्टूबर १९ र. - नरकचतुर्दशी।
अक्टूबर २० सो. - दीपावली। महाकाली पूजा।
अक्टूबर २२ बु. - अन्नकूट। गोवर्धनपूजा।
अक्टूबर २३ गु. - काशी में गोवर्धनपूजा। भइयादूज।
अक्टूबर २७ सो. - श्री सूर्यषष्ठी व्रत।
अक्टूबर ३० गु. - अक्षयनवमी।
नवम्बर १ श. - प्रबोधिनी एकादशी व्रत सबका।
नवम्बर २ र. - तुलसी विवाह।
नवम्बर ५ बु. - कार्तिकपूर्णिमा।गुरुनानक जयन्ती।देवदीपावली (काशी)।
नवम्बर १२ बु. - श्री भैरवाष्टमी।
जनवरी ५ सो. - गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती।
जनवरी ६ मं. - सं. श्री गणेश ४ व्रत। चं.उ.रा. ८।३५।
जनवरी १४ बु. - मकरसंक्रान्ति। खरमाससमाप्ति।
जनवरी १५ गु. - मकरसंक्रान्तिजन्यपुण्यकाल।
जनवरी १८ र. - मौनी अमावस्या।
जनवरी २३ शु. - श्रीवसन्तपंचमी।
जनवरी २६ सो. - भारतीय गणतन्त्र दिवस।
जनवरी २७ मं. - श्री हरसुब्रह्मदेवजयन्ती।
फरवरी १ र. - माघीपूर्णिमा। सन्तरविदासजयन्ती।
फरवरी १५ र. - श्रीमहाशिवरात्रि व्रत।
फरवरी २७ शु. - रंगभरी एकादशी।
मार्च २ सो. - रा. ११।५० से रा. २।२ के मध्य होलिकादाह।
मार्च ३ मं. - काशी में चतुःषष्टियात्रा। श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती। ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण (विवरण पृष्ठ २ पर)।
मार्च ४ बु. - होली - वसन्तोत्सव।
मार्च १७ मं. - दिन में ७।५१ तक वारुणीपर्व का योग। बुढ़वामंगल पर्व।
मार्च १९ गु. - वासन्तनवरात्रारम्भ संवत् २०८३।

उपसंहार।। आदित्यपुराणे- यस्तुकार्त्त (सत्य) युगो धर्मो न कर्तव्यः कलौयुगे। पापप्रयुक्तश्च सदा कलौ नार्यो नरास्तथा। वाग्दानान्तरमन्यस्मैदानमदूषितम्। विज्ञानेश्वर वचनम्:- दत्तामपि हरेत्पूर्वाश्रेयांश्चेद्वरमाव्रजेत्। त्यज्येदेशंकृतयुगे त्रेतायांग्राम मुत्सृजेत्। द्वापरेकुलमेकन्तुकर्तारन्तु कलौयुगे।। कृतेतुमानवाधर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः।। द्वापरे शङ्खलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः।। अन्योपदेशः- आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्। ज्ञात्वा पापकरणे न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा भृग्वग्निपतनादृते। विधवया सहाधर्माचरणे स पुरुषस्त्याज्यः। योनरोविधवानारीमुपेयात्कामलोलुपः। सहतव्योऽथवा त्याज्यो द्विजातीनामयं विधिः।
आशीर्वादः- सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु, सर्वेसन्तु निरामयाः। सर्वेभद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद्दुःख भाग्भवेत्।। शुभम्।।

हृषीकेश हिन्दी पञ्चाङ्ग मिलने का एकमात्र पता :-
विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन
बी. २१९५ सी. भदैनी, वाराणसी
मो. : ०७३९०९९३३९७

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

आश्विन
८ सितम्बर से ७ अक्टूबर तक २०२५ ई०

रवि		७ / १४सि.	३० / २१सि.	६ / २८सि.	१३ / ५ अ.
चन्द्र	१ / ८ सि.	८ / १५सि.	१ / २२सि.	७ / २९सि.	१४ / ६ अ.
भौम	२ / ९ सि.	१० / १६सि.	२ / २३सि.	८ / ३०सि.	१५ / ७ अ.
बुध	३ / १०सि.	११ / १७सि.	३ / २४सि.	९ / १ अ.	
गुरु	४ / ११सि.	१२ / १८सि.	४ / २५सि.	१० / २ अ.	
शुक्र	५ / १२सि.	१३ / १९सि.	४ / २६सि.	११ / ३ अ.	
शनि	६ / १३सि.	१४ / २०सि.	५ / २७सि.	१२ / ४ अ.	

कार्तिक
८ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक २०२४ई०

रवि		६ / १२ अ.	१३ / १९अ.	५ / २६ अ.	१२ / २ न.
चन्द्र		७ / १३ अ.	१४ / २० अ.	६ / २७अ.	१३ / ३ न.
भौम		८ / १४अ.	३० / २१अ.	७ / २८ अ.	१४ / ४ न.
बुध	१ / ८ अ.	९ / १५ अ.	१ / २२अ.	८ / २९ अ.	१५ / ५ न.
गुरु	३ / ९ अ.	१० / १६ अ.	२ / २३ अ.	९ / ३० अ.	
शुक्र	४ / १० अ.	११ / १७अ.	३ / २४अ.	१० / ३१ अ.	
शनि	५ / ११ अ.	१२ / १८ अ.	४ / २५अ.	११ / १ न.	

मार्गशीर्ष
६ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक २०२५ ई०

रवि		४ / ९ न.	१२ / १६ न.	३ / २३ न.	१० / ३० न.
चन्द्र		५ / १० न.	१३ / १७न.	४ / २४न.	११ / १ दि.
भौम		७ / ११ न.	१३ / १८ न.	५ / २५न.	१२ / २ दि.
बुध		८ / १२ न.	१४ / १९ न.	६ / २६न.	१३ / ३ दि.
गुरु	१ / ६ न.	९ / १३न.	३० / २० न.	७ / २७न.	१४ / ४ दि.
शुक्र	२ / ७ न.	१० / १४ न.	१ / २१ न.	८ / २८ न.	
शनि	३ / ८ न.	११ / १५न.	२ / २२ न.	९ / २९ न.	

पौष
५ दिसम्बर से ३ जनवरी तक २०२५-२६ई०

रवि		३ / ७ दि.	१० / १४दि.	१ / २१दि.	८ / २८दि.
चन्द्र		४ / ८ दि.	११ / १५ दि.	२ / २२दि.	१० / २९दि.
भौम		५ / ९ दि.	१२ / १६ दि.	३ / २३दि.	११ / ३०दि.
बुध		६ / १० दि.	१३ / १७दि.	४ / २४दि.	१२ / ३१दि.
गुरु		७ / ११ दि.	१४ / १८ दि.	५ / २५दि.	१३ / १ ज.
शुक्र	१ / ५ दि.	८ / १२दि.	३० / १९दि.	६ / २६दि.	१४ / २ ज.
शनि	२ / ६ दि.	९ / १३ दि.	१ / २०दि.	७ / २७दि.	१५ / ३ ज.

माघ
४ जनवरी से १ फरवरी तक २०२६ ई०

रवि	१ / ४ ज.	८ / ११ ज.	३० / १८ ज.	७ / २५ज.	१५ / १ फ.
चन्द्र	२ / ५ ज.	९ / १२ज.	१ / १९ ज.	८ / २६ज.	
भौम	३ / ६ ज.	१० / १३ ज.	२ / २० ज.	९ / २७ज.	
बुध	४ / ७ ज.	११ / १४ज.	३ / २१ ज.	१० / २८ज.	
गुरु	५ / ८ ज.	१२ / १५ज.	४ / २२ज.	११ / २९ज.	
शुक्र	६ / ९ ज.	१३ / १६ ज.	५ / २३ज.	१२ / ३०ज.	
शनि	७ / १० ज.	१४ / १७ज.	६ / २४ ज.	१३ / ३१ज.	

फाल्गुन
२ फरवरी से ३ मार्च तक २०२६ ई०

रवि		७ / ८ फ.	१३ / १५ फ.	५ / २२फ.	१३ / १ मा.
चन्द्र	१ / २ फ.	८ / ९ फ.	१४ / १६ फ.	६ / २३फ.	१४ / २ मा.
भौम	२ / ३ फ.	८ / १० फ.	३० / १७ फ.	७ / २४ फ.	१५ / ३ मा.
बुध	३ / ४ फ.	९ / ११ फ.	१ / १८फ.	९ / २५फ.	
गुरु	४ / ५ फ.	१० / १२ फ.	२ / १९फ.	१० / २६फ.	
शुक्र	५ / ६ फ.	११ / १३फ.	३ / २०फ.	११ / २७फ.	
शनि	६ / ७ फ.	१२ / १४फ.	४ / २१फ.	१२ / २८ फ.	

मुद्रक- मुक्ता मुद्रणालय बी. २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी।
Registered under section 18 & 19 of Act XXV 1867
प्रकाशक - विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन, भदैनी, वाराणसी